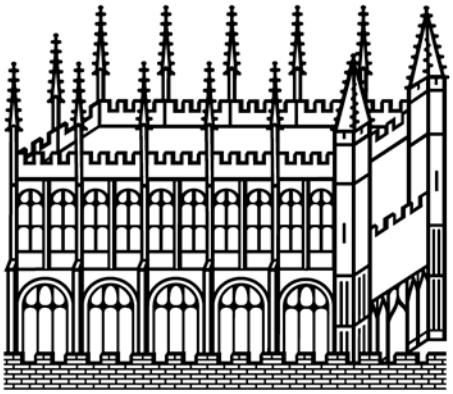


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

3. E. 28. Hindi Sridh. I

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Śaṅkara carita - sudha

Sankar charit Sudha



शंकर चरित सुधा

شنکر چرتر سُدھا

श्री मन्मुनि कुल सरोज भास्कर दत्तात्रेय वंशावतन्स
श्री धर महाराज ने स्कन्द पुराणान्तर्गत ब्रह्मोत्तर-
खण्ड के उत्तम २ शिव चरित्र जगदुद्धारक

बिचारकर

अत्युत्तम चौदह अध्याय महाराष्ट्र भाषा में शिव लीला-
मृत नामक ग्रन्थ निर्म्मित किया था

उसका

बिलासपुर निवासि मुन्शी गजराज राय साहब नायब सुबाफ़िज़ दफ़्तर
ने श्री मच्छिवोपासक भक्त जनों के सानन्दार्थ अति
मनोहर ललित छन्दों में भावानुवाद किया

पहली बार

लखनऊ

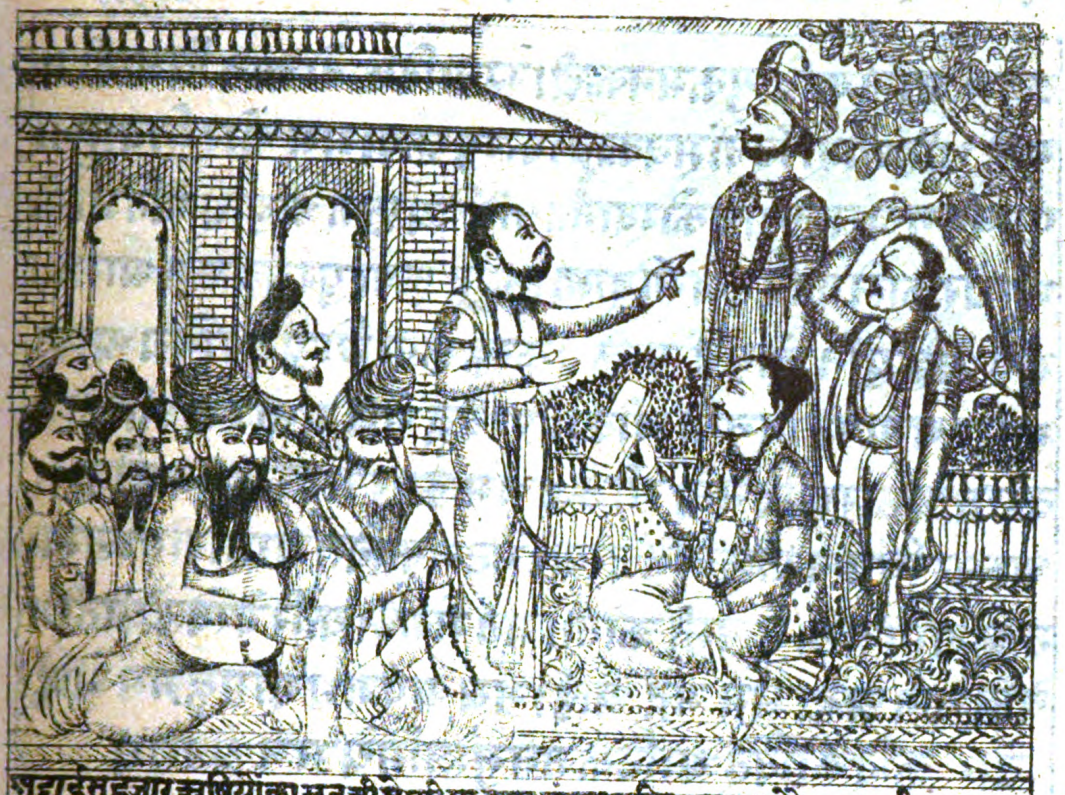
मुन्शी नवलकिशोर के छापे खाने में छापागया

अप्रैल सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात फरवरी सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम खत भेजकर कीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा (इतिहास)	हुआ भी है	रामायण सटीक मय	लिंग पुराण
महाभारत	१- आदिपर्व	मानसदीपका कोष	ब्रह्मोत्तर खंड
१- पहिले हिस्सा में	२- सभा पर्व	आदि	रसदृष्टि रसचंद्रोदय
आदिपर्व सभापर्व	३- बन पर्व	नथा जिल्द बंधी	सुदामा चरित्र
बन पर्व	४- विराट पर्व	तथा मोटे अक्षरों की	कृष्ण गीतावली
२- दूसरे हिस्सा में	५- उद्योग पर्व	मय तसवीर व खेपक	श्री अनुराग रस
विराट पर्व उद्योग पर्व भीष्म पर्व द्रोण पर्व	६- भीष्म पर्व	रामायण तुलसीकृत	सोदागर लीला
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोण पर्व	सातों काण्ड	नाटक
कर्ण पर्व शल्य पर्व	८- कर्ण पर्व	१- बाल काण्ड	प्रबोध चंद्रोदय
गदा पर्व सौप्तिक पर्व	९- शल्य पर्व व गदा पर्व सौप्तिक पर्व	२- अयोध्या काण्ड	रामाभिषेक
स्त्री पर्व शान्ति	मय सौप्तिक व विशोक व स्त्री पर्व	३- आरण्य काण्ड	आनंद रघुनंदन
पर्व में राजधर्म आपद्धर्म मोक्षधर्म	१०- शान्ति पर्व राजधर्म व आपद धर्म व मोक्षधर्म व दानधर्म	४- किष्किन्धा काण्ड	वेदान्त
४- चौथे हिस्सा में	११- अश्वमेध आश्रमवासिक मुशल पर्व महा प्रस्थान स्वर्गारोहन	५- सुन्दर काण्ड	योगवाशिष्ठ
शान्ति पर्व दानधर्म		६- लंका काण्ड	आनंदा भूतवर्षिणी
अश्वमेध आश्रमवासिक पर्व व मौसल पर्व व द्वारा प्रस्थान स्वर्गारोहन पर्व हरिवंश पर्व	१२- हरिवंश पर्व	७- उत्तर काण्ड	सांख्यतत्व कौमुदी
महाभारत पर्व अलग	रामायण रामविलास	रामायण शब्दार्थ को	काव्य
	रामायण तुलसीकृत	रामायण का इतिहास	सूर सागर
		रामायण मानसदीपिका	कृष्ण सागर
		रामायण कवितावली	विश्राम सागर
		रामायण गीतावली	प्रेम सागर
		सटीक	ब्रजविलास बड़ा व छो
		विनय पत्रिका बा मो	कृष्ण प्रिया
		विनय पत्रिका बा पि	विजय मुक्तावली
		विष्णु पुराण भाषा	अनेकार्थ



अट्ठाईस हज़ार ऋषियोंका सूतजीसे श्री परब्रह्म शंकर चरित्र सुनना और दाशार्ह राजाका
गर्ग मुनिसे शिव पंचाक्षर मंत्र सुनना और राजाके शरीरसे पवन रूप होसंपूर्ण पापोंका निकलना

श्रीगणेशायनमः

शंकर चरितसुधा

प्रथमअध्याय

दो॰ श्रीगणपति पदु सुमिरि के पुनि कीजेकछुकाज।
पुरवत हैं मनकामना विघन हरणा गणराज॥१॥
करिपति आनन रदन इक शुभ गुण बुधिकोधाम
अल्पबुद्धि शिवचरितकहूं पुरवहु प्रभु मनकाम॥२॥
कमलापति पद ध्यानधरि बरणौं हरगुणगान।
क्षीरसिंधु महवासजिमि ममउरकरहु सुजान॥३॥

चौपाई

श्री शारद विनवौं कर जोरी। पुरवहु सकल मनोरथ मोरी
पुनि गुरुपद रज ध्यान लगावौं। जेहि प्रसाद शंकर गुणगावौं

व्यास आदि कवि शुक सनकादी। सूतादिक जो ज्ञान विवादी ॥
महि धरि शीश विनौं सबकाहू। करहु कृपा मम ओर निबाहू ॥
पवनतनय बल बुधि को खानी॥ कीजिय कृपा अबुध मति जानी
श्रीधर कलि कवि तुलसी दासा। करहु कृपा पुरवहु मम आसा॥
भये अहैं पुनि होइहैं पाछे। करहु कृपा शिशु जानिय आछे
भूसुर गणपद बिनवौं नीका। पुरवहु मोर मनोरथ जीका॥
वरण अठारह बिनवौं सोऊ॥ मम ऊपर सहाय सब होऊ ॥
अक्षर पिंगल कछु नहिं देखा। भेद न कबित गणागण लेखा
कछु रामायण तुलसी कीती। मति संगति करि देखेउँ प्रीती॥
तेहि बल अल्प मन महं आई। सब अपराध क्षमहु मम भाई

दो॰ कवि कोविद आदिक जन सुक्षमिये मम अपराध
जानौं भेद न कविन शिव कृपा मात्र अवाध।४।
महराष्ट्र भाषा में श्रीधर कीन्ह बखान ॥ ॥।
अति उत्तम शिव लील अमि सारस्कंद पुरान।५।

खंड ब्रह्मोत्तर स्कन्द पुराना। श्रीधर किय महराष्ट्र सुगाना
नाहि करौं पद भाषा रचना ॥ सब समुझैं अरु अतिप्रियबचना
कथा प्रसंग बखानौं भाई ॥ ॥ आदि बंदना तें चित लाई॥
ओंकार शिव नमो अनंता॥। आदि अनादि नाहिं तव अंता
शाश्वत पूरण ब्रह्मानंदा ॥। माया तीत जगत गुरु कंदा॥
हरंब पितु ज्योतिर मय रूपा ॥ पुरुष पुराण अनादि अनूपा
माया चक्र चलावन हारी ॥॥ सिद्ध अनादि सुकाशि विहारी
भव अनंत जगप अविनाशी। मन मोहन कंदर्प बिनाशी

दो॰ विरूपाक्ष जैपंचमुख जय प्रभु शुचि चैतन्य ॥
कर्माध्यक्ष विश्वंभर सुकाम विनाशी धन्य।६।

नगज मात जे भक्तन प्यारा ॥ नीलग्रीव गिरिजा भरतारी

भाल नयन शिर गंग बिराजै। हार समान धार सुचि साजै॥
दक्ष यज्ञ को नाशन हारी॥। जै त्रिपुरारी जै मद नारी॥॥
धनप मित्र हरि प्रिय शशी भालं। भानु प्रताप सुरूप निहालं॥
भाल बिशाल सुगौर शरीरा। कर पुर निभ विष भक्षक धीरा
जय भव हरता बिश्व सु साक्षी। भस्मलेप निज भक्तन्हि पक्षी
सृजि अस्थि तिलय कारणाहारी। जय धृतिबसन चर्म नागारी
जय सुहास्य मुख त्रै शुल पानी। षटमुख तात सकल गुण खानी
माया बिपिन दहन सुख कंदा। निर्मल ब्रह्म सच्चिदा नंदा॥
अटल तेज कोटिन जिमि भानू। शांति ज्ञान घन जय भगवानू

दो॰ सर्व काल व्यापक सकल कलि मल दहन अपार
अंडकटाह अनेकपति जय अघ मोचन हार॥७॥
जय संसृति दरव नाशि मन रंजन पद्मज तात॥
जगत रक्षण प्रभु जगतपति सकल भुवन विख्यात॥८॥

बिष्णु विरंचि शेष अरु शारद। शुक सनकादि आदि मुनि नारद
लोचन सहस बिबुध महि देवा। अहो रात लावहिं जस सेवा॥
बिबुध नदी तट काशी बासी। करत बिहार सदा अविनासी
जय भव अंतक प्रभु गिरिजावर। विश्वेश्वर भव गिरा अगोचर
व्योम हरण अहि भूषण धारी। गज मद नाशक मर्दन कारी
ओंकार अज महा बलेश्वर॥ आनंद घन मद भंजन जयहर
अजित अमित प्रताप जय आगर। नेति कहत निगमा गम नागर
धृत दिगंबसन अतनु अविनासी। महाकालेश्वर उज्जैनिबासी
कालाजित सुमिरन तें त्राता॥ जै कृतांत भय नाशक त्राता॥
पाप विपिन क्षय कारण आगी। शशि चकोर चित भक्तन लागी
महापाप नृप वेण हरता॥॥ वृषभेश्वर पुराण जग करता
उमा हृदय पंजर महं कीरा॥ पंकज निज जन उर अलिधीरा

दो॰ जय जय जय करुणानिधि छवि गुण कोआगार
सोमनाथ शशि शेखर सो राष्टर देश बिहार ।९।
कैरव हरा करुणानिधि प्यारा। धृत रुद्राक्ष रुद्र अवतारा ॥
भीमभयानक जय शिवरूपा। तप अपार जेहि आहि अनूपा
नाग दमन नागा लंकारी ॥ ॥ कुंडल नागा नारा पट धारी ॥
ज्योति लिंग नागानन्न बापू ॥ नाग नाथ अहि रक्षक आपू
वाणप्रस्थ प्रिय जै दिननायक। दृत्रारी अरिपितु वरदायक।
जय शरपंच त्रिपुर आराती ॥ वैजनाथ अति अद्भुत काँती ॥
जय त्रिनेत्र त्रैताप नशावन ॥ त्रै गुणा त्रितन रहित जग पावन
त्र्यंबक राय त्रिदोष कृशानू ॥ शांति मेघ करुणा कर वानू ॥
दो॰ मनसिज सिंधुर विदारक हरिजना आनंद कन्द
हैमवती पति करुणानिधि हिमगिरि वास स्वछन्द।१०।
हिमि केदार जै अभिनवरूपं ॥ वंदत सुर मुनि रूप अनूपं ॥
पंच मुकुट जै माया नासी ॥ नित गुणा गावहिं नाक सुबासी
आदि सुमध्य अंत अबिनासी। मलिका अर्जुन शैल निवासी
इन्द्र जीत पितु अरि प्रिय दासू। मारुति करत सदा जहं बासू
सन्मुख रहत जोरि कर ठाढ़ा ॥ जय रामेश्वर शंभु उदारा ॥
सर्वोत्तम अज अजित पुरारी ॥ ब्रह्मानंद बास तव न्यारी ॥ ॥
नव महिमा बरणत में हारे ॥ निगमागम अतर्क्य होइ हारे
श्रीधर कवि कह ब्रह्मा नंदा ॥ गुण अगाध दधि भूषण चंदा
दो॰ बुद्धि चित्त कोतर्क तहँ पैरि न पावै पार ॥ ॥ ॥
किमि गजराज पदान्य पद करि मति मंद गँवार।११।
भूमि सुमेरु सहित छत भारा ॥ पावौं तुला कहाँ जग सारा ॥
धरन व्योम को कारण भाई। पात्रस्थ ल आनय कहँ पाई
सिंधुनीर महि लवणा को गनना। सिकता रज केहि भाँति हिंबनना

तरुण प्रभा बसन्त जिमि भानू। कवि बुधि सदृश दीपक जानू
एक समय शारद चित लाई। धरती को तिन पत्र बनाई ॥
गिरि तृण कज्जल करि दधि डारी। मसी पात्र कीन्हीं चित धारी
सुरतरु शाखा लेखनि कीन्हीं। लागी लिखन सुचित चित दीन्ही
थकित भई महि पत्र सिरानी। मसी पात्र सब आदि बखानी
महिमा पार न शिव कर पाई। तेहि मन मलिन जनेषु कि गाई
जो तुम मन निश्चय करि धरिहौ। तव प्रभु सुफल मनोरथ करिहौ

दो॰ जिमि दशमी तें दूज शशि दिन प्रति बाढ़त जाहि
करुणानिधि तिमि तव कृपा वरणि अल्प मति काहि ॥२॥

सुन्दर रत्न सत्य वति केरी ॥ ॥ उन शिव गुण नभ महँ करि फेरी
पर व्यास हू अंत नहिं पाये। होइ तटस्थ लगे गुण गाये।
तहाँ मंद मति मैं अति किंकर। कहि बिधि वरणि सकौ महिमा वर
पर तुव गुण दधि महँ मन मीना। हीय शुद्ध हित मैं निज कीना
सुनत सचार शब्द इमि श्वासू। तव तोषित भैं उमा निवासू।
कह शंभु तव श्रीधर पाही। श्रोता सुनहु चित्त धरि ताहीं
शिव लीला सूत परि कर ग्रंथा। प्रारंभौं रस भरि सुख पंथा ॥
जैसे पाठक शिशुहि सिखावै ॥ कर धरि अक्षर लिखिके बतावै
तैसे तव मुख मम गुण गानू। अतिहीं सुरस बोलावहु जानू

दो॰ ब्रह्मोत्तर खंड पुराण शुचि अस्कंध हि कहि व्यास
सावध श्रोता सुनि चरित अहे अगाध प्रकाश ॥

नैमिषार सनकादि बिचारी। सुमति सूत प्रति प्रश्न उचारी
तुम प्रभु चित आकाश महँ चंदा। तृषित श्रुति चकोर सुख कंदा
सुरस पुराण बहुत तुम गाये ॥ बिस्तु चरित बहु भाँति सुहाये
महिमा अति अगाध विस्तारा। वर्णन कियहु दशहु अवतारा
भारत भागवत सु रामायण। अवगाहा प्रिय भे सुनि मुदितायन
अब शिव चरित सुधा द्युत ग्रंथा। बहुत जीव पीवि श्रुति पंथा

कहहिं सूत पुनि सुनिय मुनीशा। अब सब दै चित चरित गिरीशा
शंभु चरित परमाद्भुत अहहीं। सुनतहिं पातक पर्वत दहहीं॥
दो॰ आयु विभव आरोग्य अति संपति बंश बिचार॥
ज्ञान शंभु निज अंगाकरि अवगाहिं तें दातार॥२४॥
तीरथ वर्त सकल फल नाना। महायज्ञ को विधि कल्याना
शंभु चरित निर्मल फल दाता। सुनतहिं कलिमल नाशहिं भ्राता
सूत कहहिं सौनक प्रति गाई। श्रोता सुन हु सकल चितलाई
सकल यज्ञ महँजप मख आगर। कौन मंत्र जपिये कहु नागर॥
मंत्रराज यक शंभु षडाक्षर॥ बीज समेत सुजपिय मुनीवर
द्वितिये शंभु मंत्र पंचाक्षर। फल दोउ को यक सम नहिं अंतर
संसृति सिंधु पार के हेतू॥ ॥जपहिं यहि अजसुर मुनि जेतू
अघ भय दरिद शोक परितापू। द्वंद क्रोध मद अरु संतापू॥
इतने सबहिन के संहारक॥ उत्तम मंत्र अतिहि शिव तारक
सो॰ मुनि सुरगण कल्यान तुष्टि पुष्टि धृति कारणम्
महिम अगाध बखान परतन मंत्रन्हि राजसब॥२॥
नव ग्रह महं जिमि शोभित भानू। मंत्रन्हि महं पंचाक्षर जानू॥
तवात पितामह सिंधुज स्वामी। जपत रात दिन यहि गुण ग्रामी
जिमि वेदांत शास्त्र महं चोखा। तीर्थन माहिं प्रयाग अनोखा
क्षेत्र माहिं महा अस मशाना। मंत्रराज तैसहिं करि जाना
शस्त्रन्हि मध्य पशु पति आही। गिरिजा पती बिबुध गण माही
महिधर माहिं हिमाचल जैसे। मंत्र पंचाक्षरि जानिय तैसे॥
केवल परम तत्व चित यंत्रू॥। परब्रह्म यह तारक मंत्रू॥
यक अंग तुला तीर्थ व्रत भारा॥ मंत्रकेर बलिहारी भ्कारा॥॥
आत्म प्राप्त कोयहिहे आकर॥ पथ निर्वाण पका शादिवाकर
पावक दहन वन अज्ञानू॥ ॥ जपत यही सनकादिक जानू

दो॰ चारवर्ण जप मुख्य यहि शुद्रादिक अरु नारि ॥
जपिय राति दिन मंत्रयह गृहस्थादिब्रह्मचारि।१५।
सोवतजागत सपने माहीं ॥ ॥ आवा गमन ठाढ़ रहि काहीं ॥
बदत लरत अरु काज जाना। जपिये सदा कालही नाता ॥
सिंधुर संग असंगति दोषा॥ मंतर ध्वनि शिव केहरि रोषा॥
देखत ठाढ़ पावांवत प्राना ॥ भस्म होहि क्षण लखत न जाना
न्यास मात्रिका बिधि नहिं लागे। आसन जपिय प्रीति रस पागे
शिव शिव पूरण नाम उचारन। ठाढ़े सन्मुख शंकर आवत।
मंत्र अखंड जो जप मन लाई। निज अंग रक्षैं तेहि गिरि राई
पंच बदन निज अंग परिछाहीं। करि रक्षैं निशिदिन तेहि काहीं
दो॰ आदि बिधी करि मंत्र ले गुरु मुखतें निरधार ॥
जपै मंत्र चित लाइ शिव कहूं मैं करणी तुम्हार ।१६।
मुख्य वरण गुरु करिय बिचारी। भक्ति बिराग स्वच्छ अधिकारी
दाना अरु सर्वज्ञ दयानिधि ॥ जड़ित चिन्ह गुरुकेर यथा बिधि
गौरव बचन शांति उर माहीं। भिक्षु अदंभ मान मद नाहीं।
हिंसारहित अतिहि बैरागी ॥ वाही गुरु की जिय चित लागी
अब गुरु वरण को नाम बताई। वरणान करौं सबहिं मन भाई
सकल वर्ण को वेद बखानी। ब्राह्मण गुरु कीजिय हितमानी
मंत्रोच्चार उनहिं के मुखतें ॥ प्रीति सहित लीजे अति सुखते
यद्यपि मंत्र यथा बिधि गाई। आपुन सब जानैं कहूं भाई
तद्यपि गुरु मुख उत्तम जानी। निश्चय करि लीजिय सुखमानी
मष्टहिं मंत्र जो जपि अविचारा। सो जानिय निर्फल ध्रुव सारा
दो॰ गुरु मुख रहित जो प्राणी कहूं सहित काम मद क्रोध
तेहि मुख देखिय कबहूं नहिं कैसे ज्ञान बहु शोध।१७।
निगमागम हिं पोथि सब लयऊ। यद्यपि ज्ञान लक्ष चित भयऊ

तदपि पुराण संत अस्तावा ॥ अरु गुरु कृत बिन सुकिन पावा
कोउ कहे मोहिं आकर सपने। कहेउ मंत्र ईश्वर मुख अपने
आदर ज्ञान बतावै लोका ॥ तदपि न गुरु बिन होइ बिशोका
यदपि प्रत्यक्ष देवता आई ॥ गुप्त भाव सब कहि समुझाई
तदपि नतरहिं आपसे प्रानी ॥ गुरु शरण जाइय अस जानी
मंत्र गायत्री बिन उपवीता ॥ जैप पुनीत न अशुध पतीता।
बिनु बरके बढ़ जुरे बराती ॥ शोहै नहिं गुरु बिन तेहि भांती

दो॰ वक्ता बहु बिधि होइ अभि अंतर छुटत न गर्व ॥
संप्रदाय गुरु शरण चलु निश्चय करि जिय खर्व। १८।

भलत काहि गुरु करिय न भाई। जेहि निज संप्रदाय नहिं आई
रूपादिक कछु समुझै नाहीं। जन्म अंध तैसे वह आहीं ॥
पुरश्चरण मंत्र वहि केरा ॥ ॥ कीजिय उत्तम क्षेत्रहिं हेरा ॥
नैमिषार अरु शिवपुरि काशी। धेनु कर्ण शुचि आदि बिलासी
हरि हर क्षेत्र सुगम करि जाना। जपियस प्रेम शुची अस्थाना
यही विषय उत्तम इतिहासा ॥ सुनिये कहिहौं शुभ परकासा
श्रवण पठन निज ध्यास समाने। प्रीति सहित दिन प्राते सन्माने
सुनत कथा अनुमोदन करहीं। तेहि कर सकल पाप ध्रुव जरहीं

दो॰ श्रवण पठन निजध्यास करि तबहोवे नदकार ॥
ब्रह्म अघ्न पथ अघ्न जन सब नाशहिं निरधार। १९।

मथुरा नगर विदित जग आहीं। परम पवित्र यदूकुल माहीं
रहु दाशार्ह नाम सु राजा ॥ ॥ परमोदार सुलक्षण छाजा
नृप सबकर पहुँचावें ताही। पुनि पुनि नमे जोरि कर बाही
मुकुट रत्न नृप किरिण सचारा। महिमा प्रगट परम जग सारा
नृप जब मुकुट धरें शिर ऊपर। सम दृढ़ करि के जमावें सूधर
धर्षण करी किरिण छवि कैसे। पगतर तेज झलक रवि कैसे

सत्य प्रकृति को बसन बनाई। सब महि काहि फलन उड़ाई
धरणी सकल सत्य मह छाई। यही भांति महिमा चूपराई ॥
दो० यश को ध्वज इमि ठाढ़ किय शरद पूर्ण शशि जान
करै गान द्विज प्रजा कर सब चिंतहिं कल्यान। २७।
शुक्ल दूज शशि बाढ़े जैसे ॥ ॥ विभव विशेष बढ़े नृप तैसे॥
अस पर मन कुबुद्धि दासी सन। कबहुं न करहिं नृपाल सुहृसन
सुबुधि धर्म पतीरत जाही ॥ अंग अनंग तुलै नहिं ताही ॥
दान समस्त शस्त्र कर धारी। याचक दारिद कटक निवारी
भुजा प्रलंब जानुलौं छाजे ॥ प्रलयानल रण भूमि बिराजे
खेतन छोड़ि रहै रण कैसे ॥ लीन्ह परशु भृगुकुलपति जैसे
विद्या चतुर्दश कला सु पूरे ॥ जनु कर मध्य आमलक रूरे
याचक जन नहिं अयाचक कीन्हा। पुनि न रहेन दारिद को चीन्हा
दो० शब्द मेघ गंभीर सम मधुर वचन नृप केर ॥ ४ ॥
केकी चित्त प्रजा आनंद नृत्य करैं चहुं फेर। २९।
सो० सेन सिंधु को साज बारि सिंधु लखि हारिहिय।
सत्याचल ध्रुव छाज टरै बचन नहिं कीन्ह प्रण। ३।
शोभा सींव सती नृप नारी ॥ नाम कलावति अति सुकुमारी
काशि नरेश सुता छवि बानी। करत बंदना जग अस जानी
शोभा सिंधु तरंगिनि वाही ॥ खंजन मीन चक्षु द्युति ताही
धनुष असम शर भ्रुवहि लजावै। शुक्ल दूज शशि भव पहिनावै
श्रुति उप भृ वाग्र सम सोहै ॥ तेहि के छवि वरणै कवि कोहै
जासु घ्रान की अति छवि भारी। शुक तुंड तिल पुष्प मनहारी
अधर अरुण को दशन शोभा। विद्रुम पक्क बिंब फल लोभा
निरखि असित कच शिर यहि भांती। नभ श्यामा वपु निशि लखवानी
चन्द्र वदन अहिवेनी छाजे ॥ भूषण दसन सुदेश विराजे ॥

हंस गमनि कटि केहरि जाहीं। मधुर बचन सुनि पिक बिलखाहीं
दसन पांति की समता नहिं सोहत। दाडिम बीज निरखि मन मोहत
बहुरि रदन फल कंज पवि खानी। सुखप्रकाश पड़ बोलत बानी
सकल कला महँ परम प्रवीना। नामकलावति तेहि ते दीना
जो सौंदर्य्य रत्न को खानी ॥ चतुर निधान भूमि महँ जानी
दो० अंग सुवासन पुरे घर निरखि पद्म सुरवगज ॥
नेत्र दृष्टि गुंजार अलि मगन रहहिं नृपछाज।२२।
नूतन ब्याहि ताहि को लावो। मनसिज करि नृपमन वैंचायो
ताहि बोलि पठयो करि प्रीती। परन आइ वांछित नहिं रीती
कवि शृंगार जाल फैलाई ॥ मानस मीन खैंचि नृप राई ॥
उठि दाशार्ह राउ यहि लायो। तेहि पहँ आपुहि गै रस पायो
कह सुभांगि शृंगार को बेली। मम तन तरुवर को करु मेली
तब उत्तम फल तोहि में लगिहै। परस वासि सुत अति आनंद जगिहै
तब शोभा सर हंसिनि बोली ॥ सुंदर सुखी बचन जनु तोली
मैं उपासना शिव की कीन्ही। सब बेला व्रतस्थ चित दीन्ही
दो० कलावती गुण आगरी कहति कला कवि बानि
रति विभेद कछु वरणि कहं सुनु पति परम सुज्ञानि।२३।
अति रोगिष्ट होइ जो नारी ॥ गर्भिणी अथवा ऋतु युत धारी
क्षुधित व्रतस्थ होइ जो बाला। दूषहु अशक्त न भोगि नृपाला
चाहिय हर्ष सहित पति नारी। यौवन रूप वंत कवि भारी ॥
चिन्ता ग्रसित मदम्पति चाही। अष्ट भोग करिये उचिताही
पर्वकाल व्रत दिन बिसराई। श्रेष्ठ समय षटरस अनखाई
पुनि ललना भोगिय करि प्रीती। नृप लक्षण सत यहि परतीती
परन मान नृप मद मद भारी। रति मन करि दोउ भुजा पसारी
देत अलिङ्गन प्रचंड सुभागी। नृप शरीर लगि मानहु आगी

दो० कलावती तनुउषा जि मिलाहुतम्न अत्यन्त॥
होइ बिलग नृप पूँछनेहि कहु किमियह विरतंत।२४।
मम उर अनंद दायनी वृद्धी। गृह शृंगार विलासिनि सिद्धी
संशय सकल त्यागि सकुचाई। कहि आदिहि तें देहु सुनाई॥
सुनु हे चक्र सुकुट मणि राजा। त्यागि क्रोध सुनिये सुख साजा
दुरवासा मुनि मम गुरु ज्ञानी। अनुसुइया सुत सब जग जानी
परम पवित्र मंत्र मोहिं दीन्हा। मोहिं मैं शिव पंचाक्षरि लीन्हा
जपौं ताहि निशिदिन करिप्रीतू। तेहि नित पावन परम पुनीतू
मोर अंग अति शीतल जानू। तव अंग पाप सहित करि भानू
दुर्गम गमन कीन्ह बिन सोची। भक्षाभक्ष कृति करि मतिपोची
दो० गुरु कृपा तें मोहिं पति ज्ञान त्रिकाल को आहि॥
जप तप अरु शिव अरचन कबहुं कीन्हि तुम नाहि।२५।
गुरु सेवा कबहुं न मन लायो। पूर्व राज तें नर्क कमायो॥॥
सुनत राउ अनुतापहिं करिके। सद्गद भयउ हृदय अति धरिके
कह सुनु कलावती गुण खानी। देशिव मंत्र मोहिं सनमानी॥
जाके जपन बनै सब ठाई॥॥ महत्पाप क्षय ह्वै श्रुति गाई॥
कहति कलावति सुनु प्रभुमोहीं। नहिं अधिकार सिखावन मोहीं
मैं दासी जिय पति तुम राजा। गुरु निरधार तुमहिं मम साजा
आपुहिं गुरु मैं कहउ सुनाई। यदुकुल श्रेष्ट गर्ग मुनि राई॥
ज्ञानिन माहिं सुकुट मणि आहीं। अतिवरिष्ट विद्या जग ताहीं
वामदेव रघुकुल गुरु ज्ञानी॥ तैसहिं श्रेष्ट गर्ग मुनि जानी।
तिनके शरण जाहु मम स्वामी। शिव दीक्षा लीजिय गुण ग्रामी
दो० तब वाणी श्रम तुरत नृप गए कलावति साथ॥
साष्टांग परणाम करि ठाढे जोरे हाथ।२६।
अष्टभाव उर प्रीति नृपाला। कह शिवदीक्षा देहु कृपाला॥

अस कहि परा परि प्रीतविशेषू। भाव महिप कर कोकरि लेषू
हीय विचारि गर्ग मुनि धीरा। आयउ रवितनया के तीरा ॥
पुरय वृक्ष तर बैठे आई ॥ ॥ करि अस्नान यमुन मन लाई
पुनि दम्पति कीन्हे अस्नाना। शिव पूजन करि यथा विधाना
दिव्य रत्न पुनि लाइ कृपाला ॥ गुरु कर किय अभिषेक निहाला
दिव्य बसन अरु भूषण आनी। करि गुरु पूज भूप मन मानी
कोष दक्षिणा दीन्ह नरेशा। बहु लाज्जित लखि मनहि धनेशा

दो० तन मन धन समर्पि पग परेउ गर्ग को राय ॥
जे गुरु बंचित पोच नर दारुण नर्कहिं जाय।२७।

गुरु के घर अति आपद भारी। आपु भोगि सर्वस सुरत्व कारी
ज्ञान कतरनी तेहि मति मंदा। भजि न जानि गुरु ब्रह्म नंदा
तन मन धन गुरु अर्पण कीन्हे। कोउ कह नाशिक लाभ न लीन्हे
अति चंडाल ज्ञान शठ केरो। कबहुं हिं मुख ताकर नहिं हेरो
विद्या सकल ज्ञान धिक ताही। धिक विराग सब साधन जाही
चतुर वेद शास्त्रन्हि पढ़ि लीन्हा। धिक तेहि पढ़ब वृथा अस कीन्हा
स्वरघट्टी जिमि चंदन भारा ॥ षटरस दर्वि वृथा फिरि मारा
चाउर नपि के भोजन करहीं। कूदत इत उत वृथाहिं फिरहीं

दो० घानापेरत ऊष पर रस कर स्वाद न जान ॥
धरे शर्कर मधु पात्र महं नहिं मिठास को ज्ञान।२८।

सकल नाशिक तिमि तेहि अभागी। वृप दारागर्ह न जिमि अनुरागी
शुद्ध सप्त नव विधि उपचारा। करि पूजा गुरु केर भुवारा ॥
पुनि कर जोरि ठाढ भे आगे ॥ हृदय लगाय मुनि अनुरागे
वृप के शिर कर धरि मुनि राई। शिव षड़ अक्षर मंत्र बताई
सुनत मंत्र उर नभ महं तारू। आत्म ज्ञान रवि कीन्ह प्रकासू
तेहि छिन तम अज्ञान अपारा। निकरि शुभ्र सब कीन्ह पसारा

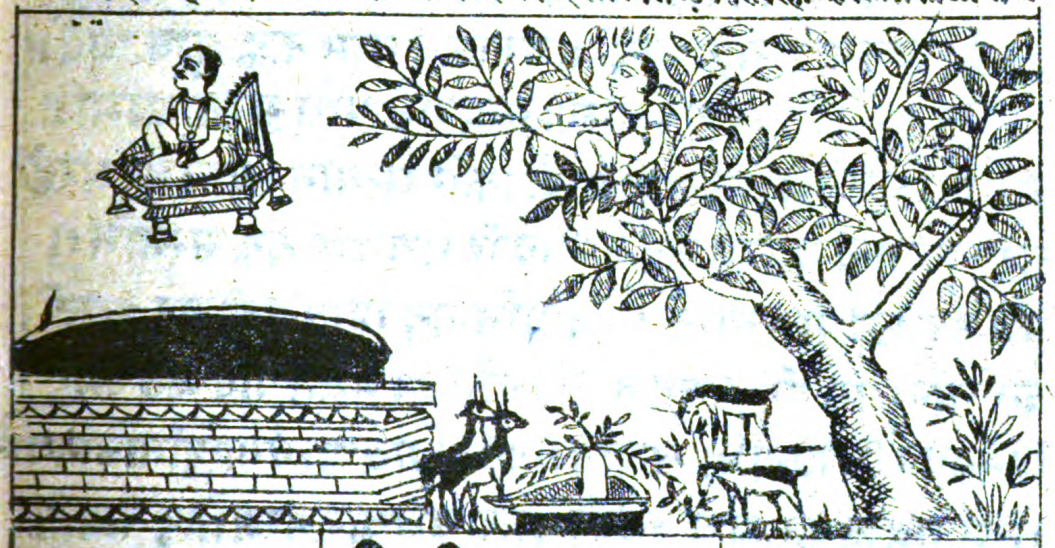
अद्भुत महिमन परत बरवाना। नृप शरीरतें सुनिय बिधाना
कोटिन्ह हिंसा बायस निकरे। भागत भें तेहि अवसर सगरे
दो० तड़फत बाहिर आय उन जरे पंख सब काहिं॥
सबहिं भस्म होइ गयउ तब संख्या तिनकर नाहिं। ३८।
जिमि कंटक बन अति समुदाई। किंचित अगिनि परत जरि जाई
जरि क्षय भय काक निसिभोरी। लखि महीप करि अचरज भारी
पूँछत प्रीति सहित महिपाला। कहु अनुप किमि रवा चंडाला
अरु मुनि मम भै दिव्य सरूपा। विबुध गणहुं ते शुद्ध अनूपा
सुनु संक्षेप कहौं नृप तोहीं॥ महापाप बहु जन्म को होहीं
निकरे शकुनाधम उन्ह सारी। मंत्र प्रभाव भस्म भें भारी
भूप अनघ भै मंत्र प्रभावा॥ पुनि पुनि अस्तुति गुरुकर लावा
धनि पंचाक्षर मंत्र बड़ाई॥ गुरु तुम धन पंचाक्षर नाई॥
सो० पंच भूत को भारि मोहि लागि प्रभु किये तुम॥॥
स्वच्छ भयउं गुरु चारि देह निसरि मैं भयउं शुचि। ३९।
तत्व पचीस मेल महं आई। बहुत काल मैं रहेउं फसाई॥
अति बलिष्ट महिपा सुर क्रोधा। मद बैताल पुनः पुन शोधा
लालच विस्मय अर्थ भरोसा। इच्छा रीछ भूत भ्रम सोसा॥
ये सब यक्षणि जानिय नाना। रहे बिटंबित मोहि अज्ञाना
ऐसे माया मेल अपारा॥॥ तात काल प्रभु मोर निकारा॥
पंचाक्षरी धन्य शुचि सारा॥ गुरु दयाल तुम धन्य उदारा
जन्म सहस्त्र केर को ज्ञाना॥ प्रापति भे सब मोहिं सुजाना
जेउ असंखित सबहीं पापू। बायस रूप देखि मैं आपू॥
दो० रत्न चोरि भक्षा भक्षक गुरु तल्पक मद पान॥
गुरु निंदक पर तिय गमन महत्पाप परमान। ४०।
गो द्विज हत्या लोक अधर्मा। तिय गुरु हत्या छमि कीरवमो

पर निंदा पर ब्रत्ती हारक ॥ परतिय गमन अगम परमारक
मित्र द्रोह गुरु द्रोह अपारा । विश्व वेद कर द्रोह पसारा ॥
लिंग भेद अरु भेद प्रसादा ॥ हरि हर पंक्ति भेद अपवादा ॥
पुस्तक ज्ञान चोर मति चंडा । सुधा बाद रक्त घात प्रचंडा ॥
बुद्धी भेद कुमारग पापी ॥ लंपट नारि दरा चरि आपी ॥
पर धन हरक कृतघ्न कुनष्टा । तीरथ निंदक सुकरम भ्रष्टा ॥
गुरु छल कारक पुनि बक ध्यानी । मात पिता हन्तक अघ खानी
दो० दीन कर्म पथ घातका वृथा तपै अति भोर ॥ ॥
भगनि गोत्र बध लग्न दहक करि सज्जन करणीर ३१।
सुता धेनु विक्रय करि दीन्हा । हैरस बेंचि द्रव्य लै लीन्हा ॥
ग्राम दहन निज आतम घाती । महा पाप शिशु हत्या जाती
ऐसे महा पाप को गाई ॥ ॥ क्षुद्र पाप गनती नहिं लाई
काग रूप निकरे उन्ह धारी । देखत क्रूर भये अघ भारी ।
परम पुराय रहि मम कछु ग्रंथा । नरबर देह मिलेउ नभ पंथा
तेरउ निःसम गुरु कर प्रताप । किमि महिमा बरणौं प्रभु आप
करि अपार गुरु अस्तुति भाये । पुनि दाशारह पुर महँ आये ।
चारि कलावति चतुर सयानी । पतिहि उधोरसि इमि गुणखानी
दो० संपति युत भै राज सब जपहिं मंत्र शिव केर ॥
दुरभिक्ष दोष अवरणा भजे देशतें हेर ३२।
अल्प मृत्यु विधवा पन रोगा ॥ कतहुं देश नहिं इनकर भोगा
मधुपुर आदि देश आनंदा । चरित सुनहु आगे सुख कंदा
तब आलिंगित रानिहि राजा । शशि सम देह कलावति साजा
शिव कर भजन सकल जन करहीं । शिव गुण कथन होत घर घरहीं
शंकर पूजन अरु अभिषेका । ब्राह्मण भोजन यथा विवेका
होत देश नृप पुर महँ सारी । आनंद मगन सकल नर नारी

नृपदाशार्हको कथा पुनीता। जोहिलिंगविमुतिकरि पठणासप्रीता
करि अनुमोदन जे मन धारणी। रक्षण ग्रंथ प्रीति सन्मानी
छं० सन्मानि शिव महिमा जो गावै धन्य नर जगनन धरै
तेहि जानि जीवन सफल निज अंग नितहिं शिव रक्षा करै
महिमा जो वरणै प्रेमयुत शिव धन्य कहैं सुर जग भले
शिव रूप धरि सुरवपंच भुज दश होइ कैलाशहिं चलै।१।
अति मधुर सुरसकथा सुपूरव सुधा हूंतें आवही ॥
पंडित चतुर नर सुनहिं तेहि गुरु भक्त जानि कहावही
देखिये मन शोच श्रीधर सुरव उचारित शिव लिया
उनकी कृपा सुकटाक्ष भक्त गजराज वरदान किया।२।
दो० पंढरि नाथ निज शीशपर शिवलिंग धारणा कीन्ह
तीन काल अति प्रेमयुत ब्रह्मानंद सुख लीन्ह।३३।

इतिश्रीस्कन्दपुराणेब्रह्मोत्तरखंडे शंकरचरितसुधाभाषांतरभाषागजराजटीकेमधुरप्र-
थमोऽध्यायः

एकव्याध का शाहार शिवरात्रि में एकबेलके वृक्ष पर बैठके जानजानशिवपर बेलपत्र तोड़ डालना और उसके नजदीक हिरणों का आना और नीतवार्ताकर शिवपर बेलपत्रके पड़नेसे सबेरही शिवलोक को जाना ॥



द्वितीयोऽध्यायः

दो० श्री गुरुपदरज ध्यानधरि बरणौं द्वितिय अध्याय

शिवरात्री मृग व्याध कथसुनिय संत चित्तलाय।१।
भुक्ति मुक्ति मंगल निवहिं जहां भजन शशिभाल
शंक विघ्न दारुण सबहिं नहिं बाधहिं त्रयकाल।२
सो० बचनहास्य करि कोइ लेइ मिसुतें शिवनामजपि
लोह स्वर्ण कन होइ परसे पारस धोरवेहीं।१।
धोरवे पिय अमृत कहुं कोई। तब कावही अमर नहिं होई॥
जो औषधि बिन जाने खाई। तासु रोग का नाहिं नशाई॥
सूरवे तृण पर्वत सम ढेरी॥ देखत ताहि अबुध शिशु हेरी॥
देइ चिनगारी आगी डारी॥ कहहु कि भस्म होइ नहिं सारी
तैसे नाम हर लेइ मिसु कोई। तुरतहिं दोष दहन सब होई॥
अथवा कौतुक करि के जोई॥ लेइ शिव नाम सुफल फल होई
सुनि अघशिर धुनि करै पुकारा। शिव शिव वृथा रहत किमि मारा
मोरे क्यों चुपन रहत मतिग्रामा। पुनि पुनि गर्जहु कहि शिवनामा
दो० पुनि पुनि करि शिवनाम रव फोरहु मोर कपार।
समय समय छिन छिन रटहु का करिहै गहि गुम्हार।३।
ऐसेहिं निंदक जनहूं गावें॥ परा शिव नाम कढ़े सुख पावें॥
जो सुत कन्या मिसु शिव नामा। गोहरावे पावे सुख धामा॥
अधिक सनेह भजन शिव करहीं। करि सन्मान ध्यान हर धरहीं
हर स्वरूप ब्राह्मण कहं जानै। करि संतर्पण बहु सन्मानै॥
ऐसे टेक धरै मन लाई॥ ॥ पुनि जब शिवरात्री व्रत आई
व्रत जागरण प्रीति युत करई। तेहि कर महत पाप सब जरई
बिल्वपत्र लै शिवहिं चढ़ावे॥ करि शिव अर्चण श्रुति जिमि गावे
जन्म सहस्र केर अघ तबहीं॥ सह परिवार भस्म होइ सबहीं
दो० निवहिं बिल्वदल लेइ करि शिवहिं चढ़ावै जोय
पुण्यवंत बहु शिरोमणि तेहि सम दूजन कोय।४।

सो० तोरि निज तारहिं आन यहि मा कछु आश्चर्य नहिं।
तेहि दरशन परमान करि बहु जन शिव पदमिलहिं२

प्रातहिं लेइ दरश शिव भाई। निशि कर पाप सकल क्षय जाई
पूरब जन्म दोष बन जेते ॥दुपहरि दरश जरहिं सब तेते
प्रेम सहित शिव संध्या हेरा ॥सप्त जन्म अघ टारहिं डेरा ॥
महिमा श्रेष्ट शिव रात्री को है। सके न बरणि शेष मन जो है
कपिला षष्टि ऋर्क्षोदय नाना। महोदय पुनि संक्रांति बखाना
पर्व ग्रहण को अरु गद छाया॥ जिन कर महत्म शास्त्र कहगाया
सबकर फल शिवरात्री माहीं ॥तुले न पर्व भार करिताहीं ॥॥
करिके निछावरि ये सबकाला। डारिय शिव रात्री तें बिशाला

दो० शिवरात्री व्रत प्रथमहीं पुण्य दिवस परिमान ॥
तेहि पर पूजन जागरण फल विशेष करिजान।५।

रुद्र घोष पूजा त्रय काला ॥।तेहिकर पार न पुण्य बिशाला
मुनि सबशिष्ट गाधि कुलचंदा। गंधर्व किन्नर सुरकुल वृंदा॥
बिद्याधर चारण सिधि जेते॥ करहिं व्रत शिव रात्री तेते ॥
सुरस कथा यहार्थे बहूता ॥ शौनकादि प्रति बोलहिं सूता
सुनिये श्रोता दै चित काना ॥प्रीति सहित अति करि सन्माना
व्रत शिव रात्रि मुख्य को गाई। मास पक्ष तिथि भाषौं भाई
पावन माघ मास बिच जानी। महिमा जेहि वह व्यास बखानी
दक्षिण देश माघ करिजाने॥ फागुण कहि सब देश बखाने

दो० जनपूरे महिना कहहिं मावस दाक्षिण फेर ॥
मास अंत करि जानहीं राकातिथि चहु फेर।६।

कृष्ण चतुर्दशि नौ नहिं मासा। मुख्य शिव रात्रि वेद प्रकासा
तेहि दिन केर एक इतिहासा। कहहुं सुनिय श्रोता दै आसा
विंध्याचल में व्याधक रहेऊ। वृक्ष पक्षी वह घातन्ह कियऊ

हिंसक निर्दय निषिद्ध निषाधा। तेहि रवल कीन्ह महा अपराधा
निकरेउ धनुषबाण कर धारी॥ चलेउ अहेरहिं सो दुरः चारी॥
बाघुर पास कांख महँ दाबी॥ हरित कवच पहिरे तन फाबी
हस्त करज रक्षा को कारण॥ लोह चर्म को पहिरि निवारण
अरु यक हाथ शस्त्र सब लीन्हा। चलेउ अहेरहिं अति चित दीन्हा
शिवः स्थान जात बन देषा॥ अति शोभा युत शुभ्र विशेषा

दो० यात्रि आय चहुँ ओरतें शिवरात्री तेहि दीन्ह॥
करि शिंगार शिव मन्दिरहिं कैलाशस छबि लीन।७।

झलकत मन्दिर शोभा माना। शुभ्र श्वेत अति चांदी जाना॥
ध्वज पूरण अकाश लौं सोहै। रत्न जड़ित कलश मन मोहै
शिवलिंग बिच मणिमय छबिजाही। पूजत भक्त प्रेम युत ताही॥
करत अभंग धार अभिषेका॥ रुद्र घोष द्विज करहिं बिवेका॥
एक बजावहिं ताल मृदंगा॥ पूजत शिवहिं प्रेम रस रंगा॥
श्रोता सकल बजावहिं तारी॥ हर हर शब्द घोष करि भारी॥
नाना धूप सुवस्तु सुबासा॥ करि सुगन्ध भरि अति सब आसा
होत प्रकाश सु दीप लारव को। जलद घोष घंटा रव आपको

दो० शशि सुरव गर्जत भेरि धुनि शब्द सभायन स्वर्ग
बेद उक्ति बाजा चतुर बजवहिं भक्तन वर्ग।८।

वह व्याधा आयउ तेहि अवसर। सन्मुख सबहिं बिलोकसि सुन्दर
नभय घरी ठाढ़े रहि आगे॥ कहत बिनोद हँसत रस पागे॥
हे मूरख जन तुम इहं सबो॥ व्यर्थ काहि धन खोवहु खबो
बाहिर भीतर दिखत परवाना। देव पना इहँ कहँ अज्ञाना॥
उत्तम अन्न त्यागि के आजू॥ वृथा उपास करहु केहि काजू
करत कूट यहि विधि वह व्याधा। चलेउ बिपिन खलपरम असाधा
गर्जत जन सुनि धुनि शिवनामा। कति बिनोद युत बहु अघ धामा

सहज शिवालय करि परिकर्मा घोर बनहिं परवेशि अधर्मा
दो० वही रटनि तेहिजीभ बसि शिव शिवकहिउपहास
नाम प्रताप अपार भै कठिन दोष करनास।९।
घुसत कठिनबन महं तेहि देखा। लघु बड़ जीव परे नहिं लेखा
जब लगि संध्या तेहि को भयऊ। बासर मणि अस्ताचल गयऊ
लख ब्रह्मांड सबल निशि आई। जनु सम्पुट कज्जल भरि छाई
असित बिशाल कामरी जैसे॥ बिस्तारेउ मंडप निशि तैसे॥
बिनपतिं शोभति कामिन नाहीं। तैसहिं रजनी शशि बिन आहीं
यद्यपि शोभहिं उडु गण भारी। तदपि इन्दु बिन सब अँधियारी
गये सभाउठि पंडित पीछे । ज्ञान परवंड जल्प शठ नीछे॥
तिमि अस्ताचल गये तमारी । नखत प्रकाश करहिं मिलि भारी
दो० ऐसि आइ तम निविड़ निशि कछुक चले नहिंबुद्धि
परेउ उपास निषाद कहँ तेहि दिन मति अति शुद्धि।९०।
सो० मन चिंतित अति व्याध कीजै कौन उपाय अब॥
सर यक परम अगाध पेखेउ दृष्टि तब ताहि कर।२।
भागवान घर सम्पति नाना। तिमि सरकुमुदिनि शोभा साना
तेहि तट विल्ववृक्ष यक शोभा। अति राजे नभ परसेउ लोभा
करत योग जिमि प्राण गँवावै। जन पुनि कर्म भूमि फल पावै
तैसहिं डार गगन तें आई॥ शोभा सहित भूमि लपटाई
लगेउ भूमि लौं पत्र घनेरा॥ रवि शशि किरण दिखैनहिंहेरा
निविड़ेउ तम तेहि महं अति भारी। बैठेउ व्याध वृक्ष यक डारी
बाण लगाइ शरासन खैंच्यो। सावज लक्षि कान लौं ऐंच्यो
विल्वपत्र झौंड़ेउ बहु आगे। लक्ष दृष्टि तेहि पर न अभागे
दहिन हस्त नें टोरहिं पाना॥ गिरहिं पत्र तेहि सुनहु विधाना
शिवलिंग तेहि तरुतर यक रहेऊ। विधि निजकर थापितकरेऊ

परहिं बिल्वदलतेहि लिंगऊपर। तेहि कीन्ह नोषित भयउ मादर
पुजन जागरण अरु उपवासा। भएउ व्याध फल अति धनत्यासा
दो० बसेउ निरन्तर जीभतेहि व्याध रटत शिव नाम॥
अति अनंद सुनि पुनि कहत जै हर हर सुरधाम॥३॥
सो० जरत चलेन सबपाप पूजन सुमिरण सकल फल
मिले शिवनाम प्रताप जड़ मन धरि शिवनाम जप॥४॥
यहि बिधि रजनि प्रहर भरगइऊ। तृषित मृगीयक आवनि भइऊ
रही गर्भिणी वही कुरंगी ॥ अति सुकुमारि तेजरवी अंगी
दूरहिं ते तिन व्याधहिं देखी॥ दारुण मनहुं कृतांत विशेषी
व्याधा खैंचि बाण संधाना॥ लखि हरणी बोलति परमाना
मैं अपराध कीन्ह का तोरा॥ अति अनीति मम पर शर जोरा
मैं तो हौं सुनु गर्भिणी हरणी। मोहि बधन जनि करु इमिवणी
गरभ स्रुक्ष्म मम उदर अजाना। बधत दोष तोहि दारुण जाना
दारुण दोष भेद बिलगाई ॥ व्याध कहो तोहि सब समुझाई
दो० एक भर बधि अध जीव सम बधे एक अजजान।
बध अघ विधि अब वरणि कहुं सुनि सकुचहु अज्ञान॥३॥
शत अज बधकर पाप बखाना। वृषभ एक हति पातक जाना॥
शत वृष हति गौहत्या एका॥ होइ शास्त्र इमि कहेउ विवेका
पातक पूर्ण बधे शत धेनू॥ ॥ विप्र एक मारे अघ देनू॥ ॥
शत द्विज हत्या पातक जेते। नारि एक बधि लागहिं तेते॥
बध शत नारि तें पाप अधीका। गुरुहत्या यक पातक लीका
तेहि तें शत गुण पाप बखाना। गर्भिणी एक बधे परमाना॥
मैं नतदपि तुव कृत अपराधा। मारसि मोहि केहि कारण व्याधा
मम मृगि कुटुंब मोर वर माहीं। जोहत पंथ उपारे आहीं॥
मइं आज नहिं कीन्ह अहारा। अरुभर अन्न न दिन मे सारा

पर मोहिं को दुख सबहीं भूला। सुनि तव बचन उपजि सुख मूला।
दो० तैं तो जाति पशु हरणि होइ कथमि बहुत पुनि ज्ञान
शास्त्र वेद शुभ उक्ति कहि कहु किमि तव विज्ञान।२३।
सो० समुझत अचरज होत कहसि बचन नर सम सुभग।
लखि तोहि कृपा प्रसोत मोर हृदय महं भयउ अति।५।
इतनी ज्ञान कहां तैं पाई ॥ कहु निज पूरब जन्म सुनाई ॥
रूपवती बिशाल तैं नैनी ॥ सब विरतंत कहहु पिक बैनी
सुनहु व्याध कह मृगि गुणआगर। किये मथन हरि जब पय सागर
चौदह रत्न सुरा सुर काढ़े ॥ करि परियत्न विविधि बिधि गाढ़े
रंभा निपुरा तिन महं मैं लखवी। सुरवर भूलहिं मोहिं को देखी
तप अपार नाना बिधि लाई ॥ करि तपसी जनु मोकहं पाई
नैन कटाक्ष जाल फैलाई ॥ सुर मन सफरी बाँधेउ भाई।
मोर अंग अति चलहि सुबासा। अलि मुनिजन धावहिं की आसा
दो० सुनत प्रीति युत गान मम अरु पुनि राग सुरंग
दौरहिं होइ प्रफुल्लित सुगीवन भूमिय कुरंग।२४।
सो० दिव्य स्वर्ग को भोग भोग करउं मैं प्रेमयुत ॥
मानों नहिं कोउ लोग निज स्वरूप मद्वंदु मोहि।६।
मोर अंग मद बाढ़ेउ भारी ॥ शंकर भजन समस्त बिसारी ॥
शिवरात्री प्रदोष शशिवारा ॥ व्रत शिव आर्चन त्यागेउं सारा
छोड़ेउं पुनि अमृत कर पीना ॥ मदिरा पान करों चित दीना
दारुण दैत्य हिरण्यक जाही ॥ त्यागि बिबुध निरत्यों मैं ताही
गें बहु दिन तेहि संग यहिभांती। गयउ अहेरहिं सुर बाराती
दुष्ट संग करि के मैं भाई ॥ शिव कीर्तन पूजा बिसराई
असुर अहेरहिं जब चलि गयऊ। मोर हृदय बरतन अस भयऊ
यहि बिध दरशन शिव करलेई। गउं कैलाशहिं मन इमि देई।

दो० मोहिं देखत शिव शाप दिय परम क्रोध मन माहिं
होहि मृगी मृतु लोक महं तैं पापिनि बहु आहिं।१५।
तोर साथ जो अरु सखि होऊ। तुव संग हरणी उनहूं होऊ॥
हिरणा देख मम भजन बिसारा। रहि अचेत नित संग तुम्हारा
तुम्हरे साथ बहु होइ कुरंगा। सहित प्रेम निरतहि तुम संगा
व्याधा सुनहु परम चित दीन्हा। सुनत बचन मैं अस्तुति कीन्हा
जैजै पंचवदन विरुपक्षा ॥ सत चित आनंद जै कर्म ध्यक्षा
दक्ष मखनाशक जै सब सारवी। उग्रह शाप करियत्र्य आंखी
चक्रवर्ति दयाल अति भोला। क्षीर फेनु सुन्दर सुख बोला
बारा बरस जाहिं जब बामा ॥ तब तुम सब पावहु मम धामा
दो० कुरंग योनि पुनि जन्म लिय कर्म भूमि में आइ ॥
मैं हौं हरणी गर्भिणी प्रसव काल निकटाइ।१६।
सो मैं निज अस्थानहिं जाऊं॥ गारवि बर्म बेगाहि पुनि आऊं
पुनितें कृपाल लेइ मम प्राणा। मोर बचन सत जानु प्रमाणा
मृदु बचन इमि हरणी कहेऊ। सुनत व्याध पुनि बोलत भयऊ
तैं बोली मधु निश्चय बानी ॥ पर विश्वास न मोहिं सयानी॥
बचन असत्य बोलकर नाना। निज तन रक्षा करैं जहाना ॥
तुमि सचेत जिव धारिहि जाना। तेहि तें अब करु शपथ प्रमाना
मुखहिं उचारि महा जो पापू। देइ शपथ मोहि धरजा आपू
बचन दीन होइ पुनि मृगनारी। करती मोह सुनहु श्रुति धारी
दो० बेद शास्त्र अध्ययनहिं रहित ब्रह्म कुल जोइ ॥
संध्या सुचि मत हीन तेहि पातक मम शिर होइ।१७।
करहिं न भजन बेद कोउ बेचहिं। पर पीड़ा कलुष मन सेचहिं॥
दान करत बिच विघ्नहि पारै ॥ करि गुरु निंदा कोउ श्रुत धारै
हरिहर निंदा जेहि चित जोई। आपद पाप ते मम शिर सोई

दान प्रथम जो विप्रहिं देई ॥ पाछु शोच करिके छिन लेई ॥
जो कोउ यति कर निन्दा करहीं। कोउ शास्त्र महं हैतक धरहीं
नाना भ्रष्ट पंथ आचरहीं ॥ ॥ स्वधर्म त्यागि परपथ्य चित धरही
देवालय महं जाकर कोई ॥ कथा पुराण विष्णु शिव होई
बैठे श्रुति बीरा जो खावे ॥ ॥ वह पापी कोढ़ी तन पावे ॥

दो० सुर मन्दिर महं जाइ करि जो करि इस्त्री भोग ॥
की निजपतिको नारि कोउ करती आपु वियोग ।९८।

सो० होंहिं नपुंसक नीच खल मलपाप समाग करि ॥
पुनर्जन्म को बीच उपजहिं दुसि जड़ चेतु मन ।७।

निंदित कर्म उधारहिं जाहीं ॥ काग होइ विष्टा जग खाहीं ॥
विद्यारहि शिष कोन बतावे ॥ निश्चय सो पिंगल तन पावै ॥
अनुचित प्रतिग्रहले महि देवा। कंठ रोग तेहि करि सुख लेवा ॥
लाइ धेनु परक्षेत्र तें चोरी ॥ ॥ अल्पायुषी होइ पुनि बोरी ॥
राजा प्रजाहि व्यर्थ सतावे ॥ सर्प आध्र दारुण तन पावै ॥
व्यर्थहिं छल साधू सन कीन्हे। होइ निरवंश सुनहु चित दीन्हे
नारि सोहागिनि व्रत मिसु नाना। पति सेवा विसरी छल ज्ञाना
रहि अनधन घर पतिही वंचय। द्वितिय जन्म गादुरि तन संचय

दो० पति कुरूप कहि त्यागि करि तरुणहि विधवा जोइ
जार कर्म वह करै पुनि जन्मय गणिका होइ ।९९।

निजपति सेवा त्यागि जो नारी। दासी होइ कि रहै कुंवारी ॥ ॥
सेवक स्वामी सन कर द्रोहू ॥ श्वान जन्म पावै पुनि सोहू ॥
सेवक सन सब लेकरि सेवा। वेतन ताकर जो नहिं देवा ॥
वह अत्यंत भिखारी होई ॥ हार हार भरमै सब खोई ॥
पति निय बोलत वचन यकाकी। सुनहि जाइ खल चुपमति बांकी
लंपट पन घूमहि निय नेहीं ॥ अरु पुनि शिवनहि अन्तर देहीं

जारन मारन जो करु कोई ॥ भूत पिशाच प्रेत सो होई ॥ ॥
यती दुखित भूरवे फिरि जावे। तेहि दुष्काल जन्म भर पावे ॥
दो० रजस्वला तिय होइ घर अरसे परसे जाहिं ॥
स्वर्गी पुरुषा नर्क पर तेहि घर पितृन आहिं।२०।
दीप दीप को तेल चोरावे ॥ ॥ तेपुनि जन्म निपुत्रिक पावे ॥
रांधत अन्न चोरि कर खाई। तेहि मंजार जन्म पुनि पाई।
बिप्रहिं देहिं सूख अनसीठा। आपुन षटरस भक्षहिं मीठा
तेहि कर गर्भ पात होइ जाहीं। निजकृत करमजन्म भुगताहीं
कहि दुर्बचन जो मातु पिताको। जन्मफेर मिलु कपिकर वाको
सास ससुर बधु कोद खदेहीं। तेहि करि बालकबचहिं न तेहीं
महत्पाप जो अतिहीं आहीं ॥ तिन कर शपथ करौं तोहि पाहीं
सत्य कहौं तोहि सन परमानू ॥ मोर बचन तुम दृथा न जानू ॥
दो० कहत मृगी तेहि व्याधसन सुनहु शपथ मम आप
उलटि न आवं जो तुमहि पहं पर मम शिरसव पाप।२१।
सो० सुधा बचन होइ अंक तो शिव पूजन रवाइ मोहिं ॥
व्याधा मन अति शंक सुनत शपथ निरधारइमे।८।
कह पतिव्रता बेगि घर जाहू। बचइ शेष रजनी तब आहू ॥
सुनि मृगि अति सुखदेत असीशा। पुण्यवंत होउ मिलैं गिरीशा
अस कहि गइ पुनि पीकर पानी। मृगि निज आश्रम अतिसुखमानी
इहां व्याध करि दक्षिण हाथा। बिल्वदलन टोरि डारु शिव माथा
युगल पहर रजनी इमि बीती। दृढ़ पूजा शिव जानेउ प्रीती ॥
अहै पापतेहि जरेउ समूला ॥ तेहि क्षिण मम जन्मको तूला
नाम रतन दृढ़ जमगे जीहा ॥ शिव अमरण व्याध करलीहा
मृगि मुख सुनत निरूपण ज्ञाना। मिलेउ जागरण मुलभसमाना
दो० नाम प्रताप अपार शिव भे किमि मतिवह व्याधु।

पाप दहन यह चरित पुनि सुनहु कथा सुचि साधु।२३।
दूसर हरगी पुनि एक आई ॥ लखित अचानक सुनु मुनिराई
व्याध बेगि शर रवैंचेउ देखी। मृगि करुणा करि बोलि विशेषी
कहि मृगि सुनिय व्याधयक बाता। मैं कामातुर अति हौं ताता ॥
पतिहि भोग आवौं मैं देई ॥ बेगहिं तबहिं पाण मम लेई ॥
सुनि आचरज व्याध मन आई। कह करि शपथ बेगि घर जाई
व्याधा कहत धन्य तुम जीवन। सर्व शास्त्र कर ज्ञान तुमहिं मन
कहति मृगी जो बापि तड़ागा। सुर घर पतित जो टोरि अभागा
गुरु निंदक मद पी दुर चारी ॥ परहिं पाप सब मम शिर भारी
दो० क्षत्री योधा होइ कर समर पीठ जो देहिं ॥ ॥ ॥
ग्रंथ निंदि महं पुरुष को हत्ति सीम पर लेहिं।२३।
वेद शास्त्र कर निंदा करहीं ॥ संत भक्त सों द्वेष न धरहीं ॥
हरि हर चरित जे चित नहिं आई। तीन पाप मम शिर पर आई
रहि अनधन तिय पति को त्यागी। मंगत दुरावहिं परम अभागी
पर घर जाइ त्यागि निज भर्ता। सो अघ मम शिर देवहिं कर्त्ता
भूत बहू शुभ मारग चलहीं ॥ देइ दुःख नहि वृथा जो जनहीं
रूप कुरूप ताहि कर होई ॥ ॥ मंगत भीख न नहि देवहिं कोई
बंधु बधू सन वैर जो करहीं ॥ सो यहि जन्म मरत्य भव तरहीं
गुरु न्यून जो जनमन देखी ॥ तेहि संपति क्षय होइ विशेषी
दो० सुरदा बसन वोढ़हिं जड़ पाथिक बज्र हरि जोइ
अनाचार होइ नापसा करि मतंग पशु होइ।२४।
स्वामी सेवा करै न दासी ॥ ॥ मकर नारि जनमै वह बासी ॥
जो कन्या बेचहिं अति पापी ॥ हिंसक योनि जन्मु कृत थापी
पति सेवा करि तिय अति सूरवा। पुरुष जो व्यर्थ देइ तेहि दूरवा
होइ गृह भंग मरै तेहि नारी। जन्म जन्म दुख टरै न टारी ॥

ब्राह्मण रस विक्रय देइ लेई। मदपी जन्म पुनहि विधि देई ॥
बृन्द बृन्द कर करी अपमाना। राक्षस ब्रह्म होइ तेहि जाना
कोउ उपकार करहिं जो प्रानी। मानै न ताहि भूलि अभिमानी
वह कृतघ्न जंतु शठ होई ॥ ॥ पूरब किये कर्म फल सोई ॥
दो० विप्र श्राद्ध महं खाइ कर जो करि इस्त्री भोग ॥
सूकर कूकर जन्महीं तहां न संशय योग ॥२५॥
व्यवहार समय महंदम बिचवैठे। मिथ्या साक्ष देइ मन ऐंठे ॥
पुरुषा स्वर्गी नर्क तेहि आवहिं। असत सारिव फलश्रुति ईमिगावहिं
दुइ नारी करिके जो लोगा ॥ यकहिं निरादरि यक सुखभोगा
पूरब जन्म होइ तें किल्बी ॥ श्वान देह बसिहहि मन लिल्बी
पूर्व जन्म जल रोकहि जोई। सुतअरु मल निरोध तेहि होई
साधु निंद जो करहि अभागी। गिरिहहिं रत्न सद्य तेहिलागी
देवालय महं भोजन करहीं ॥ कृश शरीर तेहि सबहि रहहीं
जो नारी नृपकी करि निंदा। तेहि कर जठर अगिनि होइमंदा
दो० गहण समय भोजन करै पित्त रोग तेहि होइ ॥
पर शिशुले परदेश बिक सब तन कुष्ठी होइ ॥२६॥
गर्भ पात जो करइ कुनारी ॥ बंध्या होइ जनम पुनि बारी ॥
सुर मंदिर को जोन गिराई ॥ तेहि कर अंग अंग होइ जाई
तियहिं देइ दुख बिन अपराधा। यक अंग जाइ ताहि कर व्याधा
ब्राह्मण धन हरइ अघ गाढ़े। ताको बंश कबहुं नहिं बाढ़े
माता पिता संत गुरु देवा ॥ जो जन करइ न इनकर सेवा
सुई बचन क्षय सुनहु अहेरी। छिन छिन अटकहि बोलत बेरी
दंड आदि जे विप्रहिं मारे ॥ ॥ चमक मृगी रुज तन होइ सारे
वाद विवाद संत मन कीन्हे। दीर्घ दंत तेहि कर होइ चीन्हे ॥
दो० अश्वत्थादितरु तोरइ देव द्वार के जोइ ॥

मांगि भीख पंगुन होइ तदपि मिलहिं नहिं सोइ।२७।
सूतक घरके अन्न जो खाई। नाना उदर रोग होइ आई ॥
वस्तु सुगंध भोगु सब त्यागिहि। होइ दुरंध सकल तन पागिहि
ब्राह्मण को करण जो नहिं देही। मरइ पिता बालक पन तेही
जल तट छांह दोरि जो रूखा। थल नित भरमहिं पावन रूखा
ब्राह्मण को जो देकर आशा॥ देइ न कबहुं चलाव निराशा॥
सो पुनि जन्म अन्न अनकरहीं। भरमत नितहिं फिरहि घर घरहीं
करइ पुत्र सों बैर अगूती ॥ टोर विवाह दीन को पूती ॥ ॥
तिनके नारि को बरवट रोगा। होइ निश्चय बंध्या अघ भोगा
दो० मन करि निग्रह विप्र को बांधहि खल जरा जोइ
भानु पुत्र संडसिन करी तेहि करटोरहिं दोइ।२८।
पावन ग्रंथ जो सुनइ न काना। जन्म जन्म होइ बधिर अयाना
करइ जो पीड़न मातु पिताको। होइ क्षय कारज नित सबवाको
सब सुर निंदि एक भजि जोई। एकहि पुत्र ताहि को होई ॥
जो चंडाल गऊ को मारी ॥ तेहि पूरब मिलु कर्कश नारी॥
मारे वृषफल मुनि निश्चयधर। अतिहि मूरख सुत होइ ताहि कर
मूके पशु जल तृण बिन मारे॥ तेहि संतान मूक होय सारे॥
जो पतिव्रत कर धर्म नशावहिं। ते कुरूप कर्कश तिय पावहिं
व्याधा बहुत जीव संहारा॥ लोवा जन्म होइ संसारा ॥
दो० करइ न्याव गुरु केर जो अति चंडाल असाध
जन्मतहिं मरु पुनः पुनः सुन मनाचिनदे व्याध२९
रवि सन्मुख लघु शंका करहीं। बालकपन सित कुष्ठ भरहीं
मरे बाल हित रोवहिं कोई ॥ हंसे ताहि अपुत्रि वह होई ॥
कहि मुनि व्याध सुनहु अब बाता। देइ रति पतिहि आज मैं ताता
ना आवहुं तो जो अघ गाई। मम सिर ते सब बैठहिं आई ॥

कहत व्याधमन शंकित भारी। धन्य धन्य मृगज्ञान तुम्हारी
आउ वेगि आपन गृह जाई। लेइ संभारि सत्य सब भाई॥
सुनि जल पीकर तब मृगनारी। आश्रम गई मनहि सुखभारी
वह जब गइ मृग आयउ पाछे। तेहि कर पति जल हितमन आछे
दो० देखि व्याध शर रैवंचेउ बोलत मृग अकुलाहि
पतिव्रत गुणावतिनारिमम आउं पूछि मैं ताहि।३०
देउं शपथ जो न आउं प्रमाना। प्रेम भक्त की तजन करि नाना
कथा रंग भंग करि निरबंसी। होइ तेहि गतिमोहिमिलुनिःसंसी
बद उक्ति जो ब्राह्मण कर्मा॥ शूद्र जाति कहुं करि वह धर्मा
परहिं नरक तें अधम अभागी। चलु परपंथ ताहि अघ लागी
तीरथ यात्रिन्ह रोकहि जेई। करि बटपार बसन धन लेई
तेहि सब अंगव्रण होइहि संता। भीम नर्क परि कल्प अनंता
शास्त्र उक्त को पंथ न भाई। सूद्र कूट करि कवित सोहाई
लखि अघपर हरि विप्रकोमाना। बहुद्द नबंश ताहि करजाना
दो० हरिहर दिवस उपोषणहिं करि द्वादशि जो नाहिं
निश्चय कर पग क्षीणाहोइ श्रोता सुनोसब ताहि।३१।
शिव हरि प्रतिमा फोड़हि जोई। विघ्न करहिं हरि भक्तहिं कोई
शिव महिमा करनिंदा करही। नरक कीट होइ सब अघ तरही
व्याधि ग्रसित रहे माता द्रोही। पिता द्रोह बरर विचरोही॥
नरक मरहि गुरु द्रोही जोई। विचरहि भूतप्रेत होइ सोई॥
बहुत अहार करत हिज देखी। तेहि जो हांसि दुर्बुद्धि बिशेषी
तेहि सुख होइ अरोचिक रोगा। पावन स्वाद जन्म भर भोगा
कन्या धेनु बेचि कर प्रानी॥ लेइहि द्रव्य परम सुख मानी
ते शठ चंड होइ मंजारी॥ ॥ आपुनिहि शिशु भक्षहि सारी
दो० कन्या भगनी पतिव्रतहिं काम दृष्टि जो देखि।

होइ प्रमेह पथरी तेहि गोपथ छेक विशेषि।३२।
निंदि प्रसाद लिंगशिव फोरी। सामग्री भूषण सुर चोरी ॥
देव प्रतिष्ठा करहिं निरादर। पांडुरोग होइ तिन कहं सादर
विश्वासघात मित्रको पारहिं। जननि जनक गुरु संकट डारहिं
गो द्विज बधत निवारन जोई। देखि नयन अंग सामर्थ होई
ब्राह्मण को बाहेर बैठाई ॥। आपु अन्न घर भीतर खाई
समधी ससुर आदि आदरही। उदर शूल उनके दुख करही
पंचयज्ञ द्विज नहिं करि मूढ़ा। महिसुर सदन जरावहिं क्रूरा
पथिक सामग्री लेइ चोराई। करि अपमान संत मंदराई
दो॰ गुरु को लक्षण लखन हित करइ कपट जो कोइ
नाना दोष लगावहीं वंश वृद्धि नहिं होइ।३३।
द्रोह पित्त सन करइ जो निंदू। अरु जे सतावहिं ब्राह्मण वृंदू
शिव गुण सुनत शंक मन जाई। तो वे पिता बीर्य नहिं होई
सुनहिं न शिव गुण सादर जोई। कर्ण मूल रुज निश्चय होई
व्यर्थ बचन जो जल्पु अपारा। दादुर जन्म होइ निरधारा ॥
जहां पुराण होइ गुण शंकर। तहं सोवे अहि होइ भयंकर
छल अपवाद कथा के बीचा। करइ प्रेत तन पावे नीचा
देवार्चन जेहि चित नहिं लागी। द्विज पूजन हित आलस जागी
करि अपमान तीर्थ पर सादा। खावहिं श्वान तनहिं निषादा
दो॰ कह मृगरेस पाप सम पर सिर भार अपार ॥
हरषि व्याध मृग बरहिं कहि निज थल जाहु उदार।३४।
पुनि पुनि व्याधा नाम उचारी। गद गद कंठ नयन बह बारी
पुनि लगि टोरन बेल को पाना। डारत शिव पर अति हरषाना
चारिउ पूजा चार पहर को। भूरण भयउ जागरण हरको
निश्चय सात जन्म को पापा। जरेउ मूल लौं सबही तापा

दिशि प्राची तिय तव मुख धोई। अहि अरि जेष्ठ उदय इमि जोई
छवि इमि दीरघ तअरुण ललामा। जिमि कुंकुम मंडित प्राची बामा
तेहि छिन पुनि तीसर मृगि आई। देवत व्याध हिलरि अकुलाई
कहि मोहि जनि मारहु सुनु बाता। शिशुहिं पाय पय आवहुं ताता
दो० व्याध हर्ष अति अबय ही धौं का कहि शस्त्रार्थ
चाहि सुनन कहि मृगि शपथ दै पुनि जाहु यथार्थ।३५।
कहति मृगी सुनु व्याधा बानी। तृण अरु नाम जराहु जो पानी
पीयत जल रोकहिं द्विज गाई। होहु छहु रोग तिनहिं सुनु भाई
जे कोउ ब्राह्मण को धन हरहीं। तेहि कर पुरुषा रौरव परहीं।
जननी सुत विच द्वैष करावे॥ पति तिय मध्य विरोध बढ़ावे
सुर ब्राह्मणहिं देखि करनाथा। करि परनाम नवावन माथा
कठिन बचन कहि निंदहिं मन्दा। काटहिं कर पद दिन कर नन्दा
पर कर वस्तु चोरावन देषा॥ करहिं रोष पुनि आपु अशेषा
साधू आदर मन दुख पाई॥ तिनकर लोचन नितहिं सिराई
दो० पुस्तक चोर मूक होइ रत्न चोरि होइ अंध॥
होइ महिष हंकारि जड़ हिंसक बाज प्रबंध।३६।
भक्त को निंदा करइ जो भाई। ताकर मुख दुरगंध बसाई॥
जो पितु मातुहि मारु अभागी। लूजा जन्म होइ तेहि लागी
रहि धन जो अति करि कृपिनाई। थोरहु खरचत मन सकुचाई
सो तेहि धन पर होइ भुजंगा। भीम रूप बैठहिं शठ बंगा
भिक्षा मांगन यती जो आवे। तेहि को जो रीते बहु रावे॥
कोपहिं शिव अति तापर अधिका। तेहि कर धन सम्पति जरु बधिका
ब्राह्मण भोजन जहं कहुं होई। बिन नेवते द्विज आवइ कोई
आपुहि बैठे करिके ढिठाई। तेहि कदापि कोउ देइ उठाई
तेहि समान अतिहीं दुरचारी। नाहिन दूसर सुनु श्रुति धारी

कहेउ कुरंगिनियहिविधि गाई। आगे कथा सुनहु मुनिराई
दो० व्याधा धर्माधर्म सुनि सहज बोलत सूध ॥
निज आश्रम कहं जा शिशुहिं धाउ पियाइ दूध।३७।
तात काल मृगि मुनिइ भिक्षाना। गइ निज आश्रम करि जलपाना
बालक को तिन दूध पियाई। कीन्ही तृप्ति शिशुहि मन लाई
प्रथम केरि मृगि बाल बियानी। पति रति दीन्ह हितिय सुखखानी
पुनि मृग कहेउ कुरंग बचन प्रकासा। चलहु तुरत अब व्याधा पासा
बालक युत पुनि सब मिलिसंता। व्याध निकट सब आयतुरंता
कहत मृगा तेहिकाल विचारी। प्रथमहिं व्याध मोहि तैं मारी
कहहिं मृगीइमि शोभत नाहीं। हम तिय पतिके आगे जाहीं
कहहि बहुरि शिशुबुद्धि अगाधा। मारहि हमहिं प्रथम सुत व्याधा
दो० बाढ़ेउ मन व्याधा भयो सुनत मृगन्ह को बात
चरणा परत मृग गणके बहु नैनन सो जलजात।३८
कहि मम जन्म धन्य संसारा। भैमुख तुम्हरे सुनि निरधारा
पाप जन्म बहु के सब जरेऊ। देह मोर पावन तुम्ह करेऊ॥
गुरु अरु देव पिता पुनि माता। अब सब तुमही मम सुखदाता
यह संसृत मिथ्या कर भावा। सुत वनिता झूठे अति गावा
व्याध सप्रेम कहत परमानू। अवश्य मोहि मिलिहै शिवधानू
तेहि क्षिण आवत भयो विमाना। शिवगण बैठे तापर नाना॥
पंचवदन दशभुजा विराजे। बाघाम्बर पहिरे छवि छाजे
तेज:पुंज जिनके अति भारी। सब दिशि चमकउमणि उजियारी
दो० बाजा किन्नर बजावत विद्याधर आलाप ॥
बरषत सुर कुसुमावली दिव्य पाणि तें आप।३९।
मृग गणापायदिव्य अति अंगा। करि प्रणाम व्याधा सप्रंगा
सुरहिंकहतहरहरणिचजयजय। पलटि कलेवर बहु दिव्यभय

पारस परसि दिव्य होय लोहा। दश भुज व्याध पंच मुख सोहा।
शिव गण बहुत बिनय तें हिलाई। दिव्य बिमान लिये बैठाई॥
मृग गण पायउ तन अति सूधा। चढ़त बिमान सकल भे सुंदर
व्याध को अस्तुति बारंबारू। सुर गण करत सकल मिलि प्यारू
व्याधहिं लै कैलाश हिं गयऊ। मृग उडुगण बिच शोभित भयऊ
मृग नक्षत्र सोइ नभ महं सोहैं। हैं प्रसिद्ध सबहीं जग जोहैं॥
सत्यवती उर रत्न को खानी। भरे प्रेम रस व्यास बखानी।

छन्द

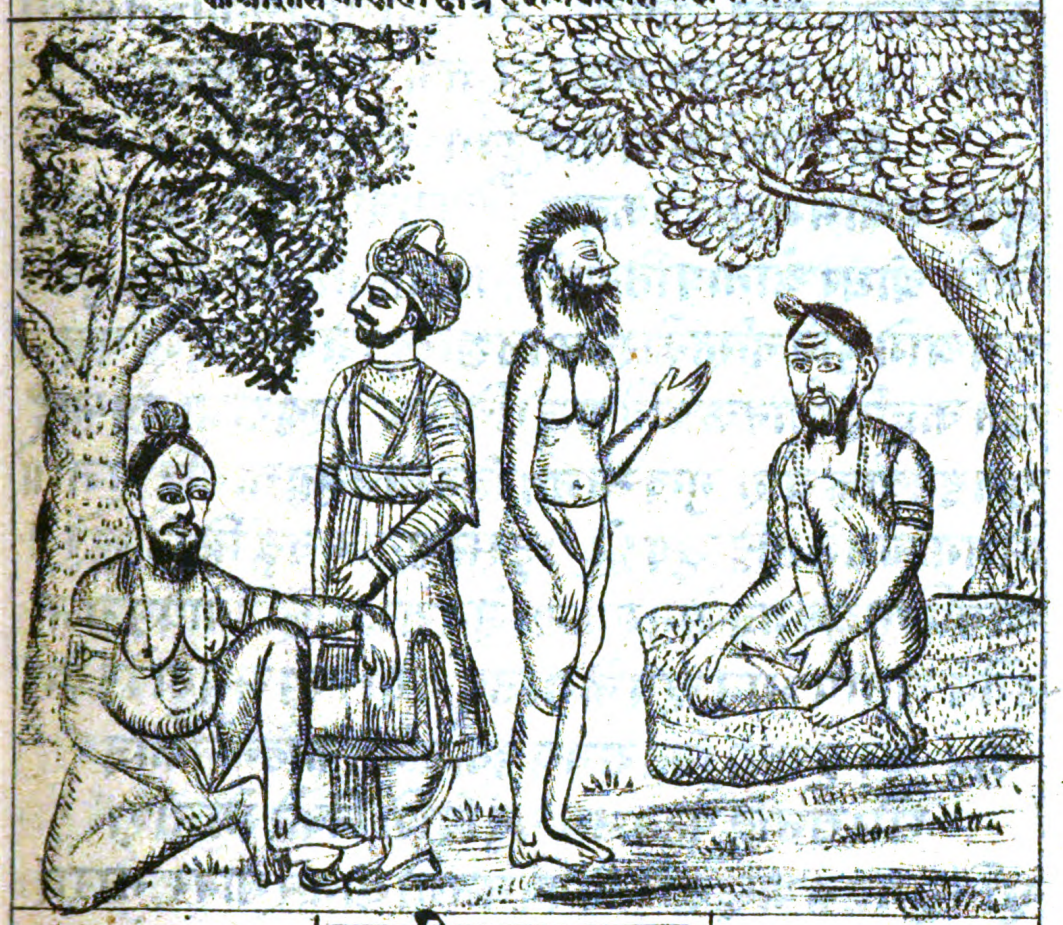
कहि व्यास लिंग पुराण सज्जन सुनहिं तें सुख पाइये
परानंद करिश्रुति दिवश निशि अति प्रेम तें चित लाइये
धन्य शिवरात्री व्रत होय क्षय पाप सबहीं सुनतहीं॥
जे पठहिं यहि श्रुति सुचित चित नर पुण्य वत श्रुति कहेतहीं१
सुजन श्रोता श्रुति पियत सुरसत शंभु लीला सुचि सुधा।
निंदक कुतर्की सोइ असुर किमि पावय हिं जिनहीं मुधा।
गिरिजा रमण पद कंज श्रीधर मधुप होइ अति सुख लहे
तीर गोदरी भ्रमर संग जिमि गजराज तिमि आश्रित रहे।२।

सोरठा

पवि शशि कुंद सुगौर दयापूरि गिरिजा रमण
तरि व्याधा अपि थोर शिव सम कौन कृपालचित।१।

इति श्रीस्कन्दपुराणे ब्रह्मोत्तर खण्डे
शंकर चरित सुधा भाषान्तर
भाषा गजराज कृते
मधुरद्वितीयो
ध्यायः।२।

राजा कल्माषपाद का गुरु वशिष्ठ के शापसे भूत होजाना फिर ब्रह्महत्या लगना फिर गौतम ऋषि की आज्ञासे गोकर्ण क्षेत्र दर्शन करनेसे मोक्ष पाना ॥



तृतीयोऽध्याय

सो० अब तीसर अध्याय कहुं शिव गुरुपद ध्यान धरि।
सुनतहि पाप पराय दृक विलोकि जिमि मेष गण ॥१॥

जय जय शंकर मंगल धामा। दाता निजजन उर आरामा ॥
सुरतरु भक्त चराचर हेतू ॥ नामा नाम तीत वृष केतू ॥
पद्मजतात भगनि मन रंजन ॥ षट सुरवपितु मनसिज मद गंजन
ब्रह्मानंदि भाल शुभ लोचन ॥ भव भंजन त्रिपुरा मद मोचन
वामदेव शिव सद्योजाता ॥ पति ईशान तत्पु विख्याता ॥
तिय पु अहं नटेश्वर रूपा ॥ गिरिजा रंग गिरीश अनूपा ॥
भोगि विभूषण धृति शिर गंगा। सब व्यापक अंधक मद भंगा

पारस परसि दिव्य होय लोहा। दश भुज व्याध पंच मुख सोहा।
शिव गण बहुत बिनय ते हिलाई। दिव्य बिमान लिये बैठाई॥
मृग गण पाय उतन अति सुघर। चढ़त बिमान सकल भे सुंदर
व्याध को अस्तुति बारंबारू। सुर गण करत सकल मिलि याहू
व्याधहिं लै कैलाश हिं गयऊ। मृग उडुगण बिच शोभित भयऊ
मृग नक्षत्र सोइ नभ महं सोहैं। हैं प्रसिद्ध सबहीं जग जोहैं॥
सत्य वती उर रत्न को खानी। भरे प्रेम रस व्यास बखानी।

छन्द

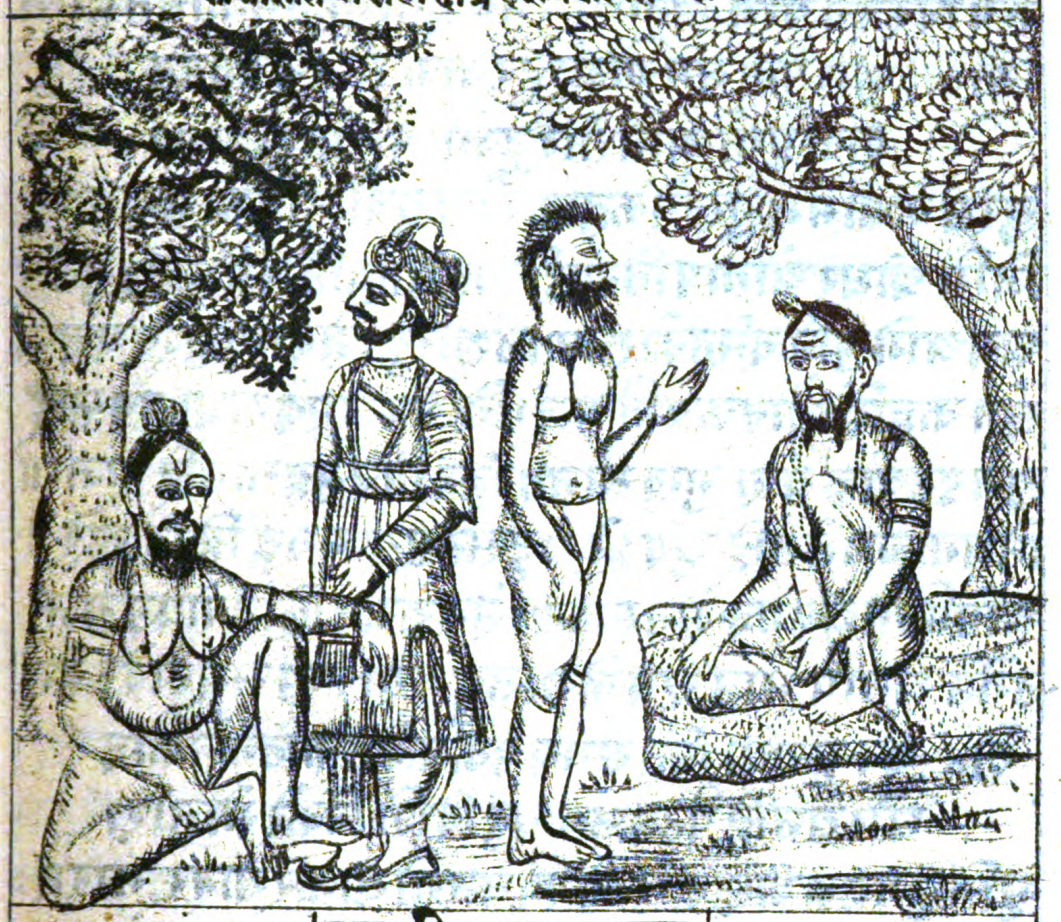
कहि व्यास लिंग पुराण सज्जन सुनहिं तें सुख पाइये
परानंद करिश्रुति दिवश निशि अति प्रेम तें चित लाइये
धन्य शिव रात्री व्रत होय क्षय पाप सबहीं सुनत हीं॥
जे पठहिं यहि श्रुति सुनित चित नर पुण्यवत श्रुति कहेत हीं१
सुजन श्रोता श्रुति पियत सुरसत शंभु लीला सुचि सुधा।
निंदक कुतर्की सोइ असुर किमि पावय हिं जिन हीं मुधा।
गिरिजा रमण पद कंज श्रीधर मधुप होइ अति सुख लहे
तरि गोदरी भ्रमर संग जिमि गजराज तिमि आश्रित रहे।२।

सोरठा

पवि शशि कुंद सुगोर दया पूरि गिरिजा रमण
तरि व्याधा अपि थोर शिव सम कौन कृपालचित।१।

इति श्री स्कन्द पुराणे ब्रह्मोत्तर खण्डे
शंकर चरित सुधा भाषान्तर
भाषा गजराज कृते
मधुरद्वितीयो
ध्यायः।२।

राजा कल्माषपाद का गुरु वशिष्ठ के शाप से भूत होजाना फिर ब्रह्महत्या लगना फिर गौतम ऋषि की आज्ञासे गोकर्ण क्षेत्र दर्शन करनेसे मोक्ष पाना ॥



तृतीयोऽध्याय

सो० अब तीसर अध्याय कहुं शिव गुरुपद ध्यान धरि।
सुनतहि पाप पराय दृक विलोकि जिमि मेष गण ॥१॥

जय जय शंकर मंगल धामा। दाता निजजन उर आरामा ॥
सुरतरु भक्त चराचर हेतू ॥ नामा नाम तीत सुख केतू ॥
पद्मजतात भवानि मन रंजन ॥ षट सुरवपितु मनसिज मद गंजन
ब्रह्मानंदि भाल शुभ लोचन ॥ भव भंजन त्रिपुरा मद मोचन
वामदेव शिव सद्योजाता ॥ पति ईशान तत्पु विख्याता ॥
तिय पु अर्द्ध नटेश्वर रूपा ॥ गिरिजा रंग गिरीश अनूपा ॥
भोगि विभूषण धृति शिर गंगा। सब व्यापक अंधक मद भंगा

रूप निरंजन परम अतीता । त्रय गुण रहित भक्त चित हीता
सो० क्षीर फेन सम गोरहे हर जस जीवन सकल
कृपा पूर्ण अति तोर दूजो अध्या पूर भै।१।
सुरस कथा मम सुरतें कहाए। शिवरात्री महिमा मन भाए
जिमि श्रीधर श्रोता प्रति गाई। तेहि प्राकृति मति कहेउ सुनाई
अब आगे पुनि चरित कोरचना। उच्चारहु शिव मम सुरव बचना
सूत कहहिं शौनक प्रति गाई। निमिषारण्य कथा मन लाई
सुभ इक्ष्वाकु बंश सुख साजा। रहेउ मित्र सह नामहि राजा॥
निगमाचम तेजहि नृप पूरे । दूसर इन्द्र मनहुं छिति रूरे॥
अगणित हय गज सेन समाजा। सेन बसन छिति नोपेउ राजा
उगेउ प्रताप भानु नृप केरा। उदुगण रिपु सब टारेउ डेरा
दो० बन मृगया नित समय इक चलेउ कठिन लै फौज
घोर बनहि पैठत भए चहुं दिशि निकरे सौज।२।
मृगि मृगवृक भालू हरि गणा। बनगो बानरि बानर भाणा
शश जम्बुक को पांति अपारा। यथा योग नृप करत संहारा।
बदक केकि चात्तक कस्तूरी॥ मृगज बिलार झुंड भर पूरी॥
चकवाक खग अति अकुलाने। नकुल हंस जहं तहां पराने॥
मारे नृप बहु जीव विचारी॥ तिन महं एक निशिचर हु संहारी
महा भयानक नाम मय मेरऊ॥ असुर देह नृप सन्मुख गिरेऊ
दारुण परम बंधु तेहि केरा॥ दूरहि तें भ्राता गति हेरा॥॥
कपट कल्प मन महं वह नीचा। बंधु बैर लेउं अवसर बीचा।
दो० गए नगर नृप मित्र सह धरि खल मानुष भेष॥
असित बसन वेष्टित लए दर्वी कांध विशेष।२।
नृप सन जाइ भेंटि कहि बाता। रूप शास्त्र निपुण मैं ताता।
अन्न सुशाक सुबास विशेषा। करउं विबुध सुर भूलहिं देखा।

पाक सदन तेहि गयि नृप गई। पितृ तिथी जब नृप कर आई
मुनि वशिष्ठ गृह नृप वर गयऊ। गुरुहि विनय करि लावत भयऊ
भोजन हित आये विधि नंदा। वह खल कपट चेत करि छंदा
रांधि नरामिष साग अभागे। लाइ परसि धरि मुनिवर आगे
मुनी वशिष्ठ कालत्रय ज्ञानी। सब ऋषि मध्य शिरोमणि जानी
जिय सब जानि कपट मुनि लयऊ। शाप देत नृप को तब भयऊ

दो॰ होइ राक्षस बन बीच रहु जहां मिलै न अहार ॥
विप्रहि परसे मांस नर पापी मंद गँवार। ३।

कह नृप भेद न जानौं याको। बौलिय मोर रसोइया ताको
रूप शास्त्र हौं निपुन बखाना। रखेउं ताहि तब नहिं छल जाना
सो खल तुरतहिं तेहि क्षण भागा। गुप्त रूप धरि निज बन जागा
गुरु पर कोप कठिन नृप कीन्हा। कारण कौन शाप मोहि दीन्हा
मद्दूं तोहि गुरु दैहौं आपू ॥ ॥ अस कहि कर जल लीन्हेउ आपू
तबहिं राउ की जो पटरानी। मदयंती अति पुण्य की खानी
रूप मात्र सुंदर जिमि हरणी। चालुरि मनहु शारदा बरणी॥
कहि मदयंती सुनु पति बानी। करि विचार देखिय नृप ज्ञानी
देन आप गुरु को अधिकारा। नहिं शिष्यहिं सर्वथा भुवारा

दो॰ शापत गुरु को भुगत ध्रुव नरक कल्प परयंत
कह नृप सुंदरि चतुरि प्रिय सांची कहि मदयंत। ४।

पर करजल तहि देन भुइ डारी। उपजुन पीक जरद छिति सारी
पुनि नृप श्रपनेहि दोउ पग कपर। डारेसि वह जल करि मत सूक्ष्मर
नृप ह्वै पग तब जानु पर्यंता ॥ भयउ दग्ध अरु श्याम तुरंता
जानु पर्यंत कुष्ट भरि गयऊ ॥ कल्मषपाद नाम नृप भयऊ
सब वृतंत यह मुनि सुनि आपू। भैं तब करत अनुग्रह आपू ॥
हादश बर्षहिं होकर मोचन। आवहु निजपुर कीयन सोचन

अंतर्धान गुरू कहि भयऊ । कल्मष पाद दनुज होइ गयऊ
क्षुधित तृषित निशि दिन बन माहीं। भरमत सकल जीव धरि खाहीं
दो० देह बिशाल भीम अति हिय सेंदुर दनुज कपाल ॥
दीघे दंत कढ़ि डाढ़ सित बाहिर मुख बिकराल।५।
रह जेहि बन तहं जीव घनेरा। खायसि सब भरमत चहुं फेरा
घूमत वह निशिचर बन ओसे। सुनहु कथा आगे भइ जैसे ॥
विप्रकुमार एक बन सुंदर। द्वादश वर्षको देखिसि निशिचर
रहि सुकुमारि संग तेहि नारी। कौतुक क्रीड़त हो बन भारी ॥
वह द्विज सुतहि दनुज धरि लीन्हा। भक्षण हित उद्यत चित दीन्हा
तब द्विज तिय अति डरि अकुलाई। दुखित अधीरज बचन सुनाई
हे नें सुनहु मित्र सह राई ॥ ॥ गो ब्राह्मण प्रतिपालक भाई
दयावंत सत वर्ती राजा ॥ ॥ मोर कंत जनि मारु अकाजा ॥
दो० लोटति भुइँ पर सुन्दरी करुणा बोलति बानि
मांगति अंचल पसरि कर दे अहिवात सुजानि।६।
नहिं छोड़िसि तब पग धरि लीन्हीं। देहु कंत कहि रोदन कीन्हीं ॥
निर्दय दैत्य तदपि नहिं छोरा। तब तिय पति कर धरि कर जोरा
नैन स्रवत जल स्वेंचति नारी। तब खल तिय हिं दीन्हि झटकारी
गिरी भूमि मूर्छित होइ बाला। उठि सचेत करि बिनय बिशाला
भक्षसि मम पति को छपड़ेशा। महा पाप जनिले निज शीशा
दुर्लभ स्वर्ग नर्क महँ राजा ॥ अंत काल बसिहहु दुख साजा
तिय करुणा खल चित नहिं दीन्हा। देखत तहीं हिन भक्षण कीन्हा
पंजर अस्थि डारि तिय आगे ॥ दीन्ह डकारेउ मंद अभागे ॥
दो० ठोंके भाल विलाप करि रोदति अति दुख भार ॥
गिरत धरणि पर पीठि उर कछु तन नाहिं संभार।७।
ले सूतिका सुख शिर निज डारे। तेहि बन कौन बुझावन हारे

आपदेत भइ पुनि द्विज नारी। नृपहिं दुखितमनकोपित भारी
ऐसी आप देत भइ बाला ॥ । मेटिन सकहिं त्रिदेव त्रिकाला
कहि निज तिय मद यंती साथा। कबहुं करसि जो रति नरनाथा
मैथुन संग जाइ तव प्राना ॥ तातकाल तिहि छन अज्ञाना
कहुं केवल आलिंगन कीन्हा। तबहुं मरण तुव सुनु चित दीन्हा
अपर कोउ तिय सन आलिंगन। सुखवन मिलिहिं चंडालधरहुमन
परतिय जानि करहु जो सूरवा। प्राण निकसि बहु पावहु दूरवा
मम सुख खंडन कृतइमि तोरा। भुगतहु कर्म आपलेहु मोरा।
आप देइ इमि मुनि पति केरी। गोला अस्थि कीन्ह तेहि बेरी
दो॰ अस्थि गोल लै बैठि तिय ध्यान धरी पति केर
सत्य अग्नि प्रवेश करि मुक्ति भई तेहि बेर ॥८।
सो॰ इत द्वादश गे वर्ष मुक्ति भयउ नृप आपतें ॥
मन महं कीन्हीं हर्ष राउ आइ निज नगर महं ॥३।
आइ सदन नृप सब इतिहासा। रानी सों कहि बचन प्रकासा।
सुनि बिलाप करि ठोकि कपारा। कहति वंश क्षय भयउ भुवारा
अब पति ब्रह्मचर्य्य धरि नेमा। प्राण बचावहु निज करि क्षेमा
मन चंचल बहु करि पति रोकू। कोउ तिय सन जनि बोलहु धोकू
नारि सेज पति रैवर भंगारा। भयउ आजु तें तुमहिं उदारा
भूप शिरोमणि तलफत कैसे। कौड़े बाघ लोह घर जैसे ॥
जिमि गारुड़ी भुजंग बिशाला। टोरि दंत सब करे बिहाला
महा वृषभहिं नाथ कर प्रानी। करहिं दीन जिमि मुनि मुनिज्ञानी
दो॰ जिमि अंकुश तें बशकरें मत्त नाग को लोग ॥
कल्मष पद तिमि रहत घरमहि नित विपतिवियोग ॥९।
सो॰ आगे संतति वृद्धि होइहि कौन उपाय करि ॥ ॥
धर्मागम मति सिद्धि देखत नृपति बिचारि बहु ॥

मदयंतिहि वशिष्ठके साथा ॥ दीन्ह भोग आगमसत नाथा ॥
बीये अमोघ पूर मुनि केरा ॥ परत दिव्य सुत भयउ उजेरा
बढ़ेउ बंश इत उत मुनि राजा ॥ निकरे तब मृगया कर काजा
राउहि जिमि घरबन तिमि लागा ॥ दीन्हे सकल भोग को त्यागा
मन मनोज करि उठत बिकारा ॥ ज्ञानकुश नृप करत संभारा
मोहि मीच अरु तियहि विधवपन ॥ होइ कर्म नहिं करिय कबहुंमन
निजहि कर्मगति गहन अपारा ॥ अति विचित्र आरब्ध पसारा ॥
दैवहिं दोष देइ किमि झूठहिं ॥ बिनु भुगते केसेहु नहिं छूटहिं

दो० घूमत बनहिं उदास नित पीछे उलटि जो देखिय
कठिन पिशाचकु भीमतनु पापीटहिंढाढ़ विशेषि ॥१०॥

पूरब बधि नृप दम्पति जोई ॥ पाछलगी द्विज हत्या सोई ॥
घूमत राउ तीर्थ सब आयो ॥ पर हत्या नहिं छोड़ि कदायी
नहिं छोड़ति सोवत अरु जागत ॥ अतिहि भीम रदकटकट चावत
व्रत उपास बहु कीन्ह भुवाला ॥ देत दान नितहीं बहु शाला ॥
ऐसहि अमित भ्रमत दुख पावा ॥ मिथिला नगर निकटहि आवा
बन श्री देखत आनंद आछे ॥ पर द्विज हत्या ठाढ़ी पाछे ॥
ऐसी द्विज हत्या बल नाना ॥ कबहुं न करिय विप्र अपमाना
काम क्रोध युत अरु गुण छोरी ॥ तदपि विप्र पूजिय कर जोरी

दो० नारद भृगुपति भृगुमनिहि रखि हरिसबके मान
भृगु पदांक उर भूषण किये विष्णु जग जान ॥११॥

सो० वर्ण अठारह मुख्य जानि द्विजहि करु बैरजनि
कल्मष पद महि दुख्य अपर जीव किहि लेख महं ॥५॥

लागे तरु फल बन बहुताई ॥ सौरभ डार भूमि नियराई ॥
पो फल चंदन अरुण विराजे ॥ कदलि छुहारा श्रीफल छाजे
पुन्नाग चंपा मालती ॥ * ॥ मोगरा जाइ जूइ यश वंती ॥

मलयागार कृष्णागर जाती। को बिदार कनेर जप पांती
बट पीपर दुमर देव दारा ॥ ।पारिजात अरु बकुल कतारा
कैथ बेल अंजिर पिचु मंदा। अर्जुन कदम लगे आनंदा ॥
ऐसे वह बन में विश्रामा ॥ छिनइक पायसि नृप आरामा
पर नृप पीछे अघ मति करिके। खड़िहिज हत्या वहारसभरिके
दो॰ सोचत आपन कर्मगति बैठि रहा नृपराज ॥
तेहि अवसर आवत भए मुनि गौतम सुखसाज।१२।
खुलेउ भाग नृप भानु उयेरी। अरु जिमि रंकहि मिलु धन ढेरी
की भूखे कर सन्मुख चलिके। आवइ क्षीर समुद्र उछलिके
मरत काल सुख देवत कोई। डारहिं अमृत शुभजन जोई
शोक ग्रसित चिंता मणि पाई। तैसहिं भाग उदय भै राई ॥
तपसिन मध्य मुकुट मणि आहीं। शिष्य पंक्ति लीन्हे संग माहीं
महाराज तपसी मुनि गौतम। राउ निकट ऋषि आये उत्तम
अष्ट भाव परणाम विधाना ॥ करत भूमि परि नृपति सुजाना
पुनि कर जोरि ठाढ़ भे आगे। अस्तुति विनय करत अनुरागे
दो॰ सहज संत दरशन भये जरि सब पाप मुनिंद्र ॥
कृपा दृष्टि जेहि देखिहौ होइ रंक वह इंद्र।१३।
पुनि नृप सन गौतम मुनिराई। पूछत भये क्षेम कुशलाई
राज राष्ट्र अरु मंत्री नगरे ॥ ॥ अहहिं न परम कुशल नृप सगरे
चारिउ वरण विप्रयुत कर्मा ॥ आहिं नचलत सकल निजधर्मा
पशुगण दास पुत्र अरु नारी । अहहिं न कुशल नृपति तव सारी
कहत नृपति मुनि दया तुम्हारे। हैं कल्यान क्षेम मम सारे ॥
पर मोहिं को प्रभु ऐसे लागत। भयउ दूरितें राउर आगत ॥
तुम्हरे दरश वेगि सम भारी। सब हिन हत्या होइहि न्यारी
पुनि निज पूरब कर्म बहूता ॥ बोलत नृप ऋषि सन विधि पूता

दो० कह मुनीश गोकरण अति पावन भू कैलाश
आवत हौं नहं ते नृपति महिमा अकथ प्रकाश।१४।
पति कैलाश रूप ओंकारा॥ उमा सहित तहं रहहिं भुवारा
सेवन जेहि किन्नर सुर दानव। मात्रा अर्ध पीठ तेहि जानव॥
शिव दरशन वह गोकर्ण केरा। ब्रह्मादिक को दुर्लभ हेरा॥
कमला सहित विष्णु तहं रहहीं। तप आचरण गहन हरि करहीं
पूरण कोटि प्रभा को सुंदर॥ सहित भवानी ठाढ़े शंकर॥
गर्भ कैवल्य पूरण सारा॥ शोभा बरणै कौन भुवारा॥
वासव सनकादिक अरु नारद। अहोरात तहं बसहिं बिशारद
जहं कर शिला वृक्ष जो सारा। हैं अवतार लिये सुर झारा॥
दो० अनुष्ठान करि व्यास तहं भृगु वशिष्ठ यम दग्न
क्षेत्र बसहिं गोकरण नित सुख समेत रहि मग्न।१५।
गौरी शंकर दरशन काजा। होइ सिरघसी भीर बहु राजा
नारद तुंबर निपुण सुगायक। जहं गावहिं शिव लीला भाय्यक
युथ गोकरण केर चहुं पासा। सब सुर भार खड़े करि आसा
सुरवर्ते गर्जहिं कहि शिव हर हर। अति आनंद प्रीति युत हिय भर
वेद घोष ऋषि जन करि पा वे। अष्ट नायका निर्तहिं आवे॥
गंधर्प किन्नर राग विशेषा॥ करहिं हर्ष अति होहिं महेशा
वह अति उत्तम है अस्थाना। तेजो मय प्रकाश घन जाना॥
घने वृक्ष लागे छवि नाना॥ भुवन प्रगट कैलाश बखाना
दो० मुक्त सिंहासन झलकत रवचित मणिन चहुंहार
चढ़े ऐरावत पूरब दिशि खड़े शची भरतार॥॥
दक्षिण रक्षा करि रविनंदा। पश्चिम द्वार वरुण आनंदा॥
उत्तर धनपति रहि शिव हेरा। प्राणमित्र जो शंकर केरा॥
कर्पूर गौर भवानी सहिता। तेज सुगंध विराजित अजिता

भूकैलाश अहै साक्षाता ॥ । साधु संत कर नैहर ताता ॥
करिय ध्यान वह मूरति केरा । महासिद्धि पूजन चहुं फेरा ॥
तेहि पाछे समीप चहुं पासा । कात्यायनि आवरणी बिलासा
भैरव आठ पूजि पुनि बारा । द्वादश भानु रुद्र पुनि ग्यारा
अहो रात तहँ बसहिं दुलासा । कल्मष पाद सुनहु दै श्वासा
दो० अष्ट बसू दिगपाल सब ठाढ़े जोरे हाथ ॥ ॥
अष्टसिद्धि नव निद्धि गण सेवहिं गिरिजा नाथ । २७
सो० कहत नृपतिसन बात सुनि गौतम गोकर्णाकर
महूं बसत हौं नाथ उहां निरंतर हर्ष युत । ६ ॥
लक्ष बरष तप करि निर्वाना । अपर क्षेत्र महं होहिं प्रमाना
सो गोकर्ण एक दिन कीन्हे । होहिं प्रसन्न सदा शिव चीन्हे
दर्श संक्रमण विधु दिन चोखा । शिव तिथि पर्व समय परदोषा
दधि अस्नान करत में सबहीं । सकल तीर्थफल पावे तबहीं
रावण कुंभकरण बीभीषन । अनुष्ठान किय तहँ तीनहु जन
सो निर्वाण लिंग को रावन । लायसि गिरिकैलाशतें पावन
सोइ लिंग अस्थापन राई । कीन्ह गणेश सुनहु चित लाई
सुनि शौनक बोले हरषाई । कहहु सूत किमि कथा बुझाई
दो० कथा सुरंग सुनन निमित पंथ निहारत कान
हमरे सकल मनोरथहिं पुरवहु सूत सुजान । २८
शौनक प्रति कहि सूत पुरानी । रावण मातु कैकसी जानी
वह नित लिंग पुजै चित दीन्हे । जल न पियै पूजा बिन कीन्हे
पंच धान्यको पिष्टी करिके । लिंग बनावै इच्छा धरिके ॥
रावण कर होइ कल्याना ॥ जय प्रापति सब ह्वै भगवाना
सघवा लिंग चोरि तहि लीन्हा । करि मनहेपडारि दधि दीन्हा
रावण मातु शंभु लिंग लागी । जल अरु अन्न दीन्ह सब त्यागी

कह रावण तव हित मैं भाई। मुख्य आत्मलिंग आनौं जाई
जननिहि रावण कहि परकाशा। अति साक्षेप गयसि कैलाशा
दो० दारुण तप अति कीन्हेहि चौंसठ कला प्रवीन
निगम भाग करि काढ़ि जिन सारा सार नवीन। २९।
चौदह विद्या मुंह पद जाके। भावत शंसुहि अति प्रिय ताके
दश मुख अद्भुत गान उचारी। स्वामी सन्मुख कीन्हेसि भारी
निज सिर काटि के तांत निकासा। करि बीणा स्वर साथ सँभारा
प्रेम भरे जब रावण गावा॥ उमानाथ संतोषहि पावा॥
रागोप राग नारि समेता॥ मूर्छना बपु कम्पित जेता॥
ताल संगीत सप्त स्वर जाना। गावत गान शास्त्र परमाना
गद्य पद्य कला रचि नाना॥ गीत प्रबंधहि नाम बिधाना
गावत प्रेम सहित शिव लीला। तोषेउ अद्भुत हर सुख शीला
दो० कहि शिव आजु प्रसन्न मैं मांगहु बर दश शीस
जो प्रिय दुर्च्छित गोर मन सकल देउं भुज बीस। २०।
कहि रावण हे सुनु कामारी॥ आत्मलिंग मोहि देहु पुरारी॥
तीन भुवन महं जे सुकुमारी। सुंदरि अतिहि देहु मोहि नारी
गौर कपूर हर्षि सुनि बानी। चक्रवर्ति भोला अति दानी॥
रवि शशि कोटि तेज अति गाढ़े। ऐसे लिंग हृदय तें काढ़े॥
पूरण ब्रह्मानंद निचोरी॥ दिव्य लिंग दारुछवि बोरी
सहस बाल रवि कांति न पाई। ऐसि प्रभा दश दिशि महँछाई
दियो लिंग रावण कर सोई। जो अतर्क्य ब्रह्मादिक तोई॥
जो मुनि जनके ध्यायन ध्याना। देवार्चन शौनक कर नाना
निगमागम पुराण जेहि जाना। दिव्य लिंग कर करत बखाना
दो० त्रिगुण तीत परब्रह्म जो जे अज अजित अनाम
सच्चिदानंद मोक्ष पद पाव योगि आराम। २१।

अंडकटाह विचित्र अनंता। जो रचि इच्छा मात्र तुरंता ॥
जेहि लखहीं नित निगमागम। दिव्य लिंग वह अति हि पुरातम
सोइ लिंग वह कर कहि रावण। हे त्रिनेत्र वै दोष नशावन ॥
शोभा सिंधु निधान सुनारी। सुंदरि त्रिभुवन महं छवि भारी
अपर अपरणा की छवि जेई। सर्वोत्तम तिय तुमि मोहि देई
पूरण ब्रह्म सच्चिदा नंदा ॥ ॥ नामा नाम तीत छवि कंदा ॥
कहि शिव दूजी उमा समाना। छवि विशेष नहिं सकल जहाना
न पुनि अपर प्रतिमा दशशीशा। दूहि समरचन सकहिं विधि ईशा
दो० चक्रवर्ति भोला तुमि सहज कृपाल महेश ॥
कहि यहि उमा दीन्ह मोहि लै घर जा लंकेश। २२।
भलेहि नाथ कहि कांध चढ़ाई। लीन्ह शिवा कहं निशिचर राई
कर तल दिव्य लिंग धरि लीन्हा। लंका नाथ चला सुख कीन्हा
दक्षिण पंथ चला बिबुधारी। सघहिं सुरगण खर भर भारी
गणा पति वीर भद्र षट सूरवा। गो सुत तड़ फड़ाहि करि दूरवा
हे त्रयनेत्र सदा शिव भोगा ॥ यह उदार पन कैसे तोरा ॥
दे कर बैठउ आपु भवानी ॥ हांसत पंच बदन सुनि बानी
कहि शिव रक्षा करहिं मुरारी। उमा केर बीचहिं दनुजारी ॥
द्रुत गिरिजा विनवति अकुलाई। दौरहु बेगि रमाधव धाई ॥
जलज नेत्र लक्ष्मी को भरता ॥ निगमागम बंदत सुर करता
नील मेघ वपु हँस मुख सोहीं। हे प्रभु बेगि छुड़ावहु मोहीं ॥
हे मधु कैटभ शत्रु मुरारी ॥ पीताम्बर धृति दश अवतारी
हे मदनांतक मानस रंजन। गुरु जनार्दन जग दुख भंजन
दो० काम अनेक अनूप छवि परम उदार खरारि
पाहि पाहि करुणा निधी दौरहु मोर गोहारि। २३।
सुनत विनय अति हरि दुख पाये। विप्र रूप धरि आगे आये

कहि हरि धन्य धन्य दशभाला। कहां मिलायो ऐसी बाला॥
कहि दशमुख यह शंकर प्यारी। पारवती मोहि दीन्ह पुरारी॥
तब कहि हिज यहि भूमि उतारी। बदन याहि कर देखु निहारी॥
सुनि उतारि भुइँ लखि दशशीसा। कुरुप कलक्षण अति नहि दीसा॥
सकल असंगल भू युग ऐंठे। रद बिन दृढ़ गाल दोउ बैठे॥
देखि विप्र अति गद् गद हांसा। पलटा दश मुख छोड़ि उदासा॥
पुनि निज कर हरितेहि थल थापी। भद्रकालि माता अस्थापी॥

दो० इन्हां शंभु हिग आइ कह निशिचरपति बिबुधारि
महा असंगल रूप की किमि दीन्हों मोहि नारि। २४।

कहि शिव सत्य वचन तव आहीं। वह डाकिनि तोहि शोभति नाहीं॥
बहु ब्रह्मांड रचि आपु दिखावै। पुनि वह तिय सब लुप्त नशावै॥
पुनि शिव निज अंग मैल निकारी। रचि निज हाथ रूप निहारी॥
जठर मया सुर के वह जाई। जन्मत भई सुनहु मुनिराई॥
तेहि स्वरूप सम दूसर बाला। त्रिजग नाहिं असि सुनहु भुवाला॥
चले सुगंध अंग कर तासू। भरमहिं अलि माला चहुं पासू॥
नाम मंदोदरि तेहि कर आही। प्रतिमा नाहिं अपर छिति माही॥
सो दशकंधर की पटरानी॥ पतीव्रता चातुरि गुण खानी॥

दो० सुता दान अरु शक्ति यक देहि मया सुर तोहि
सप्त कोटि मंत्रन्ह कर गहन शक्ति बल होहि। २५।

वह निर्वाण शक्ति कहि ईशा। होइहि प्राप्त तोहि दशशीशा॥
महा शत्रु पर छोड़सि जबहीं। होहि निधन छन लाग न तबहीं॥
सुनत बचन इमि निशिचर नाथा। लौटउ लिंग लेहु कर हाथा॥
आयउ पूरब थल हिग जहंवा। गणपति धेनु चरावत तहंवा॥
वाम नायक कर मिलि सुर झारी। कर जोरे अस्तुति अनुसारी॥
दिव्य लिंग को लेइ छोड़ाई। अस्थापउ पक्षय गणराई॥

किये बिनय जब अदिती सूता। लगि दशकंठहि सूत बहूता
आरो परा नहिं डारत आवे। डांटी मूत्र अतिहि दुख पावे
दो० छिति पर लिंग न धरत बन आगे कहे महेश।
करउं मूत्र लिय लिंग तौं अनुचित कहि दनुजेश।२६।
सिधि बुधि दानि तहां गणराजा। रूपवंत धेनु होइ द्विज साजा
कह दशशीश ताहि सन आतुर। धरहु लिंग यह छिन भर भूसुर
कहि द्विज दशमुख सुनु मम गाई। स्वारहु स्वार पराइहि भाई
लघु शंका हि तुव केतनी काला। लगहिं मोहिं सम कनक दशभाला
कहि दशमुख लघु शंका हि जाऊं। छन न लगहिं बेगहिं पुनि आऊं
तीन घरी पथ तोर निहारौं। नहिं आवसी लिंग भुइं डारौं॥
कहि अवश्य इमि निशिचर नाथा। दीन्हों लिंग विप्र कर हाथा
दूर यकांत अवनि पर जाई। लघु शंका हित बैठउ भाई॥
दो० राजमुख चरित अगाध यह श्री रमराज सादान
शिवसुत भे शिव टहल हित पावन यश सुनु तात।२७।
इत दशमुख कर मूत्र प्रवाहा। चलेउ पूर अनिवार न थाहा
यहि विधि एक दंड जब गयऊ। करि मुख हूत करावत भयऊ
मोर धेनु निकरि गें दूरा॥ ॥ लेहु लिंग निज हाथ अस्थूरा।
रावण निश्चय बोलत नाहीं। कर संकेत श्याम कहि ताहीं॥
यहि विधि दूजी गन भे दंडा। बहुरि हांक दिय करिवर संडा
तीन घरी बीती यहि भांती॥ तदपि उठा नहिं सुर आराती
जेसि कुमति पारवती केरा॥ बोधेहु पंडित टारन डेरा॥
तिमि दशमुख कर थरकन मूत्रा। दिये हांक पुनि शंकर पूता।
दो० निशिचर लिंग संभारु निज दिय धरि कहि भूगोल
अक्षय थापेउ जो कदा नहिं अजादि सनडोल।२८
धरणी सहित अभंग विवेकी। दिव्य लिंग तन्मय भे एकी॥

धावा बेगि अशुचि दश शीशा। क्रोध भरे अपवित्र मुनीशा
महाबल दशमुख देखि उपारी। उरवरुन लिंग डोलि छिति सारी
नहिं उरवेउ बहि कारण राजा। सकल अभंग भयो सुरव साजा
लम्बोदर भें अंतर धाना॥ ॥ गो सब छिति महं लगीं समाना
रावण एक धेनु कर काना। धरेउ धाइ कर अति खिसियाना
वहुन उखारि तेहि कारण रावन। पूजेउ लिंग तहां सुरव पावन
महाबलेश्वर अरु गो करणा। परेउ नाम तबतें मुनि वरणा

दो० रावण माता आइ तहं नित शिव पूजि प्रमान
करिहहिं आर्चन सुरऋषि आदि लिंग तेहि जान।२८।

रावण कुंभ करण बीभीषन। अनुष्ठान तहं करहिं मुदित मन
तेहि प्रताप करि के दश भाला। जीत्तेउ बिबुध सकल सुरपाला
मयासुर शक्ती मन्दोदरी। देत भयो दश सुरवहिं सुरव भरी
सुत शत सहस सवालरवनाती। उत्पत्ति भयउ निशाचर जाती
विदित शक जित सुत अक्षादस। आक्षोहिणी भारवाह सुनु अस
अनुष्ठान जहं कियतें सारा॥ रावण सम्पति पाइ अपारा॥
कहि गौतम गोकरण को राया। महिमा अति हि कहीं नहिं जाया
अज सुरपति कथि सकें न झारा। तहं तें आवन भयो हमारा॥

दो० मिथिलापति के यज्ञ हित बेगहिं आवत तात
कहे सकल वृत्तांत हम जिमि पूछे तुम बात।३०।

सो० आवत कौतुक देखि एक पंथ महं नृपति हम।
सुनु नृप चरित बिशेषि अति उदार पन शंभुकर।३।

एक वृक्ष न्यग्रोध बिशाला। तेहि तर हम बैठ मुनि माला
वृक चंडालिनि अशुभ बिशेषी। अति अपवित्र परी हम देषी
रोग ग्रसित वपु सबही वाके। अंधज गलित कुष्ट भरि ताके
पूरण कीट परे तन सारी॥ होइ दुर्गंध दूर तें भारी॥ ॥

रक्त पीव अति बहु तन माही। करपद अंगुरी झरि गैं जाही।
कुश्चित परम कुलक्षण जेई। अन जल ताहि कौन लै देई
करण हीन रद सबहीं टूटे ॥ गर्भहिं तें लोचन दोउ फूटे॥
नाक कान झरे अस्थाना। बुज बुज कीट भरे सब जाना
दो० अंग चर्म झरि गायो सब अमिष गिरे गलि जाहि॥
लोटत रज चंडालिनि पाप पूर्व भुगताहि।३१।
मरण काल तेहि जब निकटाया। नभ निहारि हम देखे राया।
शंभु पठाये दिव्य बिमाना। तेहि तिय को लेजन हित जाना
दश भुज पंच वदन गण चारी। शिव कर बैठे शोभा भारी॥
कोटि भानुकर तेज बिराजे। बिधु सम प्रभा एक को छाजे
पावक तेज बिराजत कोऊ। भाल चंद्र शोभित छबि जोऊ
जग मग झलकत दिव्य बिमाना। वाद्य बजावत चतुर बिधाना
अष्ट नायका नृत्य देखावत। किन्नर गंधप शिव यश गावत
कहि गौतम सुनु नृप पतिताता। पुनि हम पूँछे तिन सन बाता
दो० केहि उद्धारण करन हित लीन्हे दिव्य बिमान
चले जात तुम दूत गण कहिये मरम बखान।३२।
सो० वह चंडालिनि हेतु शंभु पठाये हमहिं मुनि।
हंसि कहि कृपा निकेतु आनहु मम पद ताहि कहं।८।
मैं पूँछेउँ पुनि तिन्ह यह नारी। पूरब कौन कीन्ह तप भारी
तब शिव गण बोलत भै तेते। तेहि वृत्तांत पुर्वज रह जेते
कै कय नाम विप्र रह जाही। सुता सुमित्रा सुंदर ताही ॥
निज सुंदरता करि के बाला। मानन काहुंहि गर्व बिशाला
बालपनहि भइ अनथहि बाती। तजि स्वधर्म तरुणी मद माती
गणिका कर्म करन लगि तेही। पिता सिखावन कानन दही
भई गर्भ युत वह तब नारी। निन्दा करैं लाग सब भारी ॥

पुनि पितु तेहि कच धरि खिसियाई। बाहिर तुरत निकरि उ जाई
दो० भरमत देशहि एक जन भेंटी शुद्र सभागि॥
वह तिय यहि करि वेगि सब सौंपे सिधन अनरागि। ३३।
तहं संतान भये बहु ताई॥ ॥ अतिहि येहि मद मांस सुहाई
कटु पुष्ट बहु भद्द यह नारी। घुर्णित लोचन नाहि उघारी
दासी दास शुद्र संग लीन्हे। कृषी कर्म हित जब चलि दीन्हे
यह इच्छा आमिष करि भूरवी। लीन्ही शस्त्र चली मन रूरवी
मद मद मत्त न नैन उघारी। अस जिय जानि कीन्ह अघभारी
गो बत्सहि अज जानी शूरा। पापिणि कंठ लगायसि छूरा
अट्टहासि गो शिशु नरियावत। धेनु हुंकारत लखि भकुलावत
गो शिशु कंठ छेदि मुनि झारी। तुरतहिं लै कर सदन सिधारी
दो० धेनु वत्स पुनि चीन्हसि नैन खोलि के आप
शिव शिव कहि मैं चीन्हि बिन कीन्हों अतिही पाप। ३४।
अर्ध मांस को पापिणि खाई। बचि तेहि डारेसि बाहिर जाई
लोगन महं इमि बात पसारी। गो कर बत्स व्याघ्र ने मारी॥
मृत्यु काल जब यहि कर आई। यम कर दूत आय मुनि राई।
चले लेइ यहि मारत भारी॥ निर्दयपन जांचत बहु झारी
कुंभी पाक लेइ कर डारैं॥ ॥ असी पत्र बन माहिं गिंजारैं
तप्त भूमि पर देहिं लोटाई॥ अगिनि खंभ पुनि धरि लपटाई
चित्रगुप्त सन यमपति पूछा। पुण्य याहि कछु आहि कि छूछा
कहि प्रभु शिव शिव नाम उचारी। करि गो बत्स बधन यह नारी
दो० पुनि यम दीन्ह पठाइ यहि मृत्यु लोक के बीच
जन्म योनि चंडाल महं यह पापिणि अति नीच। ३५।
गर्भहिं लोचन गयउ दोउ कुष्टि कुलक्षणा रूप
बिष्टा मूत भरी नितहि परी रहे सुनु भूप। ३६।

श्वान उच्छिष्ट खाय यह बाला। मातु पिता को लै गै काला॥
ले करि लकुटि हाथ पुनि नारी। गाउन गाउ फिरै दुख भारी
लखि शिवरात्री पर्व निधाना। चले गोकर्णहि सकल जहाना
यात्रा चली घोष बहु ताई ॥ नाना बाजा बजत सुहाई ॥
शंभु नाम कर घोष अपारा। करहिं भक्त शिव बारहिं बारा
यहु दुख चारिनि तिनके संगा। चलि चंडालिनि सुनहु प्रसंगा
गइ गोकर्णहि यहि चंडाली। परी निकट वह मंदिर काली
कहि मोहिं अन्न देहु यहि बेरी। मैं पापिनि हौं भूखि घनेरी

दो० करै पदक्षिण लोगा यही कर पसारि गोहराय
बेल पान यहि हाथ महं यक जन डारउ आय। ३७।

बीदल बेलहिं छूकर देवी। नहिं खाये कर वस्तु विशेषी
कहि कर फेंकिसि अतिरिसियाई। परी लिंग शिव ऊपर जाई
शिवरात्री उपास यक दूजा। परी बेल दल भइ शिव पूजा
शिव भक्तन संग जागरण पाई। यह चंडालिनि बिनु श्रम भाई
शिव शिव नाम रटै जन रंगा। यहु भजन करै उन्ह संगा॥
सो यहि जो चंडालिनि गाई। परी अहे बट नीचे आई ॥
ऐसे तेहि पूरण वृत्तंता ॥ कहेउ भूप प्रति गौतम संता
पाइ दिव्य तनु पुनि वह बाला। शिव बिमान बैठेउ तेहि काला

दो० लगी करण अस्तवण शिव निज कृत सर्व विचार
पुनि शिव गण कैलाशहि ले गे थापी निरधार। ३८।

कहि गौतम नृप सुनु तें सादर। जो गोकर्णहि आतुर आदर
शिवरात्री को गिरिजा ईशा। आचरै बीदल लेइ महीशा
गौतम मुनि इमि कहि कर सबही। गये विदेह यज्ञ हित तबही
सुनत वेग अति कल्मष पादा। गे गोकर्ण क्षेत्र अह्लादा
दिव्य लिंग शिवरात्रिहि हीना। पूजि मित्र सह नृप कीन्ह प्रवीना

अंतर प्रेम तासु पहिचानी। गुमारंग तोषेउ अति दानी॥
अघ विशेष द्विज हन्या जेते। भै निर्दोष छूटि सब तेते॥
आदि पुरुष कैलाशी जबहीं। दिव्य विमान पठायउ तबहीं

छन्द

सु विमान राजै वृत भ्राजैं तेज दिग्नि विराजहीं॥१॥
विद्युल्लता रस निचोरि मुरति ढारि जनु छवि छाजहीं
बहु वाद्य बाजत शङ्ख गाजत सुरंग रंग चहूं दिशि बने
वृंदारका गण हरषि वरषैं दिव्य कुसुमावलि घने॥२॥
दश भुजा पंच वदन मित्रसह दिव्य तन बेगहिं भए॥
वासव विधू पद नाँघि लै गण शंभु पद आतुर गए॥
सायुज्य मुक्ती पाइ नृपशिव रूपमहं मिलि सुख लहे।
गो कर्ण मंदिर ब्रत शिवकर धन्य मुनि पावन कहे॥३॥
इतिहास पावन नृप सुहावन सुने धनि गौतम कहे
पुनि धन्य श्रोता तुमहुं सादर सुनन हित आग्रित रहे
जनु हंस मानस सरहिं विष्टित अतिहि शोभा सोहहीं
चहुं ओर घन को घेरि बैठे गाजि साधक जोहहीं॥३॥

सोरठा

सुरत स्वच्छ लंकार तैसे श्रोता चतुरतुम॥
ब्रह्मानंद सुमार गौरव देहु सु श्री धरहि। दे॥

दो॰ श्री भीमा लिंग भासि शिव अति सुख पुरुष अनादि
श्री धर को वरदान दे कैलाश विलासी आदि॥४॥
मम मुख ते उच्चारहू कथा सुरंग पुनीत॥
प्राकृत जड़ अति मंद मति कह गजराज पतीत॥५॥

इति श्री स्कन्द पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गजराज
कृते भाषांतर भाषा मधुर नवमोध्यायः॥९॥

चंद्रसेन राजा को शिव की पूजा करते देख एक गोप कुमार को पूजा कर शिव दर्शन मिलना-



चतुर्थ अध्याय

दो० कहौं चौथ अध्याय अब शंभु कृपा आधार ॥
चंद्र सेन विमर्शना श्री कर चरित उदार ।१।
पारबती मन मानस हंसा । गौर कपूर चंद्र अवतंसा ॥
गुण अगम्य प्रभु तोर अपारा । वेद निरंतर बरणत हारा ॥
समुझन आदि मध्य अवसाना । महिमा जाहि अनंत बखाना ॥
करता कारण सब तुम स्वामी । भयो प्रगट कहं अंतर जामी ॥
आगत रहनि ठाउं जेहि केरा । ब्रह्मादिक नहिं पावहिं हेरा ॥
भक्त प्रेम मानस पहि चानी । जग निवास प्रगटैं सुख खानी ॥
येही विषय स्कंद इतिहासा । कहि गौनक प्रति बचन प्रकासा ॥

नमिषारण्य क्षेत्र अस्थाना। सूत पुराणिक कहहिं बखाना
दो० सो इतिहास प्रकाशिहौं सुख विलास को बास
चित्त हुलास करि प्रेम युत सुनहु सकल दै श्वास।२।
देश किरात विमर्शन राजा। अति प्रताप रिपु भंजन छाजा
करि अहेर हिंसक बहु ताई। मद्य मांस रत नितहिं सुहाई॥
चारिउ बरण को भोगी नारी। करि अधर्म निर्दय पन भारी
पर अति निरत भजन शिव माहीं। बिधि युत पूजै शंभु सदाहीं
कुमुदवती नृप तिय को नामा। परम चतुरि गुणवति ललामा
बहु एकांत पूछति पति पाहीं। त्यागि कपट निर्मल मन माहीं
बहु आ चरहु शिव व्रत चोखा। सोमवार शिव दिन परदोषा
गीत नृत्य राउर अति करहू। अमृत शिव लीला रति धरहू
दो० दोषहु हे बहु आपु ढिग पनि शिव भजन सुबंतु
सुनि नृप तिय सुख बचन सब कहत पुरातन हेतु।३।
पंपा पुर में पुर्वज रानी॥ श्वान देह मैं रहेउं सयानी॥
बड़ शिवरात्री जेहि दिन गावा। मैं शिव मंदिर सन्मुख आवा
शंकर पूजा मैं सब देखा॥ द्वारपाल बहु नृप दूत बिशेषा॥
लै लकुटी मोहिं मारन लयऊ। भगेउं सव्य परदक्षिणा भयऊ
आयउं भूमि पुनः सुनु रानी। मिलिहि पिंडि बलि अस जिय जानी
पुनि दूतन्ह मोहिं को चमकाये। करत परदक्षिण चलेउं पराये
भूमि शिवहिं पुनि बैठउं द्वारे। चर रिसियाइ बाण मोहिं मारे
लगत तहिं तुरत मोहिं को बाणा। शिव सन्मुख मैं छांडेउं प्राणा
दो० राज देह अब पायऊं तोरन पुण्य के कर्म॥
पर कूकर करि दुख गुण नाना करों अधर्म।४।
कहि रानी हो पूरब ज्ञानी। मोरहु पुर्वज कहहु बखानी
बोली तबहिं विमर्शन बानी। पूर्व कपोती रहि नृ रानी॥

मांस पिंड मुखधरि चलि खाछे ॥ लागेउ श्येन तोर लखि पाछे।
चक्कर तीनि शिवालय लाई ॥ बैठेसि थकित शिखर परजाई
श्रमित दुरवतनें भइ अत्यंता ॥ मारि श्येन तव तोहि तुरंता ॥
शिवगृह सन्मुख गिरा कलेवर। भयसि गणा तेहि पुरा यहि सुंदर
सुनहु प्रिया हमि शंभु उदारा ॥ त्रिबश हुं सुकृत करि निस्तारा
करहिं सदाशिव अवघड़ भोला। आशु तोषु सुख देहिं अमोला
दो० पुनि नृप पहं कहि कुमुदवती तुम ज्ञानी त्रैकाल।
जन्मब तुम हम कहं कहं कहिये सकल भुवाल।५
सुनु मृग नेत्रि बदनि शशि भामिनि सिंधुदेश कर नृप गज गामिनि।
होइहौं पूर्व जन्म के नाहीं ॥ कहत राउ हमि रानी पाहीं
जया नाम नृप कन्या होई ॥ तें मोहि वरिहि जान सत सोई
तृतिय जन्म सौराष्टर राया ॥ होइहौं सतगुण सरि हे जाया
तें कलिंग नृप कर होइहु बेटी ॥ बरिसि मोहिं सत प्रीति समेटी
नृप गांधार जन्म मम चारी ॥ मिलसि होइहु मागध कै सारी
पंचम जनम अवंति नृपाला ॥ सुता दशार्हे मिलु मोहि बाला
नृप श्रानर्त छठे मम होही ॥ तें ययाति कन्या मिलु मोही
दो० सात पांड्य नें वसुमती सुता पद्म नृप केर ॥
शिव प्रताप तहं यश बहै दंडी रिपु चहुं फेर। ६॥
अति शय धर्म बढ़ा बहु प्यारी ॥ जन्म जन्म शिव भजन अधारी
पुनि वहि जन्म सुतहिं दै राजू ॥ जाउं महावन मैं तप काजू ॥
कुंभज शरण परहं संतोषा ॥ दीक्षा शैव लेहु निरदोषा ॥
तोहिं सहित शुभ सुखि कैलासा। पद पैहौं निश्चय शिव पासा ॥
सूत कहहिं शौनक प्रति गाकर ॥ सबहिं जन्म वह नृप कर पाकर
बेत्ता ब्रह्म अंत को होई ॥ ॥ अदाय शिव पद पायउ सोई
शिवजन को महिमा हमि भाई। शेष विरंचि सकहिं नहिं गाई

निगमागमहि सीम शिव केरा। समुझिन परहिं कथन हित हेरा
दो० शिव गुण कीर्तन सुनत नहिं जेहि मन सद्गद होय।
अश्रु बहावन नैन तें तेहि मुख कबहुं न जोय ॥७॥
धिक तेहि जियब जगत धिक कर्मा। धिक विद्या पुनि धिक सब धर्मा॥
वह पापिष्ठ जिये बिरथाहीं ॥ । दुष्ट दुरात्मा यहि जग माहीं॥
शंभु भजन कर सुनहु बड़ाई। पुर उज्जनी तहां कर राई॥
चन्द्रसेन करि राज भुवारा॥ न्याय नीति युत शोध बिचारा
महं कालेश्वर ज्योतिर लिंगा । नृपवर नाहि भजन रत रंगा॥
मणी भद्र करिके यक मीता। प्राण सखा नृप के मन चीता॥
मित्र चतुर पावन गुण वाना॥ दया उदधि सर्वज्ञ सुजाना॥
भाविक शिष्य और शुभदानी। पूर्व सुकृत करि पावहिं प्रानी॥
दो० पुत्र भक्त सुभाग्यता पतिव्रत सुंदरि नारि ॥ ॥
अर्थिक वक्ता सुरस अति होइ सुकृति निरधारि॥८॥
पारस पवी दिव्य पुनि होई ॥ मुक्ता फल सुढाल अरु सोई॥
सुत हित गुरु वहि पितु जो ज्ञानी। ये अपूर्व त्रय लोक बखानी॥
मित्र मणि भद्र सुजान भुवारा। चंद्रसेन शुभ सोह उदारा ॥
मणि इक लाय नृपहि वह दीन्हा। भानु किरण दूसर छवि लीन्हा
करै परस धातुन्ह लै कोई ॥ । बावन कस कंचन सो होई॥
व्याघ्र सर्प तस्कर जो अहीं। इन कर बास राज महं नाहीं॥
तेहि मणि के दरशन नें लोगा। होहिं बिरुज नाशहिं सब रोगा
शोक अपवर्षण सुरभिछ जेते। दरिद्रादि नहिं पुर महं तेते॥
दो० बंधन कंठ मणि ज्योति अति नृप मानहु सुर पाल।
रण अजीत अति पक्ष जेहि नहिं पावै त्रय काल॥९॥
नृप सन बैर करन जो आवै। प्राण मित्र होइ माथ नवावै॥
आयु अरुज ऐश्वर्य्य अपारा। बढ़त चले नृप केर उदारा॥

सब गुरा माहिं बरिष्ठ भुवारा ॥ शंभु भजन महँ सुर सरि धारा ॥
मुकुत रत्न नृप भाव विवेका ॥ चातुर सुभट सिंधु मन रंका ॥
सर वैराग्य माहि मरालां ॥ तपि निर्मल बन शांति विशाला
ज्ञाना मृत कर कूप विशाला । उमगेउ मानहु शोह नृपाला
बाढत विभव प्रबल नृप देषा। करहिं द्वेष सब नृपति विशेषा
मांगि पठा वहिं सब छिति राई। मरिण को दुर्षा करि बहुताई ॥
दो० सब मनसूबा बांधिकर नृप दल लेइ अपार ॥
चन्द्र सेन पुर घिरे सब नहिं चहुं ओरउबार । २० ।
कमल नैन लक्ष्मीपति जो हैं। जिमि कौस्तुभ मरिणतिन को शोहै
अरु शिव भाल सोह शशि जैसे। गहन प्रकाश दिखे मरिण तैसे।
वह मरिण हमें देहु तुम राई ॥ कहि अस सब नृप दूत पठाई
चन्द्रसेन सुनि करैं विचारा ॥ अति अनर्थ सब कीन्ह पसारा
जेहि कारण जो करिये भूषण। समय पाइ सोइ होवै दूषण
अतिहि बस्तु करि गरहण जोई। सोइ अनर्थ कर कारण होई।
भोग अत्यंत रोग भय सोई ॥ बहु सुख तें दुख प्रापति होई।
अति धन चोर राज कर भीता। विद्या बहुत वाद भय जीता
अति तप तें इन्द्रिन्ह भय भारी। अति सौंदर्य रूप भय नारी ॥
अधिक सनेह शोक भय बाढ़े। रण महँ डर बैरी कर गाढ़े ॥
दो० अंत काल महं काल भय यहि बिधि जन्म निरर्थ।
निरभय पद हरि हर चलैं तजि सब सदा समर्थ। २१
जो मरिण देउं तो क्षत्रिपन सहजहिं बूड़ि अपार ॥
देउं युद्ध तो सकउं किमि मैं अकेल नृप भार ॥ २२ ।
महं कालेश्वर करुणा सिंधू ॥ गोरक पूर दीन जन बंधू ॥ ॥
रक्षण दीनहिं जग दो धारण । बज्जर पंजर भक्तन कारण ।
तेहि के शरण जाउं यहि बेरी । काज सहायक भक्तन केरी ॥

उमा प्राण वल्लभ त्रिपुरारी ॥ जग दानव मा शंभु का मारी ॥
पूजा सामग्री सब लेई ॥ । शिव मंदिर पैठेउ चित देई ॥
चिंता सकल छोड़ि नृप दीन्हा। विधि युत पुजन आरम्भन कीन्हा
बाहिर सेन लेइ पर धाना। करत युद्ध शंकर धरि ध्याना॥
अस्त्र शस्त्र कर पुर पर मारा। होत महा अनिवार अपारा॥
दो० सबहीं चिंता छोड़ि नृप पूजत शिव अनुरागि॥
नृप पूजा बेदोक्ति करि मानस ध्यानहिं लागि१३
बाहिर जूझहिं छिति कर राई। बैठ नृप विन चिन्ता भाई॥ ॥
मंदिर सन्मुख बाजा बाजै। शब्द चतुर बिध गह गह गाजै
चन्द्रसेन शिव पूजत भारी॥ पुरजन आइ बिलोकैं भारी॥
गोप नारि इक बिधवा तहवां। लेइ कटि बालक आई जहवां
वह बालक रह पंच बरषको॥। यकटक पूजा देखत नृप को॥
पूजा लखे सकल घर आये। गोपिहुं आई सदन सुहाये॥
कटि तें बालक दीन्ह उतारी॥ आपुन गह कारज चित धारी॥
हरण घर सूनु परोसहिं एका। तहँ बालक बैठा करि टेका॥
दो० मृतिका रज बेदी करी लिंगा कृति पाषाण॥
लाइ दिव्य अस्थापि शिव प्रतिमा प्रीति प्रमाण१४
वह एकान्न न दूसर आनी। लघु लघु कंकर तुरतहिं लानी
पद्मासन होइ पूजि यथाविधि। शिलहिं चढावत प्रेम पूरनिधि
नृप पूजा जो लखि मन ठाना। बस्तुन बदल चढाइ पषाना
धूप दीप नैवेद्य न जाना॥ शिला चढावत अति अनुराग
दूब पुष्प सुवास बिन लावै। सोइ प्रीति युत शिवहिं चढावै
आसन मंत्र ध्यान नहिं जानै। प्रेम भाव पूजत सन्मानै॥
परि मल द्रव्य कहां तेहि ठाई। लेइ रज माटी शिवहिं चढाई
मृतिका लेइ कमल कर माहीं। पुष्पाजुली समर्पि अघाहीं॥

दो० जस पूजा नृप केलखे तस सब सादर कीन्ह ॥
मानस पूजा जोरि कर पुनि बालक चित दीन्ह ।१५।
सो० नयन मूंदि करि ध्यान शंकर पद मन लागिहढ़
धन्य सुरत धन ज्ञान धन्य जननि जेहि जन्मदिय ।२।
मातु पाक करि हूंत कराई । आसुत भोजन करहु सुहाई ॥
होहरावतिहि भये बहुकाला । पर प्रति उत्तर देत न बाला ॥
बाहिर आइ देखि सुत माई । सूने घर बैठा चित लाई ॥
कहि बालक कारनि अहलादू । उठहु चलहु करु भोजन दादू
ध्यान मगन करि बोला नाहीं । जननी तुरतहिं क्रोधित जाही
लिंग सहित पूजा सब तेकी । कहि लखु इत उत दीन्हीं फेंकी
चल्लु भोजन हित कहि भुंभवानी । पकरि हाथ खेंचि सि खिसियानी
बालक नेत्र उघारी नबहीं ॥ लखि शिव पूजा बिथुरी सबही
दो० हा शिव शिव कहि पीठि उर मूर्छि गिरत महि भार ॥
पूजा बिथुरी मातु मम देउं प्राण यहि बार ।१६।
सुतहिं बहुत समुझावति भइया । मानत नाहिं टेक धरि लइया
नब जननी अति भई उदासी । पोढ़ी जाइ भवन हि निरासी ॥
जीरण बस्त्र ओढ़ि मह्तारी । तृण सेजहिं पोढ़ी मन हारी
पूजा भंग भई कहि बाला ॥ रोवत लै शिव नाम बिशाला
नब दयाल शंकर गिरिजाबर । अद्भुत चरित किये अति सुंदर
सूत कहहिं सुनु मुनि मनकारी । गिरिजा रमण कृपाल अनारी
आशुतोष शिव कृपा निकेता । अति दयाल भक्तन भयहेता
जीरण तृण गृह बहुछवि छीना । रचित रत्न भे तुरत नवीना
छं० रचि रत्न मंदिर भयउ सुंदर खंभ पवि सबही बने ।
ऊपर शिखर कलसा निकर बहु रतन छबि झलकत घने
चहुं हार रतन रचित मणिन मय मध्य लिंग बिराजहीं

अमितजोति अति दिव्य शशिछंते जोतिलिंग सुछाजहीं।१।
दो० नयन खोलि शिशु देखि सब पूजा नृप उपचार
सिद्ध भये धरि लखि नयन ब्रह्मानंद अपार।२।
पूजन उत्तम यथा विधाना ॥ कीन्हा बालक नीति प्रमाना॥
सोरह पूजन अरु उपचारा। कीन्ह समर्पन गोप कुमारा॥
पुनि पुष्पांजुलि धरि मनभाई। शिवहिं चढ़ावत अति सुखपाई
शिव नामावलि करत उचारा। महाप्रेम किमि वरणौं पारा
शंकर कीर्तन करि मनरंगा। नाचत शिव कहि प्रेम अभंगा
मांगु मांगु कहि शंभु कृपाला। भयउ प्रसन्न मोहिं परबाला
तब बालक कह दोउ करजोरी। पूजा भंगेसि जननी मोरी॥
सो अपराध घालु उर माहीं। सुनि शिव कहेउ क्षमेउं मैं ताहीं
दो० जननिहि दरशन के निमित्त लावौं शंभु उदार
अस कहि गे निज भवन को तुरतहिं गोपकुमार।१८।
सो० रत्न खचित चहुं ओर रत्न घर कंचन सदनभे
जननि नींद बस भोर दिव्य पलंग पर सोवती।२।
पहिले रूप पलटि महतारी। भई पद्मिनी सुंदर नारी ॥
सब अंग पहिरे भूषण नाना। सोवति जननी शोभा माना
बालक तुरतहिं मातु जगाई। कहि शिव दरशण हित कलुगाई
तब लखि चहुं दिशि नैन उघारी। अद्भुत करणी शिव कर भारी
उमगि प्रेम शिशु हृदय लगाई। नातकाल शिव मंदिर आई
कहि तुम शंकर धन्य दयाला। भयो भक्त सुत धन्य विशाला
गई ग्वालिनी नृप घर धाई ॥ चंद्रसेन सन सकल सुनाई॥
सुनि सप्रेम वेगहिं नृप आवा। बालक चरण धरा लपटावा
दो० अद्भुत करणी शंभु कर नेनहिं देखत राय ॥
युथ युथ देखन बालकहिं पुरजन आये धाय।१९।

बगरे बात सकल दिशिथेही। मिले बालकहँ गिरि जानेही
नगर अवंती आवहिं धाई। जन अपार देखन हित भाई
सकल नृपतिजो दल लै आये। चंद्रसेन पहँ खबर पठाये॥
धन्य धन्य तव भक्ति नरेशा। तोहि पर अति परसन्न महेशा
हम सब बैर त्यागि अब ताता। तोहिं मिलनहित आवहिं धाता
देखब बालक वह अति सूधा। भये प्रसन्न शंभु जेहि ऊपर॥
चंद्रसेन दुमि सुनि जब लयऊ। सचिव सहित पुर बाहिर गयऊ
सादर सबहिं भेंटि नृप राया। प्रीति सहित पुर भीतर लाया
दो० पुर अवंति रचना सुघर देखत सब नर पाल॥
चकित बिलोकहिं सकल मन करि अचरज बिशाल॥२॥
मथुरा अवध बदरि अरु काशी। कांचि अवंती सब सुख राशी
द्वारावती सहित ये साता। सातों पुरी मोक्ष की दाता॥
सातहु मध्य सकल गुणखानी। पुरी अवंती उत्तम जानी॥
तेहि कर नाम विदित उज्जैनी। सब दुख हरणि सकल सुखदेनी
कर जोड़े शिव मंदिर आवा॥ दंड प्रणाम करन नृप लागा
पग बंदन सब करि शिशुकेरा। मन अचर्ज नृप करहिं घनेरा
जेहि प्रसन्न हो गिरिजा कंता। तृण गृह कंचन होइ तुरंता
शत्रू मीत होइ तेहि केरा॥ करि सहाय सुत प्रीति घनेरा
दो० दासि सिद्धि होइ देहिं सुख ठाढ़े बस्तु न लेइ
आंगन तरु सुर वृक्ष होइ मन भावत फल देइ
मूका पंडित होइ बतावै॥॥ पंगुल मारुत सन्मुख धावै
जन्म अंध सो परखै हीरा॥ मूरख वक्ता होइ गंभीरा॥
रंक भिखारि अभागि अपारा। सोइ होइ महिपाल उदारा
अनायास चिंता सारी पावै। शंकर दाया श्रुति इमि गावै
तीनों भुवन भरे यश जाके। वंदै पांव राज सब ताके॥

जहँ जहँ खोदे वह मन माना। तहँ तहँ सहजहिं सिलै निधाना
बहु अभ्यास करै नहिं पावै। श्रुति सारांश सहज नहीं आवै
कला हाथ महं आवहिं सबहीं। पारवती पति भेटहिं जबहीं

दो० गोप सुतहिं नृप सकल कहैं भये प्रसन्न महेश
गो द्विज रक्षक प्रीति धनि चंदर सेन नरेश। २२।

यात्रा लगी नहां बहु भारी। तब आचरज करहिं नृप भारी
तहाँ प्रगट भे तब हनुमंता ॥ मारुति अंजनि पुत्र तुरंता॥
रघु पति चरणाकमल रजमधुकर। जनक सुताको मानस दुखहर
दहन सुरपति रिपु पितु पुर को। बालब्रह्मचारी रिपु मद को
उत्पाटन करता गिरि दोना ॥ रक्षक प्रतिपालक सुख भोना
ध्वजस्तंभ बैठि रथ केरा ॥ अर्जुन पालक कृपा घनेरा॥
प्रगट भए इमि मारुत नंदन। सब छिति पाल लगे पग बंदन
तबहीं बालक कहं कपि राई। उपदेशेउ धरि हृदय लगाई

दो० शिव पंचाक्षरि मंत्र शुभ उपदेशे कपिराइ ॥
साक्षात जो रुद्र हैं महिमा कही न जाइ। २३।

न्यास मातृका ध्यान प्रकारा। कहि प्रदोष व्रत गुरु शशिबारा
शीश ताहि कर धरि हनुमंता। भयउ चतुर दश विद्या वंता
चौंसठ कला निपुन भे कैसे। करतल मध्य आमलक जैसे
धरेउ ताहि पुनि श्रीकर नामा। पवन कुमार बुद्धि बल धामा
करत सकल नृप जै जै कारा। सुरवर बरषहिं फूल अपारा
पुनि अंजनी हृदय शुभ कंजा। मधुकर कपि बोले सुख पुंजा
श्री कर होइ तोर कल्याना। अब सुनु आपन वंश बिधाना
आठवं पीढ़ि नंद सुख माजा। जन्महि गोकल गोपन्ह राजा

दो० तेहि कर सुत श्रीकृष्णहिं कंसदमन गोविंद
पांडव पालक कौरवन्ह करि शिशुपाल निकंद। २४।

पांति अनेक हरी अवतारा। भये पाछु पुनि हो वनिहारा।
जप मणिमाल पलटि वहि आवै। तिमि अवतार वेद हरिगावै
संवत सर महिना तिथि वारा। घूमत आवहिं बारं बारा ॥
तैसे जानहु हरि अवतारा। श्री कर सत्य बचन मम सारा
कहि इमि बचन सकल हनुमाना। भयो तबहिं तहं अंतर धाना
धन्य धन्य कहि सकल नृपाला। श्री कर कीन्हे भाग्य विशाला
जेहि कर श्री गुरु हनुमत आही। कमी पदारथ का जग ताही
श्री कर चंद्रसेन नृप सादर। करत विदा राजन्ह कर आदर
भूषण बस्तर दे कर सब को। विदा किये गे निज निज घर को
श्री कर चंद्रसेन परतीती ॥ करि प्रदोष शशि बासर भीती

दो॰ शिव रात्री दिन आइ जब करि उत्साह अपार
याचक केर मनोरथहिं पुरवहिं दीन उदार। २५।
शिवलीला मृत सुनैं नित अंत वास शिवधाम
भनु शिव कहं राजराज जड़ शठमति मूरख ग्राम। २६।

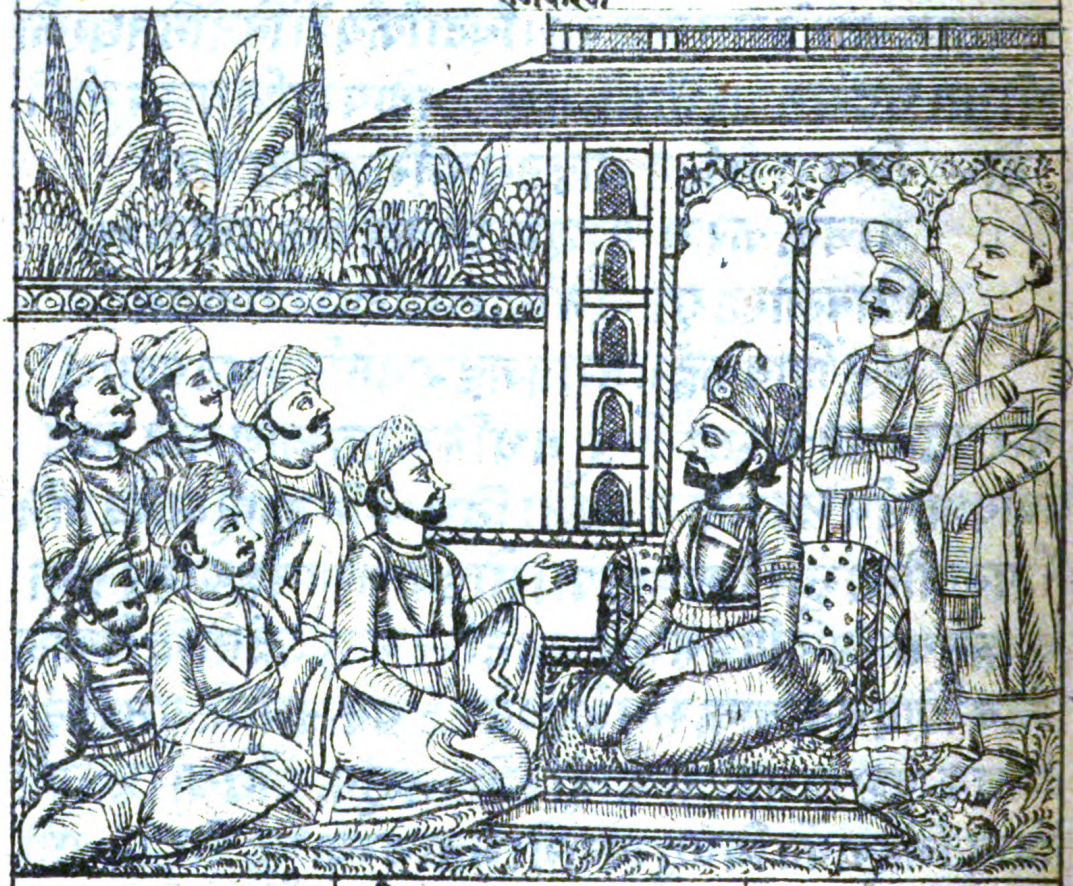
करै पठन यह अध्या जोई ॥ धनि संतत आयू बढ़ि सोई
शिव आर्चन महं जेहि मन राजै। विघ्न भीति दूरहिं लखि भाजै
शिवलीला मृत ग्रंथ अनूपा। सोइ जग मानहु बासर भूपा
सज्जन कमल विपिन सम भासा। देखि भानु कहं होहिं विकासा
जिव शिव चक्रवाक सम दोई। होहिं एकत्र प्रीति युत सोई
निंदक दुष्ट अभक्त जो आहीं। सोइ उलूक अंधियार छपाहीं
शिव निंदक को विष्णु खरारी। महा नरक महं पीड़हिं डारी
हरि निंदक अपवित्र अभागी। कुंभिपाक महं जेहि शिव पागी

छं॰ जेहि पागि कुंभी नरक महं दुख देहिं शिव कोधित भरैं
यहि भांति हरि हर निंदकन्ह को भानु सुत जांचन करैं
अस जानि हरि हर भजहु रे मन त्यागि दूषन सुखकरो

प्रतिपाल मारण रूप दोउ प्रभु समुझि मन श्रानंद भरो २
सो० गिरि कैलाश निवासि ब्रह्मानंद यति उत्तम॥
हिमनग सुता विलासि श्रीधर को वरदानदे।३।
दो० तुवलीला मम मुखतें शिव उच्चारहु निरधार
किंसुकपान पान संगहि किय गजराज अधार।२७।

इति श्रीस्कन्ध पुराणे ब्रह्मोत्तरखण्डे शंकर चरित्त सुधा गजराज कृत भा-
षान्तर भाषा- मधुर चतुर्थोऽध्यायः १४।

सत ऋषि के लड़का धर्मगुप्त को शिवप्रदोष के प्रताप से अपने पिता की राज मिलना और सुख पूर्वक राज करना



पंचम अध्याय

दो० पंच अध्याय कहौं अब गुरु शिव पद अधार
व्रत प्रदोष नृप सत्यरथ चरित्त पुनीत उदार।१।

नाम सदा शिव अक्षर चारी। जो रसना तें नितहिं उचारी।
शिव आर्चन नित करै चित धरै। तरै आपु बहु जीवहिं तारै॥
अति प्रायश्चित को निरधारा। निगमागम मत करै बिचारा
पर शिव नाम सुद्ध आचारा। साधन अपर तुलै नहिं सारा
नाम को महिमा अद्भुत आहीं। ब्रत प्रदोष आचरि तेहि माहीं
मिलहिं नाहि को सबहीं सिद्धी। वचन सत्य मत पुनि सत दृढ़ी
तुष्टि पुष्टि धृति आयुर नाना। संतति सम्पति अरु सुभ ज्ञाना
करि प्रदोष ब्रत जेहि को चाही। पूरण यथा वेद मत माही॥

दो० ब्रत प्रदोष कर प्रीति फल मिलिहि जन्म यहि माहिं
दरिद्र व्यथा षट मास महँ अंति सब नाहि पराहिं।२।

एक बरस महँ ज्ञानी सोई॥। द्वादश महद्भाग सब होई॥
व्यास बचन यह सत्य न जाना। तेहि कर बंधन कल्प प्रमाना
गुरु तेहि सुधा सुधा तेहि ज्ञाना। अरु भक्तो दांभिक तेहि जाना
जेहि मन बसै शंभु पद माहीं। तेहि सन पावन कोऊ नाहीं
दारुण मृत्यु गंडांतर आहीं। ब्रत प्रदोष तें सकल पराहीं॥
कहि यहि विषय एक इतिहासा। सूत पुराणी कथो नक पासा
देश विदर्भ सत्य रथ नामा। रहि नृप तेज पुंज गुण धामा
सहज पराक्रमि धर्महि शूरे। बन्दी जन नित बरणा हिं रूरे।

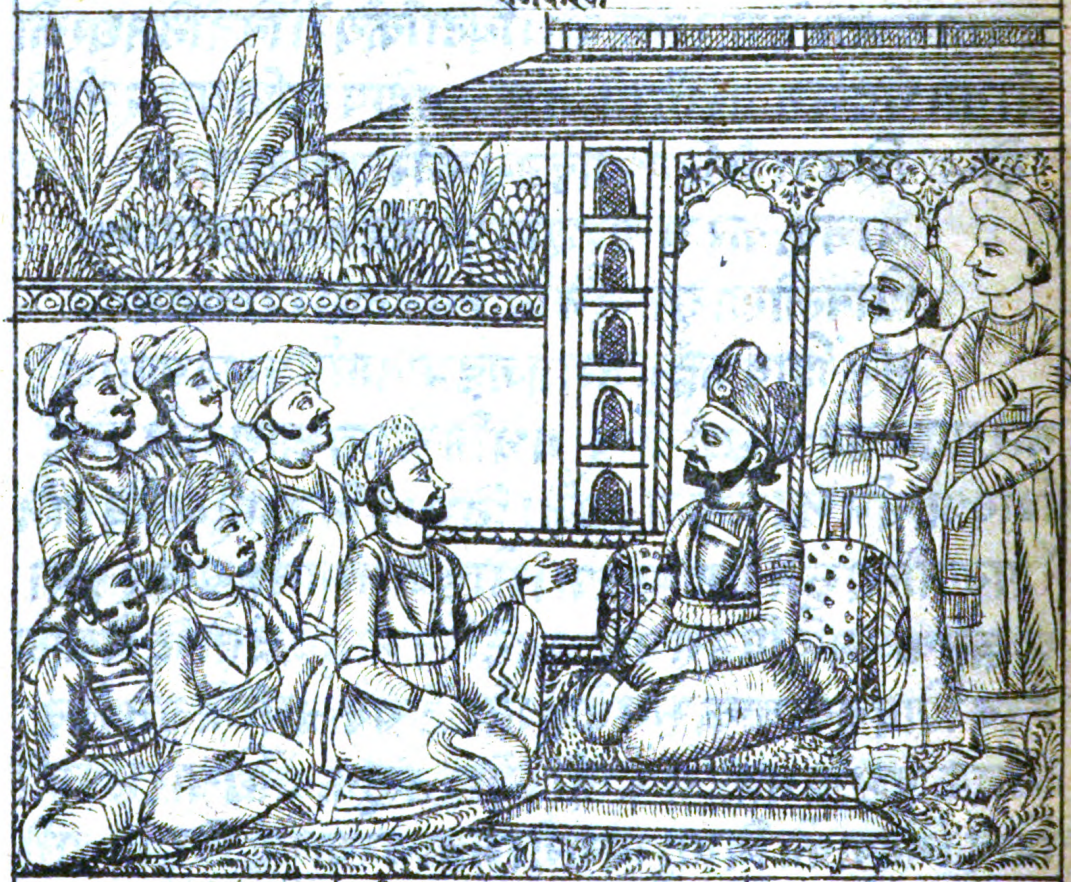
दो० बहुत दिवस करि राज नृप पर शिव भजन न प्रीति
शाल्व देश कर नृप सबल यहि पर चढ़ा अजीति।३।

शाल्व राज कर करन सहाई। बहु महिपाल जुरे संग आई
सात दिवस लौं भई लराई। अति अद्भुत कछु कही न जाई
यह अकेल बहु रिपु बलवाना। नृपति सत्यरथ रण मैदाना
धारा तीरथ प्राण गंवाये। शत्रु प्रवेशि नगर महँ आये॥
रही गर्भिणी नृप कर रानी॥ नौवम मास प्रसव निकटानी

प्रतिपाल मारण रूप दोउ प्रभु समुझि मन श्रानंद भरो २
सो० गिरि कैलाश निवासि ब्रह्मानंद यति उत्तम॥
हिमनग सुता विलासि श्रीधर को वरदानदे।३।
दो० तुवलीला मम मुखतें शिव उच्चारहु निरधार
किंसुकपान पान संगहि किय गजराज अधार।२७।

इति श्रीस्कन्ध पुराणे ब्रह्मोत्तरखंडे शंकर चरित सुधा गजराज कृत भा-
षान्तर भाषा- मधुर चतुर्थोऽध्यायः १४।

सत ऋषि के लड़का धर्मगुप्त को शिवप्रदोष के प्रताप से अपने पिताकी राज मिलना और सुख पूर्वक राज करना।



पंचम अध्याय

दो० पंच अध्याय कहौं अब गुरु शिव पद उरधार
व्रत प्रदोष नृप सत्यधृत चरित पुनीत उदार।१।

नाम सदा शिव अक्षर चारी। जो रसना तें नितहिं उचारी।
शिव आर्चन नित करि चित धरै। तरै आपु बहु जीवहिं तारै॥
अति प्रायश्चित के निरधारा। निगमागम मत करै बिचारा
पर शिव नाम शुद्ध साचारा। साधन अपर तुलै नहिं सारा
नाम को महिमा अद्भुत आहीं। ब्रत प्रदोष आचरि तेहि माहीं
मिलहिं नाहि को सबहीं सिद्धी। वचन सत्य मत पुनि सत बुद्धी
तुष्टि पुष्टि धृति आयुर नाना। संतति सम्पति अरु शुभ ज्ञाना
करि प्रदोष ब्रत जेहि को चाही। पूरण यथा वेद मत माही॥

दो० ब्रत प्रदोष कर प्रीति फल मिलिहि जन्म यहि माहिं
दरिद व्यथा षट मास महँ अति सब ताहि पराहिं।२।

एक बरस महँ ज्ञानी सोई॥। द्वादश महद्भाग सब होई॥
व्यास बचन यह सत्य न जाना। तेहि कर बंधन कल्प प्रमाना
गुरु तेहि सुधा सुधा तेहि ज्ञाना। अरु भक्ती दांभिक तेहि जाना
जेहि मन बसे शंभु पद माहीं। तेहि सन पावन कोऊ नाहीं
दारुण मृत्यु गंडांतर आहीं। ब्रत प्रदोष तें सकल पराहीं॥
कहि यहि विषय एक इतिहासा। सूत पुराणिक शौनक पासा
देश विदर्भ सत्य रथ नामा। रहि नृप तेज पुंज गुण धामा
सहज पराक्रमि धर्महि शूरे। बन्दी जन नित बरणहिं रूरे।

दो० बहुत दिवस करि राज नृप पर शिव भजन न प्रीति
शाल्व देश कर नृप सबल यहि पर चढ़ा अजीति।३।

शाल्व राज कर करन सहाई। बहु महिपाल जुरे संग आई
सात दिवस लौं भई लराई। अति अद्भुत कछु कही न जाई
यह अकेल बहु रिपु बलवाना। नृपति सत्यरथ रण मैदाना
धारा तीरथ प्राण गँवाये। शत्रु प्रवेशि नगर महँ आये॥
रही गर्भिणी नृप कर रानी॥ नौवम मास प्रसव निकटानी

पायन बनहि अकेलि पराई। महा अनर्थ भयो मुनि राई॥
सुंदरता मृगि अति सुकुमारी। गड़त पगन कुश कंटक भारी
गिरत अवनि पर मूर्छि विशेषी। आगे पाछे उठि पुनि देषी॥

दो० आइ धरहिं रिपु मोहिं उठि भागत किमि अकुलाइ
फिरत भूमि विह्वल्लता तिमि शोभति मुनि राइ।४।

अम्बर भूषण शोभित जाके। झलकत रद मानहु पवि ताके
तेहि मुख शशि लखि बिरति पतिदेषी। ह्वै तन्मय करि चित्त विशेषी
देखहु कर्म अगम गति आही। परी न पदज किरिण रवि जाही
फिरत गर्भिणी सो बन भारी। मृग नैनी गज गामिनि नारी
महासती बन घूमति भामिनि। जिमि दमयंती नृपनल कामिनि
भिक्षिनि होइ शिवा पुनि जैसी। दुस्तर बन महँ घूमति तैसी
परि वह कर्मनदी कर धारा॥ तेहि अब कौन निकारन हारा
यहि विधि एक वृक्ष तर आई। परी परम व्याकुल दुख पाई

दो० सहसहु दासी जासु नित सेवहिं रुख पहिचान
लोटति भुइँ सो इंदु मति देखहु कर्म प्रधान।५।

दीन बदन चहुं ओर निहारी। जीभ सूखि जल बिन दुख भारी
भइ प्रसूत तेहि छिन सो बाला। दिव्य पुत्र जन्मेउ वहि काला
महा तृषित तलफति बिनु पानी। को जल ताहि पियावै ग्लानी
त्यागि शिशुहिं उहँ ऊठत बैठत। रहइ एक सर डिग नहँ गइ पैठत
घूमति भई पुनि जल महँ रानी। अंजुलि भर कर लेतहिं पानी
रेवंति ग्राह तेहि क्षण लै गयऊ। तन बिदारि करि भक्षण किय
दारुण कर्म बिटंबन घालक। बन अकेल रोवत नृप बालक
उमा नाम बिधवा द्विज बामा। बुक आई तिहि छिन तेहि दामा

दो० परिजन माता बंधु पितु सो तिय कर कोउ नाहि
केवल सुत यक बरस कर लै कटि आई जाहि।६।

लखवी उमा शिशुरोवत जाही। नालहु छेदन भइ जेहि नाही
कहि आहा सुत रतन समाना। डारि कोन बन यहि भगवाना
कहि कोजाति बरण का आही। मैं उठाइ ले जौं किमि याही॥
छोड़ि जाउँ जौं तब भल नाही। टुक नाहर घातुक धरि खाही
कहत अवत थन पय अनुरागी। नैनन वहत प्रेम जल पागी।
सन्मुख शिशुहिं गोद महलीन्ही। प्रीति सहित मुख अमृत दीन्ही
संशय हृदि बूझी तिय ताता। कह तिकिले जौं नाहिं विधाता
गौर कनु पय तबहिं कृपाला। यती रूप आये तेहि काला॥

दो० कह शिव संशय तजिउमा लेजा सुत अनुराग
क्षत्रिराज कर पुत्रयह मिलेउ तोर बड़ भाग।७।

कोऊ सन जानि बात जनाऊ। द्वौ सुत सम पालहु सत भाऊ
जिमि भिक्षुक पारस मणि पाई। तैसें विधि तोहिदीन्ह अंदाई
अकस्मात निधि जोड़त जोई। कहुं चिंतामणि प्रापति होई
अमृत पड़े मुये मुख आई। तिमि तैं पूर्वदत्त करि पाई॥
ऐसे कहि शिव अंतर्धाना॥ भै तेहि छिन तहं सुनि सज्ञाना
पुनि दोउ सुतहिं लेइ कोनारी। ग्राम देश भर मत दुख भारी
द्विज सुत कर शुचिव्रत धीनामा। धर्म गुप्त नृप सुत कर बामा
कटि एक कांध लेइ सुत दोऊ। घर घर भिक्षा मांगति ओऊ
पूछहिं जग कहती तिन पाहीं। गमहि पेट कर दोउ सुत आहीं

दो० मंगति भीख शिशु लेइदोउ घूमति घूमति नारि
आइ एक नृप नगर महं सुबहु चकित पुनि क्वारि।८।

मांगत मांगत घर घर भीखा। शिव मंदिर इक देखत दीखा
बहु द्विज बैठे भीतर आहीं। ऋषि सांडिल्य द्रुव्य तिन माहीं
विधि युत पूजत शिव समुदाई। अवसर सोइ उमा तहं आई
क्षिन इक देखी पूजा ठाढ़ी। लखि सांडिल्य कहे कृपा बढ़ी

आहार कर्म गहन किमि भारी। यह नृप सुत जिमि फिरत भिखारी
किमि विचित्र भा लब्ध पुराना। उमा वचन सुनि सुनतहिं काना
धरी चरण ऋषि कर अकुलाई। यहि पूरब गति कहहु गोसाई
अति समर्थ ज्ञानी त्रयकाला। भूत भविष्यत जानहु हाला
दो० मातु पिता यहि कर कवन कहहु भेद ऋषिराइ ॥
हैं जीवत की मरि गये सकल कहहु समुझाइ। ६।
सो० कह सांडिल ऋषि नाथ वर्तमान तेहि कर सकल
सत्यरथ सुभूनाथ रहेउ पिता यहि कर उमा ॥
रहि पूर्वजन्म सत्यरथ राजा ॥ विभव तेज बल सब सुख साजा
समय प्रदोष करै शिव पूजा। महाप्रेम युत भाव न दूजा ॥
तेहि पर रिपु चढ़ि आय घनेरा। घेरे सब नृप पुर चहुँ फेरा ॥
बैरी कर गड़ बड़ सुनि काना। उठा शंभु पूजा बिसराना ॥
तब प्रधान आगे उठि धावा। धरि रिपु को नृप सन्मुख लावा
तुरत शत्रु कर काटि शीशा। पूजा पूर न कीन्हि महेशा ॥
उन्मत पन शिव सेवा त्यागी। तेहि हिं भोजन कीन्ह अभागी
शिव सुमिरण छोड़ी यहि धंधा। विषय विवश करि भै नृप अंधा
दो० तेहि कारण यहि जन्म महं अल्पायु पिभे राज
योग युहि नृप सत्यरथ पाइ मीच दुख साज। १०।
तेहि कारण सुनु उमा सयानी। छोड़िय नहिं शिव पूजा जानी
यहि कर जननि सौत निज मारी। भइ पूर्वज सो मक्र की नारी
ले गइ बैरी पूर्व विरोधा। तन विदारि भक्षेसि करि क्रोधा
नृप सुत शेष गुप्त जो यासी। शिव व्रत एकहुं कीन्हा नाही
तेहि कारण भइ पिता विनवाला। परा विपिन दुख महत बिशाला
यहि कारण शैशव के काला। पूजिय शिवहिं सुचित वित बाला
दंभ त्याग जो करिय कदापी। उठइ न सर्वथा कारन आपी।

काल प्रदोष सदा शिव भोला। नर्चैं आपु जन सुखद अमोला।
दो० पारवतिहि बैठाइ शिव नाचहिं परम अनंद
ताल विधान समेत छबि सुनहु चरित सुखकंद।११।
बीणा बजाइ मधुर स्वर गाना। गावति शारद अति सुख माना।
वेणु बजावत सुख सुरपाला। अंबुज पुत्र सँवारत ताला॥
मृदंग बजावैं रमा निवासा। गीत नृत्य गति देखि बिलासा।
धनपति प्राण मित्र शिवकेरा। कर जोरे शिव सन्मुख हेरा।
किन्नर गंधर्प यक्षन्ह जेते। खड़े सुरासुर सन्मुख तेते॥
काल प्रदोष महत इमि भाये। नेति नेति निगमा गम गाये।
बचन उमा सुनि सुनि सनसबहीं। पुनि कछु पूछत भइ बहत्बहीं।
सुबन दरिद्री मम केहि हेतू। भयउ कहहु मुनिवर कुलकेतू।
दो० सुनत बचन सांडिल ऋषी कहत उमा सनबैन
तुव सुत पूर्वज पाप अब सुनहु चित्त धरि ऐन।१२।
लीन्ह कुदान बहुत तुम छोटा। पूरब प्रति ग्रह करणी खोटा।
दान कदापि न किंचित दीन्हा। शंभु भजन नहिं कबहूं कीन्हा।
अन्न पराय खात जरि जीहा। प्रति ग्रह लेत जरा कर लीहा।
जरी नैन परतिय लखि रोसे। होइ पराक्रम मंत्रहिं कैसे॥
सुनत उमा पुनि पुत्रन दीई। डारी ऋषि चरणान्ह महं सोई।
शिष्य नहिं ऋषी मंत्र पंचाक्षर। व्रत प्रदोष उपदेशेउ सुंदर।
पक्ष प्रदोष कहे मुनि गाई। शनि प्रदोष महिमा अधिकाई।
निराहार ने रस को करिये। सगरे दिन सत कर्म चरिये॥
दो० व्रत प्रदोष सांडिल ऋषी कहत शिष्य सन गाय
सुनिये श्रोता बिधि सकल कथा अनूप सुहाय।१३।
तीन घरी रजनी जब जाई। आरंभिय पूजा चित लाई॥
लीपि भूमि गोमय ते आछे। मंडप दिव्य उभारिय पाछे

चित्रविचित्र सुकरिय बिताना। कदलि कुंभ करि रंभ प्रमाना
मंडप कीजिय शोभा भाना। चौंके भांति पूरिये नाना ॥
आपन शुभ्र पहिरि पुनि अंबर। चंदन श्वेत सुगंधहि सुंदर
लावै फूल सुबास सुहाई। अतिहि प्रेमयुत मुनु मुनिराई
पुनि शिवलिंग स्थापित करके। विधियुत पूजा कीन्हि चित धरिके
प्राणायाम करै पुनि पाछे। अंतर्बाह्य मातृका आछे ॥

दो० न्यास मातृका करै पुनि तेहि पाछे निरधार
औरौं पूजा विधि कहौं सुनिये श्रोता झार। १४।

पूजि मुरारिहि दक्षिण अंगा। सव्य भाग महं अग्नि अभंगा
बीरभद्र पूजिय गन राई ॥ अष्ट गहा सिद्धी सुख दाई
और अष्ट अष्ट दिशि पाला। पूजिय प्रेम समेत विशाला
पुनि शिव पूजा सप्त बरणा। कीजिय जिमि निगमागम भणा
सांगोपांग करिय शिव याना। पुनि शिव पूजा करि सुखमाना
नृप उपचार समर्पिय सबहीं। करिय अस्तुति शिवकर तबहीं
जय जय निर्मल गौरी रंगा। कोटि चंद्र जय शीतल अंगा
गहन अखंड सच्चिदानंदा। पूरण ब्रह्म सनातन कंदा ॥
यहि विधि पूजन शिवकर कीये। सांडिल कहि शिष्यन्ह चित धरिये
व्रत प्रदोष ऐसे सुनि काना। तुरत भये दोउ शिशु सज्ञाना
एक चित्त दोउ करि मुनिनाथा। रहत भये इकपुर महं साथा

दो० चारमास पर्यंत उन्ह व्रत प्रदोष शुभ कीन्ह
गुरु वचन अनुसार शिव पूजन महं चित दीन्ह। १५।

शिव प्रसाद चरणामृत पूजा। कबहूं छीजे न दीजे दूजा ॥
गत द्विज हत्या पातक माया। होइ कहे ऋषि सांडिल नाथा
सब पापन ते पापु अधीका। शिव पूजा विध्वंस कृत लीका
यहि विधि दोउ किशोर मिलि सदा। शंकर भजन करैं नित आदर

एक समय शुचिव्रत सरितीरा। रहे अकेल खेलत मुनिधीरा
गिरा धसकि सरि खंडरजबहीं। देवत धनघट भेंटउ तबहीं
ले धन घट द्विज सुत घर आवा। माता लखि संतोषहि पावा
कहि प्रदोष व्रत महिमा ताता। दिन दिन बढ़त विप्र सुखदाता
नृप सुत सुन कहि द्विज सुतबाता। अर्द्ध विभाग नहूं ले ताता
दो० राजपुत्र कहि बंधु सुन लेउं भाग मैं नाहिं ॥ ॥
यह अवनीतल के सकल द्रव्य हमारहि आहिं।९६।
शंभु भजन महं दोउ सदाहीं। यहि विधि निरतन बिसरि कराहीं
यहि विधि एक समय दोउ संगा। बन विहार हित गे मन रंगा
तहं गंधर्व कन्या गण आई। क्रीड़त रहीं लखे दोउ भाई ॥
दुरते लखत कुंवर दोउ ज्ञानी। अति सुंदर शोभा की खानी
कह शुचिव्रत नृपसुतहिं सुनाई। परनिय नैनन देखिय भाई
हरे चित्त दरशन के कीने। बल अरु वीज स्पर्श न छीने ॥
दंभ सहित माया प्रद शूला। अति अनर्थ कारिणि दुखमूला
तिय अपगुण शुचिव्रत समुझाई। बंधु सिखावन मनन हिं भाई
दो० ब्रह्म सुतहिं तहं रवि चला राजा पुत्र सुलक्ष ॥
महते सुंदर मृदुल वपु नयना करण सुदक्ष।९७।
निकट आइ कर देखत आही। मुख्य नायका विनवति जोही
तेहि कर विदित अंशुमति नामा। गंधर्व कन्या पश्चिनि बामा
तव मुख कमल निरखि मम नैना। मधुकर होइ अपावत चैना
तोर बचन अंबुद रव जाना ॥ नाचत मम चित केकि समाना
कोद्रवि गा गंधर्व पति जाही। अंशुमती ये कन्या ताही ॥
एक समय यहि पितु शिव पाहीं। पूछेउ सुता देउं मैं काही ॥
बोले तबहिं शंभु जन पालक। धर्मगुप्त सतरथ को बालक
परम भक्त मोरे वह आही ॥ दीजे अंशुमती तुम ताही ॥

दो० यहि विधि शिव कोद्रविणा सन पूरव कहेउदार
सुनिये आगे चरित अब परम प्रेम दातार।१८।
अश्रुमती दूर रहि ते निहारी। महाप्रेम तन सुरति विसारी
राज सुवन तहि लावत कैसे। मानहु रति पति दूसर जैसे
क्षीरसिंधु महँ मनहुं मयंका। मानहु आयउ धोइ कलंका
तैसे धर्म पुत्र सुख शोहै ।बारम्बार अश्रुमति जोहै ॥
बत्तिस लक्षण सहित अखंडित। बाहु अजान चापशर मंडित
उर विशाल अति उच्चत कंधर। करिपति केर चाल अति सुंदर
दुमिलरवि बेगि ताहि पुरागाशी। अश्रुमती सखिवयन मनभाखी
तुम दूसर बन को सब जाओ। सुमन सुगंधित तहँ तें लाओ
बहुत नीक कहि उन सबनारी। दूसर बन को तुरत सिधारी
दो० राजपुत्र को अश्रुमति कीन्हीं कर संकेत ॥ ॥
जानि यकाकी तेहि छिन मनमिज विवश अचेत।१९।
कोमल पल्लव टारि सँवारी। आसन बिछइ इकांत बिचारी
तरु शाखा बहु ऊपर जाई। फौंडेउ पत्र भूमि नियराई।
राज पुत्र तहँ बैठेउ आई ॥ ॥ मुख सुहास्य शोभा अधिकाई
भाल विशाल नयन आकरणा। अधर अरुण सुकुमार सुबरणा
मंजुल भाषण मन को मोहै। शावर गान मृगी मोहित शोहै
नेत्र कटाक्ष बाण सम जाही। सुंदरि हरणी बेधे ताही ॥ ॥
मनमिज मूर्छा लेइ सँभारी ॥ पूछत नृपसुत मन पुनि नारी
तोर निकर शृंगार तड़ागा। मैं हँसिनि सेवहुं अनुरागा ॥
दो० शारद परब शशि सम विमल अहै वदन शुभ तोर
मन मन मानस लखि अनंद मानहु होइ चकोर।२०।
तव मुखकमल नेत्र मम मधुकर। बचन मधुर तुव जिमि मणि रविवर
गुरु भृगु नखत तेतेज विशाला। मुक्ता फल कर सुंदर माला

हार ग्रीव कर हाथ उतारी । बेगि कंठ नृप सुत कर डारी ॥
तेहि कर चरण धरी निजमाथा। करत बिनय कहि सुनु सनाथा
कहि काया मनसा अरु बाचा। करिलालना मैं भट्ट तुव सांचा
अंशुमती कर बचन अमोला। धर्मगुप्त सुनि गुह्य मु बोला
माता पिता राज बिनु अहऊं। अतिहि दरिद्री मैं सत कहऊं॥
सुनिहि मरम जबतुव पितुसबहीं। हे शुभ बदनी कैसे फबहीं ॥
दो० धर्मगुप्त सन अंशुमति कहति पिता पहँ जाउं
तीन दिवस जब बीतहीं यहि अस्थान हि आउं।२१।
तुमहूं आवहु बेगहिं जाइय। लगन सिद्धि साधन हित आइय
चतुरि राशि डुमि कहि करबाला। बेगि पिता पहँ गइ तेहि काला
वर्त्तमान सब पितहि सुनाई। सुनि संतोषेउ गंधप राई ॥
नृप सुत बहुरि बंधु पहँ गयऊ। सकल वृतंत सुनावत भयऊ
गुरु सांडिल को बचन करि ध्याना। कहहिं दया उनके सब जाना
गुरु के चरण लगो मन जाही। कमी विभव का जग महँ ताही
काल मृत्यु भय गुरू बचावै। नितही दीशिक श्रुति डुमि गावै
पुनि घर आये दोनों भ्राता ॥ कहे मातु सन सबहीं बाता ॥
धन्य धन्य शिव भज नहि भैया। देत चले फल कहती मइया
दो० दोउ बंधु दिन तीन गये गें तेहि बन निरधार ॥
आयसिले सामग्रि सब गंधप सह परिवार।२२।
नैनन जब जामातहि देखा। पैरत आनंद सिंधु बिशेषा ॥
छत्र सुरवासन सेन पठाई ॥ अतिहि बेगि समधि निहि बुलाई
जिमि बिवाह को बिधि श्रुति गाई। चारि दिवस लौं भइ मुनिराई
कमी पदारथ पड़ि कछु नाहीं। दिव्य स्वर्ग कर बस्तु जे आहीं
तेज अमोलिक सुंदर जानी। दिय समधि निकहँ बहु सुख मानी
यक लख रथ सहस मदश सिंधुर। तेज पुंज यक लख हय सुंदर

इकलख दास एक लख दासी। अक्षय कोश रत्न की राशी॥
अक्षय भाला शक्ति प्रचंडा। दिये दिव्य अतिही को दंडा॥
दो० सेनप इक बलवंत बहु दिये सैन संग जान॥
उमा सहित दोउ पुत्र कहँ बिदा कीन्ह सनमान।२३।
बैठि सुखासन अंशुमति धर्मगुप्त पति संग॥
चलत भये शुभ वेग गति अति आनंद उमंग।२४।
कनक बेत्र कर लीन्हें आगे। धावहिं वाहन सह अनुरागे॥
चार प्रकार सु बाजा बाजत। चलीं सैन चतुरंगी गाजत॥
आइ विदर्भ नगर को घेरा॥ पिता सत्यरथ पुर चहुँ फेरा॥
गढ़ते गोला चले अपारा॥ तोपन के अति बारहिं बारा॥
पर गध्रप को बल अति आहीं। लीन्हें नगर आध छिन माहीं
सत्यरथहिं जिन पूरब मारा। तेहि दुरमरषण नाम भुवारा
जीवत जीव पकरि तेहि लीन्हा। कर निबंध करि छोड़ि दीन्हा
देश देश के परजा धाये॥ लै कर भार भेंट हित आये॥
अष्ट मुहूर्त देखि कर राजा॥ सिंहासन बैठा सुख साजा॥
दो० जननि बंधु शुचिव्रत उमा सहित किये नृपराज।
बरष सहस दश लौं सुभग यश समेत सुख साज।२५।
सांडिल गुरु को घर ले आये॥ सप्त पदुम धन अर्पि सुहाये॥
किय रत्नाभिषेक गुरु केरा॥ वस्त्राभूषण दीन्ह घनेरा॥
दुर्भिछ अवर्षण थरु जलशोषा। आधिव्याधि बिधि वा पनदोषा
विघ्न कुशोक कलह दुख जेते॥ भजे मीच राजहिं ते तेते॥
परिजन पुरजन द्विज समुदाई। देहिं असीस नृपहिं सुख पाई
काहूहिं नहिं दुख अति आनंदा। सदा रहहिं घर घर सुख कंदा
रहित अंशुमति इमि महिपाला। धर्मगुप्त कर राज निहाला
किये सचिव शुचिव्रत तेहि भुवारा। राजकाज उनके कर सारा॥

बरष सहस दश गत सुखसाजू। पुत्र मुदन्वहिं दे कर राजू ॥
किय शिव चरणहि ध्यान नरेशा। भेजे दिव्य बिमान महेशा
दिव्य देह तब पाकर राई ॥ ॥ सहित मातु प्रिय अरु शुभभाई
बैठे तुरत बिमानहिं सादर ॥ अस्तुति करत शंभुकर आदर

दो० गए सबहिं कैलाश पद देखत भै मृदुईश
जगदात्मा शंकर कहं पुनि पुनि नावहिं शीश।२६।
जै जै कहि मुइ लोटहीं निजजन सहित नरेश
दीनबंधु जग नाथ लखि दयावंत महेश।२७।
सबहीं को उरलाइ हर पतीत पावन नाथ।
अक्षय पद अस्थापेउ कीन्हे सबहिं सनाथ।२८।

धर्म गुप्त कर यह अख्याना। करहिं जे श्रवण पठन सुखमाना
लिखवहिं रक्षि अनुमोदन भरहीं। पंच बदन तेहि रक्षा करहीं
होइ पाप क्षय अरु सुख पावे। विजय होइ जहँ जहँ वह जावे
धन अरु धान्य बढ़ै सब ताके। उचटा होइ कटा चिंता जाके
अद्भुत अति हि प्रदोष बड़ाई। मुनि कर ग्रंथ जे आचरि भाई
तहां दरिद्र मृत्यु नहिं वेदा। सत्य सत्य सत्यहि कहि बेदा
शिवलीला मृत जेहि घर ग्रंथा। रखत पीठ तेहि गिरिजा कंथा
फिरैं शंभु नित तेहि के संगा ॥ शिव पद पावै अंत अभंगा ॥
शिवलीला मृत सौरभ तरवर। पद्म सृजन फल लागे सुंदर

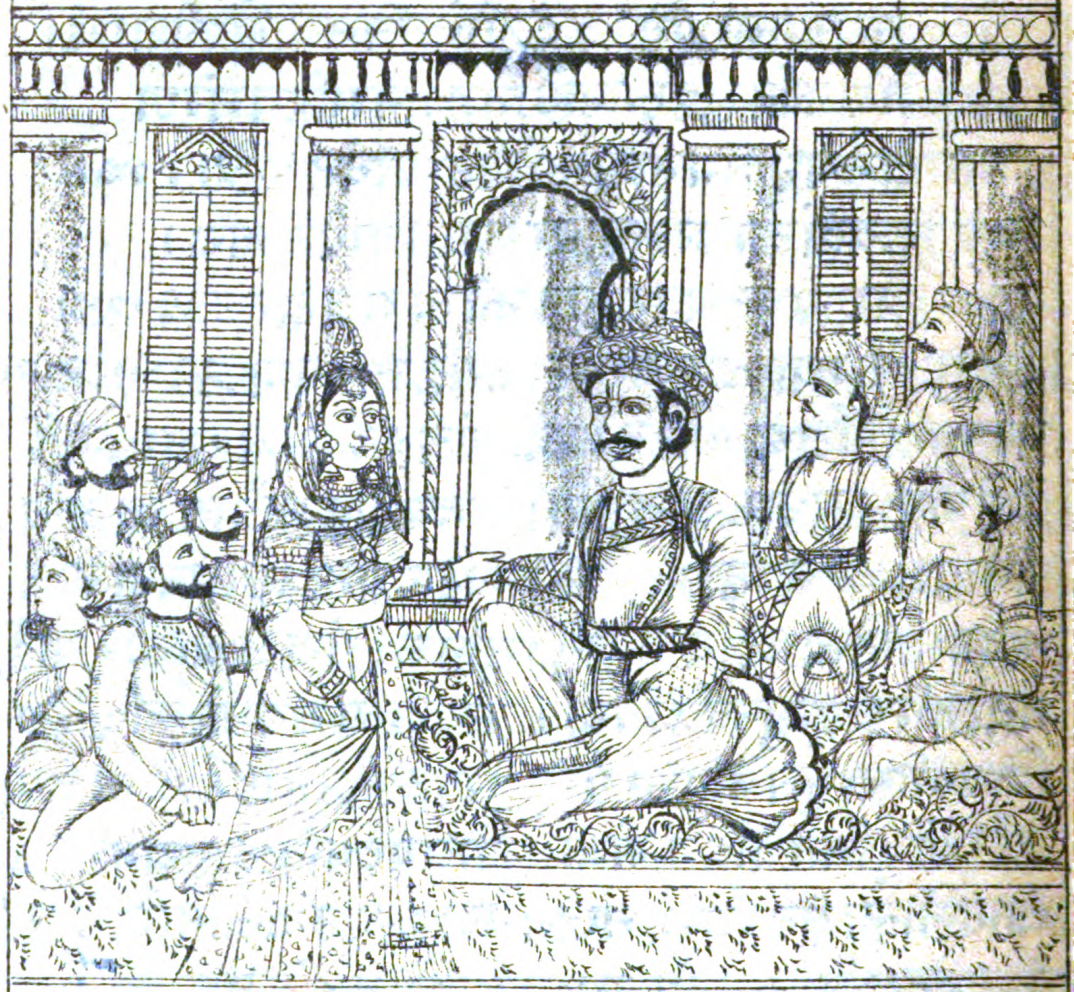
छं० सुंदर लगे फल पक्व रसभरे सुजन जनहि सुहावई ॥
दुर्जन कुतर्की मोइ वायस सुख रोगा तें नहिं भावई ॥
सर्व साक्षी बिरूपाक्षी कर्म ध्याक्षी जय प्रभो ॥ ॥
ब्रह्मानंद जयनेति आगम निगम कहहिं सुखद विभो।१।

दो० श्रीधर को बरदानि शिव ऐसे परम उदार ॥ ॥ ॥
भजु शिव कहं गजराज जड़ शठ मति मंद गँवार।२९।

ब्रत प्रदोष बिधि यथा करि जो जगमें नर नारि ॥
सुफल मनोरथसिद्धि सब पूरण करहिं पुरारि ।३०।

इति श्री स्कन्द पुराणे ब्रह्मोत्तरखंडे शंकरचरित सुधा गजराजकृते भाषान्तरभाषा – मधुरपंचमोऽध्यायः ।५।

सोमवारको शिवव्रतकरनेसे सीमंतिनीको अपने पतिविद्याङ्गद सेतीन वर्षके बाद मिलना.



षष्ठम अध्याय

दो० षट अध्या महँ मधुर अति चरित सुनिय सब ताहि
चित्रांगद सीमंतिनि कथा सुरस यहि माहि ।१।

मनमोहन जै जै मद नारी ॥ ॥ दहन गहन मद मत्सर भारी
भव भय पास बिनाशन हारे । हे गिरिजा मन रंजन कारे ॥

शीश गंग हिमि गिरिजा माता। गौर कपूर वदन गज ताता ॥
पद्मनाभ रंजन त्रिपुरारी ॥ ॥ त्रिभुवन दोष त्रय हारी ॥
बदन सुहास्य श्याम कंठ ग्रीवा। अंधकारि पशुपति सुख सीवा
मनसिज रिपु मखदक्ष बिनाशी। दानव दमन कृपा की राशी।
अमिति भक्त सुखकृति प्रियकरता। राघव पूज्य ताप त्रय हरता ॥
शेष तोर गुण वरणत सारा ॥ नाहि शक्ति सर्वज्ञा हिहारा ॥
निर्विकल्प नित शांति निरंजन। आस पास सब बिन बिरक्त मन
भक्त पास तोरक निज भारी। जन्म मरण दुख करहु निवारी

दो० विषय कामना युक्त करि जे तव भजन हि लीन
तोहि स्वामी अन्य न भजत तोहि सब पूरण कीन। २।

विषय पदारथ पुरवहु ताके ॥ जे जे इच्छित सबही वाके ॥ ॥
इच्छित को इच्छा करि पूरे ॥ मन निज ध्यान लगावति रूरे
परम विरक्त होइ वहि प्रानी। पद निर्वाण पाइ सुखखानी
राशि बासर प्रदोष शिवराती। किये तोर बहु विध नर जाती।
येही विषय कथा निर दोषा ॥ कहहिं सूत शौनक सुन चोषा
आर्यावर्त देश शुभ पावन ॥ नृपति चित्र वर्मा तहं भावन
हरिश्चंद्र नल नृप भे जैसे। शील प्रताप पुण्य गुण तैसे
जिमि सप्रेम शिष्य पालत बापू। गो द्विज पालक तिमि नृप आपू
दुर्जन दुष्ट शत्रु खल जेता ॥ कालदंड सम तिन कर हेता ॥

दो० भागी रथ सम उद्यमी बल महं जिमि हनुमान ॥
परशुराम सम रण अजित दानी बलो समान ।३।

हरि हर के भक्तन में राजा ॥ ॥ रहइ लीन तत्पर सुख साजा।
भये पुत्र नृप के बहु ताई ॥ । महा प्रतापी पितु के नाई ॥
बहु बर्ष शिव कर जब कियऊ। कन्या एक सुमुखि तब भयऊ
भई सुलोचनि नल तिय जैसी। उपमा महं सीत तुले न तैसी

तारक रिपु पितु रिपुतिय जानी। शचि पति रिपु पितु ललना मानी।
तुलै रोहिणी नहि तेहि आगे॥ उपमा देतहि तुच्छित लागे।
मूरति दुति शारद सम जाना। उपमा शोभै उमा समाना॥
अरु विधि नारि सुता रवि केरी। शोभति सांची उपमा ढेरी॥

दो० मनहु मयंक कलंक बिन अभिनव मुख छबि जाहि
जनु सौंदर त्रैलोक कर बिधि निचोरि गढ़ि ताहि॥४॥

जन्मकाल तेहि द्विज समुदाई। जातक बरणत अभिनय भाई
अतिहि अपूरब नृप सुख पाये। चित्र वर्म कर मन बहु भाये
कहियक विप्र बचन सत सोही। भू स्वामिनी सुता तुव होही
बरष सहस दश लौं शुभ कामिनि। करहि राज छिति कर सुख भामिनि
दिय धन अंबर भूषण नाना॥ द्विजकहं सुनि नृप बहु हरषाना
किय पूरण जिन जिन जो चाही। वचन नकार निकारि सुखनाही
नाम सीमंतिनि धरि तेहि छीना। तहँ ते भई रूप की सीमा॥
शोभा सुर सरि चातुरि खानी। शारद सम तेहि को असजानी

दो० सीमंतिनि भइ सीमछबि नृपति सुता पुनि राहु
भयउ चरित जिमि अपर सब आगे सुनहु सुहाइ॥५॥

बहु मगना नंद नृपति सुधाभर। पैर मनहु तेहि मा विष सीकर
अकस्मात इक पंडित तैसे॥ भविष्यार्थित बोला ऐसे॥
चौदहिं बरष सिमंतिनि काही। मिलहि विधवपन संशय नाहीं
सुनत राउ इमि बचन निरासा। अति मन भे उद्विगन उदासा
परे बज्र तन जिमि आघाता॥ शतदामिनि गिरि शिखर निपाता
जिमि करेज महं मारे छूरी॥ तिमि नृपके मन दरब भे भूरी
पुनि द्विज कहि नृप सन मुनबाता। शंभु कृपा तव सुताहि ताता
होइहि पुनि सौभागिनि वृही॥ वचन सत्य मत सत मम सिद्धी

दो० सब द्विज गे निज निज सदन गमि नृपति चिंता रोग

सीमंतिनी सुभांगि अति भइ इत व्याहन योग।६।
सकल कला महं अति हि प्रवीना। चतुरि खानि कर रत्न नवीना॥
जब वह गान मधुर स्वर गावै। धरै मौन पिक सुनत लजावै॥
अंग सुवास चलै अति ताहीं। मृग कस्तूरी बनहिं पराहीं॥
रहि प्राणहूं ते पितु के प्यारी। नैन अघात न सदा निहारी॥
वदन तासु लखि काम लजावै। देखत कटि केहरि बिलखावै
लखि जेहि गमन लुकावहिं हंसा। मान सरोवर करत प्रशंसा॥
चलै एक छिन राज गति नारी। लखि शंका करि पति भारी
कुंचित कच अलि अवलि लजाई। गुंजारहिं सुवास ते धाई॥
दो० खंजन मृग सफरी जलज लखि तेहि लज्जित नैन
लज्जित लखि बे नी भुजंग बांबी घुसहिं अचैन।७।
लखि सीमंतिनि कोशुभ नासा। भागहिं शुक तरु तरहिं उदासा
बिंबा फल विद्रुम लजावै॥ अधर सुरेखन पटतर पावै॥
अति सुरंग जमि रद कर पांती। दाड़िम पक्क बीज बिलखाती
कुच कमंडलू लखि बिलखाई। अद्भुत रूप कहौं किमि गाई॥
अति सुवास तन में अधिकाई। दस योजन लौं जाइ सुहाई॥
भानु प्रभास सम कांती राजत। शशि समहास मनोहर भ्राजत।
भई विवाहन योग सुनारी॥ लखि अयन जेहि शुभगद्यिनि प्यारी
किन्नर सुता मनोहर अंगा॥ गान करहिं सुंदरी तेहि संगा
दो० सीमंतिनि सन सखि कहति सुनहु वचन ऊरगारि
चौदह बरषहिं विधवपन तोहि कहे ऋषि भाषि।८।
सुनत समय तेहि अति दुख भई। याज्ञवल्क्य को तिय मैत्रेयी
तेहि के चरण धरी शिर जाई। गद्गद वचन अधीर सुनाई॥
सौभागहि बरधन मन माना। अहै कौन कहु बेगहि ज्ञाना॥
कौन देव को पूजि मनाऊं॥ कौन गुरू के शरणहि जाऊं

होइ व्याकुल सब कही वृतंता। बरष चतुरदश नाउहिं कंता
पुनि मैत्रेयी कहि समुझाई। गहुव्रत सोमवार चित लाई॥
शिव पंचाक्षर मंत्र पुनीता॥ तांत्रिक क्रिया कही सब बीता
रजनी मुख पूजिय त्रिपुरारी। सहित प्रेम षोड़श उपचारी
दो० दरबहु परै जनि छोड़ व्रत तें धरु मन चित लाइ
द्विज भोजन दम्पति बहुत पूजहु प्रेम बढ़ाइ॥
पर घर गम दरब परै जो आही॥ तदपि न शिव व्रत को बिसराई
दीन्हा का फल अस्तन कहीजे। बिगरी मम कहि त्याग न कीजे
नेषध पुरकर नल नृप जाही। इंद्र सेन तेहि कर सुत आही॥
सुत चित्रांगद ताहि सुजाना। मनहु उमापति रिपु छबि नाना
चौंसठ कला निपुन बहु कैसे। विदित पितामह नल भे जैसे
सब लक्षण महं मंडित पूरे॥ चित्रांगद शोभित अति रूरे
देखी सकल ढूंढि क्षिति माही। पर सुंदर तेहि सम कोउ नाही
वर योजना ताहि ठहराई॥॥ राशि नक्षत्र विचारि सुहाई
दो० इत सीमंतिनि करति व्रत सोमवार चित लाइ॥
कहेहु तें करइ बिशेष विधि अति शय प्रेम बढ़ाइ॥२०॥
अहहिं दिवस पूजति शत ग्यारा। दम्पति युत बस्त्रा लंकारा
अरु ब्राह्मण भोजन करवावे। आय अतीत सहित मन भावे
संगी पांग करे शिव पूजा॥॥ जागरण शशि निशि भावन दूजा
पंच सूत्र युत शिव कर लिंगा॥ मणिमय शंकर सदन सुरंगा
कोउ प्रसंग सीमंतिनि आगे॥ जाइ पाइ नहिं करि अनुरागे
अभिषेक तहं शिवहिं अपारा। मूल सहित अघ हाइ संहारा।
शिव पूजन समाज अपारा॥ बढ़इ बेद इमि कहि निरधारा
अक्षत चंदन पुष्प सुहाई॥॥ स्वर्ग सु सुगंधित शिवहिं चढ़ाई
बहु सौभाग्य तासु मुनि ज्ञानी। शिव महिमा इमि बेद बखानी

दो० धूप जरावे सुगंधित शिव मन्मुख जो जान
अगर सुबास छोड़ तेहि मुनिय कथा धरि ध्यान।२१।
दीप जरावे तेहि कर बसा ॥ वर्धमान होइ निगम प्रशंसा
दीपक के गुण और कछु नाही। कांति विशेष आयु बढ़ि ताही
करि नैवेद्य भक्ष सब वाके। वर्धमान लक्ष्मी ह्वै ताके ॥
तांबुल शिवहिं चढ़ाइ यथारथ। होवै सिद्ध चारि पुरुषारथ
नमस्कार तें रोग नशाई ॥ किये प्रदक्षिण भ्रम क्षय जाई
महासिद्धि जप साधत पावै। होम हवन करि कोष बढ़ावै
कीर्तन करत कृपानिधि आगे। रहैं ठाढ़ शिव अति अनुरागे
ध्यानहि महाज्ञान परकाशे। आधी व्याधि अवरण तें नाशे
दो० नृत्य करें तें उमापति धूप जटी भरपूर ॥ ५॥
जन्म मरण को दुख हद्दुरव करहि कृपानिधि दूर।२२।
तंत वितत मधुर स्वर गाई। वाजन सहित प्रीति अधिकाई
कंठ सुरस शुभ कीरति आवै। रत्न सुदान दिव्य दृग पावै ॥
जो जन भूषण शिवहिं चढ़ाई। विजय लाभ पावै सब ठांई।
अन्न हित भोजन जोन करावै। उक्त सकल फल महजहि पावै
सीमंतिनि प्रति व्रत सब गाई। पूरव जिमि मैत्रेयि सुहाई ॥
सेवति तेहि तें अधिक विशेषा। पूजति आदर सहित महेशा
अद्भुत सी मंतिनी बड़ाई ॥ ॥ जेहि श्रुति कवि गण मकै न गाई
तेहि प्राकृत जड़ मकै कि भाषा। कथा सुनहु अब बीच जो राखा
दो० नलकी पोत्र चित्रांगद पुरा गंभीर तेहि लाइ
आदर युत सीमंतिनिहिं दिय चित्त वर्मा राइ।२३।
व्याहोत्साह चारि दिन लौं। भइ जो अद्भुत वरणों कहा लौं।
कहत यथार्थ व्याह सुरव साग। बढ़इ ग्रंथ जिमि सिंधु पसारा
अर्बुद महसदेज धन दीन्हे। तेहि पर सुदक्षिण बहु कीन्हे

अंबर रत्न नवा लंकारा ॥ ॥ दीन्हा नृप को करै सुमारा ॥
हय गज शालायान बिशाला। खचित रत्न बहुदीन्ह भुवाला
चित्र नृत्यशाला अधिकाई। दिय जामातहि दाहुज राई॥
चारिव बरषाहि नृप दिन चारी। कीन्हे तृप्ति सकल नर नारी
अमित दान बिप्रन कहं दयऊ। लेइ जात मन अति अनरुचि भयऊ
दो० लेइ जन धन कतनी घरहिं कहि पथ डारत जाय
याचक के मुख बहुदुमि पुर मनोरथ राय।१४।
नृप उदार पन अमिति कि नाई। दारिद खारहिं दीन्ह जराई॥
दुष्कंटक दुराश बन जेते ॥। दग्ध भये मूलहिं नें तेते ॥
बरषतही घन मेघ अपारा॥ दारिद धूरि बैठ गे मारा ॥
याचक तृप्ति तृणा कुर जामा। निकर डह डह बहु आरामा
नैषध पुर के जन समुदाई ॥ सीमंतिनि मुख देखहिं भाई
चंद्रकला षोड शहिं चिराई। प्रतिहिं कला युग फांकि कराई
ताहि मनहु बत्तिस रद कीन्हे। बिच बिच शशि कलंक मसि दीन्हे
स्वासन प्रति मुख कहं सुवासा। सुगंध राज जिमि भये बिकासा
बदन सरोज जलज छबि ग्रीवा। पंकज नाल तेज को सींवा।
दो० नीम पत्र दल जलज लेइ शशि सुरथ तें नर नारि
लगे दृष्टि जनि तोरि तृण वारिउ तारहिं झारि।१५।
बिधि कुल वेद ब्याह उत्साहा। भे पूरण गे नैषध नाहा ॥ ॥
नितहिं बराति सराहिं सुहाई। सीमंतिनि कर सुंदर नाई ॥
बिजय दशमि दीपावलि आई। रह जामात प्रेम अधिकाई
बहुत दिवस राखे इमि राऊ। चित वर्मादित प्रति सुत भाऊ
लक्ष्मी सहित बिष्णु जिमि राजैं। तिमि दम्यंति तिय पुरुष बिराजैं
नारि पुरुष नाना उपचारा। करहिं बिहार समय अनुसारा
एक दिवस चित्रांगद राई ॥। लीन्हे संग सेवक समुदाई ॥

अगम सेन बलि लेकर साथा। मृगया हेतु गये नर नाथा॥
दो० अमित धर्म तन भयउ अति खेलत महा अहेर।
धर्म बुझावन हेतु तह यमुना डारी बेर।१६॥
सेवक मुख्य नाव महु लेई। चित्रांगद बैठा गुण नेई॥
कर्णधार खोवत चहु आसा। कौतुक भाषण करत हुलासा
श्याम वर्ण यमुना कर नीरा। महा भयानक अतिहि गंभीरा
सम्यक अंत यमुन जल काहीं। कबहु कोउ लीन्हा जन नाहीं।
पवन प्रचंड चला तेहि काला। डुगमग डोलति नाव विशाला
महा शब्द कनहार पुकारा॥ नाका बूड़ो नाहिं सँभारा॥
डरे सकल मन माहिं घनेरी॥ देवत नाव बूड़ि तेहि बेरी॥
महा शब्द भै एक हि बारू॥ बूड़त में जेहि अंत न भारू॥
दो० रहि सेना द्विज बहुत दुख तिन कर नाहिं सँभार।
चित्रांगद सँग के सुभट करहिं विलाप अपार।१७॥
सेवक गण धाये बिलपाता। चित बर्माहिं जनाये बाता॥
धायसि नृप उर पिठत अधीरा। पगही व्याकुल यमुना नीरा
सीमंतिनि अति व्याकुल धाई। सिविका रूढ़ मातु युत आई
गिरत धरणि उर पीटि पुकारा॥ बिधुरे कच तन नाहिं सँभारा।
शोक सिंधु बूड़ी इक बारा। को इक एक बुझावन हारा
सीमंतिनि अचेत भुइं माहीं। गिरी सँवारत पिता सुनाहीं।
मातु धाइ कन्याहि उठाई। गोरे लपट रोवत बिलखाई।
अतिहि शोक सबही भर छाई। एक हि सर करुणा अधिकाई
दो० दंपि को जल भै तन महि डोलन लागि सकुलाइ।
सीमंतिनि कर शोक सुनि सुनहु सकल ऋषिराइ।१८।
पशु पक्षी बनचर सब जेते॥ गिरि द्रुम लता वृक्ष बहु तेते॥
भये दुखित मन माहिं विशेषी। सीमंतिनि को दुनहू देषी॥

श्री हत मूर्छित दुख अधिकाई॥ सीमंतिनी परी अँध आई॥
उत नृप इन्द्र सेन युत नारी॥ सुनत सबहिं आये दुख भारी
शोक सिंधु महँ बूड़ सारा॥ दोउ समाज मिलि लगे न पारा
बहू को देखि ससुर दुख पाई। शोक अगिन महँ गै मुरझाई।
चित्रांगद की मातु दुखारी। परि लावराय वती दुख भारी
भूमि उठावति तिय समुदाई। अमित शोक कर पार न भाई
दो० लै मृतिका लावराय वति मुख डारति निज हाथ।
कहति कठिन मम कर्म गति पूरब को धुनि माथ॥१९॥
भई यथारथ तेहि करि शोका। एका एकी की धौं मोका॥
मम यक लौता एक कुमारा। चित्रांगद अति प्राण पियारा
पूर्व पाप फल याहि विशाला। भदु कालिंदी हम को काला॥
मम अंधारि को लकुटि छिनाई। को यमुना दह दीन्हि बुड़ाई॥
दाम अनाथिन कर को मोरी। लै गै निर्दय गाठी छोरी॥
मोरे राज हंस को चीन्हा॥ मृग शिशु मोर कौन हरि लीन्हा
मम चित्रांगद रूप लुनाई। कौन चोरि लै गो री माई॥
का कियि पूरब कर्म अभागी। व्रत प्रदोष की बीचहिं त्यागी
शिव रात्रिहि कि अन्नमें खाई। की व्रत सोमवार बिसराई॥
दो० हरि हर में किधुं भेद किय अादर कीर्तन नाहि।
कथा रंग उच्छेदउं की धौं कृति भुग नाहि॥२०॥
पंक्ति भेद केवल की कीन्ही। संत महंतहि दोष कि दीन्ही॥
की पर धन कर में अभिलाषा। पूर्व जन्म करि शोक प्रकाशा
की ब्राह्मण को बहुतेरें गाई। देहुं दान कहि मन ललचाई।
दान देत दाता के बीचा॥ विघ्न करिउं किधुं पूरब नीचा।
ग्रास छिनाइउं कोउ मुख केरी। की गुरुद्रोही भइउं घनेरी॥
भोजन हित हिजहि कि बैठाई। पुनि बाहिर करि दयिउं उठाई।

शिशु मृगि कर बिछोह करि दीन्ही। की यति को निन्दा मैं कीन्ही ॥
सोइ करि मम दृमि सुतधन गयऊ। विधि मोहि किये दोष फलस्वयऊ
दो० लावण्यवती कर शोक बहु मैं किमि कहौं विशेषि
भये चराचर दुखित लखि जानहिं जन जो देखि। ३१।
सचिव नारि रागिहि समुझाई। समुझि कर्म धीरज मन लाई॥
सहित चित्र वर्मा परिवारा ॥ सीमंतिनि युत नृप पगुधारा।
शोक ग्रसित आये पुर माहीं। रखि घर नृप सीमंतिनि काहीं।
इन्द्रसेन लावण्यवती युत ॥ सब सशोक गोने पुरको उत॥
अतिहि विचित्र कर्म गति भारी। चढ़ि रिपुराज छीनि लइ सारी॥
पुनि नृप इन्द्रसेन युत रानी ॥ देशान्तर भागे भय मानी॥
तहँ हूँ से शत्रु धरि लाये ॥ आनि दोउहि दृढ़ कैद कराये
लावण्यवती मन ही मन हूनै। इन्द्रसेन युत महि दुख दूनै॥
दो० इत सीमंतिनि करति व्रत अति आदर पर मान॥
पूजति दम्पति एकादश शत द्विज बिधि युत जान। ३२
दीन्हि त्यागि सब भोग सदाहीं। राति दिवस सुमिरै शिव काहीं॥
बीते बरस याहि बिधि तीना॥ चरित सुनिय आगे चित दीना
जब चित्रांगद बृद्ध भयऊ ॥ अहि तनया पताल लै गयऊ
नाग भुवन लीला अवलोकी। नृप सुत चकित नयन पद रोकी
देखि दिव्य नागिनि शुचि नारी। पद्मिनि हस्तिनि चित्रिनि प्यारी
शंखिनि आदि चतुर बिधि बामा। अंग सुवास नें मोहहिं कामा ॥
जिन के पद नख निरखि सुहाती। तिन गुंजारहिं मधुकर पांती॥
शशि सम बदन जिनहिं लखि शोभा। बंधे चकोर नपसि मन लोभा
दो० पवि आदिक नव रत्न गण जहँ नह बगरे आहिं॥
भुवन पताल सुछबि निरखि स्वर्ग लोक सकुचाहिं ३३
तक्षक अहिप विदित पहँ लाये। चित्रांगद कहँ ठाढ़ कराये ॥

कहि प्रणाम गद्गद होइ गाता। अस्तुति करत न प्रेम समाता।
निर्भय नृप सुत तक्षक आगे। वर्त्तमान अहि पूछन लागे॥
चित्रांगद सब चरित सुनाई। जेहि विधि भई सुनो अहिराई
सुनि सब पुनि पूछत अहिनाहू। कौन देव तुम सुमिरत आहू॥
चित्रांगद सुनि अति अनुरागा। शिव महिमा तब बरनन लागा
प्रकृति पुरुष जग दोइ बरवाना। इच्छा मात्रहि जो निर्माना॥
सहित प्रीति अनन्त ब्रह्मंडा॥ लव मात्रहिं रवि शक्ति प्रचंडा
दो॰ पुनि इच्छा के पलटतहि शिव समर्थ भगवंत।
छन न लगत पुनि नाशहिं प्रभु ब्रह्मांड अनंत॥२४
प्रकृती लीन पुरुष महं होई॥ पंच भूत तत्वन्ह युत सोई॥
पुनि दूनों दुक प्रीति दृढ़ाई॥ आदि पुरुष महं जाहिं समाई
निश्चय आदि सदाशिव वाही। सुनु अहि भजत अहेंहम ताही
जेहि के माया से गुण तीना। भें त्रै मूरति परम प्रवीना॥
सत्य अंश विष्णुहिं निरमायो। रज गुण अंश बिरंचि बनायो
रचि रुद्रहिं तामस तम अंशा। त्रै गुण मूरति तीनि प्रसंशा
सो शिव पुरुष पुरारी महेशा। भजहिं ताहिं हम नित नागेशा
त्रि भुवन दिशि क्षिति खपाताला। पंच तत्व सरि सिंधु बिशाला
दो॰ अष्ट धातु अरु भस्म पुनि लोए आदिहीं व्यापि।
उबरा शंभु सब तेंहि भजत सुहम तक्षापि। २५।
वनस्पती अष्टादश भारा॥ पति बीजन पुनि आदि पसारा
पति कैलाश व्यापि सब माहीं। हम आराधक तेहि के आहीं।
रवि जेहि नयन इंदु मन जासू। अंतक करण रमा पति तासू।
अहे जाहि कर बुद्धि बिधाता। अहंकार रुद्रसु विख्याता॥
भुजा प्रलंब पुरंदर जाके॥ दंत कृतांत तिक्ष्ण है ताके॥
पुरुष विराट सबहिं जो छाजा। ताहि भजहिं हम अहि कुलराजा

सुरगण चक्र आहि पुनि जेते। ये सब अंग शंभु कर तेते ॥
रुद्र एकादश द्वादश भानू ॥ ॥ ठाढ़े सन्मुख जोरे पानू ॥ ॥
बुधि अतर्क्य गुण जाहि अपारा। किमि वरणौं मैं मंद गंवारा
दो० किंकर तेहि के दासके हैं हम ताके दास ॥ ॥ ॥
सुनिये प्रभु कश्यप सुवन अहिकुल सुखद निवास।२६।
ऐसे सुखद बचन सुनि काना। नागराज मन बहु हरषाना॥
कुशल अलिंगन उठि कर दयऊ। कौतुक सकल दिखावत भयऊ
कहि जे वस्तु देव नहिं पाहीं। सब सो इहां पदारथ आहीं
कहि अहि तैं मोहि बहु प्रियलागा। रहहु स्वस्थ मम हिय अनुरागा
चित्रांगद कह सुनिय कृपाला। शिव अति भूषण तेज विशाला
जननि जनक मोबिन दुख पाहीं। मैं यकलोत तिन्हें इत नाहीं
सीमंतिनि शोभा की खानी। बरस चतुर दश की गुणखानी
देहि प्राण मम बिन पियनारी। कहत बचन नयनन भरिबारी
मातु पिता पग युत अनुरागा। देखिहौं कब मनहीं मन लागा
मम जननी मोबिन अहि राया। जोहति पंथ प्राण दृग आया
दो० पवापर गिरि अहिके कहत मोहि लिजाइ पहुंचाउ
हौं आश्रित मैं तोर प्रभु मम जन सकल भेंटाउ।२७।
होहु प्रसन्न तेहि पर अहिराई। वस्तु अपार दिये सुख पाई
द्वादश सहस नाग बल तोही। कहि दीन्हेउ तोहि प्रापति होहीं
चित्रांगद भे बीर विशाला ॥ सुनि अशीस तेसहिं तेहिकाला
संकट में जब सुमिरेसि मोहीं। दुख तें तबहिं बचावहुं तोहीं
मनोवेगि हय दीन्हा लाई ॥ ॥ अरु चिंतामणि सहित सुहाई
रत्न अमोलिक तेज अपारा ॥ दिय बहु दुर्लभ जो छिति सारा
बांधी गठरी गिरि सम दीसा। देत भयो निशिचर के सीसा
भूषण बसन दिव्य बहु ताई ॥ दिय इक अहिवर संग अहिराई

मनो बेगि हय चढ़ि कर बीरा। कढ़ा तुरतहीं यमुना तीरा ॥
तीनि बरस गत भे मुनि झारै। राज भुवन चहुं ओर निहारै ॥
दो० तेहि औसर सीमंतिनी आई यमुना तीर ॥ ॥
सत्वर सफरन हेतु करि सुनिय सकल मुनिधीर।२८।
एक मेक सुख देखत ठाढ़े ॥ ॥ परत चिन्हारिन अचरज बाढ़े
दिव्य रत्न मंडित नृप शोभा। चित्रांगद दीखत मन लोभा
अधिक तेज फणि मणि अवतंसा। डोलति भुजलोंछवि परसंसा
गज मुक्ता मणि माल बिराजै। गोरे माहि सोहत छबि छाजै
हरित मणीन कटिसूत्रहिं जरेऊ। भई भूमि हरि कांती परेऊ
हीरयरनवत्तृण जानि सुहाई। मृग पशु गण लखि आवहिं धाई
मोतिन माल तेज छबि देषी। धावत आवहिं हंस बिशेषी
देखत अरुण रत्न कर शोभा। दौरहिं युक भक्षण हित लोभा
दो० चंदन दिव्य सुगंध अंग लखि अलि आवहिं धाइ
दश दिशि व्यापेउ सुगंध बहु घ्राणदेव सुखपाइ।२९।
पड़ि भ्रम चक्रहिं विस्मित होई। सीमंतिनि सोचति मन सोई
चित्रांगदहु तटास्थित भारी ॥ छिन छिन आनन तासु निहारी
मंगल सूत्र कंठ बिन भूषण। बिन कुंकुम हरिद्र सुख दूषण
दिव्य नयन अंजन बिन देषी। चित्रांगद मन सोच बिशेषी
लखत तटस्थ रूप तेहि केरी। रंभा उर्वशि मानहु चेरी ॥
कुच कमंडलु कर पटंतर ॥ ॥ उपमा देखत नाहि जगंतर
हाटक तप्त बरण तन रहेऊ। चिंता क्रांतित दूबर भयऊ
गरहण काल कलाशशि जैसा। कांति रहित दीखत तन तैसे
दो० आइ निकट साक्षेप पुनि पूछत ताहि बिधान
कहि तू काको कौन सब जरते करहु बखान।३०।
पुनि सीमंतिनि करत बखाना। जरते आपन सकल बिधाना।

चरित जन्म तें निज भव गाई। बोलत नैनहिं जल भरि आई
दृगन अवत आंसू इमि धारा। दोउ कुच परसे सोह अपारा।
गलता लावहिं लिंग पर जैसे। आंसू बहत कुचन्ह होइ तैसे
सीमंतिनि दृग जल घट जानो। देखब तरे छिद्र घट मानो।
अवत आंसु सोइ जल करधारा। युगल पयोधर लिंगाकारा
बोलत मेरद शोहत कैसे॥ ॥ फलफात मानहु उडुगण जैसे
सीमंतिन्ह कर सखिन्ह सयानी। राजपुत्र सन कहति बखानी

दो० यहि के पति को बरस त्रय भै जल यमुना माहि
गयो बूडि यहि निकट प्रभु सोकरि असगति याहि। ३१।

यहि के सास ससुर दोउ काहीं। बंदी घर रिपु डारे आहीं॥
यह शुभांगि शोभा की खानी। यहि कर असगति सुनु प्रभु ज्ञानी
गद गद कंठ सुनत भरि आये। चित्रांगद तन लखवत सुहाये
अरुण रख दृग आंसू पोछत। पुनि पुनि बस्तर तेंमन सोचत
सीमंतिनि सखियन के पासा। दृग संकेतहि कहति प्रकासा
बर्त्तमान पूछहु इन पाहीं॥ ॥ हैं इन कौन कहां के आहीं॥
पूछति सखि आगमन तुम्हारा। भयो कहां तें कहिये सारा।
कहि वह सिद्ध पुरुष हम ज्ञानी। इच्छित ठाम जाहिं मनमानी

दो० छन पताल छिन लोक मृत्यु छिन कछिन्द्र मस्वर्ग
हमरि गमन त्रैलोक महं अलिगण चातुरि वर्ग। ३२।

हम ज्ञाता त्रैकाल सु ज्ञानी॥ कहि सीमंतिनि कर धरि पानी
अमृत बचन अवण में कहई। कंत तोर जग जीवत अहई
आजु तें तिसरे दिवस भेटावों। सुधा कदापि न बचन बनावों
मोहि सदा शिव को है आना। होइ असत्य न कल्प प्रमाना
सुभग विलासिनि चातुरि तोरी। बढहिं बिभव सुनु आसिस मोरी
पर यह बात कहसि जनि कोई। तीन दिवस राखेसु उर गोई

दूमि अति नेहि बचन सुनि जासू। चोर दृष्टि मुख देखति तासू
मम भरता सम लागत मोही। पुनि कहि यह बिधि कैसे होही
दो० पाय मृत्यु वह आव किमि भद्र अचरज मन भारि
शंभु भवानिहि ध्यावति पुनि सीमंतिनि नारि। ३३।
पुरुष पुराण कृपा कर शीला। समुझि न परै अगम तव लीला
यह जो होत कहूं पुरुष पराई। तो मम हाथ धरत किमि भाई
मम हिय उपजी प्रीति अपारा। अति आश्चर्य लगत करतारा
की अमृत यह पीकर आवा। लील काल किधुं पुनि उगलावा
हे षट बदन जनक कामारी। समुझि न तव प्रभुता मैं नारी ॥
जग निवास यह करसि जो सांचा। तो ग्यारह लख मन करि रांचा
पुजिहौं दम्पति प्रीति सुहाती। तत्तनि विल्व दल अर्पहुं बाती
कह नृप सुत पुनि सुनु सुकुमारी। तैं निज गृह अब बेगि सिधारी
दो० सास ससुर सन तोरि अब जाइ कहौं संदेश। ॥
आवत कुशल तुम्हार सुत तजहु सकल अंदेश। ३४।
सहजहिं हास्य बदन करि बाला। चलत भई तहतें निज शाला
सखीं कहतिं सबसौं करि बानी। हे फुरि मरना तोर सयानी ॥
ऐसे कौन पुरुष जग जानी ॥ सके पकरि तोरी जो पानी ॥
पुनि तेहि के दृग सुनि तव बानी। प्रेम उमगि भरि आये पानी
सुनि सीमंतिनि कहति सुशाली। प्रगट कहु जनि चुप रहहु रिआली
सीमंतिनी कमल मुख जाबी। श्री सौभाग्य सुदीरघन लाबी
गई सदन निज सिविका रूढ़ा। कतहुं न बोली बात निगूढ़ा
मनो बेगि हय चढ़ि सुतुरंता। उत गावनेउ सीमंतिनि कंता
दो० चित्रांगद निज नगर के उतरे बाहिर जाइ ॥ ॥
सुंदर उपबन देखि के सुनहु चरित चित लाइ। ३५।
अति नर भेष तुरत धरि लयऊ। रिषु कहं जादु जनावत भयऊ

द्वादश सहस नाग बल लेई। चित्रांगद आवा गुण नेई
अब तमु कैसे बांचहु सारा। प्रभु सकल सुनि हरष अपारा
इन्द्रसेन लावरायवती को। सिंहासन थापहु अब नी को
बेगहि काहि अस अहि पुनि जाई। मातु पिता पहँ खबर सुनाई
सुनि अति मै सुखवौं सब शोका। तिन के सुख उमगेउ त्रैलोका
तब रिपु होइ शरणागत कांपे। नृप राखिहि सिंहासन थापे
जोरे हाथ कहहिं रिपु भारी। अब तुम रक्षा करहु हमारी।
दो० इंद्रसेन सुत भेंट हित निकरा दल लै भार॥
डगमगाति भुइ बोझ करि बाजन बजत अपार३६
चित्रांगद पितु मातुहिं देखी। धावा प्रेम समेत विशेषी॥
धरा चरण पितु के लपटावा। प्रेम उमगि पितु कंठ लगावा।
पुनि लावरायवती मिलि धाई। जिमि भेंटति शिशु बत्सहिं गाई
जिमि कौशिल्यहि मिले रघुराई। बरष चतुर दश में सुख दाई
हरे रत्न पावै जिमि कारू। जनम अंध कहँ लोचन लाहू
प्राण जात सुख अमृत डारी। तैसहिं सुख पाई महतारी
लैकर भार बहुत जन धाये। देश देश कर नृप मिलि आये
पुरजन परिजन भेंटन आये। चित्रांगद पहँ परम सुहाये
दो० हनू जियाये लषण कहँ जिमि द्रोणाचल लाय
आनंद मय त्रैलोक महँ रहे सकल तिमि छाय।३७
चित्रांगद पितु मातु समेता। प्रेम सहित मिलि चला निकेता
नैषध पुर को सुभग सिंगारे। मंगल कलश सजे सब द्वारे।
चित्र वर्म कहँ खबर जनावन। इंद्रसेन पठये बहु धावन॥
राजद्वार तिन खबर जनाये। समाचार सब पुर पुनि छाये॥
कहे शिरंमाद नृपहिं चर बाता। उठिय राउ आयो जामाता
सुनत उठा नृप प्रेम अधीरा। उमगि आनंद नयन भरि नीरा॥

गदगद कंठ रोम भै ठाढ़े। भेंटत चर कहँ आनँद बाढ़े
अम्बर द्रव्य द्विजन्ह कहँ राई। देत निछावर अगिनित भाईं
दो० नगर बंदा वन शर्करा भरि भरि रथन्ह अपार।
भेरि नफेरी सहनई बाजत मंगल झार।३८।
सोरे सुनि भूसुर समुदाई।। सकल कोष नृप दीन्ह दिखाई
लीजिय धन जेतनी मन चाही। मोरे सुरद कर पारहि नाही।
जय जय शंकर करुणा कंदा। कहि नृप नचत विदेह अनंदा
मंगल वस्तु लेइ सब काहू। पुरजन दौरे अतिहि उछाहू॥
सीमंतिनि को लीन्हि बुलाई। भूषण बसन दिव्य पहिराई॥
बेदध्वनि जय जय उच्चारी।। मंगल सूत्र बांधि शुभकारी।
कुंकुम भाल सुअंजन नैना। सुचि हरिद्र चंदन तन चैना॥
चरची सुमनहार पहिराई। सुभग सुवासिनि सुगंध लगाई
दो० भूषण सब सौभाग्य को पहिराई सुचि नारि।।
त्रयोदश गुण बीरा सुरवहि दई बिलास बिचारि।३९
कटु अरु तिक्त उषा मधुरवारं। स्वादु कसायन बात निवारं।।
कफ कृमि अरु दुर्गंधि विनाशक। मुख आभरण विशुद्धि प्रकाशक
काम अग्नि को वर्द्धन दाता।। तेरह गुण नांबुल को भ्राता।
पितहिं दुर्लभ स्वर्ग के माहीं।। नांबुल दीन्हि सिमंतिनि काहीं
खैर लौंग पूंगी फल पाना। जाय पत्रि चूना परमाना॥
खोपरा अजवाइन फल जाती। अरु लाइची मिलाइ सुहाती।
कर्पुर केसर मृग मद बासा। देकर बीरा दीन्हि बिलासा॥
कोउ सुक सरिव शृंगार सँवारैं। कोउ पिक पात्र सु सन्मुख धारैं
पुरतिय गण आवहिं सब धाई। लखवहिं सिमंतिनि कहँ सुख पाई
गद गद कंठ मातु उठि धाई। सीमंतिनिहि लीन्हि उरलाई
पुत्री तव सौभाग्य अपारा। बाढ़ि असंभव गिरि आकारा॥

नरु ऐश्वर्य्य गयो रहि दूना ।। पुनि बढ़ि नभ लौं शाखा फूटा
तब सौभाग्य चली भरि गंगा। उतरहिं कबहूं नाहिं अभंगा
प्राप्ति दिन व्रत सम धन्यन दूजी। कहि ग्यारह लखव दंपति पूजी।
दो० शिव व्रत पूजा धन्य है भै सजीव जामात।।
चित्रांगद चित वर्मपुर आये जननि युत तात।४०।
नृपति चित्र वर्मा तबहि लै सब साथ समाज ।।
आगे आये मिलन हित महा मुदित मुनिराज।४१।
गर लपटाइ मिलेउ जामाता। ससुर धाइ उर सुखन समाता।।
भरी सृष्टि महँ परमानन्दा। बरषहिं पुष्प बिबुध कुल वृंदा।।
मिलि सप्रेम उरलाइ उछाहा। अद्भुत शुभ पुनि कीन्हि बिवाहा।
पुनि चित्रांगद नृप कर राई।। सीमंतिनिहि इकांत बोलाई
कहि यह अभिरण पहिरु सुहाती। सुचि अमोल तेजित बहु जाती।
पहिरु पतालु को अद्भुत भूषण। सीमंतिनि पहिरति द्युति पूषण।।
फांकि रत्न नव तेज असीता।। नर नारी लखि चकित चीता।
अमित सुगंध पताल तें लाये। निज करतें प्रिय तनहिं लगाये
अमित वस्तु महि माहि अनूपा। ससुरहिं हिय चित्रांगद भूपा।।
सास ससुर के पग धरि सीसा। सीमंतिनि लहि मुदित असीसा
दो० सुता तोर सौभाग्य ना बाढ़ै सिंधु अपार ।।
रहै भरे नित घटन कमु सुख में करहु बिहार।४२
पुत्र बहू के सहित सुहाये ।। इंद्रसेन नैषध पुर आये ।।
लखि शुभ दिन द्विज सकल मुवारा। चित्रांगदहिं तिलक शुभसारा
राज काज सब सुत को दयऊ। इंद्रसेन तपहित बन गयऊ
नहँ करि शंकर दरश सुहावा। इंद्रसेन शिव पद को पावा।।
सीमंतिनी आउ सुत ब्यानी। वीर सुधीर पिता सम ज्ञानी।।
बरष सहस दश नैषध राई। कीन्हि राज निर्विघ्न सुहाई।।

पिता महानल होगें जैसे ।। तेज पुंज दाता यशि तैसे ।।
चित्रांगद नृप करत सुराजा। न्याय नीति बरतत सुख साजा।
दो० सोमवार शिव रात्रिहि अरु पुनि व्रत पर दोस ।।
करति सीमंतिनि प्रीति युत नितनव अधिक भरोस। ४३।
अद्भुत नेहि कर ख्याति बिलासा। शोनकादि प्रति सूत प्रकासा ।।
सुरस सिमंतिनि यह अरख्याना। सुनिहि सुहागिनि तिय धरिध्याना।
तेहि सौभाग्य बढिहि सुनु सारा। अरु बिछुरे भेंटिहि भरतारा ।।
विधवा सुनहिं याहि चितलावहिं। ते पुनि जन्म दिव्य पति पावहिं ।।
धरिये प्रीति शंभु पद माहीं ।। सोमवार व्रत छोड़िय नाहीं ।।
यह अरख्यान सुने मन लाई। बिछुरे पुत्र मिलै पुनि आई ।।
विद्याज्ञान विभव बहु पावै। बढ़ै आयु सब रोग नशावै ।।
मृत्यु गंडातर निकट न आवै। शत्रु पराजय गत धन पावै ।।

छन्द

धन धान्य रद्धी मिलै सिद्धी श्रवण पठन सुकीजिये ।।
कलमष बिनाशन कुशल बासन शंभु पद मन दीजिये।
सीमंतिनी को चरित अति अनुराग भक्ति माघ नहा वहीं ।।
त्रय ताप होइ बिनाश अंतहि शंभु पद को पावहीं ।१।

दोहा कथा सुधारस पिवहिं नित सज्जन बिबुध सुजान।
निंदक असुर करैं सदा अहंकार मद पान। ४४
खंड भेद क्षय रहित प्रभु अचल भक्ति पद देहु ।।
है श्रीधर तव शरण गहि पुनि किय गजराज सनेहु। ४५।

।। इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गज राज कृते भाषान्तर भाषा मधुर षष्ठमोऽध्यायः ।। ६ ।।

वज्रबाहु राजा की पटरानी सुमंति का कन्या बसबन में बहुत दुख पाना और शिव की कृपा से उस रानी के पुत्र भद्रायु का मौत से जीना और ज्ञान सीखना-



सप्तमअध्याय

जयजय विधुनवभूषणधरना। महिधर पति तनया करभरना
अहि भूषण पावक मयनयना। चरित विचित्र तोर सुखअयना
अमित तेज शत लकवतमारी। जग व्यापक जग पति कामारी
हरि प्रिय भूता धीप अनंता ।। वपुषा वपुष विश्व कर कंता
पंद्रह नयन पंच मुख राजै ।। अति आनंद पर धाम विराजै
अति पावन पय फेनु शरीरा। अति मंगल्न पर ब्रह्म गंभीरा
मंद हास मुख करुणासागर। षट्मअध्या निर्मल आगर
सीमंतिनि कर चरित सुहाये। हे नंदी प्रभु तुमहिं कहाये।
दो० श्रीधर के मुख ते निजहि गुणहि कहायेशापि

रसिक पुराण बनायउ व्यास सूत कहँ थापि। २।
सुनत बचन हसि शंभु कृपाला। भये कहत हरकथा बिशाला
पुर विदर्भ सुशील द्विज एका। बेद मित्र तेहि नाम बिबेका।
बेद शास्त्र महँ पूरण ज्ञाता। तेहि कर मित्र रहा विख्याता
द्विज सारस्वत नाम सुज्ञानी। प्रीति परस्पर मन क्रम बानी
बेद मित्र कर सुत गुण आगर। नाम सुमेधा जन्मेउ नागर
सोमवंत सारस्वत दोटा ॥ प्रीति उभय कर अति शुभ जोटा
बहुत ज्ञान दश ग्रंथ हुँ तिनके। सब पुराण मुँह पाठन्ह जिनके
दश ग्रंथन्ह के नाम सुहाई। कहउँ गाढ़ सुनिये चित लाई
संहित पुनि पदक्रम अरु अरणा। आरण्य छन्द निघंट सुबरणा
शिक्षा ज्योतिष कल्प व्याकरणा। अरु निरुक्त दश ग्रंथ शुवरणा।
दो० विद्या व्यसन करत उभय गत भे षोड़श वर्ष ॥
दोउ के पितु कहि मिलहु अब नृप विदर्भ कहँ हर्ष। २।
विद्या अद्भुत आपन दिखावहिं। द्रव्य मिला बहु तुम बहुताई
पुनि हम बंधू यथा रथ देखी। करब तुम्हार बिवाह विशेषी
सुनि द्विज पुत्र दोउ मिलि साथा। सत्वर भेंटे विदरभ नाथा।
विद्या धन को निज भंडारा। नृपहिं दिखावत दोउ कुमारा
लखि विद्या नृप आनंद पावा। पर विनोद नव एक मढ़ावा।
कहि मैं एक बनावौं भावा। धरि तुम दोउ जिय करहु सुहावा
चित्रांगद नैषध पति आही। विदित राशि सीमंतिनि ताही
वह सुशिवा शिव भाव बढ़ाई। पूजति दम्पति बहु हरषाई
दो० तुम इक नारी भेष धरि एक पुरुष कर रूप ॥
जाहु येहि छिन नासु हिग कहत भए हसि भूप। ३।
भूषण दिव्य द्रव्य बहुतायी। देहहि पूजिहि लखि हरषाई
दूनौं पलठि उहाँते आवहु। पुनि दुच्छिन धन मोहि सहु पावहु

मातु पिता गुरु बचन हि सादर। सुनिय सदा नहिं करिय अनादर
सुनत उभय बोले हिज बालक। यह अनुचित अतिकर्म कुपालक
देखत पुरुषहिं नारी भेषा। सफरे तुरत सचैल विशेषा
पुरुषहिं नारि भेष लखि पावे। देखत हार नरक महं जावे।
भेष धरेया निश्चय सोई। जन्म जन्म नारी तन होई
यह परत्र अनुचित अतिकर्मा। वेद शास्त्र हमि कहत सुधर्मा
दो० तेहि पर विद्यावंत है सुनु विदर्भ पति बात ॥ ॥
द्रव्य मिलावब अमित हम कर्मी न हमको तात। ४।
विद्या लक्ष्मि सतेज हमारी। तोषन करब अवनि पति भारी
पद अंबुज हमरे नमि राई। करि विनती धन देहिं सुहाई
विद्या सद्गुण पंडित माता। विद्या फल अकाल को हाता
तजि विद्या सुरगो हम आपी। निंद्य कर्म नहिं करब कदापी
मातु पिता तेंअधिक दयालक। विद्या दुरव विदेश में पालक
हम को देखि सकल दिग्गिनाथा। जोरे हाथ नवावहिं माथा।
विद्या हीन सो मनहु पषाना। जिय नहि सुत अज्ञान मूरखजाना
बदन तासु नहिं देखिय ज्ञानी। जननी ताकरि बादि बियानी
दो० सुनि नृप होउ के पग परउ अस्तुति कीन्हि बहोरि ॥
दुतनि बचन जिय धरहु तुम हे हिज कुल मणि मोरि। ५।
भै असमंजस मन में आगर। कीन्हि कबूल तुरत दोउ नागर
भूषण अंबर लाद नरेशा। देइ एक कहं नारी वेशा ॥
सोमवार निशि पूजा काला। गे दुक पुरुष होइ दुक बाला
जो सबतिय में शिरो मणि आहीं। जिहि कर पटतर छिति पर नाहीं
जेहि कर सुंदरता लखि नैना। नाचहि मद विदग्ध होइ चैना
सरस्वती उर्वशि अरु रंभा ॥ लखि लज्जित होइ करहिं अचंभा
सीय सुभद्रा और भवानी। जिन के पटतर शोभति जानी

सो सीमंतिनि दंपति देखी। कृत्रिम रूप मनहुँ सति विशेषी
दो० भाव अर्थ मन माहिँ धरि तद्यपि चातुरि रवानि।
पूजी प्रेम समेत कहि शंभु भवानी जानि॥ ६॥
भूषण बसन सुद्रव्य सुहावन। अन्न भोजन षटरस पावन
शिव गौरी कहि कीन्हि प्रमाणा। कीन्ही बिदा चले निज धामा
चले ग्राम पथ शोहत आछे। आगे भरता कामिनि पाछे
नाना मद कौतुक परिहासा। आपण करती तियतेहि पासा
यह एकांत बन है कह नारी। सघन वृक्ष लागे बहु भारी।
मोहि मन मिज मद पावक भारी। सुनहु प्राण पति लागि दवारी
सुरत मेघ पिय नें बरषाई॥ मम अंग शीतल करहु सुहाई
मैं नारी भद्र निश्चय जानू। निकट आइ देखहु अब मानू
दो० द्विज सुत कह का करसि अति तें पुनि पुनि परिहास
कांधे को फेंट लपेटु कटि होमि पुरुष श्रम नास॥ ७॥
आस पास कर पंथी प्रानी। होंमहिं लखि विनोद काठानी
सुनि होद मूर्छित मद वशा नारी। गिरी भूमि तन सुरत बिसारी
कहति प्राण पति बेगहिं धाऊ। मद ज्वर तें करि शांति बचाऊ
सुनि द्विज पलटि आव रिसियानो। हत्या विटंबन कहि काया नो
एक आता तुम हम यक संगा। ब्रह्म चारि विद्या रचि अंगा।
कहि तिय नहिं परतीति विशेषी। तो तन मोर दंड लखि देषी,
गयो पुरुष पन में भद्र नारी। दुहुहिं भोग अब मोहि सुखारी
कहि धरि कर तिय मन करि खोटा। लइ एकांत गइ मारग ओटा
दो० पंथ छड़ाई ले गई जहँ नर न लगे अपार ॥
पल्लव पसरे भूमि पर नभ महँ लागे डार॥ ८॥
देव दारु तरु साल तमाला। डुमर कद मित्यादि रसाला
सो बन बेगहिं ले गइ नारी। कहेति शंक सब देहु बिसारी

मैं नारी तुव तैं भर तारा ॥ नहिं है भाव दूहां निर धारा।
द्विज सुत कहि यह शोभन नाहीं। तुम हम गुरु बंधु सुनु आहीं
पढ़ेसि शास्त्र तैं जो समुदाई। तेहि कर का अब यहि फल भाई
पत्नी निर्मल सुकृत साधन॥ मन विचारि देखहु आराधन
दूसरो नारी पुनि तरुणाई ॥ अति निर्लज दूकांत बन पाई
मद मत धाइ गरे लपटाई। चुंबन देन लगी ललकाई।
दो० लेइ हाथ तेहि कर कहति यह मम अस्तन देखि।
पंकज कली कमंडलू दाडिम सरिस विशेषि। ८।
तब द्विज सुत हठि दिय झटकारी। व्यर्थ अनर्थ करत क्यों भारी।
धन्य धन्य वह पुरुषहिं भाई। परतिय संग दूकांत बन पाई
सधन सभा यत रुगा बन माहीं। बिनवत चित्त डिगै तेहि नाहीं
जेहि के वृत्ति न होइ विकारा। सो नर केवल शंभु उदारा॥
तेहि के निकट तीर्थ समुदाई। रहई आइ सेवा हित भाई॥
घोर रण्य जहं न जन कोई ॥ धन घट देखे नै नहि जोई।
चले त्यागि तेहि मन न चलाई। शिव स्वरूप सो निश्चय भाई
निरत कर्म सत अरु सत वादी। मुह पठ बेद शास्त्र जेहि आदी
दो० इतनेहु विद्यावंत होइ जेहि किंचुक नहिं गर्व॥
तो वह शंकर रूप है निश्चय जानहु सर्व। १०।
आपन निंदित गुह्य कुकर्मा। प्रगटै निंदक बोले बर्मा॥
सुनि मन खेद न किंचुक पावे। सो शंकर निरधार कहावे॥
कूट दोष गुण पर के कोई। अनु दिन सुनै नैन तें जोई।
जाइ प्राण पै मुख न निकारा। सो शंकर जानिय निरधारा।
नारी पुरुष चराचर जेते ॥ गुरु रूप देखे सब तेते ॥
आपन सुकृत अरु तप दाना। जो न कहै सो शंभु समाना
शत्रु मूरख अरु पंडित पाहीं। रखे प्रीति समलखि दोउ काहीं

कीर्त्ति बढ़ै मम नहिं मन जाको। निश्चय शंकर जानहु ताको।
ह्वै सत गुणी जगत चहन बड़ाई। शिष्य करौं अस नहिं चित आई
दो० संग न भावै काहु कर भावै जाहि इकंत।।
तिन को शंकर जानिये निश्चय वेद भनंत।११।
मन चंचलता भ्रान्ति उपाधी। गई छूटि मन लागि समाधी
घर संपति कर संशय नाहीं। निश्चय शंकर जानिय ताहीं।
परम हंस ब्रह्मानंद मानो।। ऐसे पुरुष कांहि सत जानो
चरण पादुका तेहिकर होई। रहिये नितही श्री धर सोई॥
वेद मित्र सुत साधु उदारा। धीरज शास्त्रहि काम निवारा
कह ग्रामहिं चलु जावैं आछे। करब सोच यहि बातको पाछे
कहि इमि सारस्वत सुत काहीं। संग तिय रूप लाय घरमाहीं
गत सब चरित विप्र कहँ कहेऊ। आदिहिंते जौने विधि भयऊ
सारस्वत सुत दशा निहारी। विलखि भूमि गिरि करि दुख भारी
दो० उर पीटत द्विज राउ पहीं बोला अकुलात।। ।।
दुर्जन तोहि पर देउं जिय तैं कियमम बड़ घात।१२
वेद शास्त्र सम्पन्न सुज्ञानी। सुत नहिं पुत्र रहा मम जानी।
रैतें कीन्हि मोहि निर बंसा।। करिया मुख तुव भैनिह संसा
नृप विदर्भ नीचे सिर कीन्हा। कहि सत भैकिमि कत्रिम चीन्हा
शिव माया अति अद्भुत आही। प्रभुता अघटित घोभै जाही
नृप सब विप्रन काहि बोलावा। चरण बंदि अस विनय सुनावा
अनुष्ठान ते जिन द्विज कीजे। यहि कहँ लाइ पुरुषता दीजे
तब मैं धन्य होइ हौं नीका। धरहु विनय मम मन द्विज लीका
यह ईश्वरि कर कला बिशाला। हमसे पलटि हि नाहिं भुवाला
दो० नृप विदर्भ मन दुखित भै सुनत द्विजन्ह को बैन।
तब आराधन देवि कर लागा करन अचैन।१३।

दुरधर हवन कीन्ह महिपाला। करि दिन सात उपास बिशाला
देवी होइ प्रसन्न तब कहेऊ। मांगहु वर नृप मांगत भयऊ
सोमवंत तिय भै कह भूपा। यहि पुनि करसि पुरुब करूपा
देवि कहति यह बात नृपाला। सुधरिहि नहि निह शेष त्रिकाला
अति पतिव्रता सिमंतिनि रानी। परम भक्त सत गुण की खानी।
तेहि के कर तब मोहि सेराई। नहिं मिटिहहि कोनेहु विधि भाई
अब सारस्वत को सुनु राजा।। एक पुत्र होइहै गुण साजा।।
याहि सुमेधा के अब साथा। करि बिवाह दीजे नर नाथा।।
दो० ईश्वरि को आज्ञा करि दइ बिवाह तेहि जान।।
सारस्वत को पुत्र भै देवी बचन प्रमान।।२४।
धनि शिव शक्ति सिमंतिनि केरी। पटतर नाहिं जगत चै हेरी।
पारवती जेहि कर तब काहीं। दोरि सकीं कोनेहु विधि नाहीं
सो सीमंतिनि करणि सुहाई। किमि राज राज कहै जड़ गाई
यहि विधि भयउ चरित अब आगे। दूसर कथा सुनिय अनुरागे
इक द्विज पुरि अवंति महरहई। सुनहु सुचेत सूत अस कहई।
नाम मदन रह विषयि अमीना। स्त्रग शृंगार सुगंध बहु प्रीता।
बिदित पिंगला नाम सुगनिका। तेहि सेरत भै त्याग न तनिका
ब्राह्मण कर्म धर्म सब त्यागा। मातु पिता तजि दीन्हि अभागा
दो० दुराचारि निज नारि तजि करि विश्वा घरवास।।
अहोरात मद मांस रत मन सिज कीन्ह निवास।२६।
करण हेतु जग के उद्धारा।। आपु हिं शंभु लीन्ह अवतारा
योगेश्वर होइ ऋषभ नामा। विचरत महि परम मन अभिरामा
मोक्ष भक्त गण जे निज आहीं। दुख संकट काटत तिन काहीं
घर पिंगला अचानक आये। पूर्व पुण्य करि सुकृत सुहाये
शिव योगिहि लखि दोउ उठि धाये। प्रेम सहित ऋषि पद लपटाये

सोरह भाँति कीन्हि दोउ पूजा। दुरा भाव करि प्रेम न दूजा
पुरुक सुपक्व विदग्ध विधाना। चै विधि भोजन बेद बखाना
खाद्य चोष लेह अरु पेहा ॥ चै विच चारि स्वाद पुनि येहा
पुनि षटरस व्यंजन बनवाये। प्रीति सहित भोजन करवाये
बहु बिधि भोजन देकर दोई। भूषण बसन दिये पुनि सोई
दो० सेज बिछाये दिव्य अति सैन कीन्ह ऋषिनाथ।
अरुणोदय लौं दोउजन चांपत पगनिजहाथ।१६।
रहि दुक निशि शिव योगि सुजाना। प्रात काल भै अंतर्धाना
हमे दोउ कहि गिरिजा नाथा। दै दरशन गे कीन्हि सनाथा
मदन पिंगला कछु दिन बीते। पाये मरण सुनहु सब प्रीते
पूरब पुराव ग्रंथि मह रहेऊ। शिव योगिहि जो पूजन कियऊ
तेहि प्रताप तें सुनु मुनि चारी। आगे कथा कहौं विस्तारी॥
कीरत वंत दशार्णाधि देशा। वज्र बाहु तहँ केर नरेशा॥
सुमती नाम तासु पटरानी। उपमा मह रमयंती जानी
तेहि के गर्भ बास मह आवा। मदन विप्र आगे जो गावा।
दो० उत सीमंतिनि उदर तें पिंगला गणिका जान॥
जन्मी कन्या रत्न होइ सुनहु कथा धरि ध्यान।१७।
कीर्ति मालिनी नाम सो पाई। आगे कथा सुनहु मन लाई
दूत सुमती के उदर मझारी॥ रहा गर्भ जाने नर नारी॥
रहीं सोत तेहि केर अपारा॥ उन ईर्षा करि कीन्हि विचारा
पटरानी यहि होइ है बालक। अस कहि विष तेहि दियेकुघालक
सुत मरइ यहि मरी न बाला। पर रुज सहित प्रसवितत काला
बालक सहित मातु के अंगा। सब विष फूटे बहुत अभंगा॥
दूत अरु वरणा भये तन मारी॥ निशि दिन रक्त पीव बह भारी
नृप बहु वैद्य बुलायउ सोई। औषधि दिये नीक नहिं होई॥

दो० रोवे शिशु निशि दिन सुमति विह्वल करती शोग।
लोक होहु वा होहु मृत्यु लगा सबल निह सोग।१८।
रोवे शिशु नित बहु दुःख पाई। निशि दिन नींद नृपहिं नहिं आई
नृप बिलसियादु रथहिं चेढाई। छोड़ी घोर विपिन महं जाई
जहं न आहि नरन को वासा। कोटन बाघ अहि करहिं निवासा
सुमती बालक कहि पर लेई। दूतउत भरमत मन दुख भेई
पगन्ह गड़त कुश कंटक भारी। गिरत भूमि मूर्छित होइ नारी
दुखत अंग बरणा करि मारा। जल बिन रोदन करति पुकारा
कहि जगदात्मा हे कामारी। जगत वंद्य कैलाश बिहारी।
मूरति ब्रह्मानन्द तुम्हारी॥ आशु तोष दानी त्रिपुरारी॥
दो० बज्जर पंजर भक्त हित कीरति तोर अपार॥
निगमागम गावत सदा पावत नाहीं पार।१९।
जै जै जै जै दोष विनाशा। जै हर तीन पंच मुख हासं।
अंकुर जगत मूल जग त्राता। जै अज अजित फेनु पयगाता
जै चौरासी लक्ष विकारिं। जन्म मरण दुख करहु निवारिं
अंत न आदि सिद्ध घातगूर्णा। माया चक्र चलावसि पूर्णा
गुणातीत जग व्यापक रूपा। जग गुरु धाम बचाउ अनूपा
अति व्याकुल सुमती गुहराई। उत बन सिंह बाघ घह राई॥
सुनत डरै मन अति घबराई। गिरत भूमि शिशु युत दुख पाई
रामचन्द्र जिमि बन महजाई। जनक सुता कहं दीन्ह गवाई
दो० बीर सेन दमयंति कहं जिमि बन काढ़ा जाय॥
पति वियोग सहि दुसह दुख तिमि सुमती दुख पाय।२०।
सुमती को करुणा सुनि काना। पशु पक्षी लागे बिलखाना॥
गिरत भूमि मूर्छित लहि देखी। तरु खग छाया करहिं विशेखी
चोचन्ह भरि भरि शिशु पर पानी। सींचहिं खग पुनि पुनि दुख मानी

कोउ पक्षी मधुरस लै लावैं। चोंच चन्ह करि शिशु के मुख नावैं
बन गो पुच्छन बाउ डुलाई। रजनी रक्षा करै सुहाई॥
सुमति रानि बन घूमति ऐसे। चरित सुनहु आगे भै जैसे
बणिक एक आवा सोदूपंथा। लादे भार वृषन पर कंथा॥
चली संग तेहि के धरि पाछे। वैश्य नगर इक प्रविशी आछे

दो० वैश्य जाति पद्माकर सुशुचि तहँ कर भुवार।
रक्षक सब हीं वस्तु कर परम सुभागि उदार।२१।

वह सुमती मन पूछत बाता। कहहु तू कौन कहाँ कर माता
मूलहिं ते वह सकल प्रसंगा। कहि नृप मन जो बीती अंगा
सो सुनि पद्माकर अनुरागा। भरि उर आंसु बहन दृग लागा
विलपित लीन्ह उसास नृपाला। कहति कर्म गति गहन विशाला
बज्र बाहु नृप की पटरानी॥ पतिव्रत नारि शिरोमणि जानी
विचरत विपिन अनाथ निरासा। दीन बदन आई मम पासा।
पुनि पद्माकर सुमतिहि कहई। तैं मम सुता धर्म की अहई॥
देकर अदन परासहिं ताको। लेवै खबर राति दिन वाको

दो० वैद्य आनि कर बहुत नृप दीन्हि रसायन साधि॥
बहु उपाय औषधि कियउ छूट असाधि न व्याधि।२२।

कहति सुमति सुनु तात सपूरा। बिनु गुरु होइ वैद्य नहिं दूरा।
काहूं नें ये दुस्तर व्याधी॥ कल्प हुं नीक न होइ असाधी
बाढ़ा रोग अतिहि बल वाना। गयो छूट नृप सुत कर प्राना॥
रोदन सुमति करति अतिभारी। कहति रत्न मैं खोइ गँवारी।
बहुत भांति पद्माकर राई॥ समुझावत पुरजन जुरि आई
जिमि निशि गन रवि उवे सुहावा। तिमि शिव योगि नहीं नव आवा
बिना मणी रंक घर जैसे॥ देवन खोजन आवे तैसे॥
महा सुधित के आवै आगे। क्षीर सिंधु आपहिं अनुरागे

दो० शुभ सिंहासन थापि नृप पूजि चरण धरि माथ ॥
सुमति हेतु बहु बिनय करि कहि प्रभु करिय सनाथ।२३।
सुनि शिव योगि निरूपण ज्ञाना। दिव्य सुमति प्रति लगे बखाना
कहि हे पुत्रि सुमति सुनु बानी। शोक रुदन तें काहे ठानी।
पूर्व जन्म के सुत पति बापू॥ अहहिं कहां भल तुव कहु आपू
स्वजन सगे परि जन तहँ केरा। कहँते आइ टारे कित डेरा॥
सबही योनि फिरत जो आई। सब वृत्तांत अब कहहु सुनाई
फिरसि सुमति तें योनी नाना। पुनहु बार बहु फिरसि जहाना
तें रोवसि किमि का कर ढोटा। मन विचारि लखु संसृत खोटा
जेहि जेहि वरण धरत तन प्रानी। नाचत नेहि नेहि कुल अभिमानी
दो० पर आपन उतपन्न को कबहु न देखत पोच।
को मैं कहँ उत पति मम लखत नया को शोच।२४।
तें निज पुत्र कहां तें लाई॥ पुनि गै कौन पदहि सुत पाई।
तें अरु ये सबजन जो आहीं॥ कोने तनहिं कहां को जाहीं॥
आत्मा शिव शाश्वत कह धीरा। नाशवंत छन भंगु शरीरा॥
सो तें शोक करसि विरथाहीं॥ निज विचारि देखसि मन माहीं
आत्म नाश बिन शाश्वत आहीं॥ वह सुत बंधु काहु कर नाहीं॥
तन हित जो शोक करसि अनुरागे॥ तब तो प्रेत पदा तव आगे॥
ऊठि तरंग जल महँ अति जैसे॥ पुनि छिन भंगहि नाशहिं तैसे
जो मृग जल कहँ मिथ्या जानो। तो बुड़ बुड़ा मत्य किमि मानो
दो० चित्र वृक्ष के छांह तर कोजन बैठा जाइ॥ ॥
चित्र लिखे जो आगि कर केहि घर जारी धाइ।२५।
लिखे चित्र जो मोन सगंगा॥ तिन महँ बहि को गया अभंगा
बंध्या सुत सन धन किमि लेई। भिक्षा सुता मारुति कहँ देई
गंधर्व पुर कर लाइ बराती॥ कौन विवाह किया केहि भाँती

वायू को मंडप बनवाई ।। सिकता रजु बांधी खैंचाई ।।
सीपि रजत को पात्र बनाई ।। नभ कर फूल अग को माई
कच्छप घृत के दीप जराई । कमिपगन पुर नचै सुहाई
देखन जुरे जन्म को अंधा ।। मृग जल मीज झूठ जग धंधा।
सर्प कान को कुंडल हेरी । लैगे तस्कर चित्तहिं करी ।
दो० जर हीं तें जो झूठ है सत्य ताहि किमि जान ।।
यह प्रपंच दृढ़ सुमति जिय धरहु कहौं जो ज्ञान।२६।
जेहि के जरहिं शशाश्वत नाहीं। तेहि के शोक करब भल नाहीं
लोग वृक्ष कर सब उद्यानू। मै शरीर उत्पति तैं जानू ।।
अहै कोष सब रुज कर देहा। कृमि कीटक कर नैहर येहा।
उदधि पाप कर देह बखाना। अंबर भ्रम कर निश्चय जाना
मूत श्लेष्म मांस लहु जोरी। तोपे चाम अस्थि कर मोरी।
पितु को शुक्र मातु को सूतक। अशुचि असत्य जरहिं ते सूचक
दुमि अशौचि जन्मे तन प्रानी। धनु सूत सींचहिं शुभ जानी
कर्म बेध सोरज कृत भावना ये सब कीन्हे होइ कि पावन।
दो० तरे प्राणि कौने विधिहि जो गुरु शरण न जाइ ।।
कल्प कोटि लौं भरमहि मुक्ति कबहु नहिं पाइ।२७।
जन्म जन्म के तुव पति जोई। वेगि सुमति कहु कहहैं सोई
माया पूर सकल ये जेता । सो बेगहिं तैं होउ सचेता ।।
नाशवंत ये सकल सिंगारा। देखब मूंगवलजा चन हारा ।।
त्रय गुण देह सदनहि बनाये। पंच तत्व कठ बांस लगाये ।।
याकर कबहुं भरोसा नाहीं ।। लागे अनल कबधौं जरि जाहीं
अरुचि जीर्ण पट नवप्रिय लागा। तिमि तनछुट वरहव अनुरागा
मृग जल सम सब मिथ्या जाहीं। मिले राज जिमि सपने माहीं
लाजन सब हीं पापि समूलो। सुत तिय घर सम्पति लखि भूले

दो० मिलहिं काठ बहु बहत सरि बहुरि भिन्न होइ जायँ।
तिमि परिजन मठ सम्पति जुरि पुनि जायँ बिलायँ २८

जुरैं वृक्ष पर खग समुदाई ॥ । कद बैठहिं कद इक उड़ि जाई
तजि वह तरु दूसर तरु जाहीं । तैसहिं परिजन सकल बिलाहीं
पंथी नरु तर बैठहिं आवैं ॥ । पथ श्रम खोइ बहुरि उठि जावैं
परिजन सगे नारि सुत भ्राता । तिमि निश्चय सुनु सुमती बाता
माया मय प्रपंच तरु ऊपर ॥ । जिव शिव खग बैठे दुइ सू घर
शिव सब साक्षी अहै सचेता ॥ । जीव विषय फल खात अचेता
भक्षत भूलि गया निर धारा । वह आपन को आप बिसारा
भ्रमित जीव भरमहिं यहि हेतू । जन्म मरण दुख सहत अचेतू
कोउ इक पुण्य वंत तिन माहीं । जो सत गुरु के शरण हिं जाहीं
दो० पुनि शिव होकर भजत वह निज को शिव पहिचान
अतिहि प्रेम शिव निमित करि सुनहु कथा धरि ध्यान २९

दिव्य निरूपण सुनि हमि बाणी । उरि पद्माकर सुमती राणी ॥
अष्ट भाव करि कीन्ह प्रणामा । बंदहिं पग मुनि के अभिरामा
कस न होइ तोरे प्रभु ज्ञाना । कान करसि इच्छा परमाना ।
साक्षात तैं गिरिजा कंता ॥ । भक्तन्ह रक्षक दीनसि अंता ।
मंत्र राज मृत्युंजय भाई ॥ । पुनि शिव योगि सुमति हि बताई
मंत्रहि भस्म लगावत अंगा । व्याधी छूटि भई सो चंगा ।
रंभा उर्वशि तें वह आगर । भई सकल शोभा की सागर
मुये शिशुहि पर भस्म लगाई । उठा बाल तन काल सुहाई ।
दो० वरण व्यथा सब छूट कर भै तन निर्मल बाल ॥
बत्तिस लक्षण में निपुण बालक भै तन काल ३७
सो० शंभु उपासन ध्यान अति अनूप निर्मल नितहि ।
सुमति बाल कहँ ज्ञान उपदेशेउ शिव योगि शुभ ३८

पारस मरिा परसत ही लोहा। कंचन होइ तेहि सम सोहा ॥
तैसहिं दूनों दिव्य शरीरा । भैं ततकाल सुनहु मुनि धीरा ॥
लखि अचरज पद्माकर बोला। धन्य मंत्र गुरु धन्य अमोला।
काल मृत्यु भय परम बिशाला सबतें रक्षैं गुरू दयाला ॥ ॥
गुरू चरण नित प्रीति लगावे। भव भय आपद सो किमि पावे
अति असीम अनधन तेहि बाढ़ै। भेद खेद दुख छूटै गाढ़ै ॥
सुत कहँ मुनि के पग पर मेली। परी सुमति पग प्रेम दुहेली ॥
कहि सत गुरु उदारतें भारी। मोरे तन तोहि पर बलि हारी ॥
दो० चरण पीठ निज तनहि करि जो पग तर देउं तोर ॥
तदपि तुव उपकारतें गुरू उऋण नहिं मोर।३१
पुनि शिव योगी बोलत बानी। आयु अरोग विभव सुनु रानी ॥
मिलिहहि तुव सुत कहँ सुख साजू। अरु यह करिहि अवनिकर राजू
यहि कर यश भरि है त्रैलोका। पावहि पावन राज विशोका ॥
मैं भद्रायु नाम यहि राखा। निश्चय सुमति सुनहु मम भाषा
बड़े होत लौं तैं सुत केरा । तब लग सुमति राखु दृढ़ डेरा।
मंत्र मृत्युंजय जप त्रैकाला। धरि निष्ठा नित करहु बिशाला।
तैं नृप सुत कहं निश्चय रानी। प्रगटसि जनि जग में सुनु बानी।
होइहै यह अति विद्यावंता। चौंसठ कला निपुण गुण वंता
शिव योगी इमि कहि सब ज्ञाना। भये तुरत तहँ अंतर धाना ॥
गुरु पद कमल धरी उर सोई। रानी सुमती सद्गद होई
पद्माकर हिं सुनय कर नासू। रहा एक बालक गुण धासू।
करै प्रीति निज सुत तें आगर। नृप सुत पर पद्माकर नागर ॥
दो० करै प्रीति भद्रायु पर अति पद्माकर राज।
लाड़ पुरावै तासु नित प्यारै बहु सुख साज।३२
बिधि सम्मति पद्माकर राई ।। करि दोउ के व्रत बंध सुहाई ॥

भूषण पट सम युगहिं बनाये। वेद शास्त्र सम्यन्ह पढ़ाये॥
बारह बरष को भै सुत बीरा। परम सुशील धीर गंभीरा॥
करै मातु कर सेवा सादर। आज्ञा रुख लखि बरतै आदर॥
पूरब पुण्य गांठि रहि भावा। दैवत शिव योगी पुनि आवा॥
सुमती सुत युत धाइ सुहाई। पुनि पग रज निज कचतें झराई॥
दृग जलतें पुनि पग को धोई। केश बसन पोंछी पग सोई॥
अति ही प्रेम उमगि उर आई। मानहु सोइ सुगंध चढ़ाई॥
दो॰ पर दक्षिण पुनि पुनि करि साष्टाङ्ग परणाम॥
करि पूजा नव सप्त विधि अति हि प्रेम युत बाम। ३३।
बहु बिधि सुमति विनय करि आपू। मैं सुत वति सुनि तोर प्रतापू॥
भद्रायू कहें नय अनुरागे। पुनि शिव योगि सिरवावन लागे॥
वेद स्मृति अरु उक्त पुराना॥ नीति धर्म वर्त्तिय मनु जाना॥
जननि जनक गुरु के मनुदादू। भक्ति करहु नित युत अह्लादू॥
गोहिज प्रजाहि पालहु मानू। अरु सब जग मय शंकर जानू॥
वरणा श्रम स्व धर्म आचरणा। सहसा नहिं छोड़िय श्रुति वरणा॥
बिन सोचे नहिं कीजिय काजा। सहसा कृत करि होइ अकाजा॥
आगे पाछे लखवै बिचारै॥ कुशल शब्द मुखतें उच्चारै॥
दो॰ काल कौन द्वैषी कवन कितने रिपु अरु मीत॥
आपति व्यय हमरी कतनि सोचि देखिये चीत। ३४
बल अरु शक्ति कतनि निज भाई। वर ततकिमि सेवक समुदाई॥
यश की अपयश देवैं सारै॥ देखिय आपन चित्त विचारै॥
स्वामी मित्र अतिथ अरु देवा॥ अग्नि होत्रि अरु श्रुति कर सेवा॥
पशु कृषि धन विद्या सब काहीं॥ लेहु खबर नित छिनछिन माहीं॥
लरिका तिय रिपु चर गृह बानी॥ रोग विशेष सदन सब जानी॥
इन्हां उपेक्षा करै जो कोई॥ क्षण मह हानि तासु के होई॥

जौने मारग गये चतुर जन।। सोइ पथ जावै आपु सुचित मन
यति पितु मातु को निंदा कबहूं।। आरग जूं गये करै ना तब हूं॥
भोजन समय अतिथ कोउ आवै। तेहि को प्रेम समेत जेंवावै॥
दो० जाति न पूछिय तासु कर अन्न बसन दै नीति॥
सर्व भूति शिव जानि मय शिव अर्पण करि प्रीति॥३५॥
पर उपकार शक्ति भर कीजे।। ॥ । पर पीड़ा कृत चित नहिं दीजे।
गोद्विज रक्षिय मन क्रम बानी । सत्य सुजान ताहि को जानी
निंदा वाद सबहिं नित त्यागी। शिव सुमिरण कीजे अनुरागी
सोइ मोनि तप जानिय भाई । शिव सेवन को अधिक बड़ाई
पर धन पर तिय को दुमि त्यागै। करि जिमि बंमन न पुनि अनुरागै
सुनिये शास्त्र सप्रेम बहूता । शिव पूजन करिये बिधि यूता
जप अध्ययन होम अस्नाना। पंचयज्ञ गोद्विज सन्माना॥
सुनत गुनत मन साधत पूरे । । अतनी ठौर न आलस रूरे।
मैथुन निद्रा भोजन ठाई ॥ । रहिये इहां प्रमाणिक भाई
दो० सुनन चरित हरि विष्णु के दान व्यसन सत्कर्म।
अतनी पद आलस्य नहिं करिये वेद सुधर्म।३६।
धर्म नारि आपन के संगा ॥ मन सिज मद कीड़े मन रंगा
मन न चलावै लखि पर नारी। निरखै मानहु निज महतारी
दंडै रिपु कहँ क्रोधि विशाला। नमै साधु द्विज लखि सब काला
बैरी पर मद बहुत करीजै। संत भक्त सन सरल न मीजै
जग माया सन करिये द्वेषा। सर्व भूत सों प्रीति विशेषा॥
दंभ देखावै दुर्जन काहीं। भल कर पद रज नमै सराहीं
जीतन भूमि करिय हुंकारा। द्विज सन अहमत त्यागिय सारा
सत मचेत बाणी कहँ रावै। शंकर भजन करै अभिलाषै
दो० परा पावन तीरथ गमन हस्त पवित्र सुदान।

हिय पावन होइ बैठि जब कियशिव करनिध्यान।३७।
श्रुति पावन सुनि वेद पुराना।। संता लिंगन तन सुप्रमाना।
नयन पवित्र किये शिवध्याना। रसना श्रुचि श्रस्तोत्र बखाना
शिव निर्माल्यहिं सूंघै घ्राना।। इमि इन्द्रिन्ह प्रति व्यसन प्रमाना
दीन श्रजान श्रनाथहिं देखी। तिन पर दाया करिय विशेषी
हरि संतन से प्रीति लगाई। करिय त्याग सुर द्वेषिहि भाई
मित निंद्रा करि श्रल्प श्रहारी। करै श्रहेर सुनीति बिचारी।।
विद्या मैत्रि पुरय श्रधिकाई।। धर्म शास्त्र महं मति बहुताई
उद्यम धीरज दान बढ़ावै। करै सुधर्म वेद जिमि गावै।।
दो० दान मान श्रपमान निज श्रायुष रति गृह मर्म।
भेषज मंत्र सर्वत्र सब गोपिय गुप्त सुधर्म।३८।
छली दुष्ट शठ तस्कर जारा। भेदि परवंडी नष्ट गंवारा।
चंचल भूठे चालिक जेते। ग्राम सभा नहिं चाहिये तेते
शिव निंदक दुर्जन श्रपकारे। शंभु भक्ति उच्छेद न हारे।
बटपारी किरतघ्नि कुकर्मी। वारुणि पानक लोपक धर्मी
गुरु तल्पक श्रादिक जे श्राहीं। इनकर दरश भये भल नाहीं
सुत तिय धन जन परिजन देखी। रत श्रासक्त न रहै विशेषी
रहै लिप्त जनि संसृत माहीं। विधि प्रपंच नहिं सत्य सदाहीं
निज जन ससुर बंधु पुनि ज्ञाती। इन से प्रीति रखै मिति भांती
दो० कोउ विषय संसृति लखि मन कोजनि ललचाय।।
नाशिक यह पर पंच सब समुझि रहै बिलगाय।३९।
धृत रुद्राक्ष करिय तन सारा। शिर कर भुज ग्रीवा लंकारा।
श्रान जाइ पै शंकर सेवा। तजि श्रान कबहूं करिय नहिं भेवा
सब तन शंभु कवच शिव योगी। लेन सिरवावत भैं सुख भोगी।
चरचत भूति चढ़ै रण रंगा। शस्त्र घात भय होइ न श्रंगा

काल मृत्यु भय विकट अपारा। मंत्र मृत्युंजय रक्षन हारा॥
ब्रह्मघ्न पथघ्न अरु अततायी। इनहिं जीवतें मारिय भाई॥
शशि वासर प्रदोष शिवरानी। सविधि सप्रीति करिय बहुभांती
निष्कलंक कीरत हरि हर के। सबहिं त्यागि सुनिये चित धरिके
दो० पर्व श्राद्ध हरि हर दिवस व्यतीपात दुर योग॥
संक्रांती वैधृत्ति कहँ करिय न नारी भोग। ४०।
ग्रहण काल नहिं भोजन कीजे। कीन्हे रुज बढ़ि कर्म सु छीजे
सत मारग में दीन्हे दाना॥। बढ़ै विभव सम्पति गुण नाना
कुपथ दान करि दारिद होई। वेद शास्त्र इमि वरणे सोई।
कीर्तन निगमाराम सुपुराना। गुरु द्विज सुरतें सुनिय प्रमाना
कहै न छीने देकर दाना॥। तासु पुण्य चै गुणित बखाना
पूजनीय कहँ कीन्हि निरादर। अपूजहिं पूजे जहँ कोव सादर।
तहँ दुरभिक्ष मीच भय होई। करि विचार देखहु जिय जोई
अति अगाध दह कूदै प्रानी। वादे महा पुरुष सन जानी॥
दो० होइ उतारू लरन हित सबल शत्रु सन जान॥
ये सब द्वार अनर्थ को वरणत वेद पुरान। ४१।
कर को शोभा दीन्हे दाना। कंकण सुंदरी भार समाना॥
श्रुति शोभा सुनि हरिहर गाना॥ कुंडल भूषण व्यर्थ बखाना
स्रवंती माधुरि जेहि बानी। तिय पति व्रता रूप गुण खानी
गुण संपति युत होइ उदारा। जीवन तासु सफल संसारा
बोले वचन सत्य संभारे॥। देहुं कि नाहिं टेक जनि टारे॥
विप्र पात्र अतिथ जो आवे। सद्य दान दै भाव दिखावे॥
विपत परे पर धीरज राखै॥। लोभ वाद महँ विजयी भाषै
पर करम गुण माहि दिखावे। यांचक सन जनि वदन छुपावै
दो० लै संग द्विज सुत मित्र करि भोजन उत्तम सोय॥

पंथ चलब सोइ श्रेष्ठ सँग हय राज रथ जेहि होय।४२।
शिव लिंग देखे परे अनादर। नाहि जाइ कर पूजिय सादर।
प्रेत अनाथहिं किय संस्कारा। तौन पुण्य कर नाहिं शुमारा
मारक ब्राह्मण कोप समाना॥ गरल दूसरो नाहिं जहाना॥
संत समागम निशि दिन करिये। तेहि हिय अमीलच्छ गनि धरिये
लखि प्रताप करिय न हंकारा। निर्भर हरष रहै दिन सारा
सत्य बारता सुनि सुख बाढ़े। सोइ शिव भक्त जानिये गाढ़े
रत्न पषाण वृथा जे आहीं। हैं शुचि चारि रत्न छिति माहीं
अन्न रत्न इक दूसर पानी। तीजे रत्न सुमधुरी बानी॥
दो० चौथे रत्न उदार पन जो अति सुख को ऐन॥
नीति कहत भद्रायु सन इमि शिव योगी बैन।४३।
कोउ के निंदित कहै न कर्मा। लै असीस सत भक्त ते धर्मा
भाग अभाग मिलै जो आगै। आपन धर्म कबहुं जनि त्यागै
आगे को रिपु जो निज होई। तासु प्रतीत न कीजिय सोई
गर्भिणि पालति गर्भहिं जैसे। पालन प्रजा कीजिये तैसे।
नर कर छवि स्वरूप तें पूरे। रूप सु भूषण सद्गुण रूरे
गुण को अभरण ज्ञान अखंडन। शांती क्षमा ज्ञान को मंडन
धनतप विद्या यौवन राजू। रूप शील कुल सुख के साजू
ये मद अष्ट बलिष्ट कहावै। यहि में मन जनि कबहुं भुलावै
शिव योगी यहि बिधि बहु नीती। सिख वत भे भद्रायुहिं प्रीती
सुनिये नीति चित्त जो धरई। वा गुरु कष्ट जगत नहि परई
सप्तम अध्या गिरि कैलासू। बास करहिं नित उमा निवासू
छं० शिव बसत निशि दिन जानि जो नर सुनहिं समुझहिं गावहीं
मानहु सोई पर दक्षिण गिरि निर दोष यश बहु पावहीं॥
अध्या हिमाचल भक्ति गिरिजा नाहि जनु शिव व्याहिके

शंकर दयानिधि ससुरघरजनु बसे प्रेम सुचाहि को।१
दो० शिव योगी भद्रायु सुन आगे अध्या बीच ॥
सुरस कथा कहि है आनंद सज्जनको दुरवनीच।४४।
सो० कह श्रीधर गज राज भव करि अरिहरितुल्य शिव।
अति दानी सुख साज यति पति जग दात्मा गुरु।२।
॥ इतिश्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गज राज
कृते भाषान्तर भाषा मधुर सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

मागध राजासे लड़के वज्रबाहू राजाका हारना और मंत्री का क़ैद होना और वज्रबाहू के लड़के भद्रायु से लड़कर क़ैद से छूट जाना और भद्रायु को राज देकर वज्रबा — हुका मय स्त्री तपस्या करना



अष्टमअध्याय

दो० यह अध्या मह चरित सुचि नृप भद्रायु पुनीत
सत्य धैर्य अरु बीरता सुनिये दे सब चीत।१।
चक्रवर्ति श्रुति नीति कहु जैजे ब्रह्मानंद ॥
नीति कहेसि भद्रायु कहु शिव योगी सुखकंद।२।
तुव बल तें जग व्यापक राई। कहत सूत शौनक सन गाई

शिव योगी भद्र युहिं पीती । शंकर कवच सिखाइ अजीती
मंत्र मृत्युंजय उत्तम ध्यावै । सब ही अंग विभूति लगावै ।
करै धृत्ति रुद्राक्ष स प्रेमा ।। भद्रायू बालक शुभ नेमा ।।
शंख एक गुरु उत्तम दीन्हे । जिहि रव सुनि रिपु ह्वैं बलहीने
अरु इक दीन्हे रवङ्ग अरवंडा । नहिं तेहि सम त्रै लोक प्रचंडा
नग्न देखावत हीं रिपु आगे । भस्म होंहिं सब छुन नहिं लागे
द्वादश सहस राजसु बल भारी । दीन्हि कृपा करि गुरु पुरारी ।
दो० सब नृप महँ तैं श्रेष्ठ हो आयु अरोग अपार ।।
बढ़ै विभव तुव सबहिं कहि अद्भुत शिव दातार ३
बहुत दिवस लौं बिजयी होई । महि संतोष हि पालहु सोई
करसि दान निष्काम सुहाई । तुव यश तीनिहुं लोक समाई
भाग्य लक्षि बसहि तव धामू । भूत दया श्री हृदय अरामू ।
दान लक्षि कर कमलन्हिं आई । बसिहहि तोर सदा सुखदाई
सौम्य लक्षि बसिहहि सब देहा । करिहहि भुजन बीर श्री गेहा ।
सकल दिशिहि अति कीरति तोरी । बसिहि सदा सुनु आशिष मोरी
शत्रू लक्षि बसिहि रवङ्गागे ।। नित सुख लछमि रहे अनुरागे
विद्या लछमि सदा तुव पासा । रह भद्रायु आनंद बिलासा
दो० अंतर हित शिव योगिभै तहँ काहि इमि नय आन ।
भद्रायू सुमती सदा करहिं गुरु पद ध्यान ।। ४ ।।
इत भद्रायू पितु को हाला ।। वज्र बाहु कर सुनहु बिशाला
पती दशागण सुचि गुणवंता । चढ़े ताहि पर रिपु बलवंता
नृपति हेम रथ मगध नरेशा । जीता वह यहि कर सब देशा
धन अरु धान्य छीनकर सारी । गयसि लेइ सब करैं गुहारी ।
नारी पुरुष प्रजा जन काहीं । लै धरि डारि बंदि घर माहीं ।
रिपु रजधानि घिरे सब काहू । बाहिर निकरा वज्रर बाहू ।

भइ इस दिन लौं घोरलराई। यह अकेल्न शत्रू बहुताई
वज्र बाहु को रिपु धरि आछे। बाँधे दृढ़ करि रथ के पाछे
मंत्रि आदि नृप के समुदाई। तिनहुं बाँधि रिपु चले लिवाई
लूटे ग्राम प्रजा को सारी ॥ पकरे बहुरि राज कर नारी ॥
दो० लूट बटोरी याहि बिधि सब कहं मागध राय ॥
चला हेम रथ पुरहिं निज विजय निशान बजाय ॥
वज्र बाहु निज सचिव समेता। आगे पाछे लरवत अचेता ॥
भ्राता पुत्र न कोउ हमारे ॥ यहि अवसर को हमहिं उबारे
काको आश करैं हम भाई। शोक सिंधु तें कौन बचाई
मुनि संदेश भइ आयू याको ॥ रिपु धर लीन्हे जात पिता को
गुरु कर ध्यान मनहि मन कियऊ शंभु कवच तन पहिरत भयऊ
महा मंत्र मृत्युंजय सारा ॥ भस्म लगावत भे तन भारा ॥
शंख खड्ग हाथ महं लीन्हा। जादु मातु पद बंदन कीन्हा ॥
सुनु जननी रिपु चढ़ी घनेरी ॥ जादु पिता के नगरहिं घेरी ॥
देश राज संपति सब छीनी ॥ पकरि पिता हिं जादु हैं लीनी
मैं गुरु भक्त तोर सुत आहूं ॥ अब संहारहुं सब कहं जाहूं ॥
दो० सुव सुकृत तें मातु मैं शमन समर करि पूर ॥
जियत हिं रिपु धरि तोर ढिग जो आनौं तौ शूर ॥
यशध्वज ठाढ़ करउं निरदोषा। तेज सुपुंज आजु मैं चोषा ॥
शरद पर्व कर मानहुं चंदा। निस्कलंक उज्वल छवि कंदा
पद्मा कर के सुनय कर ढोटा। लीन्ह वीर संग मिलि शुभ जोटा
वेगिहि झपटे जिमि उरगारी। कद्रुज कुल पर तिमि पर चारी
दौरे दोउ बली पंचानन ॥ रिपु गज पर शोधन रण कानन
दूनों पुत्र सीय कर जैसे ॥ । लव कुश भये सहायक तैसे
पद गामी दोउ दौरे आवत ॥ मृदुल किशोर वय सब विधि भावत

निकट आवु देखे रिपु भारा। सिंह नाद गर्जे बहु बारा
ठाढ़ रहहु रे चोर गँवारा ।। वस्तु चुराइ भजहु किन सारा
वज्र बाहु शुचि वस्तु विशाला। हरे पहुंचि अब करब बिहाला
यहि शिक्षा तस्कर को चाहीं। पग श्रुति नाक काटि तिन काहीं
अस अनर्थ करि बाँचहु कैसे। कहत झपटि आवत द्वौ ऐसे
दो० दोउ किशोर शोभत मनहु उलटि लखहिं सब भोर
हरि हर आवत करन जनु निज भक्तन्ह के शोर ।७
विश्वामित्र वशिष्ठ सम की वासुकि शचिनाथ॥
कांती छवि विधु भानु कर दूनों आवत साथ ।।८
छं० आये निकट ललकारि। सुनि हांक कांपे भारि
धनु तानि तब दोउ वीर। छांडन लगे बहु तीर ।।
बरषत मघा जल धार। तिमि चलत बाण अपार
लखि जलद हुलस मयूर तिमि शोहरण महँ शूर१
कृपाण बाण अरु सेल। अति कठिन करत सु हेल॥
बज भेरि दुंदुभि तूर ।। ।। दिशि विदिशि रव भर पूर
बाजत जुझाऊ मारु ।।।। प्रति पक्ष हृदय रव भारु॥
रिपु भागहीं चहुं ओर।। सुनि रव भय कर घोर ।२।
छं० रव घोर बाजहिं मनहु गाजहिं मेघ रिपु मुरछित परे
क्षिति शेष कांपत दंत चांपत दिग्गजन्ह व्याकुल खरे
रवल बलत जल दधि कोअचल चलअबल होइरिपु भागहीं
प्रति वीर पीछे तीर अगरिगत उगा जिमि उड़िलागहीं ३
दो० मुरछित योधा परे सब रीते रथ तिन केर ।। ।।
चढ़े दिव्य रथ एक पर युगल वीर तेहि हेर॥४
चाप सुधारि बाण संधाने। छांड़हिं तिव्र तीर रिवलियाने।
बज्र बाहु कर बीर समूहा।। गज रथ तुरग सपदल चर यूहा।

भद्रायु हीं देखि मुनि नाथा। जानि सहायक भये सनाथा
बाज बजावत दल समुदाई। मिले भद्रायू सँग सब आई।
हमरि सहायक किन तें आवा। यहि अवसर कछु समुझि न पावा
देखि वृष्टि पर सबल सहाई॥ धाये सकल बीर रिसिआई
सेना बहुत हेम रथ केरी॥। किय संहार सकल उन घेरी
बज्र बाहु निज सचिव सहाता। लखवत बँधे रथ दुर नें ग्रीता
कहहिं शंभु कमला पति भाये। भेष किशोर धरे दोउ आये
दोउ कर विद्या दिखवत समाना। इक गुरु के उपदेशे जाना
दो० दोउ मह दीखत सुरव्य इक नृपपति सुत कस भेष
देखि प्रीति आवत हृदय समुझन काहि विशेष १०
अहै कौन धौं समुझन कैही। की परि जन कोउ परम सनेही
मन ललचात कि मिलिये धाई। प्रेम उमगि उरगर लपटाई॥
बज्र बाहु नृप यहि पर कारा। बँधे सचिव युत करत बिचारा
उत भद्रायु सुनय युत भारी। करत घोर शस्त्रन्ह को मारी
बज्र बाहु युत सचिव निहारा। बहुत रक्त को पूर अपारा।
चले बाण जिमि उरग सपक्षा। भैजर जर तन सब अति पक्षा
भै रण अति हि भयानक युद्धा। शर पंजर दोउ कीन्ह विरुद्धा
व्याकुल बीर हेम रथ देखी। फिरा काल सम कोपि विशेषी
दो० भद्रायू अरु हेम रथ दोउ के होत अति युद्ध
चारि दंड लौं भै सबल अद्भुत क्रुद्ध बिरुद्ध। ११
छं० रिपु कँपत लखि बलवंत कह भीम की हनुमंत
हरि जेठ पहुँचे येहु हल मुसल की धौं लेहु।
भद्रायु कहँ लिय घेरि उत्कर्षि रिपु चहुं फेरि।
तब काढ़ि खड्ग कराल। शिव योगि दन्न विशाल ४
अति तेजवंत सो जान जनु भानु सहस समान॥

जिमि काल बन्हि को जीभ की ग्रलय चपला नीभ
जनु गरल काल भुवंग तिमि दिरवत तेजित खंड
ग्रति खड्ग तेजित हेरि मैं भस्म ग्ररि सब ढेरि ५
छं० ढेरी भसम को हेरि निज दल हेम रथ व्याकुल भयो
रह सेन ग्राछे कछुक पाछे लेइ सँग भागत भयो।
मंत्री सहित नृप बज्र बाहु हित्यागि दल बिचलन लगे
रण खेत तजि इत उत सकल जिव लेइ रिपु व्याकुल भगे ६
हो० हेम रथ हिं भागत लखेउ भद्रायू ललकारि॥
दौरि केश तेहि पकरि दृढ़ रथ तें भूमि पछारि १२
मुष्टिका लात कोपि उर मारा। बहा नाक मुह रुधिर पनारा
हेम रथ हिं सहित तेहि मंत्री। बाँधी रथहिं रचि जनु यंत्री
शर छूरा करि करि मति बांकी। मूंडे तिहि सिर दुइ तें फांकी।
ग्ररध डाढ़ि ग्ररु ग्ररधहिं मूछा। ग्रनमिल मूंडि ता सुशुभ छूछा
ग्रागे करि तेहि पाछे सैना। चले बीररस परो सुचैना॥
राज नारि धन कोष ग्रपारा। लई छीनि भद्रायु कुमारा।
हेम रथहिं ते बोलि सबलीना। धन सम्पत्ति रहा सोउ छीना
गोधन प्रजा ग्रादि सब छीनी। जहँ के तहँ ग्रस्थापन कीनी
मंत्री सहित पिताहि छुड़ाई। सहित प्रेम चरणन सिरनाई
बज्र बाहु तेहि ग्रोर निहारी। बोला बचन नयन भरि बारी
कह नृप सुनु कुमार तैं ताता। ग्रहसि कौन मत कहु सब बाता
ग्रतिहि कष्ट ते मोहि उबारा। नाहिं उऋण तोहि सेनिरधारा
दो० मैं ग्रपयश के सिंधु में बूड़त रहा कुमार॥ ॥
तैं मझाड़ कर पकरि मम लीन्हा धाइ निकारि १३
जरत रहेउं रिपु पावक दावा। तैं करि दाया मेघ बचावा।
मोहि सूचत तैं ग्रहसि महेशू। पहूं चेमि लै बालक करवेशू।

की कमला पति होसि उदारा। दीरसि बालक भेष गुहारा।
धोकि अहसि चंदारक राई। होइ बालक पहुंचे तैं धाई
सब नृप तियशिशु बदन निहारहि लोन पत्रनिम वारिउतारहि
अति अनुरागि कहहिं सबनारी। हे सुत तोहि परहम बलिहारी
कह भद्रायू चलिये घर को। ले संग रिपु सब अपननगरको
ले बंदी गृह डारिय भारी। इन को ताडन करि बहु भारी
यहि बिधि पितुहिं नगर लैजाई। शुभ सिंहासन पर बैठाई॥
जैजैं धुनि ह्वै बाजहिं बाजा। अतिहिं अकथ जसभै सुख साजा
दो० लगे बंदन शंकर नगर भरि भरि रथन अपार
सबहिं नगर सिंगारऊ घर घर मंगल चार १४
सुनि पुरजनि दौरे सब आवहिं। वज्र बाहु के पद सिरनावहिं
वज्र बाहु कह गद्गद होई। जो मोहि धाइ छुड़ायउ सोई
परम दयाल सहायक मोरे। गहहु तासु पद तुमकरजोरे
कहत पितुहिं भद्रायू बाता। करहु यतन रिपु करहु तात
ऐहौं पुनिमें तीनि दिना में॥ तुम्हरे ढिग कछु सोचन यामें
कौन केर काको मैं सब हीं॥ आउं पलटि समुझै होंतबहीं
ऐसे कहि कर दोउ कुमारा। चढ़त भये रथ महं निरधारा
गमन वेगि मन को है जैसे॥ आवु भानु पद बंदे तैसे॥
दो० आरति जननि उतारती सुंदर बदन निहारि॥
नीम पत्र लवणवारहीं पद्माकर सुख भारि १५
आगे चरित सुनहु मुनि राया। करि शिव योगी अति हीदाया
अति दयाल मिलि नैषध जाई। सीमंतिनि चित्रांगद राई॥
जन्महिं ते भद्रायु वृतंता॥ चित्रांगद सन कहिशिव संता
पुनि कहि जेहि बिधि पितुहिं छुड़ायो। सुनि चित्रांगद अति सुख पायो
कह मुनि करहु ताहि सुमाता। कीर्त्ति मालिनी देहु सुताता

चित्रांगद दूमि सुनि मधु बानी। अति सुख पद बंदे नृप रानी॥
पूजि सहित षोड़श उपचारा। कहहि जोरि कर रानि भुवारा
हां भल कहे होइ सुख मग्ना। आनिय वर अबहीं भल लग्ना
दो० बहु बाहन गज रथ तुरंग अति प्रबंध करि सैन
पठये चित्रांगद नृपति वैश्य नगर कहं लैन २६
लेइ सुनय सुत सहित समाजा। चलत भये पद्माकर राजा॥
बहुधन सम्पति लेइ अपारा। बाजत बाजा बिबिधि प्रकारा
भद्रायुहिं बैठाइ सुखासन॥ सिविका चढ़ी सुमति मति बासन
चलि बरात नैषध नियरानी। चित्रांगद आवा अगवानी।
सादर भेंटि पुरहिं लै गयऊ। अति सुपास जनवासा दयऊ
लखि सब बरहिं कहहिं अनुरागे। रति पति छबि लज्जित यहि आगे
चित्रांगद महिपति जग जीते॥ नेवति बुलायउ सब कहं नेते
बज्रबाहु भो संग नरनाथा। लै परिजन आवत मैं साथा
दो० बज्रबाहु भद्रायु सुख देखत करि अति प्रीति॥
कहत सहायक येहि हम आने रिपु नहिं जीति २७
पर सन पग भद्रायू केरी॥ कर लै माइ नृप प्रीति घनेरी।
छुअन पाय पग उपरहिं ऊपर। धरे करहिं भद्रायू सूघर॥
पुनि पुनि मिलत गरे लपटाई। गद्गद प्रेम न कछु कहि जाई
सुचि दृग बहत प्रेम जल धारा। मज्जन करत मनहु बहु बारा
पुनि पूछत नृप बज्जर बाहू॥ कौन देश तुम कहं के आहू।
यश ध्वज कीन्हेहु ठाढ़ सुहाई। जननि जनक तुम्हरे कहं भाई
कौन सु गोत्र गुरू को ग्रामा। तुवं तें मोहि सन कहु अभिरामा
तब चित्रांगद नृपहिं यकंता। लेइ जाइ कहि सबहिं वृतंता
भद्रायु को पराक्रम गाई। अतिहिं सकल शिव योगि बड़ाई
शिव उपासना को फल सुंदर। बज्र बाहु सन कहे नृपति वर।

कोटि जन्म के पुण्य सुजोहि को। होइ भेटहिं शिव योगीतेहि को
साक्षात वह गिरिजारमना॥ सोइ यह चरित कीन्ह मदशमना
दो० बज्र बाहु अरु सुमति कहँ पुनि चित्रांगद राय।
भेंट कराइ इकांत ले। शोकन हृदय समाय १८
लखत नीच सिर बज्र बाहू। करत रुदन दृग बहत प्रबाहू।
कहि मैं दुमि उत्तम धन नीचा। छोड़ेउं घोर विपिन के बीचा
मुहि सम निरदय अरु अन्याई। होहिं नहीं कहुं जग में भाई।
सुमिरि सुमिरि दुख पाछिल रानी। रोवति सुमती अति अकुलानी
कहि शिव योगी गुरू हमारा। करि कृतार्थ दुखतें निस्तारा
पुनि चित्रांगद सीमंतीनी॥ बज्र बाहु सुमतिहि यक कीनी
बज्र बाहु कह पुलकित गाता। धन्य सुमति तैं कहुं का बाता
तोकर को तैं सिंधु बनाई॥ आनि मोहि को दीन्हि दिखाई
दो० गिरिपति तें बड़ राउ को करि दिखाइ मुहि आनि॥
तोर प्रशंसा करउं किमि हे सुमती गुण खानि १९
तैं उद्धार कीन्ह मम रानी॥। मोहि अभागि डिग अस सुतआनी
यह धन सुत संपति सब राजू। दीन्हि सुमति तहिं मुहि सुखसाजू
बज्र बाहु इमि कहि तिय पासा। बाहिर आये प्रेम हुलासा॥
पुलकित तन भद्रायू धावा। परा चरण पितु के लपटावा।
हृदय लाइ भेंटे नर नाथा। सुत कहुं जिमि शिव षटमुख साथा
की सुर गुरु निज सुत सन भाये। सीरिध्व सजीवनि कच जब आये
जिमि भेंटें शुक्रहिं लल काई॥ तिमि भेंटत सुत पितु सुख पाई
दे असीस सिर सुघिं सुत केरी। निज करतें जिमि श्रुति निरनेरी।
दो० वाम अंग भद्रायु कहँ बैठाई सुख पाइ॥
कीर्ति मालिनी बूझहिं सुचि दहिन बिठाई राइ २०
लखि नृप जे बरात महँ आये। बज्र बाहु कर धन्य सुनाये

बहुरि सुनय पद्माकर राजा ।। बज्रबाहु भेंटे सुरव साजा ॥
हृदय समात न प्रेम अपारा । ब्रह्मानन्द भरा नभ सारा ॥
भै पुनि चारि दिवस लौं ब्याहू । जग कुल श्रुति बिधि करि मुनिनाहू
दइज दीन्ह अमिति नृपपति बर । दुइ लख तुरँग सहस दस कीरवर
भूषण बसन दास धन दासी । अन्न आदि दइ धेनु दुहासी ।
कीर्त्ति मालिनी अरु पितु माता । पद्माकर युत सबहिं बराता ॥
सादर बाजा बजत सुहाये ।। भद्रायू निज पुर महँ आये ॥
जननि जनक कहँ भै सुरव भारी । सुंदर सुत बधु बदन निहारी ॥
बज्रबाहु सुमती सुरव देखी ।। करि अधीन सब नासु विशेषी ।

दो० जीवदान सब रिपुहि दै छोड़े कर ठहराद् ।
निजनिज पुरगों टेकि पग बज्रबाहु सुरव पाद् ॥ २१ ॥

जन्म जन्म शिव पूजन कीन्हे । पुराय सप्रेम बहुत जिन दीन्हे ।
ऐसे सुत पावहिं सोइ प्रानी । भद्रायू सम सब गुरा खानी ॥
सुन्दर तिय पति ब्रता सयानी । सुत सभाग्य पंडित श्रुचिज्ञानी
गुरु सर्वज्ञ होइ बहु दाता ।। पूर्व दन्त तें पावहिं ताता ॥
तब भद्रायुहिं दै नृप राजू ।। आपु चले बन तपके काजू ॥
गये संग लै सुमती नारी ।। हिमि केदार महँ करि तप भारी ।
शिव आराधन करैं विशाला ।। ज्योति लिंग पूजैं त्रय काला ।।
इत भद्रायु बहुत दिन राजू ।। कीन्हि भूमि कर आनंद साजू ॥
धन्य सु भस्मकवच शिव केरी । पुनि महिमा रुद्राक्ष घनेरी ॥
धन्य गुरू शिवयोगी सुजाना ।। धन्य शिष्य भद्रायु जहाना ॥
करत राज भद्रायू पावन ।। यहि विधि आगे सुनहु सुहावन
यक दिन भद्रायू नृप नाथा ।। कीर्त्तिमालि निहिं लै कर साथा ।
निकरे बन हीं करन बिहारा । देखत शोभा विपिन अपारा ।
शीतल सघन सु छाँह सुहावै । बैठे तर रवि दृष्टि न आवै ॥ ।।

छं० दृष्टि परै नहिं लगे विविधितरु फूल फलन से भारा ॥
शोरभ निम्बू जामुन रिवरनी डारन फरे अपारा ॥
खरजुर रंभा श्री फल लागे ओफन फरे सुधारी ॥
दाड़िम डुमर कटहर बड़हर बिहि नारंगी न्यारी ॥१
सीताफल अंजीर करौंदा बेल बेर मन मोहैं ॥ ॥
पारि भद्र अरु केथा औंरा दारव बदाम सु सोहैं ॥
अगर मलयगिर लाल सु चंदन बर पीपर छवि धामा॥
जायपत्रि बहु लौंग जाय फल लायिचि फरि अभिरामा॥२॥
चम्पा सुगरा जाई जूई मालति कुसुम निवारी ॥ ॥
बकुल मवती गेंदा मेंदुरी गुलाबास छवि भारी ॥ ॥
गुल सब्बो अहि बेली पाटल जपा अगस्ति केसरिया।
सुरुज सेहरुवा आदिक फूले कुसुम फुले डुपहरिया॥३॥
बने बितान ठांव ठंव सुंदर खगरव मधुर सुनावैं ॥ ॥
मधुकर मधु गुंजारहिं पुष्पन जनु मुनि मन लल चावैं।
केकि हंस शुक चक्र वाक पिक सुनि रव पंथि लोभा हीं।
विविधि समीर बहत निर्मल जल सरित सरोवर माहीं॥४॥
दो० नाना रँग फूले जलज क्रीड़त खग मृग तीर ॥ ॥
सोहु बन महँ भद्रायु नृप बिहरत पुलक शरीर ॥२३॥
कीर्त्ति मालिनी सहित महीशा। क्रीड़त में यक कौतुक दीशा ॥ ॥
दूरहिं एक पुरुष दुक दारा ॥ । दौरे आवहिं करत पुकारा ॥ ॥
व्याकुल दूनों हाथ उठाई । दौरहु दौरहु हूत कराई ॥
पाछे महा व्याघ्र इक लागा । गुहरावत द्विज धीरज त्यागा ॥
हे नृप दौरु मोर सुकुमारी । रहि पाछे मम पति व्रत नारी ॥
धावा सुनि नृप अति अकुलाना। चाप सुधारि बाण संधाना ॥
काल रूप वह बाघ विशाला। धरि द्विज के तिय ही तन काला॥

वह शर नृप छांड़े बांकुरा ॥ । तदपि चला वह नेकु नमूरा।
प्रविशे शर तेहि के तन कैसे । दामिनि चमकि घुसे घन जैसे॥
तथापि तियहि न छोड़ा बागा। गिरि कंदरा प्रविशि के भागा॥
दो० लखि तिय गति द्विज व्याकुलहि नुरत नृपति पहिं आय।
अति पुकार करि रुदन बहु करुणा बचन सुनाय॥२३
हे ललना मोहि द्विज मोहिं प्यारी॥ लगत सदन बनसम भय कारी॥
कहत विप्र नृप कहं दुख बोरी ॥ धिक तव जियब क्षत्रिपन तोरी॥
हानुव देखत में सत गई ॥ । मम तिय अति व्याकुल गुहराई
दौरहु कोउ जन बेगि छुड़ावो। परिउं बाघ मुख मोहिं बचावो
मैं पुकारेउं तोहि अधीरा । । कहि हे दौरु दौरु नृप बीरा॥
धिक तुव शस्त्र समस्त नृपाला। वृथा बहु गुरु दीन्ह कराला
वृथा सहस द्वादश गज को बल। अस्त्र धनुष विद्या तुव निष्फल।
शरणागत कहं नुरत बचावै। हरि दुख जो सोइ भूप कहावै॥
धिक वहि गास को आश्रय भाई। संत समागम नहिं जेहि ठाईं॥
दो० शंकर कीर्त्तन जोन जन॥ करै न मुनि शुचि गान॥
श्रोता वक्ता प्रेम धिक बरणत बेद पुराण॥२४॥
धिक संतति संपति बहु जिव को। द्विजहि न रक्षै भजै न शिव को
धिक धिक वह अघ बुद्धी नारी। जो पति बरता धर्म बिसारी॥
देइ दुख सुत जो मातु पिता को। जियब जगत धिक बिरथा वाको
धिक शिष्य गुरु भक्त न जोई। बरतै आपु जोन मन होई॥
अपन बड़ाई अधिक बढ़ाई। धिक गुरु पदवी जोन छपाई॥
गाढ़े संकट जें न छुड़ावैं ॥ । सो नृप जग धिक्कार कहावैं॥
पुनि भद्रायू व्याकुल बोही । । कहि इच्छित मँगु दे हौं तोही॥
दूसर उत्तम करहु बिवाहू ॥ । की मम राज लेहु द्विज नाहू॥
कह द्विज मैं बिवाह नहिं करऊं। बिनु नारी धन लै कहं धरऊं॥

जन्म अंध ही लाभ कि भाई ॥ मुकुर वृथा ही नाहिं दिखाई
बादि मूढ़ द्विज उत्तम गंथा ॥ युवहिं बादि संन्यास सुपंथा।
चौथ वृधापन आवै जाको ॥ वृथा बिवाह करव सुनु ताको
अति प्यासेहि को घृत सुहावै ॥ क्षुधितहिं सुमन सुगंध कि भावै
चिंता ग्रसित नाहिं के आगे ॥ गीत सुनान वृथा सब लागे
दो० यहि कारण नृप राज धन मोहि नहिं चहिय सुजान
भद्रायू तें तुरत सब देहु नारि मम आन ॥ ७५ ॥
कह नृप कीर्त्ति मालिनी रानी ॥ दियउं तुमहिं लेजहु सुखमानी
नृपकर सत्य लखन के हेतू ॥ बोले द्विज सुनु नृपकुल केतू।
हौं भल दै गरिगहिं लै जाऊं ॥ मैं यहि पापहिं नाहिं डेराऊं
अति तप ऊंचा है सुनु मोरी ॥ गिरि सुमेरु तें होइ न घोरी ॥
तोहि हित हिय नहिं मानों हारा। मैं नृप तियहिं करउं स्वीकारा
परे सिंधु में जो यक ढेला ॥ तो दधि जल का होइ मतेला
नभ कारज तें होय मलीना ॥ मैं निरदोष सदाहिं नवीना
हौ यह अपयश अकथ अपारा। परउ मोर पर कहत भुवारा ॥
मम बल सकल नाहि छिन गयऊ। जब द्विज तियहिं बाघ लै गयऊ
अब मैं विप्रहिं दै निज नारी ॥ काठ अनल महं जरउं दुखारी ॥
दो० विप्रहिं दहु संकल्पि नृप किरति मालिनी जान ॥
लै भूसर तिय कहं तुरत। मैं नहं अंतरधान ॥ ७६ ॥
काठ जोरि नृप अनल लगाई ॥ बाढ़ी लपट गगन लौं जाई।
नृप नहाइ तन भस्म लगावा ॥ करि धारण रुद्राक्ष सुहावा।
पुनि शिव मंत्र शंभु कर ध्याना ॥ अरु गुरु सुमिरण कीन्ह सुजाना
परदक्षिणा पावक को कीना ॥ भद्रायू आनंद होइ तीना ॥
उमानाथ जै मौन मुरारी ॥ भक्तन को भय करहु निवारी
जै आराध लिंग त्रैलोकं ॥ ॥ जग व्यापक हर करहु विशोकं

करुणाकर कुन्देन्दु गातं ।। निज हिय बेगि लेजाउ सुदातं
बढ़त लपट लखि अद्भुत ज्वाला। कूदा मन आनंद नृपाला।
दो० सोइ अनल तें नाहिछुन शंकर करुणा ऐन॥
प्रगटे गिरिजा सहित प्रभु निज भक्तहिं सुखदैन २७
पंच बदन दस गौर शरीरा ।। भुज अजान दस धृत मुनिचीरा
नयन पंच दश शीस सुगंगा। भूति विभूषण सोह भुजंगा
पंच भूत अरु तत्व पचीसा। इन तें बिलग कृपा निधि ईसा
भद्रायू कहँ हृदय लगाई।। कहे मांगु जो तोहि सुहाई।
भक्ती तोर महा निर बाना ।। मैं प्रगटेउँ सुप्रेम पहिचाना।
कह भद्रायू गद्गद कंठा ।। देहु लाडु द्विज तियहिं अकुंठा
मंद हास सुनि कीन्ह कृपाला। कहि मैं हिच द्विज होइ नृपाला
आये रहेउं तोर हिय दाहू।। संग अपर्णा लीन्हे आहू।।
दारुण बाघ मही सुनु भयऊं। पारवती कहँ धरि लै गयऊं
मुक्ति भक्ति तव देखन हेतू।। हम दोउ प्रगटे नृप कुलकेतू।।
लै तुव कीर्ति मालिनी सुन्दर। कहि सन्मुख करि ठाढ़ उमावर
बरषहिं सुमन देव गण भारी। परेउ चरण नृप दशा बिसारी
दो० कह शिव हे गुणवंत नृप मन इच्छित बर मांगि
बोला शिवहिं प्रसन्न लखि भद्रायू अनुरागि २८
बज्र बाहु पितु सुमती माता। पद्माकर गुणाढ्य विख्याता
सहित नारि इन कहँ कैलासू। लेइ बास दीजे निज पासू ।।
एव मस्तु कहि अक्षय भोला। क्षीर फेनु बहुरि मृदु बोला।
कीर्ति मालिनी तें अब मांगू। जो तोरे मन होइ अनुरागू।
हे प्रभु मम सीमंतिनि माता। चिरंजीव गुण आगर नाता।।
बसें तोर हिय नित अहोराती। कहे तथास्तु त्रि पुर आराती
तुम दोउ जो मांगेउ मम पाहीं। सो सब दीन्हेउं संशय नाहीं।

प्रीति तुम्हारे निरखि हुलासा। मम चित बसत सदा तुम पासा
कीर्ति मालिनी युत पुनि राजा। बरस सहस दस लौं सुख साजा
भद्रायू करि राज निहाल्यू। हरिश्चन्द्र सम परजा पाल्यू।
दिव्य शरीर बहुरि सब पाये। बैठे सकल बिमान सुहाये।
होइ प्रसन्न सब कहँ निज पासा॥ गयो लेइ तब उमा निवासा
चित्रांगद सीमंतिनि रानी॥ बज्र बाहु सुमती गुण खानी
चढ़ि के ये सब कोउ बिमाना। गये नित्य चल बसे शिव धाना
पद्माकर युत पुत्र भामिनी॥ सुत सभद्रायु कीर्ति मालिनी
बैठे बिमान सबहिं लै गयऊ। शिव निजरूपहिं मिलावत भयऊ
छं० मिलाय शंभु निज रूप सब कहँ ऐसो कौन उदार हैं॥
तिहि भांति यहि अध्याहिं कह हीं सुनहिं ते भव पार हैं
भद्रायु चरित्र श्रुतिहिं यश दायि सबहिं सुनहिं जे गावहीं
आयू बढ़हिं कल्याण बर्धन सर्बदा सुख पावहीं॥ २१
दो० पद दल बिल्वहिं प्रीति युत जो अर्पै नित नाम
पुण्य धीर संबाद महँ जय पावै सब ठाम॥२९
करि परिकरमा पराय ण यह अध्या कैलास।
संसृत अघ तें दूरि करि तारहिं उमा निवास॥३०
सुरवद काम तरु भक्त हित मंत्रा सुर अरि नाथ
निगमागम कहि नेति गुण श्रीधर भये सनाथ ३१
सो० शौनक सूत समाज। कबि सकुचहिं शिव गुण कहत
कह कि मूढ़ राज राज रेणु कि होइ सुमेरु सम॥ २॥
॥ इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गजराज कृते
भाषान्तर भाषा मधुर अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

शिव रूप परम योगी वामदेव का दृष्टान्त और भस्ममाहात्म्य और उसकी बनाने की रीति और शिव भक्त एक व्याधकी कथा॥



नवमअध्याय

दो० यह अध्या महं भस्म विधि निरनय चरचव लीक
है करि जो जन तरि गये सुनिये दै चित नीक १
जहां शंभु के नाम को रटन निरंतर होय॥
जन्म मरण संसार दुख तहां न कबहूं जोय २

सो० वह सब हीं संसार जीते सि कछु आचरज नहिं
शिव शिव नाम उचारि बार स्वार निहालचित १

अघनाशहिं कहिजानितभाई। शिव शिवनाम रटै लौलाई
पुनरावृत्ति ताहि नहिं चाही। केवल शिव स्वरूप बस आही
जैसे प्रानिान के चित जानो। संसृति विषय माहि लपटानो
तिमि शिव नामहिं निरतै जोई। तेहि भव बंधन कैसे होई॥
धन इच्छा करिके कोउ भाई। जिमि धनाढ्य कर करै बड़ाई
तिमि शिव नाम लगै मनजाको। जनम मरण दुख कैसे वाको
नृप की अपर कोउ के दर्वा॥ साधहिं यत्न हरण हितखर्वा

तेसे शिव पद प्रेम लगावै । तेहि ढिग संकट बिघ्न कि आवै
दो० शिव ध्यानहि रत धन्य वह यहि मह दुक इतिहास।
कहत सूत सनकादि प्रति नमिषारण्य प्रकास।३।
बामदेव अति शिव ध्यानहिं रत। ज्ञानी महा विपिनि मह बिचरत
शांति यकाकी निर्भय दाता।। त्रैबिधि भेद रहित सुख गाता
दिशा बसन जो कीन्हे धारण। अस्म लगाये बिचरत आरण
निराहार बिचरत बन माहीं। नित अकेल चिंता कछु नाहीं
कहँ जाइये काहु गति कीजे। त्यागिय काही काहि धरीजै।
निर भेदी जेहि वेद न मोहा।। सबहिं विश्व शिवमय कीन्जोह
इंद्री जीत अकोप अमाया।। क्षमा कृपा समचित अति दाया
लोभ शोक भय मान कदाहीं। नहिं त्रैकाल उदार सदाहीं।
नहिं घर सुत तिय परि जन कोई। बिचरत बन अकाम मन सोई
रहैं मौन मन बच क्रम बानी। बोलैं नहिं काहू सन ज्ञानी
सुमिरण चरचा शिव कर करैं। आन बात जनि चित में धरैं
शंभु भजन मन क्रम अरु बानी। करै सदा निरमल रति मानी
दो० चरचा सुमिरण शंभु कर भेद रहित करि जोय
दूसरि बात न धरै जिय मौन जानिये सोय।४।
सब पर कृपा करन के हेतू। मुनि स्वरूप बिचरत वृष केतू।।
जड़ जीवहि तारण के काजा। बिचरत निज इच्छा सुख साजा
कारण कार्य कार्य बिहाना। आतम स्वरूपहिं भै समधाना
सुक्षम स्थूल कारण ये तीना। ये त्रै भेद देह तें हीना।।
बिधि निषेध अरु प्रवृति निवृत्ती सब तें रहित याहि विधि वृत्ती
निरं कृशानिह संग अनंदा।। ब्रह्म बिपिन जस बिचरण यंदा
बामदेव की रीति अखंडित। बरणहिं निगमागम सुचि पंडित
निज स्वरूप महँ लगी समाधी। जेहि लख गहत न विदेह निरुपाधी

योगअखंडित अद्भुत जिनके। सदा समाधि रहै चित तिनके
उन पावक कर ज्वलन नहिंजारा। पन कठोर छिति करदुरि डारा
पवन केर चंचलता चंडा ।। लई छीन इमि योग अखंडा
जल कर रसहिं निकारेसि धोई। कीन्हो शुद्ध सुनहु मुनि सोई ।।
पिंड ब्रह्मांडहि दीन्हि जराई। सोई भस्म निज अंग लगाई
संसृत माया जेहि हिय नाहीं। सदा अनंद रहै मन माहीं ।।
दो० ऐसे मूर्ति अमूर्ति वह शुक जड़ भरत समान।
विचरतकौंचारण्य महसब मयशिव कहंजान ।५।
ब्रह्म दैत तेहि अवसर धावा। यक अति भीम स्वरूप बनावा
बिकटाननमुख बाहिर रसना। सेंदुर भाल तिसूल अतिदीरघ नासा
हृग अति अरुण खैर कस आगी। धरि खायसि बहु जीव अभागी
क्षुधित तृषित कुपात्र परितापी। अकस्मात आवा वह पापी।
अति हिंसक सब भक्षक गाढ़ा। बामदेव कहं देखा ठाढ़ा।
लखा तेज रिसियावा धावा। मुनि के यकायक गरल पठावा
पारस परसत लोहा जैसे ।। कंचन होइ दिव्य खल तैसे
बेगहि पलटि तासु की बुद्धी। मुनि तन परसत हीं भइ शुद्धी।
दो० बामदेव तन को भसम लागा निशिचर अंग ।।
सत्व वृत्ति भइ परम तेहि पलटा राक्षस ढंग ६
मम अंगा आइ कौन लपटावा। अरु खल उधरि ज्ञानजिमिपावा
एको भेद न मुनि कछु जाने। सदा समाधी मगन भुलाने।
सुख दुख शीत उषा को भेदा। बंदत जन की निंदत खेदा ।।
भोग कि रोग कठिन तन माहीं। इन सबतें मुनि बिलग सदाहीं
मैं भरमत की देश बिदेशा ।। यहु ज्ञान जेहि नहिं निहशेषा
रत ब्रह्मानंद सुरति सुख आपी। बिधिनिषेध नहिं छुवै कदापी
इमियोगीश्व असिम को अंगा। परसत अघ सब जरा अभंगा

दिव्यदेह होइ प्रेम गँभीरा। परा चरण मुनिकेर अधीरा॥
दो० आपन जन्म सहस्र को मैं तेहि पूरब ज्ञान॥
बायस हंसा होइ जिमि करिमानसजलपान।७।
की कंचन सरिता के तीरा। परतहिं वृक्ष शिला मुनिधीरा
वेगहि दिव्य स्वर्ण होइ जैसे। यातुधानु वह होइगा तैसे।
अरु अमृत कर पिय तहिं प्रानी। बिबुध बुद्धि होइ होवैं ज्ञानी
पाणि कर किरण छुवतहीं जैसे। चंद्र कांति मणि द्रवै सुतैसे
जिमि रवि उवतहिं निशा सिराई। तिमि निशिचर भै अस्तुति लाई
गुरु बर तुव दरशण करि दाता। पावन भयउं सुनहु प्रभु बाता
अरु तोहि से संभाषण करतहिं। शिव पद पैहौं मोहि लखपरतहिं
मोहि निज जन्म सहस को ज्ञाना। भयउ आजु गुरु कृपा निधाना
पर निज जन्म पंच अरु बीसा। को बिरतंत कहौं गुरु ईसा॥
प्रति जन्महिं जो पाप कमाई। सो सब क्रम तें कहउं गुसाईं
पूरब दुर्जय नृप दुर चारी। यौवन मत निर्दय मैं भारी॥
ब्राह्मण प्रजाहिं बहुत सतावौं। करौं ताड़ना मन न डरावौं।
दो० कहेउं सुनेउं कबहूं नहीं है किमि बेद पुरान॥
नहिं भायउ सत संग मोहि बिचरेउं जहं मन मान।८।
सपनेहू धर्म बुद्धि नहिं आई। द्विज हत्यादि कियउं बहुताई
अनुचम उत्तम नित्य नितआनौं। नित नवीन भोगा सुख मानौं
मैं असंख्य भोगा हमि नारी। लै बंदी घर डारेउं भारी॥
सब ही देश ढूंढि नित नामा। लानौं मैं बहु सुंदरि बामा।
एकहिं भोगा तिनहिं को देऊं। पुनि न लखवौं मुख नाम न लेऊं
बंदी घर रोवैं अकुलाई॥ श्राप देहिं मोहि को खिसियाई
मागे बिप्र राज तजि भारी॥ मम अनर्थ लखि होइ दुखारी
ग्राम प्रेत शंकर गण हेरी। ढूंढि ढूंढि तिय लानेउं चेरी।

दो० द्विज तिय भोगउं तीन शत क्षत्रिन्ह को शत चार
वैश्य सुंदरी सहस्र यक भोगउं गुरू उदार। ९।
शूद्र जाति को एक हजारू। पुनि चंडालन को शत चारू
डोम ढेड़ तिय नीच कुजाती। भोगउं सहस एक मदमाती
चर्मक केर पांच शत तनया। शत चार रजक कोगनया
गणिका को को करै शुमारी। भोगउं मैं असंख्य हू नारी
पांच पांच शत वृषलि महरिनि। अपर बरण को संख्या गिनि
इतनेहू नारि भोगि मैं जबहूं। तृप्ति कदा मन भयउं नतबहूं
मदिरा पान करौं नितिनेमा। अभक्ष भक्ष भक्षउं बदिक्षेमा
यहि बिधि भोगत दोषित भोगा। लागा मोहि सबल क्षय रोगा
दो० सोढ़ रोग महं मरेउं मोहि धरि लैगे यम दूत।
यम पुर केर अपार दुख दुस्तर सहेउं बहूत। १०।
तप्त भूमि पर मोहिं रेंगावैं। ताम्र केर जो कष्ट देखावैं
लोहा खंभ तप्त जो चोही। तेहि महं धरि लपटावहिं मोही
कठिन कर्म लखि दूत रिसावैं। असी पत्र बन मोहि फिरावैं।
तेल कढ़ाई माहिं तपावैं। तही लेइ के मोहिं बुड़ावैं।
अति अघ मोरे दूत बिचारैं। मुख मल मूत लेइ मम डारैं
महाक्षार कटु रस को लाई। डारहिं मुख मोहि भूमि गिराई
झपटि गीध तीछन बहु चोचहिं। फोरहिं मोर आंख की कोचहिं
कुंभी पाकहिं डारि चुरावैं। लै अय तप्त कान महं नावैं
दो० आहा उह को यांचना अति दारुण बिस्तार।
हे बरणैं अब मैं कतनि हे गुरु श्रेष्ठ उदार। ११।
शुक लोहू को कुंड अपारा। बहु दिन लौं तिन महर खिआरा
मांसहिं मंडसिन करिके खींचहिं। लवण पानि ऊपर तें सींचहिं
श्रुति नासा रसना छिनि डारिहिं। कर पद काटहिं उदर विदारहिं

जांघ चीरिकर नसहिं निकारहिं। तप्त शस्त्र करि शीसघुसारहिं
लिंगहिं काटि गुदाकर द्वारा। तप्त लोह कोड़ारहिं फारा।
चिमटा लावहिं सबतन गांसी। पुनः सद्य डारहिं गरफांसी
पीठ नवाइ खूंदि कर दोरहिं। ग्रीवा चरण एक महजोरहिं
नख अंगुरि नगहिं मूझी खूंचहिं। लूषण काढ़िलेपाथरकूचहिं
करपदबांधहिं एक मिलाई। शिला बेड़िडारहिं बिचलाई
बरस सहस लौं नरक अगाधा। पुनि मोहि बोरहिंजानिअसाधा
दूत आइ इक दांत गिरावहिं। एक बहोरि फांसि गरनावहिं
बरबस मम विश अरु सूता। पकरि खबावहिंमोहिंयमदूता
दो० गांठ गांठ मम अंग को टूक टूक तत काल॥
करहिं दूत मम दोष अति दारुण जानिविशाल १२
शाम सबल दुइ स्वान तहां अहिं। गण लुहाइ मम अंग चिराहिं
अस्थि रचिचि टूक शीस विदारहिं। एक मास गहि चोथैं फारहिं।
तिव्र तप्त करि लोह कुदंडा॥ मारहिं मम उर पीठ प्रचंडा।
पुनि मम सिर ऊखल महडारैं। तप्त लोह मूसल से मारैं।
तेहि पर तीक्षण रसहिंनिचोरी। नासा द्वार रिता वैं मोरी॥
पुनि वृश्चिक कूपहिं तत काला। डारहिं मैं महि बिपति विशाला
अति कराल विष हरअहिनावहीं। यम गण तिन तें मोहि चखावहिं
पुनि बेगहिं पावक भड़काई। भूजहिं मम तन सकल गुसांई
अरु असि धार अंग बैठारी॥ शिला पगनि बांधहिं दोउभारी
निर्दयपन मोहि देहिं ढकेली॥ गिरितें सद्यहि दूत दुहेली॥
फेंकहिं आंत काढ़ि चहुं ओरा। पुनि भक्षावहिं मोहि बरजोरा
उलटा टांगहिं उर्द्ध ले जाई। पुनि महि पटकहिंमोहि रिसिबाई
दो० लोह कंद परठाइ करि सुतवहिं बीछी सेज॥
शिला मूड़ पर मारहहिं काढ़हिंसिर को भेज। १३

लोह चना कहँ तप्त कराई। खाकहि मारहिं गरा समुदाई।
क्रोधित दूत ओंठ मम फारहिं। तप्त सलाक नाक महँ डारहिं
उलटा टांगहिं मोहि यम बाना। ग्रीवाँ बाँधहिं जबर पषाना।
भालु बाघ तें मम तन सारा। दूत फरावहिं निर्दय झारा॥
गज को पगतर मोहि खुँदावैं। उष्ण नीर पुनि लेइ पियावैं
करँव ततें मम आठौं अंगा। काटहिं पृथक् पृथक् करि भंगा
महा भयानक भूत भेटावैं॥ लिंग काटि मम मोहि खवावैं।
गांठ गांठ सँध सँधहि मरोरी। तिलना युध तें डारहिं टोरी॥
कटिलौं महि महँ गाड़ि शरीरा। मारहिं मोहि लखि बहु तीरा॥
तिग्म शूल पर मोहि तत कालां। औंध सुतावहिं गुरु दयाला।
ऊपर मारहिं मूसल मारा॥ देहिं दंड यम दूत अपारा॥
बेगि पषान बांधि मोहि भारी। नरक कुंड महँ देवहिं डारी॥
कांचा शीशा को पिघ लावैं। बर बश लै तेहि मोहि पियावैं॥
यम यांचना सहत बिधि नाना। उहां न निकसै कबहूं प्राना॥

दो० बरष सहस चै लौं सहेउं यम यांचना अपार॥
दिय ढकेलि मृत्यु लोक मोहि बाघ भयउं संसार। २४

सो० दूसर अजगर जन्म एक भयउं मैं तीसरे॥ ॥
शूकर चौथे चिन्म पंचम में गिर गट भयउं। २।

छठवें जन्म भयउं मैं श्वाना। सप्तम में जंबुक परमाना
अष्टम सुनिये गुरु दयाला। गवय केर तन भयउं बिशाला।
नवम जन्म मैं कपिको लयऊं। दशवें में गरदभ निर भयऊं॥
नकुल यकादश द्वादश कागा। तेरह में बक भयउं अभागा॥
चौदह में बन कुक्कुट पायउं॥ जन्म पंच दश गीध को आयउं
षोड़श में मैं भयउं बिलाई॥ सत्रह दादुर को तन पाई॥
जन्म अठारह कच्छप मोरी। मीन भयउं उन्नीस बहोरी॥

मूषक भयउं बेगाहीं बीसा ।। पुनि उल्लूक जन्मेउं इक्कीसा
बाइस चमगादुर को काया ।। भयउं ऊंट तेइस गुरु राया
तन निषाद जन्मेउं चौबीसा । अब राक्षस अवतरेउं मुनीशा
सो० जन्म सहस लौं ज्ञान भयउ आजु मम सबहि मोहि
पावन भयउं प्रमान हे गुरु दरश प्रभाव तुव ॥३॥
जरै पाप सुरसरि असनाना ।। ताप हरै शशि दरश प्रमाना।
सुर तरु दरशन दारिद ताई ।। हरै सद्य इमि बेद बड़ाई ॥
पाप ताप दारिद इक बारा ।।। संत समागम तें होइ न्यारा।
सुनि सब इमि निशिचर की बानी। बोले बामदेव मुनि ज्ञानी॥
द्विज यक परम अमंगल रहेऊ। शूद्र नारि सन निरतत भयऊ
यहि बिधि बहुत दिवस चलि गयऊ। सोतिय कर पति ताकत भयऊ
अवसर पाइ द्विजहिं सो मारा । खैंचि ग्राम बाहिर सब डारा॥
कोउ करि संस्कार तेहि नाहीं । उत यम गण मारत लै जाहीं
वह यम यांचन सहत कलेशा। प्रेत चरित इत सुनु दनुजेशा
उत्तम मंदिर इक शिव केरी ।। तेहि ढिग रहा भस्म को ढेरी।
तेहि दिन महा पर्व शिव राती । पूजत भक्त प्रेम बहु भांती॥
सो भस्महि यक कूकर आई । बैठा पूजा लखत सुहाई ॥
दो० सोइ भस्म लागा सकल सार मेय को अंग ॥
चला श्वान तहँ तें तुरत आगे सुनहु प्रसंग। १५।
वह द्विज प्रेत पड़ा रह जहवां ।। अकस्मात कूकर गै तहवां।
लगत भस्म सुरहिं तत काला । रहित पाप भै शुद्ध निहाला।
यम गण द्विजहिं नरक ले निकारे। शंकर दूत बिमान बैठारे ॥
बसा जाइ कर वह कैलाशा । । भयो अनंद पाप कर नाशा।।
इमि शिव भूषण पावन येही ।। महिमा वरणौं मैं किमि तेही।
पूछत दनुज जोरि युग पानी ।। कहहु भस्म महिमा मुनि ज्ञानी

कौन भस्म उत्कृष्ट कहावै ।। शिव भक्तिहि किमि नेम लगावै
सुनि मुनि बामदेव अनुरागे ।। चरित शंभु कर बरणन लागे।
दो० सहस यकादश योजना मंदर गिरि शुचि ऊंच।
एक समय शिव गण तहं सुर गण लेइ समूच।१६
किन्नर गंधप यक्ष गण जेते ।। गुह्य पिशाच चारण सब तेते।
सुर उपसुर पावन सु घनेरे ।। बैठे सबहिं शंभु कहं घेरे ॥
गण समीर पितृ गण सारा ।। रुद्र यकादश अरु रवि बारा ॥
भैरों अष्ट अष्ट दिग पाला । । अष्ट वसू सब गैं तेहि काला।
सकल ऋषीश्वर सहस अठासी। साठ सहस शिशु रिवल्य बिलासी
शेष नाग वर महि के राजा । । बैठे शिव कहं घेरि समाजा ॥
विधि हरि शचि पति सब सुरइंदा। सकल शंभु सुख लखत अनंदा
भूत प्रेत कर यूथ अपारा।। मंद्राचल पर बदुरे सारा ॥
बीर भद्र गण राज कुमारा। साठ कोटि गण संग शुमारा
लिये बिराजत शंकर पासा। प्रेम मगन मन परम हुलासा
दो० शिव सन्मुख नंदकेश्वर राजत छबि अपार।
देह बिशाल मुख अष्ट अति जनु दूसर मंदार॥ १७॥
सोइ अवसर तहं सनत्कुमारा। आवत भै मुनि परम उदारा॥
नमि शिव कहं अति अस्तुति लाई। पुछत भस्म धारण विधि भाई
कहन लगे शिव भस्म विधाना। सुनु मुनि सोइ बिभूति शुचि जाना
शुद्ध करै गो गो मय लाकर ॥ सूतिका कंकर रहित मुनी वर॥
गोला करि पुनि ताहि सुखाई। तेहि कर उत्तम भस्म बनाई॥
मन्त्र सहित सुचि भस्म हिं कर धरि जल। शिव गायित्रिनें लै मंत्रिय भल॥
प्रथम अंगुष्ट ते उर्ध लगावै। पुनि सिर वेष्टित लेइ फिरावै ॥
जानि निषिधि तर्जनि न लगाई। अरु कनिष्टिका कहं बिलगाई
इहि अंगुरितें लगाइ ये भाला। अंगुठे रुद्र मध तेज बिशाला।।

इमि त्रैपुंड्र सुधारण कीजै । कह शिव सनत्कुमर सुनि लीजै
पुनि त्रै करजन्हि तर्जनि त्यागी । सबतन भस्म धृतें अनुरागी।
बिधि बिभूति ऐसे अनमोला। सनत्कुमारहिं बोले भोला
दो० महा महा अघ भस्म है ऐसे भस्म प्रताप ॥
उत्तम भूषण शंभु को है मुनु निशिचर आपु।९०
अगम्या गमन बारुणी पाना। गो हत्या भक्षा भछ जाना।
महा पाप द्विज हत्या गिरि सम। चरचत भस्म सबही है भसम
भस्म करे इमि अमित बड़ाई। बामदेव निशिचर प्रति गाई ॥
सोइ अवसर बिमान तहँ आवा। असुर दिव्य तन तुरतहिं पावा।
सद्यहिं जाइ बसा कैलासा । शिव सरूप होइ शंकर पासा॥
बामदेव इत इच्छाचारी। भरमत महितल चले सुखारी
सत संगति को महिमा भारी। बामदेव संग नरा सुरारी ॥
चरचे भस्म जौन नित प्रानी। रहै प्रसन्न सदा शिव दानी।
दो० को दानी शिव सरल अति असुर नरा मुनिसाथ।
अपर आश गज राज जड तजि भजु गिरिजा नाथ।९९।
तीरथ मंत्र यज्ञ गुरु देवा ॥ ज्योतिष औषधि कर करि सेवा॥
जैसे साधन भाव लगावै ॥ इन पर तैसे हीं फल पावै ॥
एक इतिहास और सुनि लीजै। सब श्रोता निश्चय चित कीजै ॥
कहहिं सूत सुनु शौनक चारी । कौन उदार सरिस त्रिपुरारी ॥
नृप पांचाल देश गुण धामा ॥ सिंह केत जाको रह नामा ॥
शक्र तनय सम अति बलवाना। की कुंती सुत अर्जुन जाना ॥
एक समय बहु दल लै साथा। गयउ अहेरहिं सो नर नाथा॥
नृप को संग बहु शबरहु यूहा । देखि चले बन मांहि समूहा॥
शबर एक भाविक तिन माहीं। रहा नृपति भरमत बन माहीं॥
भंग एक शिव मंदिर रहेऊ ॥ दैवत सो निषाद तहँ गयऊ॥

उखरि परा रह तहँ शुभ लिंगा। पंच सूत्र रमणीय अभंगा
सो उठाइ शवर लै आवा। सिंहकेतु नृप काहिं दिखावा
दो० देखि नृपति कह शवर सन है अति उत्तम लिंग॥
भाव सहित पर पूजतहिं द्रवहीं गिरिजा रंग।२०।
मिथ्यहिं सुर अर्चन जो मड़ावै। करै दंभ सब लोग दिखावै।
मिलन हेतु जग अमित बड़ाई। सुर प्रतिमा धरि स्वच्छ बनाई
धरि दुकान जिमि धातु कसारा। बेचन मूरति अलिक पसारा॥
यह सब पाखंड मारग आहीं। बिना प्रेम हर रीझैं नाहीं॥
साधु भेष धरि जिमि बटपारा। छलै पथिक जो मंद गंवारा
कालनेमि जिमि साधू भेषा। करन कपट पथ बैठि विशेषा
यहि बिधि देवार्चन बिन प्रीती। करै वृथा सो दांभिक रीती
बोलत भये शवर सन भूपा। मिला लिंग यह तोहि अनूपा
दो० सिंहकेतु नृप सन तबहिं। पूछत शवर सुजान॥
शंकर पूजन करिय किमि कहहु सकल विधान २१
सुनि विनोद करि कहत भुवारा। है पूजा बिधि बहुत प्रकारा।
चिता भस्म पर उत्तम जानी। ताहि नितहिं नूतन लै आनी
चिता भस्म शिव प्रसन सदाहीं। तेहि बिन भोग लगाइयनाहीं
मुख्य जानिये याही वर्मा। शिव निष्ठा लक्षण यहि धर्मा।
नृप को बचन सांच पति पावा। लेकर लिंग शवर घर आवा
सब वृतंत निज तियहिं सुनाई। शवरी सुनि आनंद बढ़ाई।
अस्थापउ मुहुरुत शुभ देखी। दोउ पूजहिं नित प्रेम विशेषी।
चिता भस्म नित नूतन लाई। चरचि शिव हिं पूजैं सुख पाई
दो० प्रथम आरती होत ही बेगि शवर की नारि॥
लाइ सुधर नैवेद्य सुचि आगे धरहिं सुधारि॥ २२
भोग दिखाइ जोरि दोउ पानी। बिनवहिं शिवहिं दोउ रतिमानी

यहि बिधि गये कछुक दिन बीती। नित नव बढ़ै शंभु पद प्रीती।
तिन कर निष्ठा देखन हेतू। एकदा कीन्ह नवल वृष केतू
एक दिवस ऐसे बनियावा। चिता भस्म कतहूं नहिं पावा
शंवर अमित ढूंढ़ा बहुतायी। पर शव भस्म कतहुं नहिं पायी
अमित उदास शंवर घर आवा। नारिहिं बिलरिव वृतंत सुनावा
सुनि करुणा करि कह तिय ऐसे। शव शिव पूजा है पिय कैसे।
पूजा शिव को कैसे होई। परम सुभक्त शंवर पति सोई
चिता भस्म बिन किमिवह शंवरा शिव कहं भोग लगावै शंवरा
बिन शिव अर्पे पिये न पानी। शंभु भक्त मनसा क्रम बानी

दो० शिव दिक्षा अति कठिन है सेवत सब सुख खान।
प्रेम प्रतिज्ञा दोउ को देखत कृपा निधान। २३।

शंवरि कहति हे स्वामि सुनावौं। मैं निज तन कर भस्म बनावौं
पाक घरहिं बैठउं अनुरागी। अब मैं जरउं लगाई आगी
चिता भस्म सोइ चरचि सुहाई। शिव कहं पूजिय प्रेम बढ़ाई
बैठी शंवरि शुद्ध मन होई। शिव अस्मरण ध्यान करि सोई
लीन्हि लगाइ बेगाहीं आगी। भस्म कीन्ह तन अति अनुरागी
सोइ भस्म लै शंवर सुजाना। चरचत भै शिव कहं सुख माना
पर नैवेद्य स्नान को काजा। नहिं दूसर कोउ तेहि मुनिराजा
चक्रवर्ति दयाल वृष केतू। देखत धीरज तारण हेतू॥
बैठा शंवर सुआसन लाई। शिव अरचन हिं निमग्न सुहाई
पाक बनाइ शंवरि नित लावै। शंवर शिवहिं नैवेद्य लगावै।

दो० प्रथम आरती करि शंवर नितहिं बुलावत नारि।
लाउ भोग कहि धोक सोइ सोऊ दिना पुकारि। २४।

प्रथम आरती जहं होइ जाई। बेगि शिवहिं नैवेद्य दिखाई।
चुटकी बजत बिलंब जो होई। करहिं क्षोभ अति शंकर सोई

सब अन्याय क्षमहिं अवसेरी। परनैवेद्यहिं होतहिं भेरी॥
सद्यहिं क्षोभहिं मन अतिभारी। बिलँब तनक नहिं सहैं पुरारी
शिव अर्चन में अवर विदेहा। जारेउ तन तिय सुरतिन येहा
ऐसे शंभु उदार कृपाला॥ अवर पुकारत मैं हे बाला
कहि नैवेद्य लाउ हे प्यारी॥ तब पीछे रबड़ि लेकर धारी
रंभा उरबशि उमातें आगारि। दिव्य रूप भइ अवरी नागरि
चारि विधी नैवेद्य सुहावन॥ देति भई पति के कर पावन॥
अवर नैवेद अर्पि अति प्रीती। पूजि नेह करि षोडश रीती।
पुनि करजोरि युगल शिव आगे। अस्तुति करन लगे अनुरागे
जै अनंत ब्रह्मांड को नायक। माया चक्र चला वक भायक

दो० दुर्जन गंजक मदन अरि जै जै गिरिजा नाथ॥
भव हारक जै कृपा निधि कीन्हें हमहिं सनाथ।२५।

सो० हे शिव परम उदार तोर दया को पार नहिं॥
भजु गजराज गँवार जानी दानी उमापति॥४॥

करि समर्प शिव पूजा केरी॥ पुनि तिय तन निज अवर सुहेरी
भूषण भूषित सगुण अनूपा। पुनि आपहुं होवगे शिवरूपा
श्याम कंठ केवल बिन जाना। तहँ सब तन भै शंभु समाना।
दिव्य विमान शंभु पठवाये॥ बाजा बजत अनेक सुहाये
सुगा सुगंध परि मल मय नाना सिंह केतु नृप अचरज माना
बैठि विमान दोउ शिव पासा। सद्यहिं जाइ बसे कैलासा॥
कह नृप मैं तो कीन्ह परिहासा। चिता भस्म पूजन विश्वासा
धन्य अवर को प्रीति बरवानी। बसे कैलाश जाइ दोउ प्रानी

दो० धन्य अवर को कामिनी तन समर्पि शिव सेव।
ऐसे निष्ठा देखि के कस न शंभु सुरदेव।२६।

सिंह केतु को लागा आना। सब तजि नित शिव भजन लोभाना

शिव लीला मृत प्रेम समेता। श्रवणा करे नित नृप सिंह केता
शशि बासर प्रदोष शिव राती। करत वरत नृप बर बहु भांती
भजे सप्रीति शिवहिं औदारा। सत पथ धन बांटत नृप सारा
भजन करत महि पति यहि भांती। पठय बिमान मदन आराती
शिव पद गे नृप होइ शिव रूपा। धन शिव निष्ठा कीन्हा भूपा
शिव लीला मृत मंडुप जानो। कविन वाक्य जनु बेलामानो
पद रचना औंडु आनंदा। इत उत ब्रह्म सुरवहि निज छंदा

छं० निज छंद करि औंडु सुवेला सघन छाया भावहीं
दोष पक्व प्रेम फल लगे नित श्रोत बैठि सपावहीं
श्रीधरहिं वरदा उर सु गिरिजा जलज मह अलि सोहिसे
निर्वाण दानि अभेद यश निज कहु बसी मुख मोहिमे। १।

दो० शंभु उपासन सरस अति उभय लोक निर बाह॥
समुझि भजसु गजराज जड़ नित ही गिरिजा नाह। २।

॥ इति श्री स्कन्द पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गज राज कृते भाषा नूर भाषा मधुर नवमोऽध्यायः॥ ९॥

शारदा ब्राह्मणी का नैधुव ऋषि की कृपा से और शिव पूजा के फल से विधवापन से छूटना और उस के पति से मिलना और पुत्र होना॥



दशमोऽध्याय

दो० नैधुव ऋषि वर शारदा द्विज तिय कथा उदार।

बिध बहिं सुत भैं शिव कृपा यह अध्या में सार।२।
जै मनसिज मद गज मृगराजं। क्रोध मेघ दल मारुत छाजं।
जै मद तिमिर पुंज नित भानुं। शशि शेखर पशुपति घनज्ञानु
जै मत्सर बन घन बन्हि भेशं। छेदक पर्वत दंभ सुरेशं॥
अहंकार अंधक दनु जेशं। तेहि मद मर्दन को निहशेशं
धर्महिं वर्धमान को दातं। भाल नेत्र शोभित सुर त्रातं
सुरव कैलाश विपिन सुविलासिं। निगमागम वंदत मुखहासिं
आनंद सिंधु मरव दक्ष विनाशिं। ब्रह्मानंद कृपा की राशिं।
संतन कष्ट निवारक स्वामी॥ उमा नाथ जै गोसुत गामी।
दो० सिंह केतु नृप अरु शवर उधरे नव अध्याय॥
सूत कहत शौनक सुनहु अब यक कथा सुहाय।२।
भूसुर एक देव रथ नामू॥ देश अनर्तहिं रह गुण धामू
निगमागम में अतिहि प्रवीना। पंडित अरु शुभ बंश कुलीना
तासु सुता यक चातुरि खानी। नाम शारदा रही सयानी।
कमल नयन छवि रूप विशेषी। होहिं तटस्थ सकल जन देखी
बारा बरस को भइ सो बाला। पितु बिवाह तेहि दीन्ह निहाला
पद्म नाम द्विज जो गुण पूरे। ताहि दई तनया निज रूरे।
वहू परम पंडित द्विज ज्ञाता। श्रुति सम्यन्न गती विख्याता
जोहि कर विद्यालय महिपाला। सकल जगत जन होहिं निहाला
कछु दिन लौं बिवाह के पाछे। रहा जमात ससुर घर आछे।
यक दिन सांझ समय सरितीरा। संध्या बंदन हित गै धीरा।
लोटत घरहिं तिमि अति छावा। दृष्टि न परि पग अहि लपटावा
डसा प्राण गत तनतहिं गिरऊ। हा हा कार नगर महं परेऊ।
जननि जनक युत करति पुकारा। दौरि शारदा तन न सँभारा
पियतन परा प्राण बिन देखी। गिरी धरणि करि शोक विशेषी

विद्या धन सतेज हा आजू। दुखदधिमहँमम बूड़ जहाजू
सेज विछोह कीन्ह मम धाता। हा गुरु कहौं कौन से बाता
हा भंडार बूड़िगे मोरा ॥ ।पग मोर सुख पर अहि चोरा
हा बिधि मैं तुव काह बिगारी। जातें विपति दीन्ह मोहि भारी
दो० दग्ध अभूषण भयउ कहि टोरि फेंकति अकुलाइ।
बिथुरे कच उर ताड़ती शोकन हृदय समाइ।३।
लखि दुख शारद को सबनि नैन बहत जल धारि।
कहहिं त्रिलोचन पशुपति हा का कीन्हि पुरारि।४।
पुनि वह द्विज कोदेह जराई। जननि जनक परिजन अरु भाई
शारद काहिं दुखित लेंगा लेई। गये सकल जन घर दुख भेई
एक दिवस गृह के जन जेतू। गे बाहिर गृह कारज हेतू॥
रहि अकेलि शारद घर माहीं। यक अनुभव अपूर्व्व मैं ताहीं
सो दिन नैधुव ऋषी प्रवीना। तपसी वृद्ध नयन दोउ हीना।
धरे शिष्य को हाथ सुहाये। दैवत शारद को घर आये॥
शारद तुरत सु आसन दीन्हो। पूजी नमस्कार पुनि कीन्ही।
नैधुव कही बढ़ो अहि बाता। होइ सुत तोहि विदित श्रुतिज्ञाता
दो० द्विज को सूझन दृष्टि दोउ कहा अमोघ असीस।
सुनि हंसि शारद शोक भरि करती खेद हरीस।५।
बम अहि वात देव हरि लीना। यह अघटित किमि घटहि नवीना
कह नैधुव शारद मम बानी। असत न होइ कल्पांत सयानी
मम मुखतें बाणी जो कढ़ेऊ। सो कदापि पग पाछन धरेऊ
मम तप अनुष्ठान है न्यारी। तेहिकरि अघटित घट वहुनारी
बाहिर तें गृह जन सब आये। बंधु मातुपितु सबहिं सुहाये
कहहिं स्वजन सुनि सचरज भारी। यह अघटित किमि होहिं पुरारी
ऋषि असीस सुचि सबल मुनीशा। रंकहि करै छनहि सुरईशा।

पुनि न लगौ छन सह परिवारा। शाप बिनाशौं द्विज बरियारा
दो० सर्प कीन्ह नृप नहुष कहँ अति हिं सबल द्विज शाप।
द्विज यादव कुल भस्म किय ऐसे प्रबल प्रताप। ६।
दुंदुहिं शाप दिये खिसियाई। सब संपति तेहि सिंधु बुड़ाई
द्विज शापहिं तें जन्म मुरारी। धरैं अंबऋषि हित दशबारी।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र दिन रानी। डरैं विप्र शापहिं बहु भांती
पाइ परीक्षित भूसुर शापू। भयसि भस्म छन आधहिं आपू
यमदग्नी करि कोप अपारा। चहुं निज सुतहिं भस्मकरि डारा
विप्र शाप तें निज तिय साथा। कीन्हि भोग नहिं पांडु नृ नाथा
ब्राह्मण को गति शाम अपारा। जरे सगर सुत साठि हजारा॥
नारद आप धनद सुत दोऊ। भये वृक्ष जानत सब कोऊ
कृष्णहुं भस्म भये कुल साथा। द्विज आपहिं तें दंड नृ नाथा
बिप्र शाप अति ही बलवाना। नृग नृप शारद भये जग जाना
दुंदुहि कोपि शाप द्विज दीन्हा। भै सब देह सहस भग चीन्हा
भै क्षय रोगी रजनी नाथा। अचमन कीन्ह घटज दधि पाथा
दो० दासी सुत यम पति हि किय दमि ब्राह्मण बलवान
शिला काहिं उन सुर करैं रंक हि नृप जग जान। ७।
सो० मंत्राक्षत को डारि शूर काढ पर विप्र जब।
डार पात सब च्यारि डारतहीं कहि विदित सब। ९।
है द्विज केर पराक्रम भारी॥ टारि ब्रह्मांड रचैं पुनि न्यारी
पुनि नैधुव शारद सन बानी। बोलत भये सुनहु मुनि ज्ञानी
सुनु शारद तुम निश्चय धरहू। उमा महेश्वर व्रत आचरहू॥
मंत्र षड़ाक्षर विधि युत जानू। जपन करहु नित प्रेम प्रमानू
कहि जबलौं वोहि मिलिहैं नव्रत फल। मैंतबलौं रहिहौं इहतुव थल
तब तेहि अजिरहिं कुटी बनाई। रहन लगे नैधुव सुख पाई॥

शुक्ल पक्ष मधु मारग मासा।। व्रत प्रारंभिय प्रेम प्रकासा।
शुभ मुहूर्त्त शशि बासर देखी। चतुर्दशी अष्टमी विशेषी।
नित्य नेम संवत्सर एका ।।। शिव गौरी पूजिय सविवेका
गुरु मुख जिमि सुनि शारद बानी। तिमि नित करति प्रेम रति मानी
दो० नव शारद नैधूव के परी चरण अकुलाइ ।।
लीन्ही मंत्र षडाक्षर गुरु कीन्हि हर षाइ।८।
शिव मंदिर अति दिव्य बनाई। ऊपर श्वेत बितान लगाई
शोभित खंभा चार लगाये। नाना फल लटकत मनभाये
अष्टगंध मृग सुमन सुरूरे। शोधि भूमि डमि चौके पूरे
षोड़श वरण को यंत्र कराई। मध्य अष्ट दल तासु बनाई
पुनि तेहि बिच दल चारि करीजे। तापर चाउर कछुक धरीजे
तेहि पर जल युत घट अस्थापी। शोभित चित्रित करे सुआपी
तां बुल शोरभ पत्र सु ऊपर। पुनि सिंहासन डकि अति सूधर
कंचन प्रतिमा शिव गौरी को। करि अस्थापे सुचि मनही को
दो० पुनि यक निष्ठा देइ के पूजिय अति चित लाइ ।।
शिव गौरिहि नव सप्त बिधि कहे नैधूव समुझाइ।९।
द्विज संतर्पण करे सुहाई। पुजिय सुवासिनि अति सुख पाई
षट रस भोजन चतुर बिधाना। तृप्ति होत लौ दीजिय जाना
हर कीर्तन पुराण श्रुति गाई। डमि जागरण करि गति विताई
गुरु बचन पर अति विश्वासा। धरि वर्तिय नित प्रेम हुलासा
पुनि शिव गौरी को करि ध्याना। सांगो पांग यथा बिध्याना
गौर कपूर धवल पय फेनू। वरण कुंद शशि सम सुख देनू
शुक्ल कांति ज्योति मय रूपा। पूर्ण चंद्र सम शुद्ध अनूपा।
कोटि भानु को तेज बिराजे। भूषित भूषण शुभ्र सु छाजे
गुणातीत जगदानंद कंदा। सिर सुर सरी भाल नव चंदा

जटा मुकुट सिर श्वेत सु सोहै । मणि भुजंग लपटे मन मोहै ॥
दो० ढके पलंक मृदु भाल दृग चरचे भस्म सुश्वेत।
शुभ्र बाजु बंद सोह अति कंकण वीर समेत।१०।
सोहत गोर शुभ्र मुंड माला ॥ । दृग रवि शशि सम तेजविशाला।
नील कंठ छवि सोहत कैसे । मरकत मणी केकि गर जैसे ॥
दश भुज को दुमि आयुध चमके। मनहु प्रलय कर दामिनि दमके
कहउं नाम दश आयुध केरी । जो दश भुज महँ सोहत ढेरी ॥
डमरु त्रिशुल खट्वांग कपालू । अंकुश पास घंट अरु ब्यालू ॥
पाशूपत पिनाक कर कंजा । सोहत शुभ्र बरण छवि पुंजा ॥
चरम बसन सित तेजित शार्दुल । धृत गज अजिन सुसेत मणी तुल
मणिन रत्नमय जड़ित विशेशा। सित सिंहासन बैठ महेशा ॥
मंडप योजन सहस ऊंच पर । गिरि कैलाश शुभ्र ता ऊपर ॥
श्वेत बरण सोउ कोटि भानुसम। करत प्रकाश अकाश मनोरम
दो० ऐरावत तें शुभ्र अति नरकेश्वर देहविशाल
आगे राजत शंभु के ऐसो रूप विहाल।११।
तक्षक शेष सुकुंडल काना ॥ मणि मय सोहत शोभा माना।
मानहु ब्रह्मानंद निचोई । सगुण सरूप धरेउ शिव सोई ॥
बहुरि ध्यान करि उमहि शारद। लावति ध्यानहि बुद्धि बिशारद
सुंदर बाला देह सुछाजे ॥ । शशि शोरवर छवि अधिक बिराजे
आयुध चार चतुर भुज बासा । गदा पद्म अरु अंकुश पासा ॥
सुरतरु सुमन माल उर माहीं । बकुल मालती शोभा पाहीं ॥
गज मुक्ता मणि माल सु सोहै । शोभा अति बरणी कवि कोहै ॥
कटि केहरि अहि बेणी भाषा । दृग आकरण जलज मुख हासा।
दो० परत कांच पर तेज जिमि जैसे द्वादश भानु ॥
तिमि झलकति हिम वंति का जंघा शोभा मानु।१२।

कवि गण बहुतिय आगे गाये ।। रूपवती श्रुति गुण युत भाये ॥
पद अंगुठ परसे दे नारी ॥ ।। गौरी केर निछावर भारी ॥ ॥
कोटि कामतिय शोभा आगरि। त्रिभुवन जननि शंभुप्रियनागरि
अतिहि मातु को अंग सुबासू। फोरि ब्रह्मांड चलत चहुं पासू
पद सुद्रांक सु उमगे जहंवा ।। अरुण सरोज उगे जनु तहंवा
महि रदकांति को झलक परतहीं। कंकर होवे मणी तुरत हीं ॥
यह ब्रह्मांड अहै जहं ताई ॥ इमि सरूप दूसर नहिं भाई
रवि शशि पावक तेज अपारा। लरिजेहि कांति करहिं मनहारा

दो॰ इंद्र विधिहिं शिशु अबुध सम करी जठर प्रतिपाल
सब लावराय निचोरि ढरि चे जग देवी बाल। १३।

रवि शशि तेज निचोई जैसे ।। सारी श्रुति नाटक सु तैसे ॥ ॥
तिन कर छटा कपोलन्हिं चमकै। मनहु प्रकाश दामिनी दमकै ॥
बिंबाधर अरुण परिछाई ।। नक बेसर झलकत अरुणाई
मुक्ता विद्रुम सरश लाला। दीरवत तेजित कांति बिशाला
दृग अंजन को कांती पुंजा ।। गिरत मुक्त पर फांसत गुंजा ॥
करै हास्य जग जननी जबहीं। रंग प्रकाश दिखै सित तबहीं।
रदन कतार हंसत दिख कैसे। बैठे पांति हंस गण जैसे ॥
अरु मुक्ता सम झलक प्रकासू। जग दंबा को दशन बिलासू।
सित रद ऊपर अधर कि कांती। परत अरुण सु अरुण सुहाती
दाड़िम बीज पक्ष जेहि भांती। तैसे जमे दशन कर पीती।
कंठ केर मुक्ता को हारा। दीरवत मणि मरकत आकारा
श्यामल अंग प्रभा अधिकाई। मुक्ता सोदु प्रति बिंब समाई ॥

दो॰ पंकज कली कमंडलू जग जननी कुच जान ॥
षट मुख गण पति जासुको करत अमिय पय पान। १४

श्री भवानि जो पहिनी सारी। प्रलय दामिनी सम छवि भारी ॥

अंगिया को सित मोति कि नारी। झलकत भुज भूषण छवि भारी
सचिपति नील कील सम देहा। लीला भेष धरी निज नेहा॥
भक्त दयाल कृतज्ञ विख्याता। प्रलय रूपिणी आदि सुमाता
आदि पुरुष को शिवा अनंता। ज्ञान कला है वेद अनंता॥॥
अंड कटाह केर युथ भारी। छिन सृजि नाशि पराक्रम भारी।
शिव जेहि रूप लखत दिन राती। शशिहि चकोर प्रेत जेहि भांती
झलकत कुंतिका नभ महँ जैसे। फूल सरोज लसत द्युति तैसे॥
सांझ समय कोजिमि अरुणाई। कुंकुम रेख सुभाल सुहाई॥
जगत मातु शोभा की खानी। छवि श्रुति नेति कहहिं कबिबानी

दो० विश्व प्रलय के समय शिव सरुप पनहि कहँत्याग।
हौं निर्गुण तत काल हीं सुनिय कथा अनुराग। १५।

पर यहि केर अचल अहि बाता। कुंकुम तटंक महत विख्याता॥
उमा चार दै वीरि शिव साथा॥ तेहि हित टिकुलि लगाई माथा
तांबुल रेखा कित मुख शशि सम। कवि छवि कहहिं अपार मनोरम
जिमि प्रयाग महँ लसत त्रिवेणी। तिमि सोहत जननी को वेणी॥
श्याम वरण जो कुंचित केशा। सोइ जानिये सुता दिनेशा॥
गूथे श्वेत सुमन को हारा। सोइ सिर पर जनु सुरसरि धारा
अरुण कुसुम विच पांति विराजे। मानहु सोइ सरस्वति छाजे॥
सिर भूषण चूड़ा मणि जाती। सोइ मछ कछ जल चर बहु भांती
केस अग्र गुच्छा विस्तारा॥ सोहत सोइ सिंधु आकारा।
अंड कटाहन गूथि निकाया। सोहत माल पहिनि जग माया।
अस्तन दोउ जीव शिव राजे। वैंचि चोलि पहिनी छवि छाजे
अय सौभाग्य कबहुं नहिं होई। बज्र चूड़ पहिनी कर दोई॥

दो० पार्वती को बंधु हरि लीन्हे दश अवतार॥
सोइ सुंदरी जननी पहिनि दशहुं करज विस्तार। १६

पग नेपुर पैजन रव भारी ॥ । सुनतहिं शंभु समाधि बिसारी
शशि मुख कहँ देखहिं इमि भोरा। अतिहिं बिवश होइ मनहुं चकोरा
एक सुनिष्ट भक्ति दृढ़ जोई । नुपुर आदि पग भूषण सोई
इमि अति उत्तम रूप विशारद। ध्यावति ब्रह्मानंदहिं शारद ॥
यहि बिधि एक बरस लौं प्रीती। करि शिव गौरी व्रतहिं प्रतीती।
तब नैभ्रुव उद्यापन भाई । यथा बिधान प्रमान कराई
ग्यारह शत दंपति कहँ भूषण। दान मान युत बसन विभूषण
पूजी शारद अति हरषाई। नौ लौं अस्त भये दिन राई ॥
शारद बैठि गुरू के तीरा । जपन ध्यान कीर्त्तन मुनि धीरा
लागी करन प्रेम रस पागी। आगे कथा सुनिय अनुरागी
अर्धरात्रि जब बीती भाई । पार्वती तहँ प्रगटी आई ॥
रूप असंभव तेहि क्षण देखी। मुनि नैभ्रुव दृग खुले विशेषी
दो० नैभ्रुव शारद दोउ जन पूरित पुलकि शरीर ॥
परे चरण तर देवि कर उमगि प्रेम गंभीर। १७।
उन दोउहिं तजि आन को दीखैं नहीं भवानि
आगे ठाढ़ होइ जोरि कर नैभ्रुव अस्तुति ठानि। १८।

छन्द

जै जै जग देवे प्रणव स्वयंबे प्रकृति मूल श्रुति गेया ॥
बर दायिनि ब्रह्मानंद सुकर्मा चित सु विलासिनि मैया ॥
गिरि राज कुमारी दुख महतारी सौ भाग्य गंग धारा ॥ ॥
जन उर सर बासं जलज विकासं चित मय नम श्रुति सारा। १।
अति अंधहि नैना कृपा तव दैना पवनस पंगुल धावै ॥
बाउर बाचाला ह्वै तनकाला जड़ पंडित श्रुति गावै ॥
होइ रंक सुबारू ऐसि दयारू होइ चिंता मणि ओला ॥ ॥
संसृत भय घालक भक्त सुपालक मनद अनंदि अमोला ॥ २ ॥

सुरत वेद सुमाता विप्रन्ह दाता ब्रह्मादिक तोहि ध्यावैं
कबि शेष सुशारद ऋषिन्ह विशारद गावहिं पारन पावैं
त्रिपुरारि पियारी जग महतारी दोष त्रिताप निवारी।
त्रैकाल सुज्ञाना तव रति माना आवा गमन निनारी।३।
शिव मन सर बासं हंस नि भासं चंपक दल विज्ञानं।
वै भव कल्याना सब सुरव नाना दायिनि जननि निधानं
सब घट में जानी व्यापि मृडानी शिवप्रिय मुखदनिवासं
गिरिराज नंदिनी जगत बंदिनी किय गजराज सुआसं।४।

सोरठा

पुनि नैभ्रुव विरतंत आदिहि तेंजेहि बिधि भयउ।
शारद को जिमि अंत कहेउ भवानी पास सब।२।।

मोरे मुरव तें कहि जो बानी।। चही करन मन जननि सयानी
जो तें मन महं धरि हसि माता। तो जग करसि कान असबाता
यह शारद पूरब सुनु बानी। रहि सुंदर मुखि सहज सयानी।
विप्र सुता यह द्राबिड़ देशा। नाम भामिनी रही सुदेशा।।
यहि के पति के रहि दुइ नारी। यक जेठी ये लहुरी प्यारी।।
ये मृदुभाषि कंत बश कीन्ही। हिज यहि रति जेठिहि तजि दीन्ही
रहे परोस पुरुष यक जारा।। यहि कहं ताकै वह चित धारा
लखि दृकांत दृक दिन यहि पानी। धरा कु बुद्धी वह अज्ञानी।
दो० यह तेहि कर झटकारि दइ अरुण नैन करि बाम।।
होइ निराश वह पतित तब गयसि आपनो धाम।२८।

लगा जार कहँ यहि कर ध्याना। सुरत आलिंगन माहि लोभाना।
हुनि हुनि यहि कर सुंदरताई। आगा अपन सो जार गँवाई।
पुनि यहि सोत याहि को शापी। कहेसि होसि तें बिधवा आपी
पायसि मरण वहू पुनि नारी। यहि के दुख में होइ दुखारी

यहू प्राण तजि कछु दिन बीते। सोइ यहि शारद जन्मि प्रतीते
अब यहि जन्म वाहि जो जारा। बरसि याहि कहँ सुनु निरधारा
पद्म नाभ द्विज होइ सोइ जारा। यहि से दावा लेइ सिधारा।
पूरण भयो सोनि कर शापू ॥ निज कृत करि दुख पाई आपू
दो० यहि के पूरब जन्म करजी यत है भरतार ॥
अहही द्राबिड़ देश महँ सुनु नैधृव विस्तार। २७।
योजन साठ तीन शत दूरी। दहँ से है वह द्विज भर पूरी
यहि के छवि बिसुरत दिन राती। बिन तिय तलफत द्विज बहु भांती
वह यहि स्वप्नहि नित्यहि आई। दै है भोग सुप्रीति बढ़ाई ॥
जागृत हूं तें सुख अधिकाई। । यहि कहँ मिलि है सुनु सुनिराई
यहि बिधि बहुत दिवस चलि जाहीं। यक सुत होइहै शारद काहीं
शारद नंदन ताकर नामा ।। । होइहै बिदित जगत गुणधामा
यह गति सुख जेहि बिधि नित लहई है। तेसे हि अनंद विप्र उर पैहै।
सपना सुख जागृत तें आगर । पाइहि तृप्ति होहि द्विज नागर
दो० इमि जग दंबा तेहि सकल कहि भइ अंतर धान।
सहनित शारद स्वप्न सुख देवी बचन प्रमान। २८।
भई गर्भिणी तब वह नारी । निंदा करें सकल जन भारी ॥
परिजन देवर ससुर सु सासू । सज्जन सगे आये सब तासू।
अघटित देवि बचन विश्वासा । मानें जन न करें परिहासा ॥
कहहिं अहोनि होइ किमि बानी। अरु कब याको भेंटि भवानी॥
श्रुति नासा हरि कोन कह हांसी। खरा रूढ़ करि देहु निकासी।
तब नभ बानि कहति अति टेरी। असत गर्भ नहिं शारद केरी।
पतियाये तब हुं न जड़ सारा।। कहहिं बानिये कपट पसारा
तिन महँ एक वृद्ध रह ज्ञानी।। वह बोला अस अवसर जानी
दो० ईश्वर माया अगम है अन होनी होय जाय ॥

बिना खंभ को नभ अधर जल पर स्थिति उतराय।।२२।
रवि शशि ग्रह नक्षत्र समुदाई। काहि आधार इन्हें है भाई।
सब घट महँ व्यापत प्रभु ईशा। पर न मिले हेर जग दीशा ॥
पंच भूत जग बैर परस्पर ।। । सोइ इक ठौर चलें महिमाबर
गर्भ वास महँ पलें कैसे ॥। समुझि विचारि लखौ मन ऐसे
कान करै वह जग करतारा।। यूप केतु यक रहा मुवारा॥
ताकर शुक्र गिरा जल माहीं।। वेश्या एक पियो जल वाहीं
भद्र गर्भिणी उन नहि मेंजानी। सुंदर उत्तम पुत्र बियानी ।।
तेहिं महिं भिंडी ऋषि को कामा।। जल महँ गिरा पियो मृगबामा
दो० तेहि तें शृंगी ऋषि भये जो करि दशरथ याग।।
मृगि भोगेसि सौराष्ट्र नृप पावा पुत्र सुभाग।२३।
सत्यवती जो व्यास कि माता ।। मीन उदर ते जन्मि युत भ्राता।
महिषासुर राक्षस बलवाना।। जनमा महिषी तें जग जाना।
केयक मुनि हसि करुणा वंता।। जिन बचनहिं रहे गर्भ तुरंता।
रोहिणि जठर दुखि पुकारा ती।। जन्में चरित लखौ केहि भांती
सांब उदर तें मूसल जायो। । कहो कौन भल नेहि कोनायो
कुंती पांचों पांडव जाई ।।। पांच सुदेव समागम भाई
कहा चहु सब ही हसि बानी। निंदा करैं तदपि अभिमानी
सुनि नभ बानी भई बहोरी। सुनहु बचन मूरख गन धोरी
दो० परे कीट गरि जीभ कह जो शारदहिं अलीक।
सात्विक सुमती सुनि कहहीं सत्य सत्य मुहि नीक।२४
इननेहु पर कतनेहु अज्ञानी। कहहिं सकल ये छल की बानी
तब तुरतहिं कटि जीभ अभागे। बिल बिल्ल कीरा ह्वै कन लागे
शारद के पगतर सब कोई। गिरे देखि अति आनंद होई।
कहहिं सत्य तें तुव गुण माता। उमा जानकी सम विख्याता।।

तेज पुंज सुत भै पुनि ताही ॥ शारद भुवन कहैं सब जाही
शुक्ल पक्ष के जिमि द्विज गई। तिमि शारद सुत बाढ़त जाई
दे जनेउ पुनि बेद पढ़ावन ॥ आठ बरस में लागे पावन
निगमागम अरु सकल पुराना। जेहि मुँह पाठ बिदित जगजाना
दो० पंडित जन महँ तिलक इमि जिमि नवग्रह महँ भानु।
अनुष्ठान लखि प्रसन वश भै शिव कृपा निधान।२५।
तब शारद जो पुत्र समेता। लखि शिव रात्री ब्रत सुख देता
गइ गो करण क्षेत्र कहँ भाई। यात्री जुरे तहाँ बहु ताई॥
द्रविड़ देश के वह द्विज जोई। शारद पति आवत भै सोई
देखि परस्पर अति अनुरागे। प्रीति कष्ट दोउ के उर पागे
समुझे दोउ सुख देखि परस्पर। कह गइ आगे देवि बचन बर
आधा पुण्य शिवा शिव ब्रत को। देहु मि शारद तें निज पति को
दे सुत तेहि कर नाहि झुलामा। तेहि ढिग रहसि चारि तें मामा
पर तें करसि समागम नाहीं। बसि हसि अंत शंभु पद माहीं
दो० पुनि शिव रात्री यात्र करि पति कहँ कीन्हि प्रणाम।
लीजिय आपन पुण्य यह कहि कर दीन्हि अराम।२६।
उमा शंभु ब्रत करि तेहि आधा। दई पुण्य पगि कहँ गिरुपाधा
तब शारद निज पति के साथा। द्राविड़ देश गई मुनिनाथा
शारद दृढ़ ब्रत गहि लीन्हो चित। लेे पति दरश दूर ही तें नित।
शारद नंदन महा सु पंडित। भे विख्यात महीतल मंडित
तब आचरण कीन्ह वह आगर। मातु पिता पद रति अति नागर
पितुहिं शंभु सम मातु भवानी। यही भाव सेवे सुख मानी।
पितु मातुहिं न भजे जो प्रीती। धिक तप ज्ञान तासु धिक नीती
धिक विद्या अरु धिक्क बड़ाई। भाग्य धिकार तासु को भाई
दो० गहे बरोरि तिय नात पितु मातुहि दे दुख भारि॥

अन्न न दै बाहिर करै बचन बाण उर मारि।२७।
छहहूं शास्त्र पढ़े किन होई। विप्रहुं नीच नीच तें सोई॥
कहा तासु तन छूइय नाहीं। छुवब दूर मुख लखब न चाहीं
जो धोखे तन छुइगो जाना। करै सचैल तुरत अस्नाना।
जननि जनक पदरत नअकारुण। अति दोषी यमयोचहिं दारुण
तब पुनि शारद को भरतारा। बड़ योगेश्वर तप आगारा।
योगाभ्यास माहिं तनत्यागी। होइ शिव शिव पदगे अनुरागी
शारद हूं गवनी कैलासा। सुमिरि स्वामि संग उमा निवासा
दम्पति बसे शंभु ढिग जाई। अति आनंद उर सुखन समाई

छन्द

सुख उमगि यह शिव चरित भेषज कहहिं सुनहिं जो गावहीं
भव रोग नाशि अरोग होइ कर शंभु पद को पावहीं
जेहि लागि व्याधि असाधि कलि मल चरित नाहिन भावहीं
इहैं केर सोइ अधिकारि सुकृत पुंज ताहि सुहावहीं।५।

सो० सानँद श्रीधर श्रोत नहिं कह जोरे युग पान॥
शिव लीला मृत आदर सु सेवहु संत सुजान।२८
आगे अध्या में कथा आवहिं सुरस मधूर॥॥
हौं पवित्र श्रोता कथक धरहु मनो रथ पूर।२९।

सोरठा

ताकर उमा महेश सब विधि रक्षा करहिं नित॥
करि विश्वास निशेश भजु शिव कहैं गज राज जड़।३।

॥ इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा गज राजकृते भाषान्तर भाषा मधुर दशमोऽध्यायः॥१०॥

भस्म व रुद्राक्ष और शिव पूजा के फल से भद्रसेन के पुत्र का मृतक से जीना॥



एकादश अध्याय

दो० महत भस्म रुद्राक्ष विधि यहि अध्याहिं बखान।
भद्रसेन को मुये सुत जिये विदित जग जान ॥१॥
धन्य धन्य वह जीव को जो शिव भजनहिं लीन।
शिव अर्चन अरु चरित महं लागा प्रेम प्रवीन॥२॥

धृत रुद्राक्ष भस्म करि जोई। कहहिं सूत सुनु शौनक सोई
धन्य धन्य वह है त्रैलोका॥ अति हि पुण्य तेहि कर निह शोका
शुक्र आदि सुर गण समुदाई। वंदन करहिं तासु को भाई।
ताकर दरश करत ही प्रानी॥ तरैं जीव बहु शिव सम जानी
धृत रुद्राक्ष केर विध्याना॥ सुनहु संग अति जत परमाना
सोरह सोरह दोउ भुज दंडा॥ बांधिय पूरण प्रेम प्रचंडा॥
एक शिखा महँ बाँधिय जानी॥ शिव स्वरूप पूरण पहिचानी
जो तेहि परसे करि अस्नाना॥ सो मानहु त्रैबेणि न हाना॥
पाँच हि बाँधिय बारा बारा॥ दोउ कर में रुद्राक्ष सुमारा॥

कंठ माहिं बाँधिय बत्तीसा॥ चालिस घेरि बाँधिये शीसा।
छः छः पहिरिय दूनों काना॥ पुराय अदोष अतिहितेहिजाना
अरु अष्टोत्तर शत को माला॥ गरे माहि पहिरै सब काला॥
दो० धारण तन रुद्राक्ष को दूमि संख्या विध्यान॥
औरो सुनहु महातमहि श्रोता सब धरि ध्याना॥
अति उत्तम यक मुखि रुद्राक्षा। पूजे जासु भाग बहु आक्षा॥
पंचम षष्ठ अष्ट मुख ताता। बदन चतुरदश लक्ष्मीदाता
करि रुद्राक्ष जपन नित जोई। सब हीं मंत्र सुफल तेहि होई
एतहिं नित रुद्राक्ष किये तें। लह सुख जो शिव सेव किये तें
अति पावन रुद्राक्ष बड़ाई। इक इतिहास सुनहु चित लाई
सुचि बर काश्मीर को देशा। भद्रसेन इक रहा नरेशा॥
सचिव जासु अतिचतुर सुपंडित। सब बिबेक महँ पूरण मंडित
पुरजन परिजन द्विज समुदाई। कहहिं धन्य वह नृप है भाई।
शुद्ध न्याय करि लेहु नलांचू। तब हीं सचिव बड़ाई सांचू॥
पति ब्रत तिय मृदु भाषिणि सुंदर। पूर्व दत्त तें मिलिहि मुनी बर।
विद्यवान सुभाग सुत नागर। पाहु पूर्व जेहि सुकृत आगर
गुरु सर्वज्ञ कृपावत भारी। शिष्य सर्व गुणि आज्ञा कारी
दो० क्षमा बंत वक्ता सुरस आगम जानन हार॥
श्रोता प्रेमि सचेत सुचि चतुर बुद्धि आगार॥४॥
यज मानसु दातार अति देह अरोग कुलीन॥
ये सब पूरब सुकृत तें होवें मुनि पर बीन॥५॥
भद्रसेन इमि सचिव समेता। शंकर भजन करहिं सुचि चेता
भै सुत दोउ कहँ जब कछु दिन गत॥ शिशु पनतेहिं शिवभजनहिं दाउरत
नृप सुत को सुधर्म गुण धामू। सचिव सुतहिं धरि नारक नामू।
दोउ शिव भक्त अनूप सुजाना। करैं सचेत शंभु कर ध्याना॥

रहैं बाल पर परम बिरागी ।। शील प्रेम नित चित अनुरागी।
लोकिक संग अमंगल जानी। कबहुं न करैं अलग रति मानी
पांच बरस के भैं दोउ बालक। भूषण बसन पिन्हावहिं पालक
राज मुक्ता नाना लंकारा ।।दोउहिं पिन्हावहिं सचिव भुवारा
दो० दोउ शिशु भूषण बसन सब फेंकहिं देहिं उतारि।
सद्य भस्म रुद्राक्ष तन चरचहिं उर शिव धारि।६।।
सदा एकांतहिं भावै उनहीं ।नित सप्रीति शिव लीला सुनहीं
शिव नामावलि जीभ उचारैं। दृग पूजा शिव रूप निहारैं
अचरज सचिव नृपति नितलावैं। क्यों दुन भूषण बसन न भावैं
धृत रुद्राक्ष भस्म पुनि करहीं। शिव अस्मरण सदा उर धरहीं
भस्म पोंछि रुद्राक्ष उतारी। भूषण बसन पिन्हाहिं सुधारी
उन उतारि सब विप्रहिं दीन्हें। पुनि शिव भूषण धारण कीन्हें
शिक्षा उन्हें बहुत दिखरावैं। तदपि नवे निज ब्रत बिसरावैं
चिंता ग्रसित सचिव अरु राई। कहहिं काह अब करिय उपाई
दो० ऋषि दल लै संग परासर तेज अमित जिमि भानु।
भद्रसेन को सुकृत रवि पूरब केर उवानु ।। ७ ।।
व्यास पिता ज्ञानिस चैकाला। द्वितिय बिरंचि समर्थ बिशाला
मुनि पुलस्त कर नाती तेही। दनुजन क्षय हित मख करि जेही
दुच्छित महि नर बिचरहिं जैसे। पूरब रहे दनुज गण तैसे ।।
दुख पावैं तिन तें मुनि भारी। तिनहिं पराशर मख करि जारी
जन्मेजय नृप अहि मख कीन्हा। आस्तिक बीच रहे रवि चीन्हा
पाराशरहिं पुलस्ति मनाई। रावणादि को लीन्ह बचाई
कौशिक मुनि बिधि मन हठि ईशी। रचि छन माहीं दूसर सृष्टी
दौरि गुहार पितृ को मुनि बर। तिमि क्षय असुरन्हि कीन्हि पराशर
दो० जो मूलहिं ते कहौं सब बढ़े ग्रंथ बिस्तार।।

सब संक्षेपहिं कहौं जिहि समुझि परै निरधार।८।
जिन के नाती शुक योगीशा। ऐसे पाराशर मुनि ईशा॥
भद्रसेन को कुल गुरु ज्ञानी। आय पराशर अवसर जानी
सचिव सहित नृप आगे आई। करि प्रणाम घर गये लिवाई
किय पूजा षोड्श बिधाना। ईश भाव करि प्रेम न आना
भूषण बसन देइ अनुरागा। गुरुहिं जोरि कर बिनय लागा
कह नृप गुरु ये दोउ कुमारा। नित शिव भजन करहिं निरधारा
भूषण अंबर को नहिं भावैं। धृत रुद्राक्ष सु भस्म लगावैं
तजि बिराग शिव छनन सदाहीं। कोउ से अपर बचन बोलैं नाहीं।
किंचिन भावहिं इंद्रिन्हि भोगा। राज बिलास तें रहैं बियोगा
हय गज यान आरूढ़ब इन को। भावै नहीं पराशर तिन को॥
सो इन पूर्व राज केहि भांती। करिहैं हम चिंतहिं दिन राती॥
अस कहि दोउ बालक कहँ लायो भद्रसेन नृप गुरुहिं दिखायो

दो० देखत गुरु जोरी सुभग मानहु इन्दु तमारि॥
खोजत पटतर देन हित दूसर नहिं तन धारि।९।

सो० कह मुनि नृप के पास इन कर पूरब चरित सुनु।
देखि चित्त प्रेम हुलास जेहि करि ये शिव भक्त भौ।१।

पूरब यहि काश्मर कोदेशा। नंदि ग्राम जो बड़ो प्रदेशा॥
तहां रही यक विप्रया सुंदरि। नाम महा नंदा जिहि गुण भरि
सोइ रही उहँ के अधिकारिनि। अति लावण्य अनूप बिहारिनि
ललित रूप मद जासु निहारी। होइ तन्मय निरते सुधि हारी।
शरद पर्व पूरण शशि जैसे। श्वेत छत्र सिर सोहै तैसे॥
रत्न खचित रह यान अपारा। नासु बिभव कर नाहिं सुमारा॥
रत्न दंड लगि चामर स्वेतू॥ सदा ढुरै सिर आनंद हेतू॥
मणि मय रत्नहि खचित खड़ाऊं सदा विप्रवेजे जहि के पाऊं॥

दो० कंचन पलँग विचित्र सुदि बसन सुवस्तु सुबास ॥
मृदुल सुपेती सेज सुचि मानहुं इंदु प्रकास। १०।
भुषण बसन तन पहिनि सुहावन चरचि सुगंध देह अति पावन।
महिषि धेनु युथ जासु समूहा। तेसहिं हय गज शाला यूहा॥
दासी दास जासु बहुतेरे।। रह घर जननि भ्रातु तेहि केरे॥
जासु गान सुनि किन्नर लाजैं। मौन होइ कोकिल गण भाजैं
जासु नृत्य को चातुरि देखी। नृप गण शीस नवाहिं विशेषी
काम भोग करि इच्छा जासू। भूप सभाग्य आहिं घर तासू
सो विश्वा रहि पति व्रत नारी। सोइ तेहि पति जो दिन जेहि पारी
सो दिन कहुं इंद्रहु जो आवै। प्रण न तजै रीते फिरि जावै॥
दो० परम भक्त शिव को बिदित दाता शील उदार ॥
हरि हर दिवस प्रदोष व्रत करैं नेम शशि बार। ११।
सदा चलावै अन्न सदा व्रत। लक्ष बिल्व करि पुजैं शिवहिं नित
शिव अभिषेक बहुत द्विज हाथा। नितहिं करावै वह नर नाथा।
यांचक गण याचहिं जोइ जोई। मह नंदा पुरवै सोइ सोई॥
कोटि लिंग करि आवण मासा। शंकर पूजा करै हुलासा॥
दुइ कपि कुर्कुट मुर्कुट नामू।। वह तिय पोषी रहि गुण धामू
दोउ के गर रुद्राक्ष सुबाँधी। नचव सिरवायि सिउन्हैं अबाँधी
जहँ रह वहि के नृत्या गारा।। तहँ शिव लिंग थापि निरधारा
कुर्कुट मुर्कुट तहँ शिव आगे। बाँधी दोउ कहँ अति अनुरागे
दो० श्रवण करैं शिव चरित वह कपिद्वय सुनैं तेहि संग।
शिव आगे महनंद पुनि गावै नचैं उमंग॥ १२॥
पुनि दोउ कपिहिं छोरि महनंदा। नचवावै अति प्रेम अनंदा॥
निज करतें उन के गर माला। भस्म लगावै पुनि वह बाला।
वह गणिका के संगति माहीं। दोउ कपि शंभु भजन फल पाहीं

सो तेहि कर सत देखन हेतू। आवत भेंउदार वृष केतू ॥
सौदागर के धरि कर भेषा। महनंदा घर आय महेशा
सौदागर के लखवतहि रूपा। वह अबला भइ तन्मय भूपा
निज करतें पूजा करि बाला। रत्न पलँग बैठाइ निहाला॥
कंकण कर जो सौदागर के। रहे मोल सब पुहमी भर के।
दो० लखिव गणिका तन्मय भयउ कहि नरकृति असनाहि।
विश्वकर्म यहि निर्मयउ वस्तु स्वर्ग को आहि।९३।
वह सौदागर कड़न्हि उतारी। गणिका को कर दीन्हे डारी॥
तब महनंदा होइ अनंदा॥ करति नियम कहि सुनु छबिकंदा
जिमि कंकण महि मोल विचक्षण। तिमि मैं पद्मिनि बत्तिस लक्षण
तीन दिवस लौं राउर दासी। मैं भइ यहि पलदे पर बासी।
करि स्वीकार हिये सुख बाढ़ा। तुरतहिं दिव्य लिंग वह काढ़ा
भानु प्रभा लज्जित जेहि आगे। पटतर देत निपट लघु लागे॥
देखि लिंग महनंदा बाढ़ी॥ भइ आनंद मगन मन माही।
कहि जै चंद्र मौलि गिरिराई॥ पुनि पग परि अति प्रेम बढ़ाई
कहिये लिंग प्रभा के आगे॥। कंकण कोटि निछावर लागे।
सुनु महनंदा कह सौदागर। यहि रखु यतनि लिंग शोभाकर
सो० यह लिंग ढिग मम प्रान जरे हरै जो भंग ह्वै॥ ॥
तो मरुं जरि हौं जान सत्य कहौं मम कठिन प्रण।२।
कह महनंदा आनँद भरकर। हां शिवलिंग नृत्य घर धरकर
रत्न पलँग मह पौढ़ी जाई॥। सौदागर समेत हरषाई॥
सो बासर बीता सुख चैना। दुसर दिवस करि इमि अरि मयना
तासु परीक्षा देखन हेतू॥ कौतुक कीन्ह कृपा गुण केतू।
अहै सत्य यहि के कहि भांती॥ धीरज देखत मद अति राती॥
अरु निज भक्तहिं तारण हेतू॥ कौतुक चरित करत वृष केतू।

शिव आज्ञा करि नृत्यशालामें। लागी आगी सोई काल में॥
चहूं ओरतें पुरजन धाये ॥ । अग्नि बुझावन को अकुलाये
तियहिं सचेत करत त्रिपुरारी । उठ उठ झट लगि पावक भारी
सुनत उठी घबरा कर बाला । देखी बढ़त कृशानु बिशाला
वेसहिं महँ महनंदा कूदी । । झट कपि गरन्हि को छोरी फूंदी
कुरकुट मुरकुट बन पथ लीन्हे। अब दूत चरित सुनहु चित दीन्हे
दो० नृत्यशाल जरि छार भै भद्र पुनि शांती आग ॥
सौदागर महनंद प्रति व्याकुल पूछन लाग।१४।
मम लिंग दिव्य यतन मे हैना ॥ घबरि महानंदा सुनि बैना॥
कहति पीठि उर बच बिलखाई। दिव्य लिंग जरि गयउ गुसांई
कह सौदागर सुनु बच मोरी । । दूसर दिवस नियम कर तोरी।
लिंग हेतु तोहि पर मैं आना । दैहौं मम सुख सकल सिराना
अस कहि अनलबिंदु पिचिनाई। ज्वाला बढ़ी लपट नभ जाई
होइ सिद्ध जब पुनि सौदागर । अग्नि कुंड ढिग आवा सादर।
परम कौतुकी गिरिजा रमना। करत चरित भक्तन भव शमना
कूदे तबहिं तुरत मद नारी । । नमः शिवाय सुमुख उच्चारी।
दो० विप्र वृंद महनंद तब देखि बुलायसि भार॥
सब सम्पदा लुटायिसी दई खोलि भंडार।१५।
दीन्हि द्विजन्ह कहँ हयगजयाना सब संपति युत करि घर दाना
करि असनान बहुरि महनंदा। चरचि विभूति देह आनंदा।
धृत रुद्राक्ष कीन्हि सब अंगा। धरी ध्यान उर शिवहिं उमंगा
जै शिव हर हर परम कृपाला। अस कहि कूदि अग्नि महँ बाला
भानु बिंब उदयाचल जैसे ॥ । होइ उदय प्रगटे शिव तैसे॥
दश भुज पंच बदन शशिमाथा। भक्त बिपति भंजन गिरिनाथा
शीश जटा बिच सुर सरि धारा। बहत माधुरी शोभा कारा ॥

तीसर नैन अग्नि को छाजे ।। यो रीश्वर छबि अधिक बिराजे
नील कंठ खट्वांग त्रिशूला।। डमरू आदि धरे सुख मूला।।
चरचे भसम गौर तन सुन्दर।। अरु ओढ़े गज को चर्माम्बर
दो० व्याघ्राम्बर पहिरे कटि गर नर मुंडन हार ।।
सबहीं तन लपटाय अहि दश भुज भक्त उदार १६
कंदुक सम दश भुजा पसारी ।। अधरहिं मह नंदाहिं पुरारी।।
झोंके अनल गिरन नहिं पाई। प्रीति समेत लिये उर लाई।।
मैं प्रसन्न तोहि पर कह भोला। रुचित मांगु सुनि बोलि अमोला।
मम सब नगर बिठाइ बिमाना। लै कैलाश चलहु भगवाना।
एव मस्तु कहि उमा निकेता। गणिका भ्रातु मातु पुर जेता।।
सब जन दिव्य देह कहँ पाये। चढ़ि विमान कैलाश सिधाये
सब शिव पद पाये निरुपाधी।। जहाँ न कबहूं कोनहु व्याधी।।
सुधा तृषा चै भुद्धी नाहीं।। भेद बुद्धि जहँ सपने न जाहीं
काम क्रोध दुबिधा दुख नाना। मद मत्सर कर नहिं अवसाना।।
अमृत हूंते मीठा पानी। कोटि गुणा जहँ वेद बखानी
कल्प वृक्ष के जहँ बहु बनहैं। गोद के गोद सुरभि गो बन हैं
चिंतामणि को धौला गारन। रचे शंभु भक्तन के कारन।।
दो० तहँ इच्छा जो करहिं जन पावहिं विनहिं प्रयास।।
अक्षय शिव पद नित तहीं महनंदा कियि बास २७
सुरस चरित कह परासर भद्रसेन सुनु राज ।।
गणिका कहु उधरी शिव कृपा चेत मुजड़ गजराज २८
भद्रसेन सुनु दोउ कपि आगे।। कुरकुट मुरकुट औबन भागे।।
सोई अहिं ये दोउ कुमारा। पूर्व सुकृत शुभ करहिं अचारा
गर रुद्राक्ष बिभूति कपाला। किय जो धारण पूर्व भुवाला
सोई पुण्य सुकृत के कर्मा। जन्मे ये नारक सूधर्मा ।।।।

आगे राज करहिं ये पावन ॥ बत्तिस लक्षण सहित सुहावन
शिव भजन हिं बहु जन कहँ लाई। तुम कहुं येहि उधारहिं राई॥
सुनि नृप सचिव सहित अनुरागे। गुरुहिं प्रणाम करन तब लागे
कहि दुन मे हम धन्य मुनीशा। हमहिं सुपुत्र दीन्ह जगदीशा।
दो० करहिं कतनि दिन राज दुन पूछत गुरुहिं नरेश।
हे आयुस दुन के कतनि कहिये प्रभु निह शेश १८
बहु बदना कीन्हें तें स्वामी। ये सुत पायन आज्ञागामी॥
परम प्रीय सुन्दर दोउ बालक। हमरे आहिं प्राण के पालक
तुम्हरे आवन करिबे नाथा। भयउ आजु मैं परम सनाथा
कह नृप मम सुत आयु प्रमाना। है कतनी प्रभु कहिय सुजाना।
कह मुनि सत बोलौं जो बानी। तौ तुम दुख पैहो नृप ज्ञानी
सभा सहित हू सुनि मम बाता। बूड़हिं दुख समुद्र में ताता
निज अनुभव सम कहिये नाहू। नाहिं तो होवै जड़ता लाहू
बिषहूं ते बिष लागिहि आगर। सुनतहिं बचन तुमहिं नृप नागर
भद्रसेन कह बात जो चोखा। तेहि प्रगटत गुरु नाहिन दोषा
तातें कहिये गुरू उदारा ॥। जो सुनि होइ सकल भ्रम न्यारा
सो० नृप सुख बिहंग समाज असि रवनिशि सम मुनि कहत।
भूप सुतहिं तुव आज आयुष बारह बरस मे॥ ३॥
आजु ते सतवें दिन तव ढोटा। यही समय मरिहै नहिं खोटा।
यतना बचन सुनत ही राई। गिरा भूमि तल मूर्छा आई॥
दुख पावक में सचिव समेता। सुरभि सभा सब भई अचेता।
यह सब खबर पहुंचि रनबासू। लागी बिलपन डारहिं आँसू॥
रोवत बदत बिलापि पुकारा। उर ताड़त नृप बारहिं बारा॥
लखि नृप गति मुनि कीन्हि सचेतू। बोले बचन परम हित हेतू॥
धरसि धीर जिय श्रेष्ठ भुवारा॥ सुनु तें दुक मैं कहौं बिचारा॥

जहँ नरहे सब पांचों भूता ॥ नाहीं हते भानु दधि सूता ॥॥
माया मय बिकार रहि नाहीं ॥ केवल ब्रह्म रहे मय माहीं ॥
तहां ऽ स्फुरणा जागरणा भयऊ । अहं ब्रह्म कहि सुनु चितठयऊ
वही ध्वनी माया है सत्वा । तहं से उत्पति भै महतत्वा ॥
पुनि सत रज तम त्रै हंकारा ॥ शिव इच्छा करि भये भुवारा
सत गुण तें भै रमा निवासा । जगत पिता रज अंशा प्रकासा ।
तम के अंशा रुद्र निर्मयऊ ॥ ऽउत पति थिति लय हितत्रै भयऊ
रचसि सृष्टि शिव कहु विधि पाहीं । कहा बिरंचि ज्ञान मोहि नाहीं
तब शिव चारों बेद बनाई ॥ सृष्टि हेतु विधि काहिं पढ़ाई ॥
चहुं श्रुति कर सार सुश्रुति पावन । रुद्र ऽध्या जानिय मुनि भावन ॥
सब ब्रह्मांड भुवन त्रै माहीं । तेहि से गुप्त ज्ञान अरु नाहीं ॥
दो० रुद्र ऽध्या सम साधन फल द्रुमि दूसर नाहिं ॥
वह अध्या शिव रूप है कहि शिवश्री मुख माहिं २०
सुने पढ़े शिव अध्या जाही ॥ तबै जीव तेहि दरशहिं माही ॥
पुनि बिधि सप्त ऋषिनिहिं बनाये । शिव अध्या एकांत सुहाये ॥
वह पुनि सप्त ऋषिन्ह के द्वारा । महि तल आय कीन्ह बिस्तारा ।
तेहि से बड़ जप तप अरु ज्ञानू । नाहिन दूसर निश्चय जानू ॥
जो यह अध्या जपि सं पूरण । तासु दरश सुचि होंय तीरथ गण
ताकर दरश करन हित भाई । नभ सुर इच्छहिं मन ललचाई
यहि से अधिक शंभु सेवकाई । जप तप नहिं कछु दूसर भाई ।
शिव अध्या को महिमा भारी । बरणत शारद हू मन हारी ॥
दो० अस महिमा महि मह बढ़ा यम पुर भयो उजार ॥
यम गण मुद्गर पास तजि खाली घूमें झार । २९ ।
तबहिं पूछि विधि सन यम राई । अति अभक्ति मति जग फैलाई
जो कुतर्क बादी दुर भेदी ॥ तिन के उर महं सो मति भेदी ॥

तेहि तें बहु मत्सर उर बाढ़ा ॥ शिव कर द्वेष करैं अति गाढ़ा
सो प्रानी यमपुर को जाई ॥ घोर नर्क महँ बसै सदाई ॥
तब रवि सुत कह दूतन्हि पाहीं। जो शिव द्वेषी अघ मति आहीं
सो होवैं अल्पायुषि मांचा ॥ तिन्हैं लाइ करिये बहु जांचा
विष्णु बड़े अरु शंकर छोटे। हर बड़ हरि लघु कहहिं जो खोटे
तिन्हैं बांधि ताड़न लै आवो। डारि नरक बहु त्रास दिखावो
दो० शिव अध्या नहिं भाव तेहि डारहु कुंभी पाक ॥
ध्रुव आयुष वर्धन शिव सु अनुष्ठान श्रुति वाक २२
सुनु सो भद्रसेन चित धरहू ॥ अयुत रुद्र आवर्तन करहू ॥
करु अभिषेक शंभु पर धारा। निश्चय मृत्यु होइ तब न्यारा।
की प्रात घट लाइय भरि पानी। आम पत्र डारिय शुभ जानी ॥
रुद्र मंत्र ते सींचन कीजै ॥ बालक पर जल ध्रुव दुख छीजै
प्रति दिन अयुत रुद्र आवर्त्तन। करहु सात दिन लौं नृप धरि मन
धरा चरण नृप मुनिवर केरी। बोला सज्जद प्रेम घनेरी ॥
सब गुण जौन रत्न के माला। राउर तिन बिच पदिक विशाला
मृत्यु शोक भय से गुर नागर। सदा बचावैं करुणा सागर ॥
दो० तुम अचारत्व करहु निज संग के द्विज गण साथ ॥
औरों विप्र बुलाउ अभिआरंभिय गुरुनाथ। २३।
नृप द्विज सहस बुलाये ज्ञानी। अनुष्ठान शिव भक्त सु जानी ॥
न्यास ध्यान युत परम प्रवीना। गुरु मुख आये सीखि नवीना।
जिन पर तिय धन नहिं अनुरागे। जानी नीच वमन ते त्यागे ॥
शील विरक्त सकल गुण वाना। लेहिं न सपनेहु प्रति ग्रह दाना
शांति क्षमैं जिनमें दृमि आक्षी। रवि रथ रोकि सकैं शिव भक्षी।
गिरिजा वर को आगे लाई ॥ करैं ठाढ़ समर्थ अस भाई।
अस लक्षण के द्विज गण लेई। व्यास पिता बैठउ चित देई ॥

दस शत घट मँगाइ धरि आपी। सन्मुख मंत्रि उन्हे अस थापी।
दो० आम पत्र प्रति घटन्हि धरि भरि सुरसरिको पानि॥
रुद्र घोष द्विज करहिं सब अनुष्ठान शुभ जानि। २४।
यहि प्रकार छः दिन चलि गयऊ। सतवें बासर दुपहरि भयऊ॥
मध्य दिवस मृतु आयो वाही। नृप सुत मूर्छि गिरा महि माही।
दुइ घरि रहा अचिए अचेता। हलव चलव बंद भै सब जेता
देखि राउ अति सै अकुलाना। कह गुरु मत डरु नृपति सुजाना
रुद्रोदक तब सिंचि मुनि राई। राज कुमारहिं लीन्हि बचाई
करि सचेत तेहि पूछहिं हाला। तोहि बेतेउ सो सब कहु लाला
वह कह भीम रूप यक कालू। उई जटा सेंदुर दिय भालू॥
आवा रदन जासु बिकराला। दृग जनु बैर अँगार बिशाला
सो मोहिं पकरि चलायेसि काला। कछुक दूर पथ सुनिये हाला
दो० आये दौरि गुहार मम पुरुष सु चारि प्रचंड॥ ॥
प्रति के दश भुज पंच मुख पटतर नाहि ब्रह्मंड। २५।
जिन कर रवि सम तेज प्रकाशा। करैं दिगन्तर तम को नाशा।
तन विभूति व्याघ्रांबर धारा। दश भुज आयुध कष्ट निवारा
तुरतहिं उन मोहिं कोछोड़ वाये। बंधन तोरि ताहि धम काये॥
काल रूप कहँ उन महँ राजा॥ उन सैनैं मारत मुनि राजा॥
इमि सुत मुख तें सुनि कर बाता॥ भद्रसेन आनंद भरि गाता॥
पुलकित तन अवदृग जलधारा। द्विजन्हि नमत करि जैजैकारा।
पुनिपुनि उमगत आनंद अपारा। परत द्विजन्हि पगवारहिं बारा
शिव शिवनाम उचारत पुनिपुनि। बरषहिं सुमन सुरन करि जैधुनि
दो० भेरि न फेरी सह नई दुंदुभि आदि निशान॥
बाजा बजत विविधि अति अम्बर रवन समान। २६।
सब बाजन्हि को करैं सुमारा। अब सुनिये आगे व्यवहारा।

भद्रसेन अति धन्य मनाई।। श्रुति विख्यात सुहोम कराई।।
षडरस भोजन द्विजन्हि कराये। बसन बिभूषण दिव्य मँगाये।
वस्तु अमोलिक लाकर नाना। दीन्हा विप्रन्हि भूप सुजाना।
दछिना हेतु सकल भंडारा। खोलि दीन्हि नृप सुनिये भारा
कहि नृप जतनि चहै तत लीजै। आगे पीछे मन जनि कीजै।।
कीन्हि तृप्ति यांचकन्हि समाजा। कहहिं सकल भे पूरण राजा
लेजन सकहिं बोझ अतिभारी। ठांउ ठांउ देवहिं धन डारी।।
दो० संखालत डारहिं द्विजन्ह कहहिं रहे सुत क्षेम।।
सोदू कालयक अरु चरित भे सुनिये धरि नेम। २७।
बन सुगंध जिमि ऋतु पति सोहै। अरु शिव पुरि महँ सुर सोहै
श्वेत कमल तें गिरिजा बर के। जिमि सोहै पूजा छबि धर के।।
पादु सु अन्न सुधित जो छीना। चिंता मणी भाग को हीना।।
तैसहिं छवि पंकज सुत जाये। मुनि नारद सोदू अवसर आये
बालमीक कवि पुंगव व्यासू। ध्रुव हरि भक्त अचल जेहि बासू
ऐसे गुणि जिन के हैं चेला।। बंदनीय त्रै लोक दुहेला।।
चौंसठ कला मुनि पुन नबीना। चौदह विद्या कर तल लीना।।
तिन कर रूप सु देखिय कैसे। भनु इंदिरा रमण द्युति जैसे।।
दो० सक ब्रह्मांडहि टोरि पुनि दूसर करै नवीन।। ।।
लखि अनीति सुरपति सुरन्हि जो अति ताड़न दीन। २८।
त्रै मूरति त्रै कुंड ते आगी।। । निकसे मुनि कहँ लखि अनुरागी
गार्हपत्य आहवनी दक्षिन। कढ़े अनंद उमगि के तेहि छिन।
भद्रसेन निज सचिव समेता। पराशरादि विप्र गण जेता।।
ब्रह्मानंद उमगि अनुरागे। दौरि मुनी पग बंदन लागे।।
सुमन सुगंध दिव्य सुचि आनी। सोरह विधि पूजे सनमानी।।
बोला राउ जोरि युग पानी।। हो मुर ऋषि प्रभु आत्मा ज्ञानी

त्रिजग गमन तुव सब ही ठामा। कहहु अपूर्व लखे जो नामा
कह नारद मुनि मैं पथ आता। शिव गण चारि लखउँ मगु जाता
दो० प्रति के दश भुज पंच मुख मृत्यहिं बाँधे लीन ॥
जात दरा तुव सुतकि मृतु धनि तें शिव व्रत कीन। २८।
तुव सुत के रक्षा कर हेतू ॥। बीर भद्र पठये वृष केतू ॥
तब वह मृत्यू सन तेहि काला। मैं पूछत सो सुनहु भुवाला ॥
लात रहा आज्ञा केहि केरे ॥। भद्रसेन के सुत को तेरे ॥
ताकर आयुष को पर मानू ॥ बरष सहस दश है ध्रुव जानू।
होइहै नृपति शिरोमणि वाही। शिव दाया करि संशय नाही
शिव महिमा को जानि प्रभुताई। लात रहा कस लीक मिटाई
पुछत चित्र गुप्त हिं सुत भानू। वह कह आयु बाँचि परमानू
द्वादश बर्षहिं यहि यमपाला। रहि गंडांतर मृत्यु बिशाला।
दो० टरि महु गंड बरष सहस दश लौं राज अबाध ॥
करिहै सुनि यमपति दुरित समुझि अपन अपराध। ३०।
सुनि कृतांत बिनवत कर जोरी। अस्तुति सुनहु सदा शिव मोरी
मैं दुर कर्म कीन्ह अपन जानी ॥। सो अपराध क्षमहु धनु पानी।
सुनि नृप सुनि सुख को दुमिबानी। परेउ चरण तन दश भुलानी
और हू सहस रुद्र करि नाहू। करत भयसि अति ही उत्साहू।
किय शत रुद्र जिये शत बरषू। अल्प मृत्यु टरि के मन हरषू।
पढ़ि अदोष जो अध्याया ही। सो शिव रूप यही तन माही।
इहइ मुक्ति वह भै निरधारा। बहु जीवन को करै उधारा ॥
अब पुनि आगे सुनहु बरबाना। भै नारद तब अंतर धाना ॥
दो० गुरुहि पद्म शत धन बहुरि दीन्ह नृपति सुजान।
सब मुनि गण सह पराशर हर्षि किये प्रसथान। ३१।
सुने पढ़ै यह अध्या जोई ॥। संतति आयु बृद्धि तेहि होई

ताहिन होइ कबहुं यम त्रासा। अंतकाल पावै कैलासा॥
कहत सुनत में पुण्य प्रमाना। होइ गो सहस दिये को दाना।
भक्षा भक्ष किये अज्ञाना॥ द्विज हत्यादि वारुणी पाना
महा महा अघ पर्वत तूला। चरित अग्नि सुनि जरहिं समूला
यह अध्या चै कालहिं बाँचे। होइ दूर गंडांतर सांचे॥
कलि में आयुष वर्धन दूजा। नहिं जप योग ज्ञान कछु पूजा
शिव कीर्तन को महिमा भारी। कृति आयुष बरधैं त्रिपुरारी।

दो० पुनि निज सुवन सुधर्म कहँ भद्रसेन दै राज॥
मंत्री के सुत तारक हीं करि तेहि को युवराज। ३२।

भद्रसेन पुनि सचिव समेता॥ गावना बिपिन तपस्या हेता।
अनुष्ठान शिव ध्यान अपारा। किय उहँ तोषेउ शंभु उदारा।
नृप सचि वहीं बिमान बैठाई। लेइ गए होउ कहँ गिरिराई।
उन इच्छित विधि पुर बैकुंठा। कीन्हे कछु दिन वास अकुंठा।
होइ शिव रूप अंत शिव पासा। शिव पद कीन्हे दूनों बासा।
रुद्र एकादश को ध्रुव रूपा॥ यह अध्या जानिय मुनि भूपा
यह अध्या सुनतहिं निरधारा। समाधान है रुद्र सुग्यारा।
कल्प वृक्ष सम याहि सुभाऊ। इच्छित फलद बिमुखन काऊ

दो० अनुष्ठान करि रुद्र को मृत्युंजय जपि जान॥
ग्रह दुख पीड़ पिशाच रुज नहिं बाधहिं परमान। ३३।

जो नमानि है इहँ विश्वासा॥ होइ है तासु आयु को नासा॥
शिव चरित्र कह निंदे जोई। तासन परस कबहुं जनि होई।
बाँझ भई तेहि व्याई माता। तेहि संगति नहिं करिये ताता
तासों कबहुं बात नहिं कीजे। किय अघ है अति पुण्य सु लीजे
तेहि को अपन सदन नहिं लाइय। अपनहु तासु धाम नहिं जाइय
मन क्रम बचन ताहि को त्यागिय। अति हिंसक बरु नहिं अनुरागिय

सो मानहु प्रत्यक्ष विषखाई। जो जड़ तेहि संग बैठै जाई॥
निश्चय मृत्यु पहुंचिगै ताही। सद्य मरिहि शठ संशय नाही

छन्द

अपि मरिहि जानि सुप्रीति सुचि शिव लीला सुतहिं सेइये॥
जो न होय तो यह अध्याय कहँ बाँचिये चित देइये ॥ ॥
अध्यानुष्ठान नित रुद्र किय पुण्य है सत जानिये ॥ ॥
तेहि धाम बसिहि सदा ब्रह्मानंद अलिक न मानिये॥

सो० उमउर जलज सुभृंग शिव स्वामी श्रीधर सुखद॥
है गज राज अपंग दया तिरछी आश्रित ॥

॥ इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा भाषान्तर भाषा गजराज कृते मधुर एकादशो ऽध्यायः ॥ ११॥

रुद्र ब्राह्मण अपने बुरे कर्मों से मृतक होपिशाच जन्म लेना और दुख भोगना और उस ब्राह्मणकी स्त्री का शिवपूजाके फलसे रुद्र और उसकी स्त्री विमला का शिव लोक को जाना ॥



द्वादश अध्याय॥

दो० भस्मासुर बध विदुर द्विज यह अध्याहि कहंत॥

सुनिये श्रोता चरित सब करिजो गिरिजा कंत॥१॥
चारों आश्रम बरणहुं चारी। शिशु युव वृद्ध स्त्रीव पुंनारी।
शिव कीर्तन सप्रेम सब ही को। करन चाहिये दै चित नीको॥
जेहि मन लगन भजन शिवबीचा। तेहि जानियनीचहुंतें नीचा
भूषण बसन तासु सब कैसे॥ किय शृंगार मृतक तन जैसे॥
भोजन करब अन्न किमितासू। मानहुं चरहिं पशू गण घासू।
वाके दोउ दृग कैसे जाना॥ केकि पंख के नयन समाना
सर्प भवन सम तेहि श्रुति छेदा। कर पद तरु शाखा नहिं भेदा
उर सिर अंसनि तुमरितन मांझा। जननी ताहि जनमि भइ बांझा
दो० चहि अहि हुसबकि अनल जरिकै बूडै दधि माहि॥
जो न भाव शिव भजन जड़ वृथा जियब जगताहि॥२॥
श्रवण धरिय शिव कीरति कैसे। गहे पिपीलक गुड़ कहुं जैसे
धरतें शीश होइ चह न्यारे॥ पर निज मुख वह कबहुं न टारे
जिमि कोउ केयक लोल कुमारा। बहु दिन के बिछुरे निरधारा॥
खबरि यकायक आगत पावैं। जननि जनक सुनि आतुर धावैं
कामिहि कामिनि मुख की बानी। लगै पियारि सुधा रस सानी
तैसेहिं श्रद्धा भक्ति सप्रेमा॥ शिव कीर्तन सुनिये दृढ़ नेमा
कोउ तिय कर पति गये विदेशा। एकस मास तेहि आव संदेशा
सो पतिव्रता हरषि उठि धावै। खबर सुनन हित तिमि चित लावै
दो० दीन पाइ धन लेहि सुख जिमि अंधहिं मिलि नैन।
अधिक पियासे ठंढ़ जल पाय होइ हिय चैन॥३॥
तैसहिं सुख करि कथा पुराना। सुनन धाइये तजि मद माना॥
चिंता निंद्रा करि सब दूरी॥ बैठि सुनिय सादर मति भूरी॥
वक्ता पंडित जो गुण खानी॥ नमिय ताहि सम गुरु जिय जानी
वाको जानि शंभु के रूपा॥ पूजिय आदर युत सुनि भूपा॥

सुरभी थन जिमि पय कर धारा। बहु तिमि वक्ता सुरव उच्चारा
शंकर चरित श्रमिय रस जानी। कर्ण द्वार सेइय रति मानी।
उत्तम जानिय वक्ता काहीं ।। मति पाखंड न पूछब चाहीं
भेद कुतर्क न हृदय धरीजे ।। वक्ता की निंदा नहिं कीजे ।।
दो० समुझि न पर तेहि पूछिये श्रादर प्रेम समेत ।। ।।
कहे ताहि सत मानिये सहित प्रीति करि चेत। ४।
वक्तहिं छलै निरर्थ श्रसाचू ।। बिद्वै दोषहिं होइ पिशाचू।
वक्ता पौराणिक गुण धामा ।। वह कोउ हिं जनि करै प्रणामा
कथा समापत होइ न पावै । सुनै न गर्वि बिचहिं उठि जावै
सो जड़ भुगति श्रापदा नाना। होइ श्रल्पायु मरिहि निदाना
पापी श्रर खल कुटिल जो श्राही। सुरव्य श्रोत तेहि करब न चाही
ऋष पुष्ट कृत पय सम चरिता। सरुजि श्रघिहि विष समगुण करिता
जो जड़ बैठि कथा के बीचा। करि कुतर्क तें खंडन नीचा ।।
ताके सुनव वृथा सब गयऊ। नर्क के पंथ कमावत भयऊ
दो० दूसरि बात न बकिय कछु रविय कथहि यक चित्त।
बैठब सुनब सु चरित फल तब हीं पावै वित्त। ५।।
भुषण बसन धन वक्तहिं दीजै। श्रति श्रादर युत पूजा कीजै
धन दीन्हे तें निज भंडारा ।।। बाढ़ै बहु जानिय निरधारा ।।
रत्न दिये बहु दूनों श्रारवी । होंय प्रकाशवंत श्रुति सारवी
भूषण दिये प्रतिष्ठा पावै ।। । बहुत भांति श्रोता श्रुति गावै
सोरह बिधि पूजे यहि भांती। तौ प्रसन्न हैं त्रिपुर श्ररातो।
जो पदार्थ श्रर्पै जो प्रारणी ।। कोटि गुणा तेहि दें धनु पारणी।
तेहि दारिद्र न गूसै कदापी। श्रंत स्वपद शिव लेजहिं श्रापी
कथा सुनन के श्रावत बेरी । पगन पगन क्षय हैं श्रघ ढेरी।
सुनियत चरित पाग सिर देई। नहिं तो मुख्य छोर छोरि लेई

दूत नहु जो न करिहि सतजानी। शिव्भु खगत न पावहिं अभिमानी
दो० कथा समाजहिं बैठि जो खवै बीरा पान ॥ ॥
यम गण यांचहिं तेहि बहुत बाणी व्यास प्रमान।६।
कोउ जन निंद्रा टोरन कारन। करै यत्न जेहि होइ निवारन।
गद्गद हृदय अंबे हर जाको ॥ भेदि कथा कहँ निंद्रा ताको।
नीर लगाइ नयन के माहीं। नींद मिटावब बिरथा नाहीं
द्रव्य दृकांत धरै तहँ जैसे ॥ जगै समुरति जगिय इहँ तैसे
जो बहु नींद करै पन गाढ़ा। तो कर जोरि रहै उठि ठाढ़ा॥
कोउ प्रकार तें नींद निवारी। सादर चरित सुनिय चित धारी
वक्ता तें ऊचें आसन पर ॥ बैठिय गर्वि न बचन बेदकर
जो न मान सत करि अनुरागू। सो विष्ठा भक्षिहि होइ कागू।
बैठि बिरासन सुने जो पापी। अर्जुन वृक्ष होहि सो आपी
बैठि चरित महँ पाउँ पुसारी। पग टोरहिं यम मुद्गर मारी।
गुरु गांठ कि डाढ़ी बाँधी ॥ कहे हू पर बैठहिं मति आंधी
तेहि यम दूत बाँधि लै जाई। नरक कुंड महँ डारहिं भाई
दो० होवै अजगर सोइ जो होत कथा के बीच॥
बैठे जो न प्रणाम करि बास वृक्ष है नीच।७।
बक बक अपर कथा में करई। होइ दादुर खल सो टरटर ई।
हर्ष समय तारी न बजावै॥ बहुत कष्ट सो जग महँ पावै।
शिव कीर्तन कर ठहा करई। कूकर जन्म शत लौं अवतरई
कथा समाजहिं कह दुरबानी। गिरगट तन पावै अभिमानी
जो चित कथा सुनन नहिं लावै। सो जड़ शूकर को तन पावै
शिव चरित्र उच्छेदै जो नर ॥ जन्मै सो बक योनि अधमनर
जो दै बक्तहिं आसन खासा। शिव समीप सो पावै बासा।
बसन दिये पट अन्न अपारा। देहिं रीझि कर शंभु उदारा॥

दो० कथा पुराण सु सुने फल पावे भक्ति बिराग ॥ ॥
यहो विषय इतिहास इक कहत सूत अनुराग ॥ ८ ॥

दक्षिण देश रहा यक ग्रामू ॥ अति ही अशुचि वास कल नामू
रहित धर्म बासी गण भारी । जार कर्म रत सब नर नारी ।
तहां धर्म कर तनक न हेरा । कपटि कुचालि बसें सो खेरा
जप तप पूजा पाठ पुराना ॥ जहां कोउ सपने हू नहिं जाना
निगमागम दोउ द्विज को नयना । उभय संत सम्मति श्रुति बयना
श्रुति कि शास्त्र एक कहिं जो जाने । एक आखि तेहि विप्र हि भाने
जेहि कर गति एकहुं में नाहीं । जन्म अंध सो ब्राह्मण आहीं
यहि बिधि वह सब पुर के बासी । रहे अशुचि शुभ कर्म बिनासी

दो० जार पिशुन तस्कर मदपि दुराचारि बट पार ॥
जननि जनक को द्रोहि सब नितहि दोष व्यवहार ॥ ९ ॥

सोइ पुर माहिं बिदुर जेहि नामू । रहा एक ब्राह्मण अध धामू ।
अहो रात रति वेश्या संगा ॥ लोलुप कामि फिरै मन रंगा
बहुला नाम तासु रहि नारी । जारिणि बहू अपावनि भारी
एक दिन एक जार संग बाला । रतति समय तेहि पति तेहि काला
पासि धरेसि भागा सो जारा । तब धरि तिय कह लागा मारा
दुच्छित मुष्टि लात को मारी । मारत में बोली वह नारी ॥
कहि तुम्हें जार भयहु प्रिय मोरी । मह वहि कर्म करौं नित रोरी ।
कहत बिदुर जारत्व करा ई । बहुत द्रव्य तैं जौन बिछाई ॥
सो सब दै तैं मोहि कहँ प्यारी । मैं गणिका हिं लै दौं यहि वारी ।
कहति बाम मैं देउं कहां सो । सुनि पुनि मारन लागु महा सो
पुनि भूषण सब तासु उतारी । घर के सब संपति युत भारी
लेइ समर्पण गणिका हिं कीन्ही । गणिका हुं अपर जार कहँ दीन्ही

दो० करत पाप यहि भांति दोउ बिदुर पाइगे मीच

यमनेहि मारत लेइगें पावत वह दुखनीच। २०।
कुंभीपाक आदि में नाना ।। अति दुख वहजड़ भोगिनिदाना
बिंध्याचलके कंदर जाई ।। । भीम पिशाच केर तन पाई
टोरत अंग क्षुधा तिरषा में ।। पीड़ित बन बिचरत दुरषा में
तन आरक्त नासु सब कैसे । दीरवत चरचे सेंदुर जैसे ।।
बड़े बड़े तरु लेय उपारी ।। बिचरत बन हरिरव करि भारी
कुष्ट फूटि गे सब तेहि अंगा ।। दुख पावै निज कृत शठ बगा
वह बनमें कुश कंटक सारा। कछु न मिलै फल मूल अहारा
निज कृत अघ कर भोगत भोगा। विदुर विप्र सब सहत वियोगा
दो० होइ निशिचर बिचरत विपिन उत हिज सहि दुखभारि
अब तेहि करतिय को चरित सुनिये श्रोता झारि। २१।
बहुला दूते रहित भरतारू। लागि नित करन अभय व्यभिचारू
रहा सकल सुत बहुला काहीं ।। पर तेहि गमन शुक्र केहि आहीं।
महा पर्व शिव रात्री आवा ।। जन यात्रिहिं गोकर्णसिधावा।
पनव निशान अमिति घहरावत। ध्वजा पताका बहु फहरावत
शिव नामावलि बारं बारा । यात्रिन्ह बोलहिं हर्ष अपारा
जो शिव नामहिं सुरवते हेरा। सुनतहिं सब अघ टारहिं डेरा।
सो बहु लहु यात्रिन्ह के संगा। शिशुहिं लेइ चलि प्रेम उमंगा
पुरायवंत गोकर्ण निहारी ।। भै सब शिव पद के अधिकारी
दो० महाबलेश्वर को दरश बहुलहु सब सँग न्हाय।
लेइ तहँ होत पुराण रह बैठि सुनन हरषाय। २२।
कहा कथा मह तुमि निरधारू। की जो नारि कियो व्यभिचारू
यम गण तेहि ताड़त लेजावैं। नत्र फार भग द्वार धसावैं ।।
सुनि घोरा राक्षस सुरव की बानी। बहुला अति मन माहि डेरानी
निज कृत समुझि रवेद अतिपागी। अट्टहास करि रोवन लागी

बहुरि पुरारिक मन सो बाला। सकल अपन कृत परम विशाला
जे जे अघ करि गिरि सम भारी। ते सब कहि मुरवतें उच्चारी॥
अंत काल जब मोहि यमदूता। याचन ताड़न करहिं बहूता।
तब मोहि कौन छुड़ायिहि जाई। अति दुख किमि सैहौं रे माई
दो० तन काँपत मम मारहीं यम मोहि फांसी डारि।
तप्त शस्त्र करिका करैं स्वामी कहहु बिचारि।१३।
असी पत्र बन मोहि बहु भांती। भरमै हैं दैहैं दुख पांती॥
दोउ पग बाँधि टांगि हहिं ऊर्द्धा। नरक कुंड बुड़ वहिं गहि मूर्द्धा
ताम्र भूमि कहँ अतिहि तपाई। तहँ मोहि दै हैं पकरि लोटाई
तिक्षण शस्त्र तें उदर विदरि हैं। तब मम प्राण धीर किमि धरिहैं
तर अति कटु धूम्र धड़ कै हैं। ऊपर बाँधि मोहि कड़ कै हैं॥
गाड़ि भूमि मोहि लक्ष्य बनाई। तकि शर मारिहिं अनन्त पाई
तप्त शूल पर मोहि को डारी। पग पाथर बाँधिहिं अति भारी
घोर नरक महँ लेद्द बुड़े हैं। तहँ से मुहि को कौन छुड़े हैं
दो० अनजल कछु नहिं भावई रोवै बहुल अचैन॥
कहि जाऊं मैं शरण को हि दुखित रहै दिन रैन।१४।
कौन नरक महँ परिहौं जाई। कहि वह द्विज पद धरि अकुलाई
कहि सत गुरु मोहि कोतहिं तारै। हौं तुव शरण न आन अधारू
तब बहुलाहिं मंत्र पंचाक्षर॥ सुरत पुरारिक दीन्हा सादर।
शिव लीलामृत माधुरि आगरि। नित शिव हार सुनै वह नागरि
पुनि बहुला सप्रेम सब गूंथा। गुरु मुख तें सुनि भक्ती पंथा
नवधा भक्ति वेद में आहीं॥ श्रवण भक्ति उत्तम तिन माहीं
सत संग तें निह संग पन आवै। निह संग सहजहिं मोह गँवावै
जब निर्मोह तबहिं तेहि सांचा। संसृति उद्विग मन को रांचा
दो० शुचि भूत बहुला भई तनक न उबरा दोष॥

अति पवित्र होइ नाम शिव जपे सदा निह सोम।१५।
जैसे लोहा मुरच निकस के। झलकि मुकुर सम कीन्हि सिकलके
की परसत पारस हीं सोई ॥। सुंदर हाटक सहज हिं होई॥
जो ईंधन अनल हिं गिरि गयऊ। तो वह सहज अनल मय भयऊ
नीर मिलि सुरसरि महँ जैसे। हैं पावन बहुला भइ तैसे॥
जप कीन्हे अघ सब भगि जाही। ज्ञान तें ध्यान अपर जग नाहीं
श्रवण से मनन सहज हीं आवै। तेज मान ऐसे श्रुति गावै॥
मन नहिं निज ध्यान बिस्तारा। तब परत्यक्ष कार तद कारा।
वह पुनि होइ अदोष शिवरूपा। संशय नाहिं कहा मुनि भूपा।
दो० श्रवण भक्ति अति उत्तम तें बहुला भई अदोष ॥
जीभ जपन लगि नाम शिव नित सब त्यागि भरोस।१६
श्रवणहिं पावन होइ शरीरा। यही जन्म मुक्ति मुनि धीरा॥
तीर्थाटन साधन समुदाई। ।श्रवणहिं सब सर्थक होइ जाई
संत समागम जो नहिं पावै। सो तीर्थाटन हेतु सिधावै॥
साधन योग कछू नहिं लागै। सुनै चरित सादर अनुरागै॥
जप तप यज्ञ योग व्रत पूजा। श्रवण भक्ति सब नाहिन दूजा
नवों भक्ति जेहि को श्रुति गावै। श्रवणहिं तें सहजहिं सब आवै
आश्रम चारों चारों वरना ।। श्रवणहि पावन परम अपरना
संत समागम बहुलहिं सांची। सब ही ते उत्तम करि रांची।
दो० तीरथ मज्जन सेव गुरु पुनि गोकर्ण निवास॥
जटिला जिन धृत बल कला कीन्ही परम हुलास।१७
चरचि भस्म रुद्राक्ष सुधारन। कीन्ही तन सप्रेम कर पारन॥
सब परिजन जन तजि सो बाला। किये गुरु सेवा प्रेम विशाला
करि गोकर्ण लिंग को दरशन। नित तीरथ सफरै मन परसन।
गोकर्ण क्षेत्र को सकल बड़ाई। विति अध्या महँ वरणेउं भाई।

अस्थुल आदि विदेहहिं जारी। बहुला भस्म चरचितन सारी
बहु यश बिहद्द पुरिय शुचि होई। शिव स्वरूप महजहिं भइ सोई
सोइ काल शिव पढे बिमाना। बहुला को लेगें निज थाना।
ऐसे पापिनि को शिव तारी॥ अचरज करहिं लोक त्रय भारी
सो० बहुला शिव पहें जाय कीन्हि बिनय हर तोषेउ।
पुनि गिरिजा को पाय वंदि प्रसन होइ बोलिउम ।१।
कहि इच्छित मांगहु मुनि मांगी। गति अमोघ पति मोरअभागी
पड़े कहाँ धौं बहु दुख पाता॥ तेहि उधारि तें लाहहु माता॥
तब अंतर हित जगा महतारी। लखी ध्यान धरि हृदय बिचारी
सो विंध्याचल में वह पापी। होइ पिशाच बिचरत कृत पापी
कह बहुला सन गिरिजा तबहीं। लै तुंबर गण मैंगा जा अबहीं।
विंध्याचल ते पतिहि लै आऊ। आनि अवण शिव कथा कराऊ
सुनि गई विंध्य तुंबर लै संगा। देखि पिशाचहिं भरमत नंगा
शिव गण बर बस धरि कर बाही। बाँधि दृढ़ सों राक्षस काही
दो० बहुरि मंत्र स्वर मिलाय उतुंबर काढ़ि सुबीन॥
शिव कीर्तन आरंभि मुनि अगजगतीरति हीन ।२०
शिव कीर्त्तन रस राज समाना। तुंबर मान दीन्ह सुजाना॥
विदुर असाध्य ग्रसित रुज रहेऊ। होइ सावध मोहि छोड़ हु कहेऊ
छूटत तुंबर के पग धाई॥ धरा विप्र आतुर लपटाई॥
अस्तुति करत जोरि युग हाथा। धन्य मोहि तुम तोरेहु नाथा
तिय सन कहत धन्य हे दारा। तें मम कीन्हि आजु उद्धारा॥
तुंबर मंत्र पंचाक्षर तेही॥ उप देशेउ वदि शंभु सनेही।
सो मंतर जपतहिं तत काला। पठय विमान मुशंभु दयाला
दिव्य सुदेह विदुर हिज पावा॥ तिय युत बैठि विमान सुहावा
शिव यश गावत अति अनुरागे। जादू दोउ शंकर पग लागे।

मिले राम रस उदकहिं जैसे। शिव रूप हीं मिले दोउ तैसे।
दो० जिमि ह्वी मो पल जलहिं मिल अरु रव मिले अकास।
शिव रूपहिं बहुला विदुर तिमि दोउ मिले हुलास।२१
कर्पुर जोति जोति महँ मिलई। गंगा जाइ सिंधु में हिलई॥
ब्रह्म रूप होइ दोउ तेहि भांती। मिले ब्रह्म रूपहिं मुनि पांती
रुद्राक्ष भस्म शिव मंत्र कथा के। शिव दिक्षाहिं सुप्रेम यथा के
सेवन करि तरिगें बहु प्रानी॥ संरव्या करै कौन जग ज्ञानी।
भस्म तें कहि भस्मासुर देषो। उधरा शंकर द्रोहि विशेषो।
सुनि बोले सौनक मुनि चारी। कहहु सूत किमि सब विस्तारी
शिव पुरान महँ कथा याहि को। है मधु श्रोता सुनिय ताहि को।
एक समय शंभु कैलास में। काल प्रदोष अधिक हुलास में
भस्म लेइ कर आपन कर में। लागे चरचन सब तन भर में।
लगा हाथ महँ तब एक कंकर। काढ़ि नाहि धरि भुँइ पर शंकर
दो० अद्भुत अति ही शिव चरित जन्मा निशिचर घोर।
भस्मासुर धरि नाम तेहि रहा ठाढ़ कर जोर।२२।
कह भस्मासुर हे महदेवा। तुम प्रभु मोहि बतावहु सेवा।
कहत साम्ब मोहि नित यहि बेरी। चिता भस्म लाना कर हेरी
नित्य नवीन विभूति सुथानू। यहि सेवा करि उत्तम जानू॥
शिव आज्ञा इमि होतहिं पापी। भस्मा सुर तोषा अति आपी
यातु धान नित महितल आई। सब हीं वसुधा सोधि सुहाई
जो शिव भक्ति माहिं लय लीना। लिंगार्चन जिन करि चित दीना
करि प्रदोष व्रत शिव निशि शशि दिन। सुनी सदा शंकर कीरति जिन
जब तन छूटै तिनहिं जरावैं॥ सोई भस्म शिव अंग लगावैं
प्रेमी भक्त अभेदी सांचें॥ तिन के मुंड माल शिव राचैं
थान मसान सुचित वैरागू॥ होइ जानि शिव करु अनुरागू

दो० तर्जहिं बिराग मसान तें आवत हीं घर बेरि।।
लोग मसान बसहिं शिव नित जिय महं मोद हेरि।२३

पंच भूत अरु तत्व समेता।। पिंड ब्रह्मांड डारि सब जेता।।
सब तें जाइ बचा रह जोई। स्वात्मानंद भस्म है सोई।।
ब्रह्मानंद सोइ सुख सेता।। चरचैं भस्म सु कृपा निकेता
रूपारूप बिकार छहों बिन। षट बिकार को नाम कहौं गिन
वर्ध जाय अस्ति विपरिणाम। अपछि पंच षट निधन बिकारू
रहित बिकार छहों अबिकारी। पार ब्रह्म शाश्वत मद नारी।।
छः गुण पूर विभव भगवानू। सुनिय छहों गुण नाम प्रमानू
यशविज्ञान कीर्त्ति औदारा। श्री वैराग्य छहों गुण सारा।।
पुनि छः चिन्हहिं भूषित शंकर। सुनहु चिन्ह कर नाम मुनीवर
कर्तृ नियंतृ भोक्तृ तीना।। । विभु सर्वज्ञ साखि छः गीना

दो० मंडित ये चिन्हन्हनि शिव पूरण ब्रह्मानंद।।
माया प्रेरक तीन गुण रहित कृपा सुखकंद।२४।

सगुण भक्त रक्षन के हेतू। मैं चैतन घन गोसुत केतू।।
सो प्रभु भस्मासुरहिं सृजाई। पैठे भस्म लावन हित भाई
तेसे चिता भस्म नित लाता। राक्षस अति मद मत में माता
गो द्विज उत्तम नर को देषी। कहे इन्हैं संहारु विशेषी।।
इन सब हिन को मैं संहारी। करौं असुर लै राज सुखारी।।
पुनि इंदारक गण को मारी। जीतौं युत विरंचि पाकारी।।
बहुरि पिनाक पाणि श्री कंता। इन दोउ हिं संहारौं अंता।
तीनों लोक जीति कर पाछे। महीं अमर पति होयों आछे

सो० धरि मन ग्रंथि सुरारि गे कैलाशहिं कपटि वह।।
कह सुनु हे मदनारि मिलै भस्म नहिं कतहुं जग।३।

चार लक्ष नर योनी बरणा। सवा लक्ष नित्यज है मरणा।।

इन सब हिनहिं शोधि मैं दीन्हा। परन भस्म शुचि मिलै गिरीशा
कहत दनुज छल भक्ति दिखाई। नित्य नेम मम टरत गुसाईं॥
चिता भस्म तोहि अर्पण कारण। एक सुगम मति है अहि धारण
कहि हे हर त्रिपुरा मद गंजन। पंच बदन चैरागउम रंजन॥
शशि भूषण यक कहउं उपाऊ। सो सुनि मम पर करहु पसाऊ।
जेहि सिरपर कर धरुं मैं धुरजटि। होइ भस्म ध्रुव फेर न सो झटि
यहि बरदान दीजिये मोही। तो भल सुलभ काज सिधि होही
दो० मम प्रण रखु कहि अतनि प्रभु असुर पराजिमि दंड॥
सुनि भोला वर देन हित तत्पर भए अखंड। २५॥
लखि बोली गिरिराज कुमारी। यह निशि चर कपटी दुर चारी
यह खल बर पावत हीं स्वामी। करिहि भस्म महि सब दुख गामी
महा कुशब्द बकन मन जासू। सो पावैं कहुं फागुन मासू॥
यक तो परम चोर बट पारा॥ तिहि पर आज्ञा दीन्हि भुवारा
प्रथमहि जार कर्म महं लीना। तेहि प्रभुता तिय राजहिं दीना
की मद पी को छिंदी आरण। दै मिरादु हे सुर सरि धारण।
कपि हीं सुरा प्याद् निर धारै। तेहि पर कहुं बीछी पुनि मारै
यतने हू पर कहुं ग्रसै पिसाचू। तब का बात पूछिये सांचू॥
दो० सोइ करि तासि असुर हीं दीजिय जनि बर दान।
नंदि भद्र बिरराज बदन षट सुरव कहाहिं प्रमान। हे
कह अति भोला उर नहिं धड़का। हे भस्मा सुर हमरे लड़का।
बर निश्चय चाहिय यहि दीना। आज्ञा भंग कबहुं करि हीना
कह शिव हे सुत तोहि बरदानू। दियों तथास्तु जानु परमानू
सुनि भस्मा सुर अति अनुरागा। होइ परमानंद नाचन लागा
मृत्यु लोक आवा झट दनुजा। लगा संहारन धरि धरि मनुजा
गो द्विज हरि हर जन सुचि साधू। इन्हें शोधि करि भस्म असाधू

जेहि सिर कर धरतहिं तेहि बेरी। सोजरिपरै भस्म को ढेरी ॥
मुनिगण यूथ यकत्रहिं घेरी। करै भस्म वह सकहिं बेरी ॥
दो० छुप्यन देशहि भस्म करि नृपन्हहुं सेन समेत ॥
छुन न लगै अनरथ बहुत करवह पापनिकेत।२७।
विप्रन्हि कुटुंब समेत पराई। गिरि कंदर महँ रुके डेराई ॥
महा उपद्रव महि सब ठानी। कोउ भय करि निकरैं नहिं प्रानी
अकस्मात जिमि बाज लवा को। करै नाश छुन लगै न वाको ॥
तैसहिं आइ खमारण आसू।। धरि सिर पर कर करै बिनासू।
केसहुं योधा अति रण गाढ़ा। जो संयुग होइ यम कर ठाढ़ा ॥
पर सो भस्मासुर के आगे।। होइ बल हीन पराक्रम त्यागै
जिमि पारवंडी खल बादी सन। नहिं शूरहिं वक्ता पंडित जन ॥
तिमि भस्मासुर आगे कोइ के। चलै न उद्यम करि कै सोइ के ॥
दो० नित संहारन करि दनुज लै पहुंचाइ विभूति ॥
अतिहि नम्र होइ शंभु पहँ प्रभुनजान करतूति।२८।
मृत्युलोक बेगहिं पुनि आवा। ऐसे इच्छा मन महँ लावा ॥
बृंदारक गण इंद्र समेता।। इहां जारि जारौं सब जेता ॥
पुनि जारौं विधि कमला रमना। अंत भस्म करुं मनसिज आमना
उम सुंदरि सब तिय जुड़ वासे। अनुपम लौं तेहि छिनि बुड़ बासे
भै उजार सब हीं संसारा ॥ । प्रजा ऋषिन उर परा खभारा
सब गैं शरण सची नायक के। ग्रसित त्रास अति दुख दायक के
वासव युत पुनि सकल विगोये। जगत पिता पहँ जा दुख रोये।
तब पद्मज बोले सब पाहीं।। चलहु कहब श्रीपति पहँ जाहीं
दो० नाम अधोक्षज जाहि को परे ज्ञान गोतीत।।।
जाइ निकट तिन के कहे भस्मासुर को अनीत।२९।
सब समेत गैं रमा निवासा ॥ । वर्त्तमान बोलत शिव पासा॥

भस्मासुर जग सब हीं जारी ॥ ।भस्म कीन्हि सुनु हे कामारी।।
हम बांचे सब कछु सल कल में। हम कहुं भस्म करिहि वह पल में
हमे नीक तुम रहुं परिरामा।। दीखत नहिं सुनु हे अरिकामा।
करहु यतन अब पार्वती को ।। लगे हसन हर सुनि सब नीको॥
कह शिव भस्मासुर को मरणा। आवाढ़िग अब सुनु श्री रमणा
जाहु सकल घर ऐसे जानिके । हमि बोलत हीं पति मुड़ानिके
सोइ दनुज तब आकस्माता। भस्मासुर आवा दुख दाता॥

दो० नरकट सम सिर डुलावत देखि दनुज सब ओर
आय उरहना देन मम कहुं जैहो रे चोर ॥ ३० ॥

जो जो आयहु तिनकि निपाता।। करहुं भस्म मैं काल प्रभाता ॥
रामदेव सुनि अति दुख कीनी। बोले खलहिं कोप में भीनी ॥
अरे असुर तैं खल शठ बंगा।। महि संहार कियसि मदरंगा।।
मैं बर दीन्ह तोहि भल जानी।। भल कृत करेसि अंत रखिकानी
सुनि बोला खल कोपित भलना। दे जो गड़ा मोहि तें निज लखना।
तोरहुं सिरकर धरि मैं नाहित। अबहिं भस्म करि करिहौं चाहित
पैरि उमा घर महुं भय भीता ।। दुष्ट हलावत शीस अहीता।।
अब हीं शिव सिर धरिकर जारी। तोहि लेजहुं सुनु नृहिन कुमारी।

दो० भस्मासुर शिव शीस पर धरो हाथ अनुमानि॥
धावा जड़ सुर गरा भगे दूत उत धीर बिहानि।३१।

जो दुख हरता भक्त धारा ॥ । माया काहिं सृजावन हारा ॥
भागे सो प्रभु करता कारणा।। लीन्हे मारण घोर कुआरणा ॥
पाछे लगा कहत खल गाढ़ा । जामि कहां जो गड़ा रहु ठाढ़ा ॥
आज रारव करि तुवढिग येहा ।। भस्म लगे हौं सब निज देहा ॥
निगमागम जेहि पार न पावै । गुणातीत माया हि न चावै ॥
तेहि भस्मासुर मंद गँवारा।। आपन बल तें धरो विचारा ।।

सनकादिक के ध्यान न आवैं। ब्रह्मा आदिक आर्चन लावैं
तेहि भस्मासुर अपन पराक्रम। करि धरिहौं सोचत अधमाधम।
पुलकत जड़ अब पकरेउं सांचैं। धर न जाहिं युग अंगुल बाँचैं॥
ऐसे कोटिहुं बरषैं धावत। बीति बाम सुर हाथ न आवत
दो० घट बढ़ बोलि प्रशंसि पुनि फुसलावत दनुजेश।
मिलैं न पारै हांक तब परस पड़ैं नमहेश॥ ३२॥
निगमागम कवि कोविद जो भर। नेति नेति रटि होइ गैं सो जर॥
सकल कला विद्या महं पूरे। दुरा राध्य शिव ताहुं से दूरे॥
भजै स प्रीति जो शुद्ध सयाने। उमानाथ तेहि हाथ बिकाने
शिवा समेत तासु घर सांची। वास करहिं नित प्रेमहिं रांची॥
तप धन विद्या कर अभिमाना। धरन चहै सो मूरख निधाना॥
कोटिहुं कल्प उक्त व्यवहारा। करि संस्तुति होइ पाहिं न पारा
यहि विधि भस्मासुर हंकारी। धावत सपड़हिं नहिं कामारी।
इत गिरि तनया निज भ्राता को। विनवति श्रीपति जन त्राता को
कमलज तात कमल दृग चमनं। कमल नाभि हे सुरमद दमनं।
कमल धृत्ति कमला लंकारं। कमल शयनि कमला भरतारं
जग बंदिय रक्षक जग व्यापिं। जग दोधारी हे प्रभु आपिं॥
जन भव मोचक पय धि शयनं। धाउ जनार्दन करुणा अयनं
दो० इमि करुणा रव सुनत हरि मनरंजन शिव कोरि
दनुजहिं मोहिनि रूप धरि आगे लीन्हे घेरि। ३३।
धरि बट रूप दूरतें शंकर॥ । लागे देखन कौतुक सुन्दर॥
मोहिनि रूप लखत हीं दानो। होइ वश खल तन दशा भुलानो
सुर सब देखहिं चढ़े बिमाना। कहहिं रूप कहँ के भगवाना॥
अस हुं तिय को सुंदर नाई॥ पद अंगुठहिं वारिय भाई॥
लगी नचन मोहिनि बहु भांती। लखि तन्मय भै सुर आराती।

कह ललना हे तोरी आगें ।। कमला उमा निछावरि लागें।
तुव मुख देखत मोहि को जानू। लगत वारि डारौं निज प्रानू॥
नयन कटाक्ष बारा करि तोरा। मनहुं कुरंग विंधेउ मन मोरा॥
तव पद कमल परत है जहवां। लोटै ऋतुप सुगंध हित तहवां।
तैं फैलाइ जाल शृंगारा ॥ । मम मन मफरिहि बाँधेसि दारा।
दो० जय माला अब डारु मोहि हौं नित तव मैं दास॥
मंद हास करि बोले मुनि नटि सिंधुजा निवास।३४।
कह हरि तोहि बरि हौं तन काला। पर वह दीरवत बट जो बिशाला
तहँ दैवत मम है आराधन ।। यक व्रत बदे अहिंउं सुचि साधन
ब्याह पूर्व मैं पति के साथा ।। करि हौं नृत तुव आगे नाथा।
जहँ जहँ मैं कर धरि हौं गावत। तहँ तहँ तुमहु धरेहु हरषावत
मैं जब भाव देखवे हौं जैसे ॥। तुमहु देखवे हो करि तब तैसे
तहँ तन कहुं जो परि है भेदा। क्षोमि तुमहि पर मानिहिं खेदा
है मम दुष्ट तिस्ना अति भारी। क्षण में सक ब्रह्मांडहिं जारी॥
कह रवल हो अवश्य चित धरिहौं। जैसि कहसि तैसहिं मैं करि हौं
दो० असुरहिं लै गइ मोहिनी बट तर दुमि भुलवाइ।
नमि न्यगोधहिं नृत्य पुनि आरंभी हरषाइ।३५॥
सब अप्सरा आदि दै रंभा ।। देखि नृत्य जिय करहिं अचंभा
सुनत गान किन्नर गंधर्वा । गये भूल जधुन युत सर्वा ॥
होइ मधुकर सुरगरा चहुं पासा। विंधे सकल तेहि लेन सुवासा
अलरिवत गुंजारहिं बन माहीं। पर को कामिनि चीन्हहिं नाहीं।
गान मधुर स्वर सुनितेहि काना। जगपितु होइ कुरंग भुलाना॥
मोहिनि रूप खरारिहिं हेरी।। खसि मद गयउ मदारिहु केरी।
अष्ट भाग सो मद कर भयऊ। भैरव आठ तहां निर मयऊ॥
प्रथम असित दूसर अंगारा। चंड क्रोध तीसर विस्तारा॥

चौथे भैरव उन्मत्त जानो। पंच कपाल भिषण षट मानो
सप्त संहार अष्ट सु सिद्धा ॥ ये आठौं शिव अंश प्रसिद्धा॥
अस मोहिनी रूप छबि बानी। देवन छबि भूले मुनि ज्ञानी
तजि अहिपति महि बाहिर आये। ताकर गान सुनन हित भाये।
धरे हाथ मोहिनि जहं निजतन। निशिचर हूं तहं धरे मुदित मन
यहि बिधि निज सिर पर निज हाथा। धरि मोहिनी सुनहु मुनिनाथा
दो० असुरहूं निज सिर कर धरा धरतहिं भै जरि छार ।
मोहिनि रूप तजि चतुर भुज लुरत भये करतार।३६।
उमानाथ हूं तजि बट रूपा। अगट भये धरि अपन सरूपा
हरि हर भये एक आनन्दा। कुसुमावलि बरषहिं सुर बृन्दा
भस्मासुर कर वध त्रैलोका। सुने सकल श्रुति भये विशोका
पुनि हरि हर करसों कर जोरे। आये मिलि आनंद न थोरे॥
कैलाशहिं लखि आदि भवानी। शुभ सिंहासन दीउ हिं बिठानी
करि पूजा हिमनग कौमारी। आदर अस्तुति शुभ अनुसारी
हे हरि हर दोउ रूप समाना॥ क्रिय विपरीत चलन अरु ज्ञाना
पीतांबर बाघांबर धारिं॥ अघ बक गंजन अंध मदारिं।
सुर आराती हे त्रिपुरारिं॥ धेनु लोक शिव पुरी बिहारिं
मकराकृत कुंडल श्रुति छाजिं। अहि भूषण दोउ कर्ण विराजिं
प्रिय श्री खंड सुलेप विभूतिं। नील ग्रीवतन श्याम सुजोतिं
चक्र सुदर्शन सोह त्रिशूलं॥ मुरली शृंगी रव सुख मूलं॥
पयदधि शयन धेनु पय गातं। रधिजा धव गिरितन यात्रातं
पन्नग भूषण पन्नग शयनं। गरुड़ नंदि गामी सुख अयनं
मुंडमाल बनमाल सुधारिं। पालन नाशन आज़ग कारिं
कैलाश बासि बैकुंठनि वासिं। करहु कृपा प्रभु आनंद रासिं
दोउ प्रभु रीति उलटि श्रुति गावे। जिन इच्छा नित शांति लगावै

उमा हृदय अति भै सुख गोदा। जनु नहाइ सिंह स्थहिं गोदा

छन्द

सिंहस्थ पर्वहिं गौतमी महँ आइ मिलु जिमि सुरसरी॥
सुख रासि तिमि कैलाश महँ प्रभु मिले इक ढिग हर हरी॥
यह ग्रंथ गोदा अर्थ जल सम भाव सेव सु मज्जनं॥ ॥ ॥
सिंहस्थ सुघटित घटी जनु है भगहिं अघ संग सज्जनं॥ २॥

दो० तेहि सुख महँ सतत मगन श्रीधर परमानंद॥
होइ वरणहिं नित शिव चरित जो आनंद कोकंद। ३७
तिनकि कृपा लव लेश तें अधम बुद्धि गज राज॥
करि भाषा बरणन कियो क्षमिये चतुर समाज। ३८।

॥ इतिश्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा भाषान्तर भाषा गज राज कृते मधुर द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

वीरभद्र वीरषट मुख जन्म विवाह वीरतारक वध कथा॥



त्रयोदश अध्याय

दो० वीरभद्र षट मुख जनम कथा उमा को ब्याह।

त्रिपुरा तारक बध कथा सुनहु सकल करि चाह।१।
हे स्वानंद प्रभु सत गुरु उम उरजलद सु भृंग ॥
गणपति जनक नमानि तोहि विस्ति अतिअनंग।२
भस्मासुर बध कर इतिहासा। सुनि बोले शौनक मुद्दुलासा
कहहु सूत औरहू शिव लीला। जो सुख दानि मोक्ष दा शीला
कहहिं सूत असकंद पुराना। शौनक सुनि शिव चरित बखाना
एक चरित त्रेता युग पावन।। कीन्हि सुनहु जो कामन शावन
दक्ष प्रजापति सुन्दर यागा।। आरंभन कीन्हा अनुरागा ॥
तजि यक निंदि त्रिलोचन काहीं। सब सुर बोलि यज्ञ के माहीं॥
तीन लोकपति करुणा सिंधो। आरत हरण दीन जन बंधो।
निंदसि ताहि दक्ष मति मंदा। जो पर ब्रह्म सच्चिदा नंदा॥
दो० जगदात्मा सदा शिवहिं विधि कमला को कंत।
बंदहिं बासव नेति श्रुति रति नहिं पावहिं अंत।३।
सो शिव महिमा दक्ष सुजानी। अहो गति निंदे अभिमानी।
कह नर सिर जो अपावन आही। तेहि गर पहिरे माल सदाही।
ओढ़े गज हरि चर्म सुहाई। सुर गंधी तें मन न घिनाई॥
मांगे भीख लेइ नर माथा। नित श्मशान बसि एक न साथा
चिता भस्म सब देह लगाये। रहत सदा तन अहि लपटाये॥
किये स्वीकार भ्रष्ट को यूहा।। रहे संग महँ भूत समूहा॥
अमिरण अशुची प्रिय सब जाको। को जग भला कहत है ताको॥
जेहि जो देन योग है नाही ॥। तेहि देवे सो सर्व सराही ॥
दो० बहि को को सुर कहे नित क्रोधित रहे विशोक।
तीसर दृग तेहि अनल सम जनु जारिहि त्रैलोक।४
बहे जटा तें जेहि नित पानी॥ नचे स्वकिरतन महँ तजि कानी
सरिव भक्तहिं दे सर्वस खोई। गृह सम्पति बैठे कर धोई॥

उमाहृदय अति भै सुख गोदा। जनु नहाइ सिंहस्थहिं गोदा

छन्द

सिंहस्थ पर्वहिं गोतमी महँ आइ मिलु जिमि सुरसरी॥
सुख रासि तिमि कैलाश महँ प्रभु मिले इक ढिग हर हरी॥
यह ग्रंथ गोदा अर्थ जल सम भाव सेव सुमज्जनं॥ ॥ ॥
सिंहस्थ सुघटित घटी जल है भगहिं अघ संग सज्जनं॥ १॥

दो० तेहि सुख महँ सतत मगन श्रीधर परमानंद॥
होइ वरणहिं नित शिव चरित जो आनंद को कंद। ३७
तिन कि कृपा लव लेश तें अधम बुद्धि गजराज॥
करि भाषा बरणन कियो क्षमिये चतुर समाज। ३८।

॥ इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा भाषान्तर भाषा गजराज कृते मधुर द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

वीरभद्र वीरषट मुख जन्म विधुरा वीरतारक वध कथा॥



त्रयोदश अध्याय

दो० वीर भद्र षट मुख जनम कथा उमा को ब्याह।

त्रिपुरा तारक बध कथा सुनहु सकल करि चाह।१।
हे स्वानंद प्रभु सत गुरु उम उरजलद सु भृंग ॥
गणपति जनक न मानि तोहि विधि अति अनंग।२
भस्मासुर बध कर इतिहासा। सुनि बोले शौनक मुद्दुलासा
कहहु सूत शौरहू शिव लीला। जो सुख खानि मोक्ष दा शीला
कहहिं सूत असकंद पुराना। शौनक सुनु शिव चरित बखाना
एक चरित त्रेता युग पावन।। कीन्हि सुनहु जो कामन शावन
दक्ष प्रजापति सुन्दर यागा।। आरंभन कीन्हा अनुरागा ॥
तजि यक निंदि त्रिलोचन काहीं। सब सुर बोलि यज्ञ के माहीं॥
तीन लोकपति करुणा सिंधो। आरत हरण दीन जन बंधो।
निंदसि ताहि दक्ष मति मंदा। जो पर ब्रह्म सच्चिदानंदा॥
दो० जगदातमा सदा शिवहिं विधि कमला को कंत।
बंदहिं बासव नेति श्रुति रति नहिं पावहिं अंत।३।
सो शिव महिमा दक्ष सुजानी। अहो गति निंदे अभिमानी।
कह नर सिर जो अपावन आही। तेहि गर पहिरे माल सदाही।
ओढ़े गज हरि चर्म सुहाई। दुर गंधी तें मन न घिनाई ॥
मांगे भीख लेइ नर माथा। नित शव थल बसि एक न साथा
चिता भस्म सब देह लगाये। रहत सदा तन अहि लपटाये॥
किये स्वीकार भ्रष्ट को यूहा।। रहे संग महँ भूत समूहा॥
अमिरण अशुची प्रिय सब जाको। को जग भला कहत है ताको॥
जेहि जो देन योग है नाही ।। तेहि देवे सो सर्व सराही ॥
दो० बहि को को सुर कहे नित क्रोधित रहे विशोक।
तीसर दृग तेहि अनल सम जनु जारिहि त्रैलोक।४
बहे जटा तें जेहि नित पानी।। नचे स्वकिरतन महँ तजि कानी
सरिव भक्तहिं दे सर्वस खोई। गृह सम्पति बैठे कर धोई ॥

दनुजहिं दै अखंड वरदानू। मत वायसि चिचरहिं अभिमानू
बड़ छोट कर नाहिं बिचारा ।। अति अशंक वरदा असवारा।
अस शिव निंदन हित इकबारा। दक्ष गर्वि कैलाश सिधारा ।।
जवन आदेर गिरिजा मरता ।। तब अति दुरव पावा सुत करता
तेहि तें दक्ष निंदि करि यागू ।। ना पूजा न दीन्हि शिव भागू ।।
आयुष पूरि मृत्यु निय राना ।। तातें ऐसो उपजा ज्ञाना ।।

दो० शंभु भजन नहिं भाव तेहि तापर विघ्न अपार ।।
परै यज्ञ जप दान तप व्यर्थ सबहिं उपचार ।५।

शिव दयाल कह जो जड़ निंदू। अति निर्दय दुर्जन खल बिन्दू
सो चंडाल अहै श्रुति कहई ।। तासों परस होन नहिं चहई ।।
दक्ष सुता दाक्षायणि सती ।। बामदेव प्रिय पंथ जो हती
कहि मम पिता करत है यागा। मुहि न बुलाव भेर कस लागा
आयुष देहु मोहि चैलोचन ।जाउं पिता यज्ञहिं मद मोचन
सकल सुता निज जनक हमारा। बोलि पठायउ मोहि बिसारा
भूल्यो मोहि को कारण काहा। मो में तहँ लौं जावौं नाहा ।।
मुनि बोले शशि भूषण बैना। गिरि तनया सन प्रभु सुख शयना

दो० सुनु मृग दृगि लावण्य सरि भगनी श्रीपति केरि।
जाउ कदा जनि पितु सदन जो तें भल निज हेरि। ६।

पिता तोर निंदक जड़ क्रूरा। मम द्वेषी दुर्जन खल सूरा ।।
तैं जानहिं तत काल भवानी। अप मानिहि शुभ मुखि दुख मानी
जाके हृदय प्रीति नहिं होई। तेहि कर मुख कल्यहुं नहिं जोई
बोलत रहे उमा सो शंकर ।। सुरऋषि आवत भैं तेहि अवसर
बोले नारद पितु के धामा ।। जाइय बिनु बोलेहु सदा मा ।।
मुनि नंदी पर बैठि भवानी। चली पिता घर मन हरषानी।
संदु संग निज भूतन्हि माला। पहुंची दक्ष सदन तत काला ।।

शोभित मंडप देखि बिशाला। जेहि तर बैठे सुर मुनि माला।
दो० निज निज पूजा थान महँ उचित सुरन्ह सनमानि
रुचि अस्थापे मुनि वरन्ह केवल शंभु बिहानि।७।
जिमि उडुगरा बिच द्विज नृप लाजे। सकल मध्य तिमि दक्ष बिराजे
शिव द्रोही निन्दक खल बाहुत। अग्नि कुंड महँ डारत आहुत॥
सती निकट आई तेहि बेरी। लखि सुर गरा भें अनंद घनेरी
परी धूरि दृग दक्षप केरा। सुता ओर भोरहुं नहिं हेरा॥
गो सुत पर से उतरि भवानी। लखत सबन्हि पितु दिग नियरानी
लखि तन याहि दक्ष मुँह मोरा। नयन मंद करि भौंह मरोरा॥
जग दंबा पूरिति गुरा ढेरी। सोचति पितु आनन कहं हेरी॥
भरी धूरि पितु के दृग सांची। तेहि हित लखत न मम तन रांची
दो० देखि सती सब भगनि कर होत बहुत सन्मान॥
पर यहि तन जननिहुँ न ही देखति पति अपमान।८
कहत दक्ष निज मन अनुमाना। इहां कौन धौं येहि बोलाना॥
सुता जनमात मोर दृग आगें। आवें जनि मोहिं नीक न लागें
प्रणव रूपिरागी आदिसुमाया। सब ब्रह्मांड जननि श्रुति गाया
लखि ताकर अपमान सकाने। कहहिं बिबुध मन माहिं डराने।
दक्ष चूक कीन्हा अति भारी। चह विधि अंड छनहिं में जारी।
देखि सती अपमान अपारा। अति क्रोधित बोली निरधारा।
सब फल पैहो कहि शिव भामिनि। कूदि अनल कुंड महँ निमि दामिनि
बसुधा डगमगि कांपे शैलू। हाहकार करि करहिं अंदेशू
दो० हरि हर पद हृदं डगमगे भै खभार ब्रह्मंड॥
कहत सृष्टि अब बूडि ध्रुवरवि सुतहिय डरि चंड।९
सती संग जो गरा समुदाई। गये रहे बेगहिं उन धाई॥
जाइ पुकारे पशुपति पाहीं। जस जस भये दक्ष मख माहीं

क्षोभे तुरत उमापति आधिका। प्रलय काल केजनु जग बाधिका
करि हरिरव अद्भुत भगवंता। कोपि न पटकत जटा तुरंता।
बीरभद्र भै प्रगट जटा सें।। प्रलय आग्नि कर सोह छटासें
होइ यक प्रगटे द्वादश भानू। मानहु रुद्र कि प्रलय समानू
तासु तेज महँ रवि रजनीआ। बूड़े थाह न पाहिं मुनीआ
गरजत नभ हरिरव बहु बारा।। गिरत लूक टूटत बहु तारा

छन्द

तारे अपारे लागे टूटन हांक सब ही जग परा ।।
बूड़ो मही सब ही सही सब भुवन चौदह रव भरा ।।
जहं तहं लगी महि फटन बोलहिं दिनहि उल्लु भयावने।
दक्ष बल अपक्षि बरषहिं नित धाम रक्त अपावने।। १ ।।

दो० एक बीस दल पद्म लै बीर भद्र दूत कोपि ।।
चलाशिवहिं नमि करिन्ह लखि हरि किशोर जिमि चोपि १०
दौरे पाछे शंभु हू साठ कोटि गण संग।।
दक्ष यज्ञ महँ शंभु सुत खेलत उहँ रण रंग।११

छन्द

गज यूथ कहँ जिमि हेरि दौरत सुवन हरि केरि ।।
कै निरखि कद्रुज माल। झपटै गरुड़ जिमि काल।२।
तिमि बीर भद्र सुजान। झपटा लगे सुर प्रान ।।
तजि आहुती कहँ बेगि। भागे पुरोहित नेगि।३।।
भै विजग हाहा कार। का कीन्ह यह करतार।।
डगमगत अंड कटाह। लगे कँपन सुर सुर नाह।४।
भागे विकल सब कोइ। मल मूत धोतिहिं होइ।
होइ कुक्कुट निशि राज। लट पटत व्याकुल भाज ५
भागी अनल्ल होइ केकि धवराइ एका संकि ।।

बक होइ यमुना भ्रातु। भागाति कंपित गातु॥६।
होइ काग नैऋत चात। धरि बरुण शशि को गात
कापोत भेष तमारि॥। धरि भगत भैं ये झारि७।
शचिनाथ होकर कीर। भजि चला तजि सबधीर
होइ खगन्हि तन भयभूत। नवग्रह भगे इत कृत८।

छन्द

उत भगे सब इत दक्ष पर इमि बीर भद्र प्रचारिके॥
झपटे नदित जिमि गिरति गिरिपर मेघ शब्द उचारिके
षट भुजा तेज प्रचंड जिनके शस्त्र शस्त्रहु हाथ में।
असि चर्म डमरू त्रि शूल धनु शर विकट दल लिय साथमें९
सब दशन पूषको टोरिडारे फोरि दृग भग देव को।
सब डाढ़ि मूछा बीर भद्र सुउखारि तब ऋत्वेव को।
पग छीनि काहू तोरि बाहू पटके बहुहिं हुंकारिके।
व्याकुल भजे सब तन तजे बहु भद्र बिरहिं निहारिके।१०

दो० आये दल बहु संग लै पाछे शशि अव तंस।
कोपि मर्दि सब दक्ष दल कीन्हे मख विध्वंस।१२।

लखतहिं बामदेव कहँ दक्षा। अति घबराना जानि अपक्षा।
सुधा पानि पति अरु जग कर्ता। आगेहिं भगे देखि संहर्ता॥
बीर भद्र कहरे शठ बंगा॥। तैं निंदे किमि शत्रु अनंगा॥
देउँ दक्ष तोहि अब हीं शिक्षा। ले शिव दूषन को फल दिक्षा
बीर भद्र क्रोधा तिहि भरगा। तिव्र नदित सम काढ़ी खरगा
धरतें भिन्न दक्ष शिर कीना। हा हा कार भयो जग तीना॥
नचत रुंड शिर नभ पथ चलेऊ। बीर भद्र धरि पग तर मलेऊ
अमर सकल पुनि शंकर पासा। आये मन अति होइ उदासा।
जलज तनय सब सुरन समेतहिं। कर जोरे बिनवहिं विश्व केतुहिं।

कह बिधि हे नंदीश्वर गामी। देहु जियाय दक्ष कहुं स्वामी॥
दो० आसु तोष कहि दक्ष शिर देहुं रुंड महं जोरि॥
पर न देहु सिर भद्र विर डारे मरदी फोरि। १३।
शिव द्वेषन महं जेहि मन भाया। ताकर ऐसहिं करिहुं विनाशा॥
जो जड़ स्नेहिन शिव करनामा। कटि हौं ताकर बारगी चामा॥
जो न करिहि शिव अरचन सेवा। कर पद ताकर छिनि हौं देवा॥
देखिहि जो न शंभु अस्थाना। नयन नासु में फोरिहुं जाना॥
शंभु छोट अरु विषणु बड़ेरे। हरी छोट वड़ शंकर हेरे॥
ऐसे कहहिं जो दुरजन पापी। तेहि सं हरि हौं में कर आपी॥
दे हौं मैं न दक्ष कर शीशा। का करि हैं मम विधि हरि ईशा।
दक्ष लोथ महं मेष को माथा। स्ना जोरे नव सुतु मुनि नाथा॥
पुनि करि ताहि सजीव महेशा। तीर्थाटन को गे ऋषि येशा॥
द्वादश बरष स्वतंत्र कृपाला। बिचरे उपवन विपिन बिशाला॥
दो० महा मशान आनंद वन काशी पुरि विख्यात॥
सहस बरष कि समाधि नहं बैठे लाइ द्रुषनात १४
मुरदा एक जरे नितहि प्रति दिन में परमान॥
विदित ताहि करि काशि को नाम महा शमशान १५
सती चरित सुनिये अब भाई। जन्मि हिमाचल घर सो आई॥
शिव आराधन करै सदा हीं। महं अति प्रीति नुहिन गिरिमाहीं
गिरिपति को तिय मेना रानी। सुत मैनाक गिरी जेहि जानी॥
कन्या पार्वती जग देवा॥ ।जनमि आदि माया अवलंबा।
अंड कटाह अखिल जग माहीं। जेहि कर पटतर दूसर नाहीं॥
ब्रह्मा इन्द्र इनहुं मन हारे। पटतर हित बनाइ तिय न्यारे॥
जेहि स्वरूप मुनि दरशन हेतू। आवहिं सुर भूसुर मिलि जेतू॥
जाकर रूप वरदान करन में। मानहिं हार सहस मुख मन में॥

दो० शोभा अरहुं तीय कर है पद नख पर वारि॥
दृग पर रंजन जलज मुख करिय निछावर झारि।१६।

नैना करण मुद्ध मुख छाजे॥ देखि इन्दु नख पूरण लाजे॥
जेहि कटि लखि केहरि अरि सरमाई। लुका विपिन नहिं बदन बताई॥
अति सुकुमारि श्याम घन बरना। इन्द्र नील जनु हरी अपरना॥
दंत छटा जहं गिरत मही पर। होइ महामणि शिला तहीं पर।
माया आदि जगत जो बंदिनि। निज इच्छा सो भइ गिरिनंदिनि।
अतिहि सक्ति स्वामिनि जग जाना॥ बंदत जाको बेद पुराना॥
कोटिहुं मद रति सुन्दरताई। वारिय पद नख पर मे भाई॥
तन सुगंध बिधि अंडहि फोरी॥ बहै कहै किमि कवि मति भोरी

दो० अति कोमल तन नभ चरण बोलत होइ प्रकाश।
बिधि हरि हरहीं पालि जो गर्भ माहिं नौ मास।१७।

बोलत सहज प्रभा किमि सुथरे। महि पर रत्नराशि जनु बिथुरे॥
पद नख चिन्ह परे जिहिं ठाईं। दीरवत फूल कमल की नाईं।
होइ मधुकर सुगंध के काजा। लोटत चहुंदिग तेहि ऋतुराजा
केवल कनक बेलि हर पद से। उतरी मनहु सोह छवि हद से।
जगदंबा अनुपम छवि रवानी। किमि शोभा मैं कहउं बखानी।
पशुपति को अब सुनिय सुतंत्रा। सहज बरय जब भे तप अंता॥
तब काशी तें नंदि समेता॥ हिमगिरि पर आये तप हेता॥
करन लगे तप मुनि गिरिराई। दरशन को आवा हरषाई॥

दो० बहु बिधि अस्तुति गिरि करी पंथ धाम कीन्ह।
पाछ उमहूं आइ शिव भजन अरंभन कीन्ह।१८।

संग सखी जेहि साठि हजारा। सब पद्मिनी रूप अगारा॥
तिन के युत जगजननि भवानी। सेवन लगीं शिवहिं रतिमानी॥
सुरभी सुवन द्वार में राजें॥ शंभु सदा ध्यानस्थ बिराजें॥

नयन पंचदश लागी तारी ॥ निज स्वरूप महँ मग्न मदारी॥
सोइ काल चै सुत तारक के ॥ किय अतितपमीनजमारक के॥
तारकाक्ष अरु विद्युन्माली ॥ त्रितियकमललोचनबलसाली
तीन वर्ष करि कमल हजारा। पुजैं शिवहिं तारक कोमारा॥
यकदा सहस माहि यक घाटी। भै न मिलै पंकज मन हाटी॥
काढ़ि नयन तब तीनों भाई। अर्पेउ तबहुं कमी यक आई
तब तीनों उतारि निज शीशा। किय शिव अर्परा तोषे ईशा
दो० अति प्रसन्न होइ शंभु तब त्रिपुरहिं बेगिउठाइ॥
अव्याहत गत इच्छित वर दियचै हौं सुरव पाइ॥१९॥
कह बिधि मैं न भ तुम तीनों को। दियउं तीन पुर विचरहु नीको॥
सहस वर्ष महँ तुम चै भाई। निमिष अर्ध होइ हो यकठाई
निमिषार्धहिं जो धनु धर चातुर। मारिहि चारा लक्ष तकिआतुर
तुम तीनों कर सो संहारा॥ करिहै हे त्रिपुरा निरधारा॥
अस वर पाइ त्रिपुर तिहुं भ्राता। त्रासन लगे त्रिजग दुरव दाता॥
भागे बिबुध त्यागि पदआपू। सकल मही छावा बहु पापू।
पुनि सब सुर मुनिमिलि करसाथा। गे हरि पदजहं रह श्री नाथा॥
तब सब संग लै रमा निवासा। जात भये वृषभ ध्वज पासा॥
दो० सहित अमर हरि प्रार्थन किय तोषे मदनारि॥
कहि इच्छित बरमांगहू अहो देव दनुजारि॥२०॥
हे हर त्रिपुर देत दुरव तीते। भै सुर मुनि संपति पद रीते॥
मुनि कह शिव त्रिपुरा बधहेतू। चाहिय रथ हे रमा निकेतू॥
यह सुनि बोले सुर समुदाई। हम सजि देत दिव्यरथ सोई॥
स्यंदन होत भई तब धरणी। भै रथ चाक युगल शशि तरणी
मंदराचारि रथ चक्रा धारू। भै रथ स्तंभ पदारथ चारू॥
भै बलवंत चहूं श्रुति बाजी। मूरत वंत तिरुगा गति ताजी॥

सावित्री पति बने सारथी ।। शास्त्र बागरजू परमारथी ॥
भैं तट बंद पुरारा अठारा ।। उपपुरारा कीलें निरधारा ॥
दो० धनु प्रचंड हिमवंत गिरि पनच शेष बलवंत ।
तीक्षण शर अति तेजस्वी भैं दधितनया कंत ।२१।
हरषि चढे शिव निररिवसजादल चढतहिं स्यंदन चला रसातल ।
काहूतें नहिं उरवरत स्यंदन । काढ़ि सींग तें तब गोनंदन ॥
यक पग नंदी दूसर रथ पर ।। धरि अति क्रोधित होइ उमाबर
होत भयंकर युद्ध अपारा ॥ ।त्रिपुरादल शिव करत संहारा ।
बीर भद्र परचारि प्रचारी ।। मर्दत दनुज दलहिं बल भारी
सुधा कुंड दनुजन की ओरा । रहा बहुत करि घटै न जोरा ॥
अमृत सींचत हीं बहु दानौ । ह्वै सजीव तत कालहिं जानौ ।
लरिवशिव मेघवारा बरषाई । अमिय कुंड सब दीन्हि बुड़ाई
दो० अंतरिक्ष भरमहिं त्रिपुर गत भै सहसहुं बर्ष ॥
पलक लगत नहिं शर रचे लक्षत के शिव कर्ष ।२२।
शिव तन चला प्रस्वेद असीमा । सोइ पंढरपुर में सरि भीमा ॥
दृग जल बूंदी टपके देखत । भैं रुद्राक्ष सोइ जग पेखत ॥
रहिं पतिव्रता त्रिपुर की नारी । तेहि करि मारि न सकहिं पुरारी
धरि छल नर तन तब लक्ष्मीवर पहुंचे जाइ तुरत त्रिपुरा घर ॥
कोक शास्त्र व्यभिचार बनाई । हरिमति दनुजतियनहि सिखाई
पतिव्रत धर्म भंग व्यभिचारू । पूर्ण कराये श्री भरतारू ॥ ॥
भये निबल उत सुरपति पक्षी । तके लक्ष दृत प्रभु त्रै अक्षी ॥
संधाने हरि शर हर आपी ।। पाशूपत शर अग्र स्थापी ॥

छन्द

अस्थापि तेज प्रचंड मंत्रन्हि मनहु सहसहुं दिन करा ॥
की काल दंड अखंड यमजगनिधन काढ़े सिर भरा ॥

तेजित शिरवा जिमि प्रलय वन्हि को जीभ तिक्षा कृतांत को॥
शरभ सुरव्य दामिनि प्रलय घन को निकसि जनु जगतांत को।१९।

दो० सप्तहुं कोटी मंत्र बल धरे बाण कर अग्र ॥ ॥
कहहिं जगत क्षय है चहत डरि सुर दनुज समग्र।२३।

न्याय सहित जपि मंत्र तुरंता ॥ विषु बाण छोड़े भगवंता॥
नभ पाताल मही नव खंडा ॥ भयउ घोर रव अतिहि प्रचंडा
प्रलय तड़ित जिमि कूदु दमंकत। चला अस्त्र तेहि भांति चमंकत
तरवि पार तिक्षा असुरगण ठट्ठा। फटे पवन करि जनु घन घट्टा॥
महा तेज करि खल दल सर्वा ॥ भागे धीरज धरहिं न खर्वा ॥
प्रलय अग्नि सम तेज धधक्कत। जरहिं दनुज जिमि शलभ फदक्कत
डोला मेरु शेष तल मस्से ॥ हलि कुंभिनी कुरम कलमल्ले
सरि सर सागर डर दर्राने ॥ कंपि गात दिग्गज थर्राने ॥

छन्द

थर्राने देव पराने निशि चर खभरि गिरि कंदर धरे॥॥
हरि रव उचारी कुधर भारी सम बहुत मरि गिरि परे ॥
पार अगि सम छन लागि नाहीं भस्म करि त्रिपुरान को॥
इत त्रितिय दृग को अनल निकरेउ भै सहायक बान को।२४

दो० तीनों ग्राम समेत दल सब हीं को करि नाश।
निज निज अंशनि महँ मिले रथ सामग्रि हुलास।२५
शिव पद गहे सप्रेम सब बिगत होइ सुर त्रास ॥
अपर आशु गज राज जड़ तजि भजु उमा निवास।२६

कहेउं त्रिपुर क्षय कथा यथा मति। और चरित सुनिये सब दे प्रति।
निज निज थल सुर राये अबाधी। बैठे शंभु लगाइ समाधी॥
त्रिपुर पिता तव तारक दानो। अतिहि प्रलय सब जग महठानो
इंद्र भगाइ इन्द्र सम सुर झारी॥ पकरि लेइ गो चन्द्र तमारी॥

भागीरथी आदि सुचि गंगा। पकरि लेइगे तारक बंगा॥
हैवांगना सबहि कहँ ओही। रारा दासी करि निर मोही
ब्रह्मा विष्णु सची भरतारा। होइ यकांत तब करहिं बिचारा
कहहिं यकत्र शंभु गौरी को। करिय होइ सुत षटमुख नीको
तारक असुर मरिहि तेहि हाथा। करि सम्मत बोले रति नाथा।
कहे मदहिं सुनु बेगिहिं जाऊ। पार्बती शिव करु यक ठांऊ॥
दो० हिमिगिरि हर तप करत हैं तेहि तें देसि भुलाय॥
सुनत असमशर रति सहित पहुँचा शिव पहँ जाय॥२६
उमारूप महँ तव मद जाया। कीन्हि प्रवेश सुनहु मुनि राया॥
कीन्हा प्रगट ऋतुप ऋषकेतू। जेहितें डोले शंकर चेतू॥
शिव मानसहिं सतेज अपारा। करत प्रवेश भयउ तब सारा॥
त्रिबिधि पवन बह खगख भारी। करहिं छूटि शंकर को तारी॥
पक्षी हांकन हित नंदकेश्वर। गये सु दूर रहे तेहि औसर॥
उमा होइ कामातुर आछे। ठाढ़ रहीं मनसिज के पाछे॥
खोल्ले हर दृग क्षोभे गाढ़ा। देखे आगे मन्मथ ठाढ़ा॥
मम तप कीन्हि भंग रे मयना। कहि शिव खोल्ले तीसर नयना
दो० प्रलय अग्नि दृग तें कढ़त काम भयो जरि क्षार॥
फागुन पूररा मासि कहँ भै जग हा हा कार॥२७
शिव गरा भूत कुशब्द उचारी। उपहांसित बोलहिं हंकारी॥
शिश्नु योनि को लेकर नामू। कहहिं आजु बूड़ा मद कामू॥
शिव आज्ञा तब ते सब हीं को। फागुन पूनि हुताशनि नीको॥
करि ऐसे ब्रत जोनहिं पालहिं। सो अपदशा पाहिं वहि सालहिं।
यहि बिधि पंच शरहिं संहारी। करि बिचारि मुख पंच मदारी॥
कर्पुर गौर नुरत तहं से उठि। गे कैलाश सदन निज सुख मुठि॥
रती शोक करती बहु भांती। समुझाये तब त्रिपुर अराती॥

अबतें रति सुनु तुव मन रंगा ॥ । व्यापिहि सब जग बिनही अंगा
भयउ आजुतें नाम अनंगा । । अब सुनु कबतोहि मिलिहि प्रसंगा
रुक्मिनि उदर तोर भरतारा ॥ । जन्मिहि सुनुहु कृष्ण अवतारा
दो० सरस्वती निज सुता संग भोगत में करतार ॥
शापि कितें शिव दृष्टि तें भस्म होहि रे मार ॥ २८॥
रति रावनी घर दूत नग कन्या । अति तप करि शिव पति लगि धन्या
तब हर ढिग आ सप्त ऋषीशा ॥ । कहे नमि बरिय उमा कहँ ईशा
सुनि बटु भेष लेहु शिव ज्ञानी ॥ गये जहां तप करति भवानी
गान राग बहु भांति सुनाई ॥ । पूछे गिरिजा सन गिरि राई ॥
करहु कौन कारण तप भारी ॥ सुनि बोली गिरि राज कुमारी
हम कैलाशपति हि भरतारा । चाहति हैं हे विप्र उदारा ॥
कह बटु तैं नृप कन्या आही । शिव भिखारि जेहि सदन हु नाही
मुंड माल अहि भूषण तन में । दारुण क्रोधि फिरे बन बन में
बसे मसान भूत गण संगा ॥ । धारण गज हरि चर्म उमंगा ।
सदा अकाकिन जेहि को भावे । तेहि घर कैसे नारि रवटावे ॥
दो० पंच बदन तुव योग नहिं ना हित सुनु मम बैन ॥
तें बरु विष्णु बिलासि कहं जो सब गुण को ऐन ॥ २९॥
सुनि जगदंब कोपि अत्यंता ॥ कहि शिव निंदक भागु तुरंता
ढाढ़ी कस जनि बदन दिखाऊ । अति खल द्वेषी बेगि पराऊ ॥
जो जड़ शंकर द्रोही आही ॥ । ताको परस होन नहिं चाही ॥
तोको शिक्षा देति उँ सांचा ॥ । परतें आत्मण करिके बांचा ॥
अरु अतीत दुर्गा को अनूपा । लखि शिव अगटे अपन स्वरूपा
पार्वती जै जै उच्चारी ॥ । परी चरण तन दशा बिसारी
मैं प्रसन्न तोहि पर कह भोला । मांगु तोहि जो भाव अमोला
कहति उमा अर्धांग हि ठामू ॥ । दै आपन में मोहि गुण धामू ।

सो० एवमस्तु इति भाषि महा देव कैलाश गौ ॥
शंभु चरण उर धरिय पार्वतिहू गइ पितु भवन १
बामदेव पुनि सप्त ऋषी को ॥ पठवाये हिमगिरि घर नीको ॥
गिरि नायक आगे होइ लीन्हा । सादर पूजन षोड्श कीन्हा ॥
अरुंधती बशिष्ठ की नारी ॥ वह आ गिरिजा काहिं निहारी ।
कहनि शिवा शिव जोरी छाजहिं । निरखि मदन रति को हिय लाजहिं
मन्मथ संवत सुदि मधु मासू ॥ लग्न ठहरि अष्टमिहि विलासू
चैत आदि बरनित जो आहीं । गिरि सुर ब्याहहिं दूषण नाहीं
लग्न पत्रि शिव पहं पहुंचाये । सप्त ऋषिन्ह तब भवन सिधाये
सोचहिं चौदश गण सब काहू । कब होइहि शिव गौरि बिवाहू
दो० अरुषद सुख कब जन्मिहैं कहहिं इंद्र करतार ।
मारहिं तारक दनुज ही कब धों शंभु कुमार ।३० ।
दूत शिव नंदी काहिं पठाये ॥ सब सुरगण कहं नेवत भेजाये
संग लेइ चंदारक जाती ॥ । पहुंचत भये पाक आराती ।
सावित्री युत जगत पिता मह । श्री पति चले संग लक्ष्मी सह
ऋषि गण चले सहस अहासी । निज निज शिष्यन्ह सहित हुलासी
पितृ मरुद्गण वसु समुदाई ॥ गुह्यक चारण सिद्ध सुहाई ।
रुद्र एकादश दिन कर बारा । धनद यक्ष लै आव अपारा
लोकपाल संपूरण जेते ॥ चढ़ि चढ़ि वाहन आये तेते
अप्सरा तिय किन्नर गंधर्वा । नौ ग्रहादि आवत भै सर्वा ।
दो० इमि बरात सब सहित शिव हिमि गिरिगे निअराय
आगवनी आ सबहिं नग सादर चला लिवाय ।३१ ।
दश हजार योजन विस्तारा । बना बितान सतेज अपारा ॥
हाटक घर सब भांति सुपासू । सुंदर तहां । ये जनवासू ॥
दुलहिनि ओर को सबहिं बराती । शिवहिं देखि विस्मय बहु भांती

एक कहहिं वर है बहु दूहा।। पुरुष पुराना अनादि सुसिद्धा
यह केवल है निर्गुना रूपा।। कन्या सुंदरि सगुना स्वरूपा
करि परतिष्ठा सब देवन को। गे गिरि मादर बर ले बन को
सब सामग्री आपन हाथा।। धरै उचित सावित्री नाथा।।
अष्ट सिद्धि नौ निद्धी जहवां।। करत टहल सब का कमितहवां

छन्द

तहवां न कमि बर काहिं लाये मंडपहिं शुभ आदरे।।
मधुपर्क पूजा आदि बिधि सब करत हिमिगिरि सादरे।।
छबि खानि जननि भवानि कहँ सब लाय घटि शुभ जानिके
सखियां सिंगारी ठाढ़ करि पट ओट सुंदर आनिके।।१३।।
मंगलाष्टक कहत गुरू घटि लग्न देखत दिन करे।।
ओंकार पुराचार हरषित पढ़त सावित्री बरे।।
पुनि पानि ग्रहना भे देखी सुरन्हि सबहिं उर आनँद भरे
करि होम गांठी जोरि देन सुभांवरी गिरिजा हरे।। १४।।

दो० बरषहिं सुर कुसुमावली बोलन्हिं जै जै कार।।
बाजा बजत अनेक बिधि असुरन्हि माने हार।।३२।।

ब्याह नेग सब भई विशेषी।। वर दुलहिनि नन कोउ न देखी।।
केवल भांवरि देत सुबेरी।। । नरख सुविरंचि शिवा को हेरी।।
नरवतहिं नरख मद व्यापि बिधी कहँ। टपकि शुक्र बुंद गिरा मही महँ।
बालखिल्य तहँ साठि हजारा। जन्मे तिहि छिन लागि न बारा।।
लखि अन्याय महा यहि भांती। अतिहि कोपि कर मदन अराती
ब्रह्मा केर पांचवें शीशा।। । तुरतहिं डारे काटि मुनीशा।।
लखि सब जन करि हाहाकारा। तब समझाये श्री भरतारा।।
तब तें ब्रह्म चतुर मुख भयऊ। नाम जगत चतुरानन लयऊ।।

दो० पूरेउ उत्सव ब्याह कर चार दिवस में जान।।

मादर भूषण बसन दै विदा कीन्ह हिमवान।३३।
संग लेइ तब पारवती को ॥ कैलाशहिं आये शिव नीको
तब सब सुर मिलि शिव पहँ आई। बिनवहिं निज निज विपति सुनाई
कहहिं विश्व की उत्पति नाशी। मन्मथ कहँ उठाउ सुरत्राशी
कह शिव मैं अनंग करि मारहिं। पुरब जियाउं तजहु दुख भारहिं
गे सुर मुनि उत अंध कढ़ोटा ॥ तारक दनुज देत दुख खोटा
दुखे बिबुध सोचहिं समुदाई। शिवहिं होइ कबधों सुत भाई
चार युगहिं लौं गिरिजा शंकर। रमत इकांती क्रीडत सुंदर ॥
पर मद पान होत नहिं हर के ॥ पुत्र होइ नहिं तौने करके ॥
सो० तारक सुर पुर जारि सब देवनहिं विदारेसी ॥
पकरि उन्हनि को नारि घर ले जाइ करि दासि निज।३५
देव दुखित सब गे कैलासू ॥ सुने शिवा शिव करत बिलासू
बाहिर ठाढ़े ऋषि नंदारक ॥ नहिं काहू को पहुंच उहां तक
भीतर तब सुर पैठे बन्ही को। गे धरि भेष यती को नीको ॥
है शिव मिल सु तीसर नैना ॥ ताहित ठाढ़ा रहा सुचैना ॥
मंगा भीख गुहराइ सुतब यति। दिय अदेश मुनि उमहि उमापति
कह शिव मम शुक्रहिं धरि करमें। यति हि भीख दइ अहि अवसरमें
तबहिं अमोघ वीर्य कहँ लाई। दई भीख यति ही जग माई ॥
अंजुरि छलकि मद जो मुनि भूपा। गिरा रेत को भैसो कूपा ॥
दो० सोइ भै पारा जग विदित जाकर तेज प्रचंड ॥ ॥
करै अन्यथा अस न कोउ इच्छा शंभु अखंड।३४।
शंकर काम हिं घातहिं आगी। पीयि गयसि तेहि क्षण अनुरागी
रहा गर्भ तब पावक काहीं ॥ ॥ लज्जित भरत बन बन माहीं
छः कृतिका ऋषि तिय हिं विशेषी। बिचरत में वैश्वानर देखी ॥
छहों जनी सुचि गंग नहाई ॥ आगी तापन लगीं सुहाई।

अवसर पा निज गर्भ निकारी। अनल छहों के उदर हिं डारी
भद्र गर्भिणी छहों उन बाला। मन अचरज लखि कर हिं बिशाला
करि बिचार छहों उन बनिता। काढ़ि गर्भ निज तज गों अनिता।
रक्त एकत्र छहों कर भयऊ। दिव्य देह तिहि क्षण निर्मयऊ।
दो० छः कृतिका के मेल तें भे षट मुख तेहि केरि ॥
अरु भुज द्वादश सहज हों तेज कांति को ढेरि।३५।
कार्तिक पूनि कृत्तिका तारा ।। को जन्मत भे शंभु कुमारा।
महायोगि मत शैव बिबेकी। चरचे भस्म सुबाहन केकी
सांचहिं शिव निज सुवन जानिके। लेजि लगाये थन भवानि के
सात वर्ष लौं जग की माता ।। सुतहिं लाड़ि पाली कुशलाता
उत त्रैपद जा सुर नहिं कहेऊ। सुवन स्कंद शंभु को भयऊ।।
सुनत बिबुध अति हर्ष बढ़ाये। कोपि तारका सुर पर धाये॥
छोनि बहत्तर दल जेहि केरे। सुधा पानि नाकर पुर घेरे॥
तारक लेइ सेन निज संगा ।। निकरा बाहिर रण मद रंगा
दो० जाकर कार्तिक स्वामि कहँ करिके सेनाधीश।
रथ बिताइ अभिषेक रण को लैगो सुरईश।।३६।
देव दनुज दूत करि अति क्रुद्धा। एकम एक करत मल युद्धा।।
तारक कीन्ह अमर तन जर्जर ।। भगे बिबुध षट मुख ढिग भर्भर
त्राहि त्राहि हम कार्तिक स्वामी। पाहि पाहि प्रभु केकी गामी।।
कहहिं त्रिदश तारक तें भाना। बेगि बचावहु कृपा निधाना
देखि दशा वृंदारक गन को ।। किय बिशाल शिव सुत निज तनको
प्रबल तारकासुर अति योधा ।। दौरा षट मुख पर करि क्रोधा।
तेंतिस कोटि देव को यूहा ।।। रवड़े स्वामि के पाछ समूहा।
तारक असुर महाबलि आही। दश हजार कुंजर बल जाही।
दनुज अपार बाण झरि लाई। दशहुं दिशा बाण बलि छाई

तजि धीरज सुर सकल परावहिं। जाइ स्वामि के पाछ लुकावहिं
दो० इंद्रहिं लुकत बिलोकि खल छांड़ी शक्ति प्रचंड।
चली तड़ितनें शीघ्र गति मनहुं काल को दंड।३७।
तब पाकारि हृदय अति डरिके। करत जोरि कर अस्तुति हरि के।
कहि हे हरि श्रीमानस रंजन ।। शक्ति निवारहु आरत भंजन।
हे जग व्यापि सच्चिदानंदा ।। दश अवतारी करुणा कंदा।
नरकासुर रिपु मधु मुरारी ।। । प्रलय सांगि कहँ देहु निवारी
बिहुंजारति बच सुनि भगवंता। पठय योग मायाहिं तुरंता।।
वह सांगि ही तुरत लौटाई।। दीन्हिसि दूसर अोर गिराई
पुनि तारक शिव सुत पर कर्षा। लागा करन सिली मुख वर्षा
तब मुंह कार्तिक स्वामि पसारी। खल प्रेरित शर लिलिगें भारी।

छन्द

सब लीलि गें बहु अस्त्र शस्त्रहिं बहुरि तारक मारेऊ।
पुनि हू षड़ानन लीलि सहजहिं देखि खल मन हारेऊ।
कल्पांत रुद्र समान तन बिकराल मुख किय षटसुखं।
खल ब्रह्म अस्त्रहिं मारि सरिवतेहु लीलिगें लीला सुखं।१५
प्रेरीत मंत्रन्हि अोर चहुं ते जतनि मारा जड़ शरा।
ततनिहुहिं शिवसुत प्रलय यम सम भक्षिनहिंलगि छनभरा
निज शस्त्र जब भै तारका सुर कूदि तब रथ तें परा।
तुरतहिं तड़ित सम शंभु सुत पर गर्जि धावा रिस भरा।१६
दो० रथतें कूदे षटमुख हु हांक देइ जिमि काल।
मल्लयुद्ध स्वामी असुर लागे करन कराल।३८।
सात दिवस लौं युद्ध बिकट्टा। कीन्ह महा अद्भुत मुख खट्टा।
सुर सेनप तारकहिं कोपि कर। पटकि पटकि कीन्हे तन जर्जर।
धरि पग पुनि खल कर विसिथाई। मानहु चक्राकार फिराई।।

पुनि सकोपि महि पर लै पटका। मृत घटसम चुर भैजिव सटका
गतः प्राण तारक को देषी।। इन्द्र हिं भयो अनंद विशेषी।
सुमन बरषि दुंदुभी बजावहिं। सुर षटमुख कहविय सुनावहिं
जब शिव सुत तारक को मारे।। तब रहे सात बरष कर बारे॥
पुनि सुरसेनप कर अधिकारा। बासव दिय अस्कंदहिं सारा
दो० मघवा तारक पुरहिं सब लूटा हर्ष बढ़ाय॥ ७
खोलि बंद सुर सुरतियन्हि गे निज पद सुख पाय। ३९।
बजत बिजय बाजा आनंदा।। गे बारणासि शंकर नंदा॥
शिव गौरी कह करि परनामा। दिये अमित सुख मन अभिरामा
पुनि जनेउ षटमुख को भयऊ। तब उन तीर्थाटन को गयऊ।
मल्लिका अर्जुन एक पहारा।। दक्षिण दिशिहिं विदित संसारा
कंदर जासु कपाटी नामू। षट मुख तीरथ करि सब धामू
बैठा जाइ नहें स अनुरागा॥ अनुष्ठान करन सुभ लागा
पूछहिं शौनक किमि शिव पूता। गे कपादि को बोले सूता॥
एक दिवस तारक बध पाछे। सुत सन कहि जग दंबा आछे
हे सुत सुनु नें आजु प्रयंता।। ब्रह्मचर्य कीन्हा गुणवंता।
अब निवाह करि नारि बनाई। गृहस्थ आश्रम करहु सुहाई।
दो० सुनि षटमुख कह जननि कह कैसे होवें नारि॥
मैं नहिं देखेउं मातुश्री किमि आकृति निरधारि। ४०।
कहति अपर्णा सुनु मम बारे। मोरेहि सरिस तीय जग सारे
सुनतहिं हांसन लगा कुमारा। दृगि उतर मुख से उच्चारा॥
तव सम जो जग में सब नारी। तो मम सब ध्रुव हैं महतारी
तोर बचन हिं मातु मैं आपो। अंतर करि हौं नाहिं कदापी।
ऐसे बोलि कुमार सुहाई।। महा कपादिहिं चला पराई।
तब जगमाता दौरी पाछे।। आतुर सुतहिं धरन हित आछे

गहे न जाइ भ्रातु हे रंबा ।। गिरति दुरवित महितल जगदंबा
जो त्रिभुवन स्वामी को रानी। सुतहिं पुकारति आरति बानी।
रे सुख मोहि दिखाउ कुमारा। मम थन स्रवत प्रेम पय धारा
यह पय काहि पियाउ षडानन। मोहि दिखाउरे सुत निज आनन
कह षट मुख ले निज पय मारवन। अस कहि वमन करी कछु राखन
श्रापबानि अरु मुख तें काढ़ा। सुर सेनप उर कोपित गाढ़ा।।

छन्द

गाढ़ाति बोले दरश हित ममतीय जो कोउ आवहीं ।।
सो सप्त जन्म प्रयंत निश्चिति जगत वैधव पावहीं ।।
अरु पुरुष कार्तिक दरश कृतिका नखत कारि मम जानजो
गति स्वपच कैमहुं नीचऊंच सुपाहिं सबहिं समान सो।२७।
होइहिं धनाढ्य सभाग सप्त सु जन्म वेद परायणं।।।
अस बोलि कार्तिक स्वामि निज थल गात भें मुदितायनं।
नमि कृत्तिन्ह कहहिं बिना तुम्हरे अंब दुरवित दिन रातुहीं।
सो बेगि काशी जाइ स्वामी भेंटि आइय मातु हीं।२८।

दोहा

जाइ दलप शिव पुरिहिं पुनि उमा शंभु कहँ भेंटि।।
समाधान करि पूर्व थल आवे संशय मेटि।४१।
सूत स्कंद पुराण में वरणहिं शौनक पास ।।
सुनतहिं दारुण विप्र सब तुरतहिं पावहिं नास।४२।
श्रीधर करुणा अगम मति दया दृष्टि उन दीन्ह।।
अति सूरख गज राज पर तव आकृत पद कीन्ह।४३।

।। इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा भाषान्तर भाषा गजराज कृते मधुरत्रयोदशो अध्यायः।।१३।।

शिवसुत षडानन व गणेशजी का परस्पर खेल व शिव पार्व्वती का पंसासारी चौसर खेलना व नृपति शृयाल की अतिथ पूजन की भक्ति देख शिवजी को दर्शन देना और शृयाल नृपति के पुत्र विलमाख को राजगद्दी देख सहित शिवलोक में गमन।।



चतुर्दश अध्याय

सो० शंभु उमा परसाद चौदह अध्या कहउं अब ।।
सुंड स्वामि अहलाद चरित नृपति शिरयाल कर।१।

जय भस्मासुर अरिहर भाले। भूति लेप मुह भृगुप निहाले
भक्त प्रीय जै भव भय नासी। स्वामी भूत अभेद हुलासी ।।
गिरिजा पति अहि भूषणाधारी। पालक भूत भक्त कामारी।।
प्रीति भाव को जानन वारे।। जन भय को जय सोषण हारे।
जय त्रिदोष त्रै ताप निवारी। त्रै गुण रहित सुजय त्रिपुरारी।
जय त्रिभुवनपितु प्रभु त्रै नैना। श्रुति त्रैकांड सुरक्षक चैना ।।
तोर कृपाबल तें वष गामी।। तेरह अध्या लों भै स्वामी।।
चौदह अध्या अब कलशासमा। कथवा वहु हे गिरिजा बालम

दो० कहउं व्याह शिवगौरि को स्वामी जनम हुलास।।

नैमीषारण्य में कहत सूत मुनि शौनक पास ॥ १ ॥
गज मुख षण्मुख चरित सुभाखे। हरि हर सम हिय सोचहु पाखे
बाल बिनोद करैं दोउ बारे। जग देवा हिय हरषि दुलारे ॥
जननी गणपति कहँ सुख पावति। लै उछंग सुचि दूध पियावति
सुंड दंड थन रिवँचि इभवानू। करत सप्रीति श्रमित पय पानू॥
पीयत मातु पीठि पर प्रीती ॥ गणप सुंड फिरवत शिशु रीती
पुनि पय लेइ सुंड में गज मुख। कहत सुनसि रे भ्राता षट मुख
जग दुर्लभ यह श्रमृत लेई। ब्रह्मादिक नहिं पावहिं येई॥
कहत स्कंद कोप युत बानी ॥ मैं तव जूठ न लौं श्रज्ञानी ॥
दो० कह षट मुख लख जननि यह जूठ श्रपन लँबनाक।
दूध देत मोहि बरजुतैं मोसे लगत बिन्हाक॥ २॥
नीचे पकरि सुंड यहि केरी ॥ मातु गिराउँ येहि यहि बेरी ॥
श्रति लम्बी नासा याको श्रस। कीन्ही माता तैं कारण कस॥
रवि शशि इन्द्र बिबुध समुदाई। सूरति बंन इन्हैं जन्माई ॥
पर यहि श्रुति बड़ लंबी घ्राना। दुकरद बाहिर दिख श्रसमाना
ऐसे कस जन्मायसि बालक। हँसन लगे सुनि गोसुत पालक॥
भरी मोदगिरि जहु उर भारी। उमगी हँसीन सकी सँभारी॥
कहत स्कंद सुनसिरी माई ॥ यहि उतारि मोहि दूध पियाई॥
तब बेगहिं जग जननि भवानी। विघ्नेश हिं नीचे बैठानी ॥
दो० पुनि पय स्वामिहिं श्राड़ि ले लगीं ध्यान जग देव॥
यक मुख पीयत पंच मुख रोवहिं लखत हिरंब॥ ३॥
लखि हांसत गह्यद गण त्राता। धरि धरि पेट कहत हे माता॥
कैसे यह सुत भुख हा तोरा ॥ श्रट्टहास करि रोवत जोरा ॥
यक थन मुख बदनहिं पियावसि। श्रौर पांच हित कहँ सेलावसि
इमि इभ मुख कर सुनतहिं बानी। बोले विहँसि सुडमरू पानी॥

हे प्रिय काह कहत गणराई ।। काहे ऐसे सुत जन्माई ।। ।।
सुनि सुहास्य मुख करि सुभ भोहू। देति अपराण उतरबि नोहू ।।
कहि सुत आपु सरिस निर्भयऊ। अपनपंच यह षट मुख भयऊ
सुनि त्रैनैन मंद मुसुकाये ।। । शिशु कौतुक लखि अति सुख पाये
दो० इमि गणराज षडानन रंवेलहिं बाल बिहार ।।
करहिं कलह ऊपर बहुत अंतर प्रीति अपार। ४।
दोउ शिशु रोवत सुनि जगदम्बा। दौरि आइ ढिग नाहिं विलंबा।
लम्बोदरहिं लाइ उर माता।। कहति काह भैरे सुत ताता।
तब वह कह स्कंद मम आई।। पकरी कान सुनासिरी माई ।।
बोला कठिन बचन यक खोटी। कहि दोउ दृग तुव रे कस छोटी
सुनत हाँसि चै जग की माता। बन्हि संभव सन पूछी बाता
कस कठोर गणनाथहिं बानी। बोलेसि तैं षट मुख अज्ञानी
कहत स्वामि तर जनी उठाई।। यह मम हाद्श नैं नहिं भाई ।।
गिना सुनत हँसि नगप कुमारी। कहति एक रद सन मुनि चारी।
दो० कस कुमार कोगन सिद्ध गतहिं तो अनुचित कीन्हि ।।
कह गणपति अन्याय यहि सुनु माता चित दीन्हि। ५।
मोर सुंड कर यह लंबाई ।। । निज चौदा तें गिना रिमाई ।।
बड़ अन्याय त्रिजग तें भारी। कीन्हा यहि नाड़सि महतारी ।।
सुनि बोले पावक सुत बाता। यह मम हाथ गिनेसि सुनु माता।
सुनि पुनि बोलत भैंगण राया।। सुनहु मातु श्री आदि सुमाया।
यक अन्याय कहौं यहि तोसे। सुनतहिं नाड़सि तकसिन मोसे
श्री शंकर नग राज कुमारी ।। सुनहिं शिशुन को बच श्रुतिधारी
करि मुख कह धम का करयाही। मोहि अनुचित बोला जोन चाही
कहा कि उदर बड़ा तुव हैरे ।। मोदक बहुत भक्षि का तैरे ।।
दो० सुनि मृड़ानि इमि प्रीति युत दोउ सुत कह उर लाइ।

प्रीय बस्तु इच्छित होउहिं देकर हठ समुझाउ।६
सिंहासन पर आनंद भीना। मदनांतक शोभत आसीना॥
जग दंबा मुख ओर निहारै। हास्य बदन करिके निरधारै॥
लखि बोले शिव आनंद रासी। प्रिया तुमहिं कस आवत हांसी।
तब बोलत भद्र जग की माता। मोहियक नवल दिखत जनजाता।
जटा मुकट महं तिय आकारा। दीखत सोहै काह तुम्हारा॥
तुम्हरी करणी अद्भुत आहीं। जेहि विधि इन्द्रहु समुझैं नाहीं
विश्वनाथ कह हे पिक बयनी। बिंबाधरि सृवा श्रावक नयनी।
सुनु हरि मध्या सिंधुर गामिनि। मैं निज शीस धरेउं जल भामिनि
दो० तब नैपुन सर हंसिनी बोली गज मुख मातु॥
तिय मुख जल में समय यहि दीखत मोहि जनजातु७
यह सुनि बोले नयन पंचदस। बदन न ह्वै प्रिय अहै ताम रस॥
दिव्य तेज अति शोभा भानू। लहलहात दीखत सोइ जानू।
सुनत मेघ धरणी कह बैना। सुनिये स्वामि पंच दश नैना।
व्योम केश बाघाम्बर धारी॥ कृष्ण वरण हू दिखत पुरारी
कह शिव पंकजपर सुनु गिरिल्लि। बैठा लेत सुगंध अहै अलि।
प्रिय भल ताहिं बातहिं चितधरिके। हरि भगनी पूछसि हठ करिके।
पुनि त्रिबेणि अहि बेणी कहई। का स्वामी जल हुहिं भ्रू रहई॥
करणि विचित्र तुम्हरि माया को। सुर श्रुतिहू गम पाहिं न ताको॥
दो० कह शिव भौंह न होइ भलि लघु है नीर तरंग।
अस्फूरत तब दृष्टि कस चक चौंधी अधरंग।८॥
तब सुनि सब प्रमदा कर स्वामिनि। कुच कमंडु धर ग्रीवं सुकामिनि
बोली सुनु प्रभु कैरव नैना॥ दृग आकरण दिखत अरि मैना
कह हर जलज केर चहुं पासा। नीर बहुत तहं करत विलासा
झष चंचल गति नयन न प्यारी। हंस गमनि भलि देखु निहारी।

नव गुण मैं पूरण भव बामा।। कौतुक मोद कहति अभिरामा
जलजहिं युगल कमंडु पयोधर। सम दीरवत का आनक सहोदर।।
यह सुनि मूल पारिण कह बानी। सुनु महिधर नंदिनि गुण खानी
न होइ प्रीय वह अस्तन दोई। आंरिव उघारि भली बिधि जोई
दो० कोक सुयुग दह गंग के बैठे हैं दोउ तीर ।। ।।
कह दुर्गा साहित्य बहु पुर बहु गौर शरीर।८।
करि अनेक यक के जग व्यापी। यह चैजगहिं देखा यहु आपी
मौनहिं न मिय राउ पद नीका। प्रभु बचनहिं नहिं कहिय अलीका
पुनि सुंदर चौपड़ फैलाई।। लगे गौरि शिव खेलन भाई।
जिनकर खेल सुनत त्रैलोका। होहिं भक्त छांड़हिं भव शोका
खेलत दोउ आनंद बढ़ाये। सोइ अवसर नारद मुनि आये
बीणा बजाइ शंभु गुण गाना। लगे करन बिधि सुवन सुजाना
बहुरि देव ऋषि अति अनुरागे। सादर खेल बिलोकन लागे।।
पन लगाय बिन पासा माहीं। कह मुनि रंग चढ़े कभु नाहीं।।
दो० मानि बचन पन दोउ करि लागे खेलन खेल।
कहेकि जीते जौन जो सो तेहि देय अपेल। १०।।
प्रथम दांव तब प्रथमहिं बेरी। जीती सुता हिमाचल केरी।।
छीनि लई गिरिजा बाघांबर। हांसत नारद देखि उदर भर।।
द्वितिय दाँव जित तहिं जग दंबा। लइ गज चर्महिं छिनि न विलंबा
पुनि तेहि छिन एकम यक पाछे। लई जीति दश आ युध आछे
पुनि शिव तन के भूषण भारी। जीति छीनि लइ नगप कुमारी
कोपीनहु को हारि निदाना। भये दिगम्बर कृपा निधाना
केवल रहा सुरभि को नंदन। सोउ हारिगैं प्रभु जग बंदन।।
लखि नारद गद्गद होइ हांसे। पुनि शिव सन इमि बचन प्रकासे
दो० कह सब जग माया बिवश तुम निर्गुण अविकार

जीति तुमहिं सो नारि सब महिमा बूड़ि तुम्हार।१०।
माया विवश चराचर भारी।। तुम सहजहिं अव्यक्त मदारी।।
सो तुम कहँ इन्ह निज बस आनी। रहे जो आप अनीह अमानी
माया विवश भये तुम जैसे। मुढ़ भक्तनहिं देखा वहु कैसे।
बामदेव इमि सुनतहिं बानी। घोर विपिन पथ लिय सुखमानी
अस कौतुक करि तहँ ते नारद। चले गए गुण बुद्धि बिशारद।
शंकर सर्व संग कहँ त्यागी। बास निरंजन किय अनुरागी
योगी सदा हृदय महँ ध्यावहिं। खोजत शिव को ठांव न पावहिं
मूल अग्रजेहि कहँ गम नाहीं। कुल अरु जातिहु नाहीं जाहीं।
दो० गोत्र वर्ण आश्रम रहित है चहु तन को त्यागि।
पाहिं नहीं कोउ अंत गुण नाम रूप वैरागि।११।
सरिवन संग लै आरत चेतू।। उमा कटी बन ढूंढन्हि हेतू।।
मठ मंदिर गिरि कंदर देखी।। खोजि शिवा भइ थकित विशेषी
सोधि सबहिं तीरथ तत काला। पूछि बहुहिं शिव कर पथ हाला
योगि योग अष्टांग जो साधिहिं। सोउ न पाहिं शंकर निरुपाधिहिं
नग्न भूम बन्हि पंच सधैया।। मौनी जटिल योग अरधैया।।
नयन मूंदि नित लावहिं ध्यानू। लखवहिं एक नभ ओर अमानू
कोउ तप करें सदा रहि ठाढ़े। पीथि समीर रहें बहु गाढ़े।
उनहूं कहँ पूछत मैं धावहिं। कहँ हैं शंकर नाहिं बतावहिं
दो० कोउ यज्ञ सदा करहिं कोउ हिंसा बलि दान।।
सदा करइ हर धूरि भरि करें सभौरव्य विहान।१२।
चौंसठ कला दिखावहिं कोई। चौदह विद्या कोउ सो जोई।।
कह परमारथ विवाद सप्रीती। करि करि थके आदि अरु ईती
कोउ सुनावहिं जनहिं पुराना। नाचहिं हरि हर गुण करि गाना
बहुत को जनहिं ज्ञान उपदेश। करहिं न पावहिं उनहुं महेशू।

बहु तरपरा पूजा करि कहहीं। हम इतनेहिं तें पावन अहहीं।
पूछत उनहुंहिं शंभु संदेशू। सकाहिं बताइ न करहिं अदेशू
माया आदि सु जो जग मैया। सक्ति अनंत केरि गढ़ बैया॥
थकि सो ढूंढि ढूंढि शिव काहीं। अपर प्रारिा केहि लेखे माहीं॥

दो० लक्ष्मी पति शिव दरश हित अरु ब्रह्मा सुरजात
तप आराधन प्रीति युत करहिं सदा दिन रात। १३।

कर्म स्थापित कह ऋगवेदा। । कहत ज्ञान सब यजुर अखेदा
उपासन पंथ अथर्वरा वेदा। अस्थापत उत्तम नहिं भेदा।
सामवेद गायन बिस्तारा। न्याय शास्त्र में भेद अपारा
जीव छोट ईश्वर बड़ कहहीं। यहि तें वाके पद नहिं लहहीं।
अस्थापत षष्ठ कर्म मिमांसा। सांरख्य प्रकृति पुंबिल्गा प्रकासा
पातांजली योग कर वररा। शब्द विभाग करत व्याकररा।
सब हीं व्यापि बचा है जोई। कह वेदांति ब्रह्म है सोई॥
सोइ शिव ब्रह्मा नंद विशाला। निगमा गमहिं अगम्य त्रिकाला

दो० उमा घोर बन पुकारति सोइ शिव कर लै नाम।
बल्लभ सब मद तजि शररा हौं अबुद्धि मैं बाम। १४

सब हीं तत्व शोधि जिमि प्रानी। तदाकार ह्वै अंत सु ज्ञानी॥
भेंटि शिवा हिमगिरि पर शिवको। नेसहिं सुख मानत भइ जिवको
निज आत्मा महँ शिव लवलीना। पन्द्रह नयन ढके सुख भीना।
देवी कहति ससुर घर आई। कीन्हे बास भली गिरि राई॥
पुनि मृडानि सोचति सुनि भूपा। मैं ढिग जाउं जो यही स्वरूपा॥
याहि समय तो मोपर भारी। क्रोध मान होइ हैं कामारी॥
बहुरि लेइ भिक्षिनि कर रूपा। धृत शिखि पक्ष सु बसन अनूपा
धार अनुपम उमि भेष भवानी। हरि भगनी शिव ढिग नियरानी।

दो० अंड कटाह अनेक कहै जो गूथी छिन माहिं॥

नृत्य गान करि उमा मोहि मदारी काहिं।१५।
शक्ति अनंत और चहुं राजहिं। चकित अप्सरियां विराजहिं
होइ विस्मित किन्नर गंधर्वा। करहिं गान उनहूं मुनि सर्वा
बनचर बैर परस्पर त्यागे। तजि आहार विलोकन लागे
बहुब बंद भै सरिता नीरा॥ विहंग उड़ाव तजे मुनि धीरा।
निज चंचलता मरुत बिहाई। मृग होइ ब्रह्मा रहे बिधाई।
शेष छोड़ि बसुधा कर भारा। ऊपर जाके करत बिचारा॥
बहै सुगंध अंग को भारी॥ होइ अलि रहें दूर असुरारी।
नचति आदि माया बहुभांती। भाव दिखावति हे मुनि पांती
दो० जासु श्रवण नाटंक ढिग रवि शशि कर हैं बारि।
कहति त्रिबुध तिय याहि पर जांय निछावरि भारि।१६
कौतुक अपार आदि मातु को। गमन न विरंचि अरु सुरत्रान को
पवि दामिनि दाड़िम बिधपांती। शोभित जिमि तैसहिं रद कांती
दशन सुकिरिण पड़त जोहि ठाईं। तहँ कंकर झलकें पवि नाईं
तन तें चलत अखंड सुबासा। रहा पूरि सब हीं आकासा॥
जहां परत पग नग को चीना। उगत बहुत तहँ कमल नवीना
जासु सुगंध बसंत बिधाई॥ करत प्रदक्षिण अतिहि लोभाई
तड़ित अनंत कलोल समाना। स्वच्छ सतेज स्वरूप निधाना।
नीलग्रीव तब नयन उघारी॥ देखत भये सुनहु मुनि चारी॥
दो० पैजन नेपुर रुनझुनहि घंटिक क्षुद्र रसाल॥
करकंकन झनकार रव बजहिं नृत्य गति ताल।१७।
भ्रूलता को चाप चढ़ाई॥ दृग कटाक्ष कर बाण बनाई
शिव मन मृग कहँ बेधि गिरानी। अति गति सुगम जगत पति रानी
दिव्यरूप देखत तन काला। हर उर व्यापेउ सदन बिशाला
तप अरु ध्यान बिसरि भगवंता। तिय हीं पूछन लगे सतंता॥

कहे कौन तैं मोहि बताऊ ।। मद बन्हि रति जलधर पि बुझाऊ
तब छबि दिग सब जग की कामिनि। पटतर देत लगें लघु भामिनि
शरद पर्व बिधु सम मुख तोरा। लरिवश भैमम नयन चकोरा
अब तें मोहि को बरु है प्यारी। हौं तव बश मन तन बलिहारी
दो० तब कह भिल्लिनि उमा अस छोड़ी ललना काहिं।
किये बास कैलाश पति आइ घोर बन माहिं। १८।
मैं पर नारि प्यारि निज पति को। बरहुं न तुम्हहिं मिलहिं सुख रति को
तुम आपन मन को नहिं जीते। तपसि यथा रथ किमि परतीते
सुनि तब बोले बचन उमा वर। मैं रिसाइ आयों दुर्गा पर।।
बहुरि बिलोकों मुख नहिं वाको। सपनेहु नाम न लैहौं ताको
सुनि भिल्लिनी बहुरि अस कहई। कंत मोर अति क्रोधी अहई
जो यह बात तनक खुलि जैहै। तो छन में त्रैलोक जरै है।।
सुनि गुनि तुम हम से जनि उरझो। सरलि सुशील उमा मन सुरझो
शांति सुभाऊ अति सु कुमारी। तेहि आलिंगहु जाइ पुरारी।
कह भव बहुत काल को बामा। वह है अति कठोर पन धामा।।
क्रोध वाहि को अद्भुत आही।।। कूदी निज पितु के मख माही।
दो० बहुरि जन्मि गिरिजठर तें तव डंबरी मोहि सेहि।
पर वह कपटिन कलहि बड़ि है मैं जानौं तेहि। १९।
कह भिल्लिनि सुनिये प्रभु नागर। बहु से तुम कपटी हौ आगर
धरे शीश तुम सुरसरि नारी। शिवा भोलि अत्यंत बिचारी
दुर्गा अस पटराणी त्यागी। बन बन बिचरहु होइ बिरागी
पर तुम्हरे दृग है अति छोठी। पर तिय दरबहु चित करि खोटी
कह हर वह छन में संसारा। पालन लय पुनि करै पसारा।।
शुंभ निशुंभ आदि दनुजाती। उन सब को करि युद्ध निपाती
इहां धाइ जो कहुं वह आवहि। दंडा कृति परि विनय सुनावहि

तदपि पलटि हठ सेकैलासू।। जैहौं मैं न करसि विश्वासू।।
दो० बातहुं वहि से करहुं नहिं तैं वरु मोहि प्रणपीन।।
जितलेजसि तित चलहुं मैं हौंतव वचन अधीन।२७।
बहुरि भिक्षिनी बोली बानी। शिवा तुम्हारी सुचि पटरानी।
जो तुम संग वरी वृष बारा।। ताकर अस गति कीन्ह उदारा
सो तहं मोर है का गिन्ती ।। तजिहू सहज करुं तातें बिनती।।
रेवन्त पासा आपुहि आपू। हारे तजेहु उमहि बिन पापू ।।
बोले मदन दहन नाहीं जब ।। लगि भिक्षिनि नृतगानकरनतब
नयन पंच दश मोद समेतू ।। उठे अलिंगन देन को हेतू ।।
शिवा बेगिगति चली सुआछे। शंभु पुकारत लागे पाछे।।
चंद्र बदनि मुख अपन दिखाऊ। मम बच अ ननि मानु मन भाऊ
आइ डारु मोहि को जयमाला। जैहौं मैं न छोड़ि तोहि बाला।
कहति लोटि हंसि तव भववामा। आइय पाछ लगे मम धामा।।
दो० होहुहुं कामिनि राउ पुनि कह शिवहां बहु वेश।
गई लेइ कैलाश कहं रंग शर बेधि सुदेश।२१।
सादर सिंहासन बैठानी। पूजी सोरह बिधि मुख मानी।
सहित प्रेम धरिकर दृढ़ चरणा। डारी पति गल माल अपरणा
प्रगटी देवी आपन रूपा। लखिव तटस्थभैं अगजगभूपा
एकमेक कहं बहुरि निहारी।। हांसनलगे उमा त्रिपुरारी।।
कह शिव धन्य भवानी तोको। लाइ मनाइ नहीं अस मोको।
सनकादिक मुनिये कह सूता। शंकर चरित विचित्र बहूता।।
अकस्मात शिव ढिग मुनिनारद। आय सवीणा ज्ञान बिशारद
कह मुनि विश्वंभर जग देवा।। देवदेव जग तव भक्त अनेका।।
पर पुर कांती नृपति श्रियालू। धीर गंभीर सुशील दयालू।।
तोहि यश करि दिगमंडल पूरे। क्षमावंत सात्विक है रूरे।। ।।

अन्न सत्र सो नृपति मँड़ावा। भै संवत दश सहस सुहावा।
इच्छित भोजन सुचि शुभ दानू। देत अतीतन्हि सहस सन्मानू॥
दो० जौन वस्तु महि मह अगम कोउ मांगे करि आस॥
नेहि सोइ लाइ प्रयत्न करि पुरवे अस तव दास॥२२॥
अस सुनि नारद तें वृष केतू॥ तुरत राज घर अनु भव हेतू॥
लै अतीत कर भेष कुवेशा। सघहिं आवत भये महेशा।
आइ भये आंगन में ठाढ़ा। अति कोपित जिमि स्ववन्हि ताढ़ा
बोलत बचन कुदृष्ट कठोरे॥ सकल कुरूप भेष भ्रू जोरे॥
इच्छित भोज मोहि दे सुन मोरा। नतु सत सब लै जै हौं तोरा॥
सुनत भ्रियाल चांगुना रानी। धरे पाँउ सत भाव ससानी॥
आसन पर बैठाइ महीशा। क्रोध वचन सब धरि निज शीशा
करि पूजा षोड़श पर कारा॥ हाथ जोरि पुनि कहत भुवारा॥
दो० इच्छा भोजन मँगाइ यति कह रवैहौं नर मांस।
चोरि हेरि जो लानसी तो उठि जैहुं निरास।२३।
जो तैं कहुं मम हेतु नरेशू। लेइ मोल लाइबे जनेशू॥
सो मैंना लेहौं सुनु मोसे॥ सत्य सत्य सत्यहि कहुं तोसे
चांगुणा कहनि जोरि कर शासू। खाइय मैं देतिहुं निज मांसू॥
अपन मांसु मैं देउं कृपालू॥ खाहु तृप्ति होइ कहत भ्रियालू
वह कह सुचि तुम जननी जनकू। हो दम्पति सब याचक गणकू
तुम दोउहिं अक्षत नर नाहू। अन्नदान घटि अप यशा लाहू
सो तुम्हरे यक लोत कुमारा। पांच बरस को चिलया प्यारा।
जो बत्तिस लक्षण को गोहू॥ है मोहि भोजन हित नेहि देहू।
दो० सुनतहिं माया मोह तजि बोले गणि नरेशा॥
हां अवश्य लै जाहु प्रभु यह सुनि कहहिं महेशा।२४।
मैं का बाघ टकवि हौं रामा॥ जो तुव सुत को खाउं महीसा॥

सो तुम खेद त्यागि कहुं नीको। सुतहिं पाक करि परसहु मोको
माय मोह धरि जो होउ ग्रानी।। तुम में कोउ रोयहु नृपरानी।
तो मैं सत्य तुम्हारे लेई ।। उठि जेंहो सोचहु चित देई।।
सुनि ग्रवग्रय कहि पतिव्रत रानी। ग्राढ़ होइ सुत कहुं गुहरानी
कहि गुणवंत हे चिलया बारे। कहुं खेलत हसि प्राण पियारे
तुवहित ग्रतित रहा विरभाई। हे सुपुत्र मम ग्रावसि धाई।।
दूमि सुनि जननी कर गुह राचा।। तुरतहिं बालक धावत ग्रावा
ग्रा ग्रतीत के परातर पेरक।। पुनि उठि मातु पिता पद धेरक
कहति ग्रंब हे सुत गुण बानू। मंगत ग्रतित तुव ग्रामिष दानू
कह शिशु तजहु मोह कृपिणाई। मैं यहतन शिव ग्रर्पेउं माई
ग्रतित हिं तृप्ति होत में चोषू।। उमा नाथ होइ हैं संतोषू।।
दो० यह सुनि बेगहिं चांगुणा सुत को कटि पर लेइ।
पाक ग्रगल के भीतर गई बधन चित देइ।२५।
सुख चिलया को भूमि उरलाई। ग्रति करुणा उरहृग भरि ग्राई
कह शिशु मातु उदर पुनि तोरी। ग्रेहुं लोटि करु चिंतन मोरी।।
माया जाल त्यागि बर जोरा।। करिके मन बज्रहुं तें कठोरा।।
काटि ग्रीम चिलया को ग्रासू। काढ़त भई ग्रंग कर मासू ।।
हमरे सुत नहिं कहि मन माहीं। देखन हेतु रवी सिर काहीं।।
केवल धर को पाक बनाई।। ग्रति नहिं भोजन हेतु उठाई।
ग्रमित ब्रह्मांड केर समचारा। जानत सूत्र धार शिव सारा।।
ग्रति इंद्रिय विचित्र जेहि करसू। ग्रीम खेव कर जानेउ मरसू ।।
दो० चले तुरत उठि क्रोध करि देखे रानी राय।। ।।
कहत ग्रतित मैं जानेउं तुम सिर खेवत्यु काय।२६।
शिर प्रधान सब ही तन माहीं।। तुम सो बंचि खेवउ तेहि काहीं।
तब चांगुण नृप धरि पद कहहीं। शिर हु पाक करि खावत ग्रहहीं।

अंतर क्षोभ नाथ जनि धरिये। तुम सर्वज्ञ क्षमा चुक करिये॥
अनजानत में कीन्ह जुदाई॥ रारवहु हमरे सत्य गुसांई॥
सुनि बैठे आसन पर आकर॥ कहहिं सिरहिं तें बाहिर लाकर
मोहिं देखत ऊरवल में डारी॥ अबहिं कूदि हे महिपतिनारी
जो कदापि नैं दृग जल आनसि। की दुख अंत करण में मानसि।
तो सुतगे अरु सत को हानी॥ करि जैहौं तुम्हरे नृपरानी॥
दो० हां अवश्य कहि लादू सिर चोगुण कूदन लागि।
लखत सत्य कैलाशपति हिय मद्रद अनुरागि।२७।
अपन सत्य को ऊरवल कीन्ही। धीरज कर कर मूसल लीन्ही॥
कूदन बैठी सुंदरि रानी॥ निश्चय हृदय अचलता ठानी
अति कहत अति मंगल गीतू। गाउ रसिक सूघर करि प्रीतू॥
जो तन कहुं मन करि हसि रवेदा। तो श्री शंकर मानिहिं भेदा॥
सत्य भाव सर केर निवासिनि। तव उर नम्र भुवाल बिलासिनि
की सत लक्षण को वह गंगा॥ चली भरी धरि लीक अभंगा।
जासु बदन छवि लखत ललामा। रोहिणि नायक होदू गैं श्यामा
गुण सम्पन्न सु मृगण वासी। रूप अनूपम जेहि श्रुति साक्षी।
दो० सुत विसुरव सोदु गीत करि लागी गान सुरानि॥
शोक गान जेहि सुनत हीं बज्रहु हिय द्रव रानि।२८।
कहति सुवन कोमल सुकुमारा। हे सुशील शुभ लक्षण प्यारा॥
नृप किशोर दृग जलज नवीना। मुख सुहास्य उदरज धनि कीना।
रे गुणज्ञ सुत मृदुल सुगाता। लगत निठुर मम तव सिर घाता
मैं तुव बिनु दूबरि पर देशी॥ भयिउं भिखारिनि सुत निहशेषी
अवत नयन कुच पय को धारा। बहति कंचुकी फूदि अपारा॥
भनु भूलिं गहिं रणी जैसे॥ गलता लाई सोहै तैसे॥ ॥
कहि अति तहिं जेहुं सुनु कानदे। राज द्वार पार सुत जानदे॥

तजि हौं देह तुरत कहुं तोसे ॥। अब धीरज धरि जाहु न मोसे।
दो० हा सुत तैं कैलाश पथ मोहि तजि जात अकेल।
महं आवति हौं संग तुव ठाढ़ रहसि छिन गैल।२९।
मोक्ष बनिज लैकर तैं बेटा ॥ जात देखि कैलाश सुपेटा॥
महं पापिनी तुव संगत में ॥ तरि हौं तनु जनि मोहि जगत में
जल बिन जस गति पावै मीना। मैं तिमि अबुध सुवन तुव बीना
निरदय कठिन मोर उर दादू। मुँह दिखाउँ जग केहि अहलादू
हे सुपुत्र तव जननि बजत में। लगत लाज मोहिं सकल जगत में
तैं सुत निज सार्थक परमारथ। करिके गयसि शिव पदहिं यथारथ
यह त्रि भुवन महँ तुव सम बालक। खोजत दिखेन मम जिव पालक
कृटि सद्य हुमि पाक बनाई। कहति अतीतहिं उठिय गुसाईं
दो० कह अतीत संग आपहूं मम बैठिय महि पाल ॥
उठहु मोर यजमान तुम सुनि मकुचे शिर याल ३०।
कहति चांगुण्ण सुनिय भुवालू। सत्य गारवहू अब तत कालू ॥
अतितहिं विमुख जान नहिं दीजिय। राउर मन चिंता जनि कीजिय।
नौ महिना मैं बहेउँ उदर में ॥। तुम हिं न भारी चारि प्रहर में॥
पेट के पेट माहिं सुत डारे ॥। चिंता का नृप हृदय तुम्हारे॥
बैठे पंक्तिहि नृप सुनि बानी। थारि परसि लावत भइ रानी
तब अतीत कह चांगुण्ण पाहीं। तहूं बैठु आ पंक्ती माहीं॥
प्रभु अवप्रय हो कहि नृप ललना। तुरतहिं आइ बैठि छिन पलना
दुतनेहु पर पुनि कहत अतितबर। अन्न न खाइय सर्वथ तुम घर
दो० जिमि दीपक बिन सदन तिमि बिन सुत हो तुम दोय।
मुख हूं न लखिय अपुत्रि कर तहां अन्न लै कोय।३१।
जिमि सुबदन अरु नहिं कहुं नासा। की तरु वर फल बिना उदासा
अरु दृग पुतरी बिन दृग ऊना। तिमि विनु सुत तुम्हरे घर सूना

बोले दुखित तब रानी राई। एक सुत रहा सो अर्पेन सांई।
कहि चांगुण गे मत्थ हमारे। अतित बिमुख अब चहहिं पधारे
रह सुत जो इहु भोजन नीता।। अब मत देखहु कतनि अतीता
अस बोलत में चांगुण केरी। हिय भरिगे दुख भयउ घनेरी।
कहति सत्य हूं बूड़ी सारा ।।। अरु बालक गे वृथा हमारा।
दुखित अ प्रीति अधिक अकुलानी। शिवहिं पुकारति चांगुण रानी
दो० चयन अवत स्वर ऊंच करि कहि हा कर्पुर गोरु ।।
उमानाथ दुख हमरि प्रभु वेगि निवारसि दोरु।३४
अहा नाथ मैं वंश विनाशा।। पुनि न सुवन मुख देखनि आशा
ऐसे चांगुण को सुनि बानी।। लागा बहन अतित दृग पानी
यह विष बानबगारि पुर मारा। सुनत चढ़ी जनु बीछी मारा।
राज सुवन कर सुरता करिके।। उर ताड़हिं बिलखहिं दुख भरिके
पतिव्रत धीर धन्य सत रानी।। यानारुढ़ कहहिं अमि पानी।।
यहि पर छोड़ असन्न जग दीशा। समुझि न पर कधु दै हैं ईशा।
कहत अतित पुनि चांगुण पाहीं। जौन वस्तु तोहि प्रियमन माहीं
सहुण राशि सोइ बर दानू।। मँगहु बोलि मुनि सती प्रमानू
दो० लोग निपुत्री कहहिं मोहिं सोलिम धोइ निकारु।।
मुनि बोले कैलाश पति हां भल्लु सुतहि पुकारु।३३
चांगुण अतित बचन फुरजानी। दीरघ स्वर सुत को गुहरानी।
कहि मम चित्त लया हे गुण शाला। आवसि धाइ दुलारे लाला
तुव बिन अतित लेत नहिं गासू। तैं खेलत कहं बिल मेहु लासू
तैं शिशु मोर हरणि को बालक। आइ सत्व रखु मम दुख घालक
जो तैं धाइ न आवसि भैया।। तो जिव निकसि चहत मम जैया
अस कहि दश दिशि देखति माता। कित तैं आत मम जीवन दाता
पुनः चांगुण हूत कर राई।। तब जिमि उदय होय दिन राई।

तिमि बालक दौरत ही आवा। लखि शिव शिवा लै नृप अति सुख पावा।
दो० अति रूप तब त्यागि शिव प्रगटे आपन रूप ॥
दीनो धारण जगत गुरु लखत गिरा अरु भूप।३४।
चिलया को शिव हृदय लगायो पुनि सप्रीति निज अंक बिठाये।
नृप शिवाल अरु चारु गुण रानी। गिरे पाँव तर कढ़त न बानी॥
वृंदारक कुसुमावलि वर्षहिं। दुंदुभि नाद करहिं मन हर्षहिं
नगर लोग सुनि अति सुख पाये। परमानंद दरश हित धाये॥
शंकर दिव्य विमान मँगाये। दिव्य रूप नृपतिय युत पाये॥
करि शिव तिलक क्षत्र सिर धारी। सिंहासन चिलयाहिं बिठारी
चढ़ि विमान दम्पति समेता राज भार सचिवहिं दै जेता॥
निज पद हीं जग तारण शंकर। ले अस्थापेउ दोउहिं मुनीवर
सो० मैं त्रैलोक निहाल कांति पुरी महँ सुख अमित।।
मिटन अरबंद त्रिकाल छाये श्रीधर शिव कृपा।२।
चौपाई
शिव लीलामृत ग्रंथ उदारा। चौदह अध्या लौं भै सारा॥
सार भुवन चौदह को लीका। चौदह अध्या रचना नीका॥
सार अहै चौदह विद्या को॥ गांठि अनंत चोद कहियाको॥
चौदह पद बर्धन सुगया को। कहै सुनै जो मिलै फल ताको
कि जनु रतन चौदह सबहीं का। समटि प्रकाश भयो इहँ नीका
चौदह चक्र सु पूरण नाई॥। चौदहुं भुवनहुं प्रिय यह भाई
की यह चौदह कांड सु वेदा। की चौदह धन घट निरभेदा।
कि जनु चतुर्दश कोठरि सुंदर। भै निर्माण यहीं शिव मंदिर
दोहा
कहि सुनि लिखि कोउ मनन करि सहित प्रीति मन माहिं।
वारक्षण करि ग्रंथ को फल समान सब पाहिं।३५।

इन सबहिन को शिव होइ माता।। निज तन रक्षहिं जन सुख दाता
आयु बढ़ै अरु रोग नशावै। सबहिं विभव अवणहिं ते पावै
आधि व्याधि सब ही कढ़ि जावै। बंध्यहु संतति पुत्र सु पावै ।।
गो विदेश बहु दिन के प्यारा। सो सद्यहिं भेंटै निर धारा ।।
धन सम्पत्ति बहुत घर आवै। ऋण चिंता सब तुरत नशावै
दक्षिण मुख बांचै जो कोई। तासु शत्रु को क्षय ध्रुव होई
जो सह भक्ति पढ़ै शत बारा। होइ ताहि शिव भक्त कुमारा
रहइ ग्रंथ यह जेहि घर मांचू। तहं न बसहिं कभु भूत पिशाचू

दोहा

तीन मास यहि पढ़ै नित संकट सब क्षय जाय ।।
प्रेम लहइ ये फल सकल अप्रेमी किमि पाय।३६।

शिवरात्री प्रदोष शशि वारहिं। पूजिय ग्रंथ सप्रेम अपारहिं।
होइ शुद्ध पुनि सोवै जब हीं। सपना में शिव बोलहिं तब हीं
जेते कष्ट परहिं जन ऊपर।। सकल निवारहिं ध्रुव गिरिजा बर
चौदह अध्यहिं न्यारे न्यारा। भाषौं कथा वरिष्ठ सुधारा ।।
मंगला चरण प्रथम अध्या में। नृप दाशार्ह चरित अरु तामें
सोइ नृप केर कलावति रानी। तारी निज पति कहं मुनि ज्ञानी
कर्म विपाक व्याध इतिहासू। कथा द्वितिय शिवरात्रि प्रकासू।
त्रितिय अध्य में करि उपदेशू। गौतम तरि सह मित्र नरेशू ।।

दोहा

श्रिकर विमर्शन चौथ तरि महकालेश बखान।
पालि उमा सुत शिव कृपा पंचम करि नृप जान।३७।

षट अध्यहिं अति सुरस बखाना। सीमंतिनी केर अख्याना ।।
सप्तम अष्टम कौतुक सुंदर।। अहै चरित भद्रायु मुनी बर।।
नव्वम वामदेव को हेरा। नृप दुरजय निशिचर करि भेरा

कही जन्म दुख निज अघ मासू। बहु प्रकार वह अध्य अभीसू
दशम शारदा कथा सुहाई। ग्यारह में रुद्राक्ष बड़ाई ॥
महा नंदा को निस्तर कथा। भाष्यौं भद्रसेन नरि यथा॥
द्वादश बहुल विदुर द्विज तरणा। भस्मासुर बध हरि कर वरणा
अथ इति लोंतेरह अध्या में। अहै शिवाशिव व्याह सुता में
चतुर्दशहिं शिव गौरि विनोदू॥ भई भिल्लिनी उमा अमोदू॥
अहै श्रियाल चरित शुभ पाछे। चौदह अध्या पूरण आछे॥

छन्द

शुभ चरित पूरण भयउ शंकर अति दया को धाम है॥
सह प्रीति गावहिं सुनहिं जे नर तिनहिं शिव पद राम है॥
सो पान जनु कैलाश को यह चौद अध्यहिं ध्याहिं जो॥
शिव कृपा दुर्लभ विबुधहीं पद श्रम बिना ध्रुव पाहिं सो॥

दोहा

सुर बाणी मह राशु करि श्रीधर कीन्हि बखान॥॥
तेहि उल्था भाषा कियमि जड़ गज राज समान॥८॥

विदित ऋषी दत्ता त्रय भयऊ। तेहि घरान महं श्रीधर रहेऊ॥
उन सब निज बंशा वलि जेते॥ अपन गृंथ में भाषेउ तेते॥
पूरी गृंथ उन हिं की दाया॥ और कहौं जो कीन्ह सहाया
द्विज जे राम पंत शुभ ज्ञानी। जानहिं मद्रा राशू सुर बानी॥
अर्थ गृंथ को उनहिं बताये। भनित शुधा शुध भेद लखाये
उन हीं श्रोता गुरू समाना। सुने चरित करि आदर माना
करणी अधम अधम मम वरणा। अधम जाति मैं हौं द्विज शरणा
शूद्र जाति मैं मुन्हु र बारू। कहत तिलंगा कुरमि संसारू।
संस्कृत में गति कछु नाहीं। ना भाषहुं मम भौं मम काहीं
केवल श्री गुरु दाया कियऊ। तब यह युगल बरय मैं भयऊ

दोहा सोरठ छंद बिहार्दु। चार सहस्र तिरसठ चौपाई
है अथ इति लौं पुस्तक माहीं। लियहु मैं भारि विनोंमव काहीं

दोहा

भनित सुधा शुध भेद को शोधेहु चतुर सुजानि।
दास अपने जानि मुहि कोपेहु जनि अनजानि ॥

दोहा

संवत्सर उन्नीस शत तापर सैंतिस साल ॥
जेठ शुक्ल षष्ठमी शशि बासर पूरि रशाल।३५।
चरित सुधा शिव पूर मैं शुभ विलास पुरठाम॥
कहैं सुनैं जो प्राणि जन तिन को सीता राम। ४०

॥ इति श्री स्कंद पुराणे ब्रह्मोत्तर खंडे शंकर चरित सुधा भाषान्तर भाषा राजराज कृते मधुर चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

इति

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
छन्दोर्णवपिंगल	अपूर्व्व कथा	बाला बोध	कायस्थकुलभास्कर
रसराज	किस्सागुल मनोवर	विद्यार्थीकीप्रथमपु-	कायस्थधर्म्मनिरूपण
सत्सई मूलतथास-	सहस्त्ररजनीचरित्र	किताबजंत्री	तथा छोटा
सभाविलास	राबिन्सनकाइतिहास	गणितकामधेनु	मथुरा सभा
तुलसी शब्दार्थप्र-	सीताहरण	लीलावती	ज्योतिष
भजनावली	सतीविलास	पटवारियोंकीपु-धभभा	मुहूर्त्तगणपति
प्रेमरत्न	मुतफर्क़ात	वैद्यकभाषा	मुहूर्त्तचक्रदीपिका
युगलविलास	शनिश्चर कीकथा	निघण्टु	मुहूर्त्तचिन्तामणिस-
चित्रचन्द्रिका	ज्ञानमाला	अमरविनोद	मुहूर्त्तमार्त्तण्डस-
बारहमासाबलदेवश	गोपीचंदभरतरी	वैद्यजीवन	मुहूर्त्तदीपक
मनोहरलहरी	कथाश्रीगंगाजी	औषधिसंग्रहकल्पवल्ली	रहस्यज्ञानकस-
गंगालहरी	अवधयात्रा	अमृतसागरखड़ावछो-	जातकालंकार
यमुनालहरी	भरतरीगीत	वैद्यमनोत्सव	जातकाभरण
जगद्विनोद	रासलीलावनागलीला	ज्योतिषभाषा	होरामकरंद
शृंगारबत्तीसी	दोहावलीरत्नावली	जातकचन्द्रिका	संस्कृतउर्दू टीका
राग	गोकर्णमाहात्म्य	जातकालंकार	मनुस्मृति
रागप्रकाश	श्रीगोपालसहस्रना-	दैवज्ञाभरण	विष्णुहारीत
लावनी	कथासत्यनारायणास-	ज्ञानस्वरोदय	महिम्नस्तोत्र
क़िस्सावग़ैरह	हनुमान बाहुक	रमलसार	व्रतार्क
नानार्थनामसंग्रहावली	जनकपच्चीसी	इन्द्रजाल	याज्ञवल्क्यस्मृति
ब्रह्मसार	हरिहरसगुणनिर्गुण	संस्कृतकीपुस्तकें	संस्कृतभाषाटी-
शिवसिंहसरोज	पदावली	लघुकौमुदी	अमरकोषनामाकारा-
भक्तमाल	व्रजयात्रा	सिद्धान्तचन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति
इन्द्रसभा	कायस्थवर्णनिर्णय	भाषातत्वप्रकाश	सन्ध्यापद्धति
विक्रमविलास	बिहारवृन्दावन	पञ्चमहायज्ञ	व्रतार्क
बैतालपच्चीसी	समरबिहारवृन्दावन	निर्णयसिन्धु	भगवद्गीताटी-छन्दः-
सिंहासनबत्तीसी	कल्पभाष्य	संग्रहशिरोमणि	भगवद्गीताटी-शान्ती-
पद्मावतीखंड	दरसी	भगवद्गीतासटीक	गीतगोविंद
शुकबहत्तरी	अक्षरावली	दुर्गापाठमूलतथास-	कथासत्यनारायण
बकावलीसुमन	स्वयम्बोध	विष्णुभागवत	परमार्थसार
चहारदरवेश	ज्ञानबत्तीसी	भविष्योत्तरपुराण	भाईधरसंहिता
क़िस्साहातमताई	दोहावली	अपराधभंजनस्तोत्र	पाराशरीसटीक

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
शीघ्रबोधसटीक	भाषालघुव्याकरण	सुन्दरकाराड	पुरज़ादारी २६ सन्
लघुजातक	१भागतथा २	लंकाकाराड	१८६६ ई॰ डुसवीं वग़ैरह
षटपञ्चाशिका	भाषातत्वदीपिका	उत्तरकाराड	रेक स्टाम्प दस्ता बेजा-
सामुद्रिक	भाषा चन्द्रोदय	गुटका १भा-२व ३	न १८सन् १८६८ ई॰
गरुड पुराण	भूगोलतत्व	हिदायतनामा नुदीरभान	रेक तास्बुक़दारान्
रामविवाहोत्सव	भूगोल दर्पण	पशुचिकित्सा	मअरूज़ अवध २४
सरिश्ते तालीमकी पुस्तकें संस्कृत	इतिहासतिमिरनाशक १ भाग २ व ३ भाग	फ़ाबख़्तकैथी	सन् १८७० ई॰
		तथा क़वूलियत	रेक चौपायों कामदा-
ऋजुपाठ १भा-२व ३	अवध देशीय भूगोल	रजिस्टरहाज़िरीपाइशा-	रख़्लत बेजा १ सन्
धात्वर्थ	इंग्लिस्तानका इतिह-	रिज तुलबामदमा	१८७७ ई॰
नागरी कैथी	हिन्दीपत्रिका	रजिस्टरहाज़िरीपाइशा-	रेक मजमूआ ज़ाबि-
वर्णमालाकैथी १भा-	बालाभूषण	कानून कैथी	ता फ़ौजदारी १० सन्
व २ भाग	पद्यसंग्रह	पटवारियोंके क़ायदे	१८७२ ई॰
तथाकैथी फ़ारसी नागरी	भाषाकाव्यसंग्रह	उर्दूकैथीमहाजनी	रेक माल गुज़ारी
	कविरत्नाकर १भा-	टिकटके लाडसन्स	मग़रबी व शिमाली
हरूफ़सुफ़र्दान	तथा २ भाग	का रेक २ सन १८७८ ई॰	१६ सन् १८७३ ई॰
अक्षरारम्भ	मंगलकोष	नागरी	तरमीम मजमूआ ज़ा-
वर्णप्रकाशिका १भा	अंकप्रकाश	रेक लगानमगरबी	बिता फ़ौजदारी २१स-
तथा २ भाग	गणितप्रकाश १भा-	व शिमाली १० सन्	न १८७४ ई॰
सूरजपुरकी कहानी	तथा २भा-३व४	१८५६ ई॰	तक़ावी के क़ायदे
धर्मसिंहका वृत्तांत	गणितक्रिया	इंडियन पिनलकोर्ट	सवाल व जवाब
शिक्षावली	क्षेत्रप्रकाश	मजमूआ ज़ाबिता फ़ौ-	पुलिस
शिशुबोध	क्षेत्रचंद्रिका २ भाग	जदारी रेक २५ सन्	अवध गज़ेट खंड
पत्रलिखनेविधि	सकीलदायरा	१८६१ ई॰	रेलवे कायदेकानून
पत्रदीपिका	रेखागणित १ भाग	रेक रजिस्टरी २० स-	अमल
विद्याचक्र	तथा २भाग	न १८६६ ई॰	किताबें जो छपरही
विद्यांकुर	बीजगणित १ भाग	रेक स्टाम्प १ सन्	हैं उनके नाम नीचे
पदार्थविद्यासार	रामायण तुलसीकृत	१८६२ ई॰	लिखेहैं
पदार्थज्ञानविटप	बालकाराड	रेक स्टाम्प अदालत	मांगीत प्रह्लाद
भोजप्रबन्धसार	अयोध्याकाराड	२६ सन १८६७ ई॰	क्षेत्रव्यवहारिकतत्व
राजनीति	आरण्यकाराड	मजमूआ रेक अवध	हुनि
	किष्किन्धाकाराड	लगान १६ सन १८६८ ई॰	

